॥ श्री हरिवंस चरित्र ढाळ सागर ॥

पंडित श्री गुणसागर सूरि विरचित

श्रीकृष्ण, वलदेव, नेमिश्वर, सांव, प्रद्यु
म्न, पांडवादिकोनुं चरित्र अति सुरस
ढाळा राग रागीणी युक्त

ओ समग्र ग्रथ
जैन धर्मी श्रावक लोकांने भणवा
वाचवाने अर्थे योग्य जाणीने

नाना दादाजी गुंड इणनें
" सौजन्यमित्र " छापखानामें छपायोछे
समत् १९४८ अने सन १८९१
ओ पुस्तक पुना पेठ नानाकी आठे
भाई भगवानदासजी केशरचदजी नाहारकी
दुकान उपर मिलशी
किंमत एक रुपया बारा आणा.

जैनधर्म संबंधीछपेलां पुस्तकोनुं सूचीपत्र.

१ श्री जैन धर्म ग्यान प्रदिपक पुस्तक किमत १॥ रुपया
२ जैन धर्म सिद्धातसार पुस्तक किमत १। रुपया
३ श्री जैन धर्म ज्ञान प्रकाश पुस्तक किमत १२ आणें
४ श्री रामलक्ष्मण चरित्र कथा युक्त किमत १। रुपया
५ चंदराजाको रास किमत १ रुपया
६ लक्ष्मण बोध नाट किमत १२ आणा
७ श्रीपाल राजाकोरास चार खडको किमत १० आणें.
८जैन शिलोका सग्रह किमत ५ आणें.
९मानतुग मानवतीकोरास किमत ०६ आणें
१०रतनकवरकी चोपाई किमत ४ आणे
११भक्तामर स्तोत्र किमत ५ आणें
१२धन्ना साळभद्र शेठकी चोपाई किमत ४ आणें
१३मगळ कळमकी चोपाई किमत ४ आणें
१४देवकी राणीको रास (छे भाइनो रास) किं० ४आणें
१५लिलावती राणीकी चोपाई किमत ४ आणें
१६अमरसेन जयसेन राजाकी चोपाई किमत ४ आणें
१७चदन मलीयागीरीकी चोपाई किमत ४ आणें
१८परदेशी राजाको रास किमत ४ आणें
१९रुयवन्ना शाहको रास किमत ०४ आणें
२०महिपती राजा अने मतिसागर प्रधानकी चोपाई किमत ४आणे
२१कानड कठीयाराकी चोपाई कर्म बंध रास किमत ०४ आणे
२२स्नात्र पूजा तथा वीसथानकनी पूजा किमत ४ आणें
२३स्तवन सज्झाय संग्रह भाग पहीला किमत ४आणें
२४मेणरहयानी चोपाई किमत २ आणें
२५पाचपदारी मोठी वदना किमत ३ आणें
२६करकन्दू आदि चारराजाका चाररास किमत ५ आणें
२७एलापुत्रकी चोपाई अने विजेशेठनो रास किमत ४ आणे
२८श्री जैन काव्यमाला [आठ भाग] किमत १ रुपया
२९ श्रीरामलक्ष्मणजीको रास किमत १। रुपया
३० श्री विवध रतन प्रकाश, किमत १२ आणा
३१ हसराज वछराजको रास किमत ५ आणा
३२ हरीचद राजाकी चोपाई किमत ४ आणें

॥ श्री अरिहंत परमात्मनेभ्योनमः ॥

॥ अथश्री हरीवंस प्रबंध ढालसागर लिख्यते ॥

दुहा ॥ श्री जिन आदिजिनेसरु, आदि तणो किरतार ॥ युगलाधर्म निवारणो, वरतावण व्यवहार ॥ १ ॥ शांति सकल सुखदायकं, शांतिकरण,संसार ॥ अरति असुख दुःख आपदा, चारे निवारण हार ॥ २ ॥ नेमनाथ मति निर्मलि, अनमि नमाणव देव ॥ बालब्रह्मचारी प्रभु, सुरनरसारे सेव ॥ ३ ॥ पार्श्व पार्श्व सारिखो, सुख संपति दातार ॥ क्षुद्रउपद्रव टा लणो, नामे सदा जयकार ॥ ४ ॥ वीरस्वामी त्रिभुव न तिलो, गुणमणिनो भंडार ॥ तिर्थंकर चउविसमो, शासणरो सिरदार ॥५॥ काल अतिते जे हुवा, वर्तमान जिन ईश ॥ कोडी दोय केवल धरा, चरण नमुं निसदी स ॥६॥ गणहर गौतमगुण निलो, गौतम गुरु यो नाम ॥ गौतमगुरु सर्वमें वडो, गौतम करुं प्रणाम ॥ ७ ॥ का मधेनु गौ शब्दथी, तते तरु सुरवृक्ष ॥ समेयु मणि चिंतामणि, गौतमस्वामी प्रत्यक्ष ॥ ८ ॥ देश देशांत र कांइ भमो, मूरखलोक अजाण ॥ घर बेठां हरीपू रिसो, गौतम केरो ध्यान ॥ ९ ॥ ब्रह्माणी ब्रम्हा सु ता, सारद मात प्रणाम ॥ करी मागु मति निर्मली, जीम पामु कवि नाम ॥ १० ॥ कविवाणि वारु कही,

जस तूठि तुं माय ॥ तुझ तूठा विण बोलणो, मूरख मांहि कहाय ॥ ११ ॥ पढे गुणे मति आगलो, रास सभा सनमान ॥ लहेनिवाजा ताहरा, मोटप मेरु स मान ॥ १२ ॥ मात मया करी सांभलो, सेवकनी अ रदास ॥ तिमकर जिम पोहचे सहि, माहरा मननी आस ॥ १३ ॥ गुरु नमीए गुरुताभणि, गुरुविण गु रुता नाहि ॥ गुरुजनने प्रगटो करे, लोक त्रिलोका मांहि ॥ १४ ॥ गुरु कारीगर सारिखा, टांके वचन प्र हार ॥ पथ्थरथी प्रतिमा किया, पूजा लहे अपार ॥ १५ ॥ अंधकार अज्ञानता, ज्ञान सलाइ सार ॥ फेरी किया जग देखतां, धन्य गुरुना उपगार ॥१६॥ तिर्थंकर गणधर सहु, सारद सुगुरु सकाम ॥ सहु मिलि मुझ आपज्यो, काव्यकला अभीराम ॥ १७ ॥ उतपत्ति श्री हरीवंशनी, हलधर कृष्ण नरेश ॥ नेमी मदन जुग पांडवा, चरित्र भणुं सुविशेष ॥ १८ ॥ जादव कथा सुहामणी, जे सुणशे नरनार ॥ सुकृत तणो फल पामशे, नहीं संदेह लिगार ॥ १९ ॥

ढाल १ ली ॥ दश कंधर राजा, चढतो तेज प्रतापे ॥ एदेशी ॥ नहीं संदेह लिगार निरोपम, श्रीहरी वंश वखाणुं ॥ उत्तम पुरुषतणा गुण सुणतां, थाइ जन्म प्रमाणुं ॥ जंबुद्वीप प्रसिद्ध प्रमाणे, जोयण लाख क हावे ॥ षटकुलगीरीने खेत्रसातशुं, शोभा अधिकी पावे ॥ १ ॥ भरत खेत्र जोयणसें पंच, छवीसकला

गोठावे ॥ गिरी वेताढ्य विचाल विशेषके, आधोआ
ध कहावे ॥ सोल हजार सुसारदेशमें, आर्य साढापं
चविसे ॥ जिहां जिन पंचकल्याणिक होवे, इम जिनम
तमां दिसे ॥ २ ॥ कोसंबि नगरी वनवासी, कुवा वा
व विशेषी ॥ गढमढ मंदिर पोल पगारक, इंद्रपुरी स
म लेखी ॥ राजा राज करंत विशेषे, विद्यावंत सनूरो ॥
हय गय रथ पायक दल पुरित, राय महा रणसूरो
॥३॥ आयो मासवसंत विराजीत, राय सुसुख सरागी ॥
रामतिरंग करेवाकारण, नृपतिनी माति जागी ॥ कोइ अ
टाले कोइ माले, नारी तमासे लागी ॥ कौतक जोणुं वं
स विगोणुं, हुइ घणुं अनुरागी ॥ ४ ॥ वीरकोविंदक केरी
नारी, वनमाला सुविशाला ॥ नयणे निरखि हरखि राजा,
राग धरे ततकाला ॥ रुपे रुडी रंभा सरशी, वश वर
तावे देवा ॥ आइ इहां हुं जाणुं ए मुझ, पास कराव
ण सेवा ॥ ५ ॥ खेली ख्याल वेहाल प्रणामे, राजा
मंदिर आवे ॥ मंत्रीश्वर उपाय करीने, वनमाला राय
तेडावे ॥ नारी सुसिला पर पुरुषाने, कदिय न आवे
पासे ॥ वायतणे वलदेवलनीध्वज हुइ अपुठि नासे
॥ ६ ॥ शीलसुधारी जे ब्रह्मचारी, नारी देखी न चूके
॥ रामचंद्रजी सुर्पनखा ज्युं, माथे मारी मूके ॥ भूंडे
भुंडा दोय मीलंता, कोडी अकारज किजे ॥ दीरघ रा
जा चुलणिराणी, केरी उपमा दिजे ॥ ७ ॥ राजाराणी
प्रिततणे वश, भोगवे भोग उदार ॥ विद्युत पाते मरण

लहि तव, हरीवरषे अवतार ॥ त्रिजे प्रहरे के त्रीजे वासर, त्रण मासे त्रण वरषे ॥ प्रगट उखाणो ए जग जाणो, पुण्य पाप फल वरशे ॥ ८ ॥ नारी विजोगे विरको विंदक, गहिलो गर्व गिमारो ॥ रझ्योपझ्यो विलव्यो विलखाणो, विकल थयो अपारो ॥ तापसरुपी चारित्र पालि, कष्टताणि करी कोमी, स्वर्गसौधर्मेकील्विपीयासे, देव थयो दिन थोमी ॥ ९ ॥ किधांकर्म न कोइ छूटे, कांइ रांकने राणो ॥ राजा राणि साथे केहिपरे, सालेवैर पुराणो ॥ पहिलि ढाल रसाल रागमें, आणंद रंगविलासा ॥ श्री गुणसागर सूरिपयपे, सबजुग मिठिआसा ॥१०॥

दुहा ॥ सेवकरुपि देवता, कहे तदा सिरनाम ॥ कुण कारण सुर उपना, आप प्रकासो स्वाम ॥ १ ॥ अवधिज्ञान करी देखियो, पूर्व भवंतर ताम ॥ राजा राणि पेखिया, युगलपणे अभिराम ॥ २ ॥ अंगुठाथि उपनी, अग्नीज्वाल असराल ॥ कालरुप कोप्यो तिहां, आव्यो सुर ततकाल ॥ ३ ॥ मारुतो सुरगति लहे, खेत्रस्वभावे एह ॥ दुःखफोझ्यो फूटे नाहि, तो फिर चिंते तेह ॥ ४ ॥ नरक तणी गति सचरे, पावे दुःख अपार ॥ एह मतो मनमें धरी, किधो तव अपहार ॥ ५ ॥ सोथेलिया सुरतरु तदा, चंपापुरी सुर जाय; वनमें मूकि देवता, भनरालियायत थाय ॥ ६ ॥

ढाल २ जी ॥ विसजणासु वाद नकिजे ॥ ए देशी ॥ ॥ आदिनाथनो नंदननीको, बाहूबल बलवंतजी ॥ भर

तेश्वर नूजवले हरायो, ए बहुलो विरतंजी ॥ आ० ॥ ॥ १ ॥ पुत्र पनोता तेहने प्रगटे, तिनलाख गुणधाम जी ॥ सोमजसाथी सोमवंसनी, थिरथापन अभिराम जी ॥ आ० ॥ २ ॥ सोमजसा कुंवर करमेतो, श्री श्रेयांसकुंमारजी ॥ आदिनाथने जीणे करायो, इक्षुरस नो आहारजी ॥ आ० ॥ ३ ॥ तेहनो नंदन सार्व न्नो मजी, तेहनो हुवो सुनुमजी ॥ सुघोपराजा तस पाटे, वैरीकुलनो धूमजी ॥ आ० ॥ ४ ॥ घोपसुवर्द्धन तेह नो नंदन, महानंद सुनंदजी ॥ सुनद्रसुनंकर सोमवंस मे, ऊदया पुनमचंदजी ॥ आ० ॥ ५ ॥ को मुगते को सु रगति पामी, एह वंसना नूपजी ॥ असंख्यातमी पेढी ए ऊपज्यो, किरतिचंद्र अनूपजी ॥ आ० ॥ ६ ॥ नि संतान राजा तव मूवो, दैवतणे संजोगजी ॥ नृप पद वी लायक नहि कोइ, मिलिया सघला लोकजी ॥ आ० ॥ ७ ॥ पंचदिव्य करी वनमें आया, सुनट ने मंत्रीश जी ॥ हरी हरणि युगलपणे देखी, मनमें धरे नगीशजी ॥ आ० ॥ ८ ॥ अंबरथी सुरवाणी प्रगटी, सोच करो तुम्हे कांइजी ॥ चंपा नगरीनो नल नूपति, थाप्यो ए ह ऊबाहिजी ॥ आ० ॥ ९ ॥ राजाराणीनें तुम्हे देज्यो, मंदिरा मांस आहारजी ॥ माहरो वचन न मानशोतो, क रशुं सहि संहारजी ॥ आ० ॥ १० ॥ सुर वचने चंपापु र नायक, करी थाप्यो सहु तेमजी ॥ वेरी वेरपणुं न वि मूके, अमरख पाल्यो एमजी ॥ आ० ॥ ११ ॥ हरि

नामे राजा तव हुवो, लोक नम्यां करजोमजी ॥ पाच
क लायक परीग्रहपूरो, हय गय रथनो कोडजी ॥ श्रा०॥
॥१२॥ एह थापना हरिवंशनी, वसुधामें विख्यातजी॥
दसमा जिनवरजीने वारे, आगेनी सुणो वातजी ॥
॥ आ० ॥ १३ ॥ हरी हरणीथी नंदन उपन्यो, पृथ्वी
पती गुणधामजी ॥ महागिरी वसुगिरी राजा, उत्तम
नाम प्रणामजी ॥ आ० ॥ १४ ॥ मंत्रिगिरी सुयसान
र नायक, ए मोठो राजानजी ॥ त्रणखंड पृथ्वी मांहि
अखंमीत, वरतावी निज आणजी ॥ आ० ॥ १५ ॥
एवा हरिवंशी नृप हुवा, संख्या रहित अपारजी ॥
किण सुरगति किण सिवगति साधी, सफल कीया अ
वतारजी ॥ आ० ॥ १६ ॥ मुनि सुव्रत स्वामि जगता
रक, राजग्रही हरिवंशजी ॥ मुनि सुव्रत सुत सुव्रत
राजा, वंशतणो अवतंशजी ॥ आ० ॥ १७ ॥ नुरी नू
पनो अंतर होतां, मथुरापुरी मझारजी ॥ वसु पुत्र व
र बृहतकेतुवर, वंश विभुपण सारजी ॥ आ० ॥ १८ ॥
केतलाएक कालने अंतर, यदुराजा उत्पन्नजी ॥ जेह
थी यादव नाम कहाया, धन ए पुरुप रतनजी ॥ आ०
॥१९॥ यदुराजानो सुत सनुरो, सूर सरीखो रावजी ॥
शाखा प्रतिशाखा हिवे चाली, ते कहेवा चित्त चा
वजी ॥ आ० ॥ २० ॥ विजी ढाल सुणंता गोरी, दुः
ख दुरगतिनुं भांजजी ॥ गुणसागर गुणवंत नमंता.
सिझे सघलां काजजी ॥ आ० ॥ २१ ॥

दुहा ॥ सुरवंश सूरराजाना, नंदन उपज्या दोय ॥ पहेलो सोरी सुलक्षणो, सुवीर बिजो होय ॥ १ ॥ सोरीकुमर राजा कियो, अपर कियो युवराज ॥ सूर नृप संजम ग्रही, सारया आतमकाज ॥२॥ सोरीराय सोरीपुरी, वास कियो निज वास ॥ लघु भ्राताने आपीयो, मथुरापुरी निवास ॥ ३ ॥

ढाल ३ जी ॥ इणपुर कंबल कोइ नलेशी ॥ ए देशी ॥ सोरीराय नंदन वखाणुं, अंधक विष्णु वडो नृप जाणुं ॥ सुविरराय सुत विश्ववदितो, भोजग विष्णु जगमें जस जीतो ॥ १ ॥ रायसुविर मथुरानो राजा, सुतने दिधो जाणीसकाजा ॥ सिंधुदेश जाइ पुरवासी, वास कियो नृप लिल विलासी ॥ २ ॥ अधक विष्णु कुमर पटथापी, हयगय रथ पायक सहु आपी ॥ सुप्रतिष्ठ मुनिपें व्रत पामी, सोरीराय हुवा सिवगामी ॥ ३ ॥ भोजगविष्णु नरेशर राजा, पाले प्रजा ने सारे काजा ॥ उग्रसेन आदिक सुत सूरा, शस्त्र शास्त्रकला गुणपूरा ॥ ४ ॥ अंधकविष्णु घरे पटराणी, रुपेरुडी रंभा समाणी ॥ सुभद्रा नामे गुणखाणी, सतियामांहि अधिक वखाणी ॥ ५ ॥ जाया कुंवर दसहि दसार, पुत्रीदोय अति उत्तम सार ॥ समुद्रविजय गुणनो भंडार ॥ दाता भुक्ता अधिक उदार ॥६॥ अक्षोभ अक्षोभ महारण सूरो, स्तमित नाम कुंवर गुण पूरो ॥ सागर सागर उपमा धारी, हिमतवान सहुने सुखकारी

॥७॥ अचल अचल संग्रामे लहि, धराधिरसम धरण संग्रहि ॥ पूरण पुरो सघली वात. धन्य अभिचंद्रत णा अवदात ॥ ८ ॥ श्रीवासुदेव दूगंधक देव, जेह नी सारे सुरनर सेव ॥ ए दसही वधवनी जोडी, पू एय पसाइ पहुचे कोडी ॥ ९ ॥ समआचारी सघला कहिया, माहोमांहि सप्रिती लहिया ॥ मायबापनि भ क्ति करंता, वहिनरू आशीसे जयवंता ॥ १० ॥ वहि न भलि दोइ समसीला, भाग्यवंत अति रुप सुलि ला ॥ कुंति रुप कलागुण पात्र, माद्रि महिमावंत सुगात्र ॥ ११ ॥ कुंतिकुमरिं व्याहण काम, कवि कु रुवंश कहे अभिराम ॥ आदिनाथनो सुत कुरु जाणुं, तेहथी कुरुक्षेत्र कहाणुं ॥ १२ ॥ कुरुसुत हस्तीराय कहायो, हथीणापुर भल नगर वसायो ॥ हस्ती नृप संतान वखाणुं, विश्वविर्य नरेश्वर जाणुं ॥ १३ ॥ तदनंतर कुरुवंशे चारु, सनतकुमार चक्रीश्वर चारु ॥ शांतिकुंथु अरजी सुख दाया, दोदो पदवी नाथ क हाया ॥ १४ ॥ इंद्रकेतु नृप किरति केतु, शुभविर्य सुविर्य समेतु ॥ रायअनंत विर्यकृतविरज, सुभुम च क्रीश्वर अति धिरज ॥ १५ ॥ असंख्यात नृप हुवा अनंतर, सांतनुराय हुवो हथीणापुर ॥ दुखकेदारण साधुउजागर, त्रिजीढालकहे गुणसागर ॥ १६ ॥

दुहा ॥ हस्तिनागपुरवर धणी, पाले राज निशं क ॥ पिण राजाने एकए, लाग्यो वडो कलंक ॥ १ ॥

साच कहे ए लोकहो, इह लोके अपजस अति पामे ॥ अरु विणसे परलोकहो ॥ कु० ॥ २ ॥ मृग सा थे राजा एकाकी, अटवी मांहि आवंतहो ॥ गंगा तट एक देवल देखी, गाढ़ो सुख पावंतहो ॥ कु० ॥३॥ एटले खेचरनी वर कुमरी, अमरीने अनुहारहो ॥ नयणे निरखी हरखी राजा, चिंतवे चित्त मझारहो ॥ कु० ॥ ४ ॥ के इद्राणी के हरी राणी, के हर नार उदारहो ॥ विद्याधर एक आवी जापे, सांजल राय विचारहो ॥ कु० ॥ ५ ॥ जानु सुता ए गंगा देवी, गिरि वेताढ्य निवासहो ॥ ए कुंवरी वर पूछ्यो राजा, जंघाचारण पासहो ॥ कु० ॥ ६ ॥ सांतनुराया सीधो बतायो, गंगातट विवाहहो ॥ देवल कीधो कारज सीधो, स्वामी आणी उछाहहो ॥ कु० ॥ ७ ॥ खेचर जइ खेचरपति लायो, मांड्यो व्याह मंडाणहो ॥ गंगा जाखे तो हु व्याहुं, जो मानो मुज आणहो ॥ कु० ॥ ॥ ८ ॥ जीम कहीशु तिम करशो राजा, वाद कीया रसनाहीहो ॥ काम विमासीने धूरे कीजे, अविमास्यो दुख प्राहीहो ॥ कु० ॥ ९ ॥ काम असोचि कीयोथो आगे, सूर्यजसा नरनाथेहो ॥ इंद्रतणी नाटकणी परणी, अरति करी सहु साथेहो ॥ कु० ॥ १० ॥ कांणिक मांही पडे जव पाणी, थाये ताम नीकामहो ॥ वायस बोट्यो कुंज अकारज, लोक वचन अजिरामहो ॥ कु० ॥ ११ ॥ पतिव्रता पति साथे न वाऊे, जन्म

अकारज जातहो ॥ ठोकी बजाइ घडो लीजे. अव
तणी शी वातहो ॥ कु० ॥ १२ ॥ सघली मानी क
पटराणी. आव्या मंदिर रायहो ॥ लाम्भीनी लावण्यत
निरखी, सहु रलियायत थायहो ॥ कु० ॥ १३ ॥
गा जायो लोक सुहायो. श्रीगांगेय कुमारहो ॥ राज
नव नवा कीधा उत्सव. जगमांही जयकारहो ॥ कु०
॥ १४ ॥ गंगा वर मागंती बोले, स्वामी आहेडो
डहो ॥ राय न माने पुत्र लेइसा. पिहर गइ मुहमो
हो ॥ कु० ॥ १५ ॥ कुव्यसन वालो वाच न माने.
ढ न जाणे मर्महो ॥ नेम न माने प्रेम न माने. नव
माने कुल कर्महो ॥ कु० ॥ १६ ॥ मात न माने त
त न माने, भ्रात न माने जोरहो ॥ नारी न माने न
द न माने, बोले बोल सजोरहो ॥ कु० ॥ १७ ॥ ह
थी जेरे हराये होवे, कीम सामो थया जायहो ॥
मीए नहीतो जाजी सकीजे, रुसी गइ सा न्यायहो ।
॥ कु० ॥ १८ ॥ मात पिता घर नंदन शिख्यो, सक
ल कला गुण वंदहो ॥ चउवीसां बरसानो हुउ, नंदन
आनंद कंदहो ॥ कु० ॥ १९ ॥ एक दिवस राजा नि
कलायो, साथे घणा नर वृंदहो ॥ गंगातटे अति उ
गमो मंड्यो, श्री गांगेय नरेंदहो ॥ कु० ॥ २० ॥ गं
गा चिंते दोइ पवाडा, ए मुज आरति ठामहो ॥ पुत्र
मरंता निपुत्री श्रीतम, मरंता राम कुनामहो ॥ कु० ॥
॥ २१ ॥ गंगा आवी दे समजावी, पाछी गइ ततका

लहो ॥ गुणसागर नृप सुत घर आव्या, चोथी ढा
ल रसालहो ॥ कु० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ राजा कुव्यसन नवी तजे, गंगा नावे बा
र ॥ साहंकारी नारीनी, ए सहीनाणी विचार ॥ १ ॥
आदरनो जलो कापडो, निरादर स्यो चीर ॥ जली
समुहनी राबडी, महातम विणसी खीर ॥ २ ॥ बालो
सोनुं सामटुं, बालो जोग विलास ॥ आदर अजराम
र महा, बीजु सहु विखास ॥ ३ ॥ खेचीकुटी कामनि,
लाता बुकाखाय ॥ निःपितामरवाडरे, ते कीम मुह
गी थाय ॥ ४ ॥ तेज नसहे ताजणो, त्रिया नसहे अ
पमान ॥ तिम तिम मूल वाधे घणो, शंक धरे राजा
न ॥ ५ ॥ जाव जीवनु रूशणु, गंगादेवी नरेश ॥ ए
क वचनने कारणे, सह्यो न जाय कलेस ॥ ६ ॥ कुंवरे
करी नृप सोजीत, कमले करी जिम वार ॥ दिवस क
री दिनकरज्यूं, सिलेकरी जिम नार ॥ ७ ॥ जमुना त
ट नृप आवियो, दिठी कुमरी एक ॥ तनमन लाग्यो ते
हसुं, विसरी गयो विवेक ॥ ८ ॥

ढाल ५ मी ॥ वधव बोल मानोहो ॥ ए देशी ॥
राजा प्रेम लगायोहो, लोचन हुवा लालची ॥ लज्या
गुण जांग्योहो ॥ रा० ॥ १ ॥ नयन अन्याइछे खरा,
जिहां तिहां लागेहो ॥ सोच न आगल पाछले, जुंमा
पण आगेहो ॥ रा० ॥ २ ॥ कोडी कुहेडा केलवे, ए
केकिमां कुवाणीहो ॥ चतुरा चहुटे पारिखा, ए मनकी

सहिनाणिहो ॥ रा० ॥ ३ ॥ स्वर्गमृत्य पातालनी. सव नारी लुंटीहो ॥ जातीथी ऊंची अंवरे, अघवचथी तूटीहो ॥ रा० ॥ ४ ॥ एकही अंग वखाणता, कवि पार न पावेहो ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश्वरू, ए लिला गावे हो ॥ रा० ॥ ५ ॥ ईंद्र चंद्र नर राजवी, बलवंता बलीयाहो ॥ कोई किणरो को नहि, एह मार्या गलिया हो ॥ रा० ॥ ६ ॥ नयण न पाछा आवहि, जाणी बांध्या ताणीहो ॥ नाविडा साथे बोलीयो, राय कोमल वाणीहो ॥ रा० ॥ ७ ॥ ए कहे केहनी कुंवरी, डोकर तुं जाणेहो ॥ ए कुंवरी नृप माहरी, राय केरे सुख आणेहो ॥ रा० ॥ ८ ॥ सत्यवंती नामे भली, सुरतरुनी वेलीहो ॥ पुण्यवंत जे प्राणीया, थाइतसु भेलीहो ॥ रा० ॥ ९ ॥ राय प्रधान बोलावीयो, ए मुज परणावोहो ॥ ढिल किया ढीलो पडे, व्याह वेग करावोहो ॥ रा० ॥ १० ॥ नावडीयो माने नहि, एक अडवी रोके हो ॥ पुत्री पुत्रा कारणे, नृप पदवी लोकेहो ॥ रा० ॥ ॥ ११ ॥ विलखाणो राजा फिरी, निज मंदिर आवे हो ॥ वाप दुचिंतो देखता, कुंवर दुख पावेहो ॥ रा० ॥ ॥ १२ ॥ भक्ति नहि मा वापनी, नवी जाणे पीडाहो ॥ तेतो वेटा जाणवा, पेटना किडाहो ॥ रा० ॥ १३ ॥ जाणी वात सुवेगसुं, नाविम्रा समझावेहो ॥ करी दिलासा तेहने, नृप व्याह मनावेहो ॥ रा० ॥ १४ ॥ राज तणे तो कारणे, सुत बापने मारेहो ॥ गांगेया गुरु

आपणो, गुरु कार्य सारेहो ॥ रा०॥१५॥ माहरी धरणी धरणिनो, तु धणीज कहेताहो ॥ उचा जाइ अंबरे, बोले गह गहताहो ॥ रा० ॥ १६ ॥ करी नहि करशे नहि , को करत न दीठोहो ॥ गुरु गांगेया सारीखा, जगमें जस मीठोहो ॥ रा० ॥ १७॥ नाविको कुंवरसु कहे, एठे नृप कुमरीहो ॥ वेली समा फल नीपजे, एसा नहि अमरीहो ॥ रा० ॥ १८ ॥ सत्यवंती सुं व्याहती, कीधां रंगरोलहो ॥ पंचेंद्रि सुख भोगवे, वर पुण्य कलोलहो ॥ रा० ॥ १९ ॥ सत्यवंती कूखे उपनां, दो नदन सलुणाहो ॥ बाप थकी अधिका हुवा, तेजें करी दुणाहो ॥ रा० ॥ २० ॥ चित्रांगद नामें भलो, कुवरजी नीकोहो ॥ चित्रविरज ए दूसरो, कुरु वंशी टीकोहो ॥ रा० ॥ ५१ ॥ राजा आहेडो तजी, शुभ मारग आयोहो ॥ साधु संगति चालतां, जगमे जस पायोहो ॥ रा० ॥ २२ ॥ पाप खमावी पावलो, आतम आराधिहो ॥ काल कीयो धरणि ढली, सुरनी गति साधीहो ॥ रा० ॥ २३ ॥ चित्रांगद राजा कीयो, सब लोका साखीहो ॥ श्रीगांगेयनरेश्वरे, निज वाचा राखीहो ॥ रा० ॥ २४ ॥ निलांगद गांधर्व सुं, चित्रांगद लडीयोहो ॥ कह्यो न मान्यो भाइनो, समरांगण पडीयोहो ॥ रा० ॥२५॥ माय रोती सुत दुःखथी, फिरी सोग मीटायोहो ॥ पांचमी ढाले सांतनु, गुणसागरे गायोहो ॥ रा० ॥ २६ ॥

दुहा ॥ सगपण संसारे घणां, भाइ समो नव को य ॥ लक्ष्मण काजे रामजी, कहो केम दीधो रोय ॥ ॥ १ ॥ भीरू पड्या भाइ भजे, भाइ बिराणा भाज॥ भरतनूप भर रात्रिमें, दोड्यो लक्ष्मण काज ॥ २ ॥ पुरुपोने नारी घणी, नारीथी सुत होय ॥ मा जाया बंधव हुवे, अंतर मोठो जोय ॥ ३ ॥ भाइ वयर वीशो धवा, श्रीगांगेय कुमार ॥ निलांगद रणमें हण्यो, रा स्यो कुल व्यवहार ॥ ४ ॥ लघु भ्राता पट थापियो, वरती आण अखंड ॥ प्रवल प्रताप महावली, तस भुज दंरू प्रचंड ॥ ५ ॥ कासी नृपतिने भली, कन्या तीन प्रधान ॥ अंबा वाली अविका, व्याह तणो मं भाण ॥ ६ ॥ काशी नृप ते तेडीया, राजा राजकुमा र ॥ गजपुर धणीने तेमीयो, जाती हिण अवधार ॥७॥

ढाल ८ ठी ॥ इम जिन पूजीए ॥ ए देशी ॥ आ मण दुमण होइ रह्योरे, गजपुर केरोरे राय ॥ गंगासु त पूछ्यो तदारे, जाव नदिणो जायरे ॥ १ ॥ पक्ष भ लो साहि, निपक्षिसिदायोरे, पक्ष न गंजिए, पक्षिणि इं म्ा पायो ॥ प० ॥ ए आंकणी ॥ अरति अलुर वाधी घणीरे, गहवरीयो नृपाल ॥ जाणे धरणी विवर दीएरे, तो जइए पायालेरे ॥ प० ॥ २ ॥ जाणी निश्चे वातनो रे, भिषम भिपम रूप ॥ मुझ बइठां लघुता हुवेरे, तो मु झ वमो विरूपरे ॥ प० ॥ ३ ॥ गंगासुत चाली ग योरे, काशी नृपने पास ॥ कन्या तीने अपहरीरे,

माञ्यो कुज उल्लासोरे ॥ प० ॥ ४ ॥ नाना-लोगा मोचणोरे, वलीया उजड माग ॥ वलीया होड करे जी केरे, नली शिर उपर पागोरे ॥ प० ॥ ५ ॥ हत प्रहत नृपति कीयारे, जील्यो गंगानद ॥ कन्या लेइ आवी थोरे, गजपूरमें आणंदोरे ॥ प० ॥ ६ ॥ परणावी तीने तदारे, हरख्यो गजपुर इश ॥ पद्म प्रसादे हुइ सहीरे, सफल सकल जगीसोरे ॥ प० ॥ ७ ॥ अंबीका कूखे उपनोरे, श्री धृतराष्ट्र कुमार ॥ बाला पांडु जाइउरे, अंबा विदूर उदारोरे ॥ प० ॥ ८ ॥ रोग वसे आतुर थयोरे, छूटयां नृपनां प्राण ॥ ए दया गति अनुसारथीरे, प्राण लीया घट आनोरे ॥ प० ॥ ॥ ९ ॥ पांडु राजा थापीयोरे, थंनण सहु परिवार ॥ पृथ्वी फलदायक माहारे, राजा पुण्य प्रकारोरे ॥ प० ॥१०॥ छठी ढाल सुहामणीरे, गुणसागर उछाह ॥ नविक जनो तुमे सांभलोरे, कुंता कुमरी व्याहोरे॥प०॥११॥

दुहा ॥ श्री पांडु पृथ्वीपति, मधु उछवने काज ॥ राजा गाजी वनमें गयो, खेलण केरे साज ॥ १ ॥ खेल खेलतां खांतसुं, एक नर आव्यो नेठ ॥ पलक विलोकन कीजतो, उभो तरुवर हेठ ॥ २ ॥ पलक हाथ राजा लीयो, नारी रूप अपार ॥ सुंदरता नख शिख लगे, जोवे वारंवार ॥ ३ ॥

ढाल ७ मी ॥ सीताजी दीएरे उलंभडो ॥ एदेशी ॥ राजा रंज्यो रूपसुं, नयन रह्या लोभाय ॥ जोतां त्रप

ति न ऊपजे, सोजा सुख कही न जाय ॥ १ ॥ ए ज
ग मांही मोहनी, मोह्यो सहु संसार ॥ पशु पंखी न
र देवता, वश कीधा इण नार ॥ ए० ॥ २ ॥ पहीलो
मोह्यो सुरपति, सो लाग्यो इंद्राणी पाय ॥ इंद्राणी ला
ते हण्यो, तो तस रोप न थाय ॥ ए० ॥ ३ ॥ शंकर
स्वअंग ज ठवियो. राच्यो पार्वती रूप ॥ टेक तजी त्रि
या आगले, नाच्यो धरी विरूप ॥ ए० ॥ ४ ॥ राधा
रूप रसापति, रमीयो रलियायत होय ॥ रासमंडल
रचना कीया. ए कौतक प्रगट्यो जोय ॥ ए० ॥ ५ ॥
राजा पुछे पूरुषने, ए रूप कहे केहनो होय ॥ कुंति
रूप सुहामणो. इम भाखे परदेशी सोय ॥ ए० ॥ ६ ॥
खेल सहु ए वीसरयो. वीसारियो सहु काज ॥ क्षुधा त्र
षा सहु विसरयो. जाणे मिलीए आज ॥ ए० ॥ ७ ॥ कुं
ति कुंति कुंतिको. लाग्यो राजा ध्यान ॥ ऊछे जल जि
म माछलो, नृप वेदन असमान ॥ ए० ॥ ८ ॥ दीधो
दान अनंतते. पंथी सोरीपुर जाय ॥ राजा आगे व
र्णवे. गुणवंतो गजपुर राय ॥ ए० ॥ ९ ॥ तात गोदे
बेठि सुणे. कुंति नृपना वखाण ॥ रूपकला गुण मन
वस्यो. तव कुंवरी करइ निदान ॥ ए० ॥ १० ॥ के
परणु गजपूर धणी. के परणु पर भव जाय ॥ अवर
पुरुप बंधव समा. ए निश्चे मन लाय ॥ ए० ॥ ११ ॥
पांडु नृप घर आवियो. आहाट दोहट अपार ॥ करे फि
रे उचाटीये. न जणावे केहने सार ॥ ए० ॥१२ ॥ एक

दिवस वनमें गयो, खेचर खील्यो देख॥ आप चिंता तजी पर चिंता, आणी मनसु विशेप ॥ए० ॥ १३ ॥ विरला जाणे परगुणा, विरला पाले प्रेम ॥ विरला पर कारज करा, पर दुखे दुखीया तेम ॥ ए० ॥ १४ ॥ ज रेपरे अवलोकता, खांडो दिठो उदार॥ उपध बलिया दोय जला, एक घाव रुजावणहार॥ ए० ॥ १५ ॥ खी ला काल्या अगथी, उपधे कीध निरोग ॥ राजा पुछे ए वडो, कीयो तुज दुःख संजोग ॥ ए०॥ १६ ॥ खे चर कहे सुण मित्रजी, मुज राणी लीधो को जाय ॥ केड हुवो हुं एकलो, तेह कारण दुःख थाय ॥ ए० ॥ ॥ १७ ॥ निःकारण उपगारीयो, हुं थारी फिरफीर व लिजाउं ॥ चाम करावु खासडा, तोहि उसीगल नवि थाउ ॥ ए० ॥ १८ ॥ उपध वलियां ए ग्रहो, ए मु द्रडीलीजे स्वाम ॥ बहु गुणगारी ए मुद्रडी, लेइ जा ये वंछित ठाम ॥ ए० ॥ १९ ॥ अवसर जाणी काम नो, चित्तमांहि आणावे देव ॥ इम कही सोइ चाली यो, निज स्थाने ततखेव ॥ ए० ॥ २० ॥ मुद्रडी प्र सादथी, मन केरी पहुचे आश ॥ जयति श्रीशुभग ति मति, पामे ते पुण्य प्रकाश॥ ए० ॥ २१ ॥ ढाल सातमीए कह्यो, मिलवा उपाय अपार ॥ गुणसागर उपदेशथी, भावि करजो सर्वने उपगार ॥ ए०॥ २२॥

दुहा ॥ कुंती कुमरी चितवे, मन चिंत्या ए काज ॥ दैवन पूरा पाडसे, तो भलो मरवो आज ॥ १ ॥

इम चिंतवि ते नीसरी, गई महावनमांही ॥ गलफा सो मांडी कहे, सुण कुलदेवते साहि ॥ २ ॥

ढाल ८ मी ॥ गौतम समुद्रकुमार ॥ ए देशी ॥ तुं जई केहेजे माय, माहारा मन तणी, पांडु पृथ्वीपति भणीए ॥ कुंतिकुमरी आज, विरह तुंमारभे, प्राण त ज्या विण तुं धणीए ॥ १ ॥ इम कही गले पास, मां के जेटले, सानिध हुई तेटलेए ॥ वर मुद्रनी प्रभाव, मिलवा सुंदरी, राजा आव्यो एटले ए ॥ २ ॥ पल क रुप अनुहार, कुमरी उलखी. पासो तोडी नाखीयो ए ॥ पदमनिने परसंग. आतुरता घणी, भाव हिया नो भाखियोए ॥ ३ ॥ दासी पास मंगावी, सामग्री सहू, व्याहतणी विधि साचवीए ॥ पूरो मनना कोड, होडा होडसुं, हसीरमी मन राचवीए ॥ ४ ॥ गर्भ त णी उत्पति, चित्त विचारीउ. राय जणावी सादरीए ॥ सहिनाणिने काज. आपी मुद्रडी, राय गयो घर संच रिए ॥ ५ ॥ कुमरी पिण घरे आवी, माय जणावीए, दिनकेतेए वातडीए ॥ गुप्तपणे सुत जायो. जलमें वा हिउ, जई निसरीयो शुभ घडीए ॥ ६ ॥ कर्ण कहा यो नाम, मोटो राजवी, माता कीधी उजलिए ॥ कु मरी केरो व्याह. पांडुरायसुं, प्रगट कियोपुगीरलिए ॥ ॥ ७ ॥ शुभसुपना अवलोय. सुभ वेलासहि. युधीष्ट र सुत जाईउए ॥ भीम महा बलवंत, कौरव किचक. हंता नाम धराविउए ॥ ८ ॥ अर्जुन अरी कुलकाल,

भिष्म करणनो. हणणहार कहाईउए॥ नकुल, अने सहदेव, पांडव पंचए, जगमांहि जसपाइउए॥ ९॥ परमारथ आराधी, करणिनें वले. मातासु सिव पास शेए॥ उत्तमगति मतिवास, लेहसे ते सहि, गीरुआ ना गुणगायशेए॥ १०॥

दुहा॥ तेणे समे देश गंधारनो, नृप सुंवल इणे नाम॥ आठ छे तेहने अगजा, गंधारी आदे गुण ग्राम॥ १॥ गोत्रदेवीना वचनथी, धृतराष्ट्रने गेह॥ शकुनी सुतसुं मोकली, कन्या आठे तेह॥ २॥ शकुनी धृतराष्ट्रने. नगनी परणावी आठ॥ माहामोछव मंडाणसु, सघलो मेली ठाठ॥ ३॥ कन्या नामे कौमुदीनी, देवक नृपनीताम॥ वीदुर पिण परण्यो वली, सुधारया सघला काम॥ ४॥

ढाल तेहिज॥ श्री धृतराष्ट्र सुग्रेह, गंधारी कूखे, कौरव शतहि सुतपणेए॥ ऊपजीया अदभूत. दुर्योधन आदे, वाधे आनद अतिघणोए॥ ११॥ माहेंद्रि कुमरी व्याही, दमघोषां जणी, सुत शीसुपाल चरी घणीए॥ संक्षेपे सबंध, ग्रंथ वधतो घणो॥ जाणी कथा न विस्तरीए॥ १२॥ ढाल आठमी एह, नेह धरी सुणे, तस आगणे अफला फलेए॥ गुणसागर गुणगेह, तेह पनोताए, जेह कथा रस सांभलेए॥१३॥

दुहा॥ दुर्योधन कपटि महा, कपटकेलवे कोम॥ पांडव सरल सभावीया, न करे तोमा तोड॥ १॥

कौरव निखस खोटपी, पांडव जोर विशेष ॥ बालप णाहीथी चल्यो, मांहो मांही अद्वेप ॥ २ ॥ कौरव बांधी भीमने, नांखे पाणी मांही ॥ बंधन तोडी कुटि या, कौरव सोहि आही ॥ ३ ॥

ढाल ९ मी ॥ जुठन हाले ने जुठन चाले ॥ ए दे शी ॥ बलवंतो जाणी खरो, श्री भीम कुमार होलाल॥ विप दीधो दुर्योधने, आणी द्वेप अपार होलाल ॥१॥ जोजो क्युं न करे अरि, अरिनो शो विश्वास होला ल ॥ कोई म करजो पंडितो, अँरिथी विपनास होला ल ॥ जो० ॥ २ ॥ काम पड्या बेटो हुवे, काम सरी यां बाप होलाल॥ दाव लही दुर्जन घणुं, देखावे सहि आप होला० ॥ जो० ॥ ३ ॥ अंतःकरण न मेलवे, मु खे मीठा होय होलाल ॥ सज्जन ललितांग संबंदथी, समजो भविलोय होला० ॥ जो० ॥ ४ ॥ जो परमे श्वर पाधरो, नहि पीसु न प्रवाह होलाल ॥ कौरवनी गरसण कला, पांडव जुए राह होला० ॥ जो० ॥ ५ ॥ बरयामे अंतर करे, मुंगाने ए जोई होलाल ॥ कर ता राखे जेहने, अरिथी सुं होई होलाल ॥ जो० ॥ ॥ ६ ॥ विप अमृत होई प्रणामिउं, वायु सुतने सोई होलाल ॥ पूर्व पुण्य प्रसादथी, पहुंचे नहि कोई हो लाल ॥ जो० ॥ ७ ॥ बिजकुखेता दानज्युं, वि णपात्र विचार होलाल ॥ वांझणसुं घरवासजी, नीफल ते अवधार होलाल ॥ जो० ॥ ८ ॥ कौरवना उपक

मंथी मारए श्री भीमहोलाल ॥ एक न लागे आक रो, वाउल जीम हीमहोला० ॥ जो० ॥ ९ ॥ ठठोत्तरसो एकठा, पढवाने काजहोलाल ॥ कृपाचारजजी भणी, सोप्या श्री माहाराज होला० ॥ जो० ॥ १० ॥ प्रज्ञा बले आगे निसरे, अर्जुन ने ए कर्ण होलाल ॥ बुद्धी विशेप विचारियें, ग्रहे पडंता वर्णहोला० ॥ जो० ॥ ११ ॥ दिवस अणोजाने सहू, रमवाने जायहोलाल ॥ गेंद दडे अति खेलतां, रलियायत थायहोलाल ॥ जो० ॥ ॥ १२ ॥ दडी कूदी कूवे पडी, न कढाई जामहोला ल ॥ माखि जेम महूआलने, रहे विंटी तामहोला ल ॥ जो० ॥ १३ ॥ द्रोणाचारज आवीयो, कीधो त त्र प्रणाम होलाल ॥ बाणकलासु गइंदने, काढी ने अभिराम होलाल ॥ जो० ॥ १४ ॥ कृपाचारज पू छियो, भीष्म धरी स्नेहहोलाल ॥ द्रोणाचारज पा खति, मेल्या सुत तेहहोलाल ॥ जो० ॥ १५ ॥ अ स्त्रशास्त्रनीकला, साधे ते सु विशेपहोलाल ॥ कर्ण श शि तारा विषे, रवि अर्जुन देख होलाल ॥ जो० ॥ ॥ १६ ॥ धनुष्य चहाडे खेंचवे, नाखेवे ए बाणहोला ल ॥ करवे चोट अचुकजी, हरीनंद सुजाणहोला० ॥ जो० ॥ १७ ॥ दिन दिन तेज प्रतापसु, वाधंतो ए वान होलाल ॥ सघला मांही सामटो, पामे अति सनमा न होलाल ॥ जो० ॥ १८ ॥ द्रोणाचारज एकदा, का लिंद्रीमें स्नानहोलाल ॥ करतां तांताणिए ग्रह्यो, नवि

दोव्या आनहोलाल ॥ जो० ॥ १९ ॥ अर्जुन तव आयो धसी, गेडावणाने हेतहोलाल ॥ हेत घणो गुरु शिष्यने, जेहवा ए युग नेतहोलाल ॥ जो० ॥२०॥ बाहिर आव्या प्रेमसुं, न प्रसशो तेहहोलाल ॥ जाणुं कौरव कोपशे, गर्वामे वलि एहहोलाल ॥ जो०॥ ॥ २१ ॥ एकांते हरीनंदसुं, गुरु बोल्या एमहोलाल॥ धनुष्यकला अवरा नणि, देवा मुज नेमहोलाल ॥ जो० ॥ २२ ॥ राधावेद कला शिखवी, अर्जुन वाचा लीधहोलाल ॥ दुर्योधनने नीम गदानी, युद्धतणी विधि साध होलाल ॥ जो० ॥ २३ ॥ यथा योग्य जे जाणिया, तेहवी विद्या आपहोलाल॥ कला देखावणआपणी, वात विशेपे थायहोलाल ॥ जो० ॥ २४ ॥ एतो नवमी ढाल विशेपे, कुमर विद्या पामहोलाल ॥ श्री गुणसागर सूरजी, गुरु प्रणम्यो शिरनामहोला०॥२५॥

दुहा ॥ निष्म तो नलपण नणी, मंचक संच आरंन ॥ मडावी पुत्रां तणो, देखण समरारंन ॥ १ ॥ बेठा वड वड राजीया, आगल सकल कुमार ॥ कला दिखावे आपणी, शस्त्रास्त्र तणी अपार ॥ २ ॥ रणरंगे राच्या सहु, विस्मय पाम्या ताम ॥ लोक सकल मन चिंतवे, मतको थाय अकाम ॥ ३ ॥ दुर्योधनने नीमजी, मांहोमांही कलेश ॥ करत निवारया द्रोणसुत, लहि तात आदेश ॥ ४ ॥

ढाल १० मी ॥ तुमें पीतांवर पेरो होके मुखने

मरकलडे ॥ ए देशी ॥ एतो गुरु द्रढक प्रेरयाहो, पां
डव अर्जुन उदाश ॥ एतो विद्या देखावेहो, पांडव ध
नुष्यकी वारु ॥ १ ॥ एतो राधा वेद्धहो. पांडव निरखी
राजानो ॥ एतो सराहण किजेहो. पाडव मेरु समान
॥ २ ॥ एतो कौरव रायहो. पांडव सयनो वताई ॥ ए
तो करण कराईहो. पांडव चंपापुरी पाई ॥ ३ ॥ ए तो
सारथ सुतहो. पांडव एतले आयो ॥ ए तो रायके आ
गेहो. पांडव करणे बेसायो ॥ ४ ॥ ए तो विपरित वा
तहो. पाडवराय रिसाणा ॥ ए तो खरखावा द्राखहो.
पांडवकु दिये सयाणा ॥ ५ ॥ ए तो अर्जुन भीमहो.
पांडव लठिया दोई ॥ ए तो चंपाकि उपावेहो. पांम
व कर्णठे कोई ॥ ६ ॥ ए तो दोई वमविराहो. पांडव
रणरंग मांगे. ए तो कौरव करणहो. पांडव ऊभा आ
गे ॥ ७ ॥ ए तो हाकोहाकहो. पांडव रवि रथ वाजी ॥
ए तो चालीया वेगेहो, पांडव रजनी विराजी ॥ ८ ॥
ए तो रजनी भमासहो, पांमव कौरव जाणी ॥ ए तो
मंडीया प्रातहो, पांडव गुरु दया आणी ॥ ९ ॥ ए
तो समजीया दोइहो, पांडव मेट लडाई ॥ ए तो कौ
रव तातेहो, पांडव सुत बोलाई ॥ १० ॥ ए तो पूछी
यो वंशहो, पाडव मुद्रा देखाई ॥ ए तो करणजी जा
णयोहो, पाडव पांमव भाई ॥ ११ ॥ ए तो गंगामें
आयोहो, पांमव लीयो कढाई ॥ ए तो कियो मोछ
वहो, पांडव खाट वधाई ॥ १२ ॥ ए तो सहणामां दे

ख्योहो, पांडव सुरस तेजो ॥ ए तो रविसुत नामहो, पांडव लहियो सहेजो ॥ १३ ॥ ए तो करतल काने हो, पांडव दीठा ताम ॥ ए तो थाप्यो अभिरामहो, पांडव वर्णजी नाम ॥ १४ ॥ ए तो कौरव नृपहो, पांडव मच्छर धरंतां ॥ ए तो निज घर आवेहो, पांडव सोच करंतां ॥ १५ ॥ ए तो प्रभुताई पेखेहो, पांडव जगीमझारो ॥ ए तो प्रत्यक्ष खिजेहो, पांडव वहे अतिखारो ॥ १६ ॥ ए तो मांहोमांहीहो. पांडव उपज्यो विरोधो ॥ ए तो पांडव नृपहो, पांम्व टालवा क्रोधो ॥ १७ ॥ ए तो देश विलातहो. पांम्व आपिया जुवा ॥ ए तो एवमो पक्षहो. पांडव जूआ जूआ हुवा ॥१८॥ ए तो गयाकरो शोकहो,पांम्व रंचन आणे ॥ ए तो हो नारी वातहो. पांडव अधिक न ताणे ॥ १९ ॥ ए तो वरत तिवारहो. पांडव वरते अपारो ॥ ए तो एहथी जाणयोहो, पांम्व श्रीहरी प्यारो ॥ २० ॥ ए तो काहि दसमीहो. पांम्व ढाल थुणिजे ॥ ए तो श्रीगुणसागरहो, पांम्व सुजस सुणिजे ॥ २१ ॥

दुहा ॥ अंधक विष्णु दिक्षा ग्रही. पाले जिनवर आण ॥ सौरिपुर राज करे भलो. समुद्रविजे राजान ॥ १ ॥ नामें शिवादे भामनी, आश्रव तणो परीहार ॥ सुखदाई सहू लोकने. शिलतणे शिणगार ॥ २ ॥ रूप शिरे लक्षण शिरे, कलाशिरे गणधाम ॥ श्रीवसुदेव कुमारनो, चरित्र भणुं अभिराम ॥ ३ ॥ चारित्र पाली

निर्मलो, नंदिखेण अणगार ॥ करी वेयावच साधुनी, पायो सुजस अपार ॥ ४ ॥ आयु सागर विशनो, भोगवि सुर सुख सार, शेष पुण्यने कारणे, थयो वसु देव कुमार ॥ ५ ॥

ढाल ११ मी ॥ नणदलनी देशी ॥ श्री वसुदेव कुमारजी. रूप अनुप रसाल हो कुमर ॥ भोग पुरंदर सुंदरु. सोभागी सुकुमाल हो ॥ कु० ॥ ॥ १ ॥ मोहनवेल कुमारजी ॥ ए आंकणी ॥ अवर अनेरा राजीया. राजा भरत कहेवहो ॥ कु०॥ अवर अ नेरा कुमारीया, कुंवर तो वसुदेवहो ॥ कु०॥ मो०॥२॥ ॥ मित्र इंद्र समान छे. सेवक अमर अनूपहो ॥ कु० ॥ आपण सुरपति साचलो. गजऐरावण रूपहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ ३ ॥ स्वर्ग सरीखो जाणीए. सौरिपुर सु ख वासहो ॥ कु० ॥ स्वईछा रमत करे. करतो लि ल विलासहो ॥ कु०॥ मो०॥४॥ देव दूगंधक सारिखो, काम तणो अवतारहो ॥ कु०॥ मोही रही अति मान्न नी. लागी होभे लारहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ ५ ॥ करे कुतुहल कामनी. छांडी घर व्यापारहो ॥ कु० ॥ फि रे कुदति हरणली, न लहे घरनी सारहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ ६ ॥ केइ अलुणो रांधति, केई लुण दोवार हो ॥ कु० ॥ आधो पीरसी पिरसणो, जाइ तजी भ रतारहो ॥ कु० ॥ मो० ॥७ ॥ भूपण थानक पालटे, आधो करी सिणगारहो ॥ कु० ॥ टोले टोले सामटि,

साथे फिरे सब नारहो ॥ कु०॥ मो०॥ ८ ॥ घर उघा डांहि रहे, थाये अति उजाड़हो ॥ कु० ॥ साह मिली रावले गयां, वालण पगे किवाडहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ ॥ ९ ॥राजा भाखे सादरो, केम पधरया साहहो ॥ कु०॥ पामी आदर अति घणो, साह वदे सोछाहहो ॥ ॥ कु० ॥ मो० ॥ १० ॥ पुज्य प्रसाद तुमारडे. सुखि या सगला लोकहो ॥ कु० ॥ लाभ घणो व्यापारमें, अनधन सर्व संजोगहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ ११ ॥ तो तुमे केम देखाडबो, आरतिवंता आजहो ॥ कु०॥ जे जिमछे तिम दाखवो, लाजे विणसे काजहो॥ कु०॥ मो०॥१२॥ एवात कहंता संकिए. अण कहिया नरहायहो ॥ कु० ॥ सापे ग्रहि छछुंदरी, एह परे भ्रम थायहो ॥ कु० ॥ ॥ मो० ॥ १३ ॥ दोश न कोई कुमारनो, निरंकुशी त्रिय जातहो ॥ कु० ॥ विकल थइ विधुल महा, किशी कराई तातहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ १४ ॥ कान गया लोचन गयां, गई लाज विशेपहो ॥ कु० ॥ कुमर दे ख्यां प्रियानी, रहिछे इंद्रि शेपहो ॥ कु० ॥ मो०॥१५॥ तरुणि वुद्धि वालिका, एक सरिखि होयहो ॥ कु० ॥ सोवंती भांखे सखी, आवंतो प्रभु जोयहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ १७ ॥ कुमर न रहे खेलतो, त्रिया न रहे घ र मांहिहो ॥ कु० ॥ वास अनेरी जायगा, आप आप नृप प्राहिंहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ १८ ॥ नृपने थइ वि च्यारणा, कुमरशुं अति प्रेमहो ॥ कु० ॥ लोक विणा

नही साहिबी, अब कहो किजे केमहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ १९ ॥ अर्थ मीत दोइ राखणो, एह सयाणो कामहो ॥ कु० ॥ विप्रसुता संवधथी, सोच महा अभिरामहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ २० ॥ शिख देइ शाहा भणी, महिलमांहि नर देवहो ॥ कु० ॥ आयो आराति जाणके, देवि वदे ततखेवहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ २१ ॥ नामे शिवा शिव कारणी, पट गुण धारक नारहो ॥ कु० भेद लही लोका तणो, किम ले वात समारहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ ५२ ॥ एतले कुमर आविया, वेठो, नृपनी गोदहो ॥ कु० ॥ राजा राणी रिजवे, चारु वात विनोदहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ २३ ॥ प्रिती पोपी परिघल पणे, राय वदे सुविच्यारहो ॥ कु० ॥ आज का ल तो अति घणो. दुर्वल थयो कुमारहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ २४ ॥ राणी भाखे रायशु, आणी अतिशे प्यारहो ॥ कु० ॥ माहारो वचन विशेपथी, माने नहींय लिगारहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ २५ ॥ फिरे घणुं वन बागमें. तने लागे अति तापहो ॥ कु० ॥ थयो खरो ही दूवलो, माहरे मन संतापहो ॥ कु० ॥ मो० ॥२६ ॥ भूप भणे वत्त सांभलो, मित्रा केरे संगहो ॥ कु० ॥ खेल करो मन भावतो, मेहेल मांही मन रंगहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ २७ ॥ प्राण थकी प्यारो खरो, भाई पुत्र समानहो ॥ कु० ॥ तुज सुखीए सुखीया हमे, तुवे प्रेम निधानहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ २८ ॥ ए इ

ग्यारमी ढालमें, मानी वात विशेषहो ॥ कु० ॥ श्रीगु
णसागर सूरिजी, अबकीम ऊपजे द्वेषहो ॥ कु०॥ २१॥
दुहा ॥ मेहेल मांहिछे वाग वर, तरुवर जात अ
नेक ॥ वृक्ष अशोक सुहामणा, कुवा वाव विशेख ॥
॥ १ ॥ क्षण घरमें क्षण वागमें, क्षण भाई चित
चाव ॥ खेलावे अति खांतशुं, भोजाई भल भाव ॥२॥
ढाल १२ मी ॥ ऊठ गोविंदा ऊठ गोपाला ॥ ए
देशी ॥जूठ न हाले जूठ न चाले, जूठ न आघो
थाय होलाल ॥ भेद लही जूठी मायानो, कुमर परदेशे
जायहोलाल ॥ जू ० ॥ १ ॥ वावना चंदन कर कचो
ली, दिधी दाशी हाथहोलाल ॥ एतले कुमरजी चली
आयो, मित्रा केरे साथहो लाल ॥ जू०॥ २ ॥ कुमर
पूछे रे ए कांई, सा तव बोले गाजहो लाल ॥ देवी शी
वाए चंदन भेज्यो,राय विलेपन काजहो लाल॥जू०॥३॥
द्ये मुजने ए चंदन चेटी, करु विलेपन आपहो लाल
॥ चेडीनापे जीभकरंता, दीए मुह माथे थापहो ला०
॥ जू०॥४॥ चंदन लेई विलेपन करी तन, घणुं पो
मावे साईहो लाल ॥ माहरा मारयां बुंब न वाहरु, प
हिली न समझी कांईहो ला० ॥ जू० ॥ ५ ॥ होइ
खिसाणी बोले ताणी, चेडी चंचल जातहो ला० ॥
तन मन जूठी ने अति रूठी, वाणी वदे अकुलात
हो ला० ॥ जू० ॥ ६ ॥ नमणो खमणो माणस नि
को, न नमे न खमे जेहहो ला० ॥ आका केरां इंधण

सरिखो, लेखविए नर तेहहो ला० ॥ जू० ॥ ७ ॥ जो एहवां लक्षण छे तारां, तरे पुकारया लोकहो ला० ॥ न्याये पछ्योछे बंधीखाने, कुमर कहे ए रोकहो ला० ॥ जू० ॥ ८ ॥ चित्तमे चमकी चतूर पणाथी, करी दिलासा सातहो ला० ॥ पूछंता तव प्रगट कीधो, सहु संबंध प्रकाशहो ला० ॥ जू० ॥ ९ ॥ साच जूठनी करण परिक्षा, पोले आवे तामहो ला० ॥ दरवाजो रोकि तव जाण्यो, साचो सघलो कामहो ला० ॥जू० ॥ १० ॥ पाछो फीरी मंदिर आयो, चित्तशुं चिंते एहहो ला० ॥ कुकर नुसानो काम नहीं कोई, जाण्यो नाई सनेहहो ला० ॥ जू० ॥ ११ ॥ धिग् मुज जाणपणो ए अधिको, धिग् मुज रूप रसालहो ला० ॥ दुःखदाई हुउं हुं सहुने, अरु शिर आयो आलहो ला० ॥ जू० ॥ १२ ॥ अहि मणि कस्तूरी मृग मैंगल, दंत थकी विपनाशहो ला० ॥ चमरी पूंछ थकी नर रूपे, गुणथी वैरनिवासहो ला० ॥ जू० ॥ १३ ॥ विण गुणहे ए लोक पूकरया, राजा मानी वातहो ला० ॥ अणख आया नाई रीसे, मेंतो दुःख न खमातहो ला० ॥ जू० ॥ १४ ॥ मान गयो ने माहतम मिटीयो, रेहणो नहि एह थानहो ला० ॥ नांगी शाखाए विलगेवो, तेतो उपजे हानहो ला० ॥ जू० ॥ ॥ १५ ॥ पुरुपां पाणी इम राखेवो. ज्युं राखे नालियेहो ला० ॥ गोकलकोतो पैमो न्यारो, साधां सूधो

शेरहो ला० ॥ जू० ॥ १६ ॥ गाम तलाई न तजे ब
गलो, न तजे मालो कागहो ला० ॥ मानसरोवर त
जे ततक्षिण. हंस तणो सो न्यागहो ला० ॥ जू० ॥
॥ १७ ॥ मध्यम राते अश्व चढीने, साथे एक खवा
सहो ला० ॥ निकलियो पुर बाहीरे आयो. मतो करे
सोल्हासहो ला० ॥ जू० ॥ १८ ॥ अश्व ग्रहीने रहे
तुं अलगो. शेवकशुं दाखंतहो ला० ॥ हुं विद्या सा
धु समसाने; भेद न को भाखंतहो ला० ॥ जू० ॥
॥ १९ ॥ लाकरू लावे चित्ता बनावे, मृतक आणी ए
कहो ला० ॥ आभूषण पहिरावी बाले, टालण खोज
विवेकहो ला० ॥ जू० ॥ २० ॥ जंघा चीरी लोही का
ढी. ताम लिख्यो ए लेखहो ला० ॥ में ए किधीराजा
परजा, करज्यो राज विशेखहो ला० ॥ जू० ॥ २१ ॥
पोले चिठ्ठी बांधी चाल्यो. धरी ब्राम्हणनो वेशहो ला
ल ॥ एह बारमी ढाले भाखे; गुणसागर सु विशेष
हो ला० ॥ जू० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ प्रात हुआ सहु जागीया. कुमर न दीठो
सोय ॥ सुध न लाधी शोधतां. आरतिवंतो होय ॥
॥ १ ॥ भूप भलीपरे पूछीयो. सेवक सोई सुजाण॥
विचरी वात कही सहु. आभूपण अहिनाण ॥ २ ॥
चिठी दीठी पोलेजी. खोले वाची जाम ॥ साची सघ
ली जाणता. मुरछाणो नृप ताम॥ ३ ॥ मुरछाणो भा
ई अवर; मर्छाणी नृपनार ॥ वान गुलाम आदे करी,

हाहारव संसार ॥ ४॥ चेतन लेई राजा प्रजा. गुणनो करे प्रकाश हा वम्भाग कियो किशुं, विलवे राय उदास॥५॥

ढाल १३ मी ॥ सारगीयो गणरुद्धिवे ॥ ए देशी॥ कुमरजी एसी किजे केम. समुद्र विजय शीवादेवी वि लवे ॥ छेह न दिजे एम ॥ कु० ॥ १ ॥ हा सोभाग निध्यान निरुपम, जादव वंश वतंस ॥ हा सतवंत महंत गुणाकर, प्रथ्वि माहि प्रसंस ॥ कु० ॥ २ ॥ हा चंद्रानन पंकज लोचन, हा गुण भरित शरीर ॥ स व विध सुंदर भोग पुरंदर. सायर जेम गंभीर ॥ कु० ॥ ३ ॥ हा भाई हा बंधु सहोदर, हा वडवीर सधी र ॥ जीविक्युं चित करि अति गाढो, माठलडि विण नीर ॥ कु० ॥ ४ ॥ पुत्र पनोता पुनरपि होवे, रमणी रूप अनूप ॥ गाम नगर पुर नवि पामिजे, भाईजी भल भूप ॥ कु० ॥ ५ ॥ देवरियो दिल दरियो देख त, पेखत प्रभुता पूर ॥ नजरे न आवे नर कोइ बी जो, किया काम करूर ॥ कु० ॥ ६ ॥ शुं किजे ए लोका साथे, सोर मचायो भूर ॥ वात कहंता विचि क्षण शु. ऊडी गयो अति दूर ॥ कु० ॥ ७ ॥ रे कुडा किरतार कलेशी, सोच नहीं तुज मांहि ॥ सा जन मेलि विछोहो करतां, कालज कांपें प्रांहि ॥ कु० ॥ ८ ॥ इम विलवंता राजा राणि, एक नीमतियो ताम ॥ बलते छांट सुधारस केरी,. वाणि वदे अभि राम ॥ कु० ॥ ९ ॥ कुमर न मूओ छे जयवंतो. अ

रति म करजो कोई ॥ लाज घणो दिन थोडा मा॰ हि, आवि मिलशे सोई ॥ कु० ॥ १० ॥ कांईक ए निमति वचने, कांईक चित्त विचारी ॥ सुसता हुआ राजा राणि, आशाने अधिकारी ॥ कु० ॥ ११ ॥ ए तेरमी ढाळे राजा, वरते धरतो कोड ॥ श्री गुणसाग र भाई दसनी, छे जग अविहड जोड ॥ कु० ॥ १२ ॥

दुहा ॥ चालंतो पश्चिम दिशे, मेलंतो बहू ग्राम ॥ विजय खेडपुर आवियो, ताम ग्रह्यो विसराम ॥ १ ॥ नृप भलो सुग्रीवजी, सुंदरि नामा नार ॥ पुत्र पंच उ परेहूई, पुत्रि दोय सुविच्चार ॥ २ ॥ सोमा नाम सु हामणि, सोम सुसेना जाण ॥ पढि गुणि मति आ गलि. पुत्रि गुण मणिखाण ॥ ३ ॥

ढाल १४ मी ॥ राग खेंगारना गीतनी देशी ॥ गुण वंताने गुण चढे, किरति हो किरति वधाति जोय ॥ मैं गलानि परे मानवि, भुलेहो भुले मूंघा होय ॥ गु० ॥१॥ हीरा लाल पिरोजडा, मोतीहो मोति माणिक मोल ॥ पारखियाथि वाधतो, माणसहो माणस तिम निर मो ल ॥ गु० ॥ २ ॥ कुमरी कला गुण आगलि जा णेहो जाणे राग प्रमाण ॥ वेण बजावे चातुरी, रीं झेहो रींझे चतुर सुजाण ॥ गु० ॥ ३ ॥ एह आनि ग्रह मन धरयो, अमने हो अमने जिते जेह ॥ वेण ब जावी वेगशुं. पिउडो हो पिउडो म्हारो तेह ॥ गु० ॥ ४ ॥ राय जादा रूयडा. राजाहो राजा आवे के

ई ॥ काज न सरहि कोईनो, जाईहो जाइ कर शी
र देई ॥ गु० ॥ ५ ॥ कुमर चाली तिहां आवियो,
लिधोहो लिधो विणा हाथ ॥ सुघड पणेरे वजावतो,
अचरिजहो अचरिज सघले साथ ॥ गु० ॥ ६ ॥ के
किन्नर के खेचरु, के हो के ए सुर अवतार ॥ नूचर
जरमाणा घणु. कुमरीहो कुमरी मोहि अपार ॥ गु०
॥ ७ ॥ पहिरावी वरमालिका, किधोहो किधो अधि
क उछाह ॥ कुमरी दोई शुं जलो. हुउहो हुउ ते वि
वाह ॥ गु० ॥८॥ सुख विलसंता सुंदरु, नंदनहो नंदन
नाम अकूर ॥ सोम सुसेना जाईयो, दिन दिनहो दि
न दिन चमतो नूर ॥ गु० ॥९॥ एक दिवस आगे चा
लियो, खबर न हो खबर न जाणि केण ॥ सजला व
र्त्त सुहामणो, दीठोहो दिठो सरोवर तेण ॥ गु० ॥
॥ १० ॥ सरोवर जलमें झीलतां, आयोहो आयो ए
क गयंद ॥ गज शिक्षाए वश करी, चढियोहो चढि
यो ताम नरिंद ॥ गु० ॥ ११ ॥ खेलावे अति खांत
शुं. उलखियोहो उलखियो असवार ॥ मैंगल मनमें
मोहियो, उलट हो उलटनो अधिकार ॥ गु० ॥१२॥
कुमरे उचो देखीयो. इहांहो इहां नहि निज कोई ॥
जे देखे बल माह्यरो, सोरीहो सोरीपुर कहि सोई
॥ गु० ॥ १३ ॥ आया दोई विद्याधरु, जाखेहो जा
खे मीठी वात ॥ नागावर्त्तन पुर जलो, राजाहो रा
जा विश्वविख्यात ॥ गु० ॥ १४ ॥ असनी वेग वि

राजतो, राणिहो राणि विजया ताम ॥ कुमरी करम यति महा, जाईहो जाई शामा नाम ॥ गु० ॥ १५॥ कुमरीनो वर पूछतां, निमतिहो निमति भाख्यो सार॥ जे गजने वश आणशे, थाशेहो थाशे सोई भरतार॥गु० ॥ १६ ॥ वेशी विमाने हरखशु, आवेहो आवे पुरमें चाल ॥ राजा राणी रंजीया, प्रभुनोहो प्रभुनो नूर निहाल ॥ गु० ॥ १७ ॥ कंचननो मंडप कियो, मणि नाहो मणिना थंभ उदार ॥ पूतलिया मन मोहनी, शोभाहो शोभा विविध प्रकार ॥ गु० ॥ १८ ॥ ढोल दमामा दुन्दुभी. वाजांहो वाजां अधिक उदार ॥ विहाह तणी विधि साचवि, वरत्याहो वरत्या मंगल चार ॥ गु० ॥ १९ ॥ ए चउदमी ढालमें, सुखमेंहो सुखमें विसरजाय ॥ श्री गुणसागर सूरिजी. पूरवहो पूरव पुण्य पसाय ॥ गु० ॥ २० ॥

दुहा ॥ शामा मंजुल भापिणी, सुघडमहा गुणजाण ॥ विणा वजावि एकदा. रंजवियो राजान ॥ १ ॥ रंजीयो राजाघणुं, वाणिवदे अनूप ॥ मांग मांग वर मानती. फिरफिर भाखे भूप ॥ २ ॥

ढाल १५ मी ॥ आदि जिणंद मया करो ॥ ए देशी ॥ तव बोले सा सुंदरी, सांभल जादव नाथरे ॥ निसदिन रेहेशुं पाखति, नवि छोडूं तुम साथरे ॥ तव० ॥ १ ॥ प्रभु भणी शुं मांगीयु, ए लघुतानी वातोरे ॥ पुरुप अबंध सराहयो, बंधक परवश थातोरे

॥ त० ॥ २ ॥ अति मनमानि माननी, नर शिर च ढती जायोरे ॥ गंगा देवी शीव तणे, बेठी माथे आ योरे ॥ त० ॥ ३ ॥ नारी कहे निजसुखभणि, एतो हुं नवि भाखुरे ॥ कारण जाणि विशेपथी, देव तमासो दा खुरे ॥४॥ खेचर अंगारक आकतो, पापीडो मति पीडेरे ॥भूचर जाणी भोलवी, भुज बलशुं मति भीडेरे ॥ त० ॥ ५ ॥ नूप भलीपरे भाखेरे, एह कवण विचारोरे ॥ रुपाचल दक्षणदिशे, पुरवरठे अति सारोरे ॥ त० ॥ ॥ ६ ॥ कीन्नर ऊगंगति एहवो, अर्चितमाली राजारे ॥ प्रभावती कूखे उपन्या, नंदन दो अति ताजारे ॥ त० ॥ ७ ॥ अग्निवेग अति आकरो, अशनी सुवेग सोभागीरे ॥ समरथ जाणी नंदन, राजा थयो वैरा गीरे ॥ त० ॥ ८ ॥ प्रज्ञप्ती वर विद्यासुं, प्रथमने नृ पपद आप्योरे ॥ अवर भणी युवराजनो, पदतो स्थी र करी थाप्योरे ॥ त० ॥ ९ ॥ आपण संजम लेइ ने, मुनिनो मारग साध्योरे ॥ तप जप करणीने बले, आपे आप आराध्योरे ॥ त० ॥ १० ॥ विमला ना म सुलक्षणा, राय घरे पटराणीरे ॥ अंगारक सुत जा इयो, कीरति अधिक वखाणीरे ॥ त० ॥ ११ ॥ युव राजा घर जाणइ, नामे सुप्रभा नारीरे ॥ तस उरे हुं उपनी, आदि लगे सुविचारीरे ॥ त० ॥ १२ ॥ रा यतणे पद थापियो, प्रीति भणी लघु भाइरे ॥ वि द्यासु निज नंदन, युवराज पद ठाइरे ॥ त० ॥ १३॥

चारित्र लीधो मुनीवरु, मोटप मेरु समाणीरे ॥ आ
प सरीखा लेखवे, जगमां जे छे प्राणीरे ॥ त० ॥
॥ १४ ॥ राय अने युवराजमां, उपज्यो अधिक क
लेशरे ॥ भुजबलने विद्यावले, राय छंडायो देशरे ॥
त० ॥ १५ ॥ नागावर्त्तसुं नगरीए, राजाजी गयो ना
सीरे॥ पंखी पिंजरानी परे, वासर जाए उदासीरे॥त
व० ॥ १६ ॥ एक दिवस नंदन वने, गयो एह नरिं
दोरे ॥ जंघाचारण ज्ञानीजी, मीलियो एक मुणिंदोरे
॥ त० ॥ १७ ॥ पगे लागीने पूछीयो, राज थयो के
आसोरे ॥ पुत्री पतिथी थाशेये. तरे लील विला
सोरे ॥ त० ॥ १८ ॥ पुनरपि भाखे रायजी, पुत्री प
ति कोण थाशेरे ॥ सजलावर्त्त सरोवरे. हाथी सा
मो धाशेरे ॥ त० ॥ १९ ॥ गज शीखाइ खेलवी,
हाथीने वश करशेरे ॥ श्री वसदेव नरेश्वरु, सामा कुम
री वरशेरे ॥ त० ॥ २० ॥ ते उपर ए खेचरु. जा
सुसीने हेतोरे ॥ काम सरयां प्रभु तुमने, लेइ आ
व्यो गह गहतोरे ॥ त० ॥ २१ ॥ विस्तारथी ए वा
तजी. खेचर सगली जाणीरे ॥ पिशुनपणे तुम हण
वानी, बुद्धी अछे तिही ठाणीरे ॥ त०॥२२ ॥ उ खे
चर तुम भूचरू, मतके वीणसे कामोरे ॥ तेहथी हुं
वर मांगुं, साथरही अभिरामोरे ॥ त०॥२३ ॥ तव
वर आपी थापियो. गाढो प्रेम अपारोरे ॥ ए पन
रमी ढालमां. गुणसागर जयकारोरे ॥ त० ॥ २४ ॥

दुहा ॥ निशिभर निंदमे सोवतो, खेचर ते अंगा
र ॥ लेइ गयोवसुदेवने, आणी देश अपार ॥ १ ॥
जागी शामा संदरी, पीउ न देख्यो जाम ॥ शस्त्र ग्र
ही पुठे हुइ, आण पहुती ताम ॥ २ ॥ अरि संघाते
सामीका, लागी होई विरूप ॥ अरिने सनमुख होव
तां, कोप्यो जादव नृप ॥ ३ ॥ मुष्टी प्रहारे मारियो,
खेचर जादवराय ॥ नाखी दीधो आकाशथी, पड्यो
सरोवर माह्य ॥ ४ ॥ समरंता नवकारने, आल न
आयो अंग ॥ जलपयरी तट आवियो, सुसतो थ
यो सुचग ॥ ५ ॥

ढाल १६ मी ॥ गोरांजी थें मुने गोमे न राख्यो
॥ ए देशी ॥ धन धन करमे तो नर कहीउ, जिहां
जाइ तिहा आदर लहीउ ॥ ध० ॥ ए आकणी॥मार
ग, जाता बलदेव केरो, देवल देखी हरख घणेरो ॥
जाणी शुभ स्थान राते तिहां वसियो, कर्म चरि लि
खी मनमां हसीयो ॥ ध० ॥ १ ॥ प्रात हुओ एक
आव्यो पूजारो, देखी कुमर मन हरख अपारो॥पूछे प्रभू
जी पुज प्रकासो, ए कवण पुरी कोण नृपनो वासो ॥ ध०
॥ २ ॥ नगरी चंपा नामे निकी, नु भामनीने सीर
टीकी ॥ चारुदत्त राजा जयवंतो, विशालाक्ष त्रीय
नो कंतो ॥ ध० ॥ ३ ॥ श्री गंधर्व सुसेना कुमरी, रु
पे रुडी जाणी अमरी ॥ चोसठ नारी कला ते
जाणे, राग कलामां अधिकु ताणे ॥ ध० ॥ ४ ॥

वेण बजावे ने मुख गावे. आपे रहीछे अधिके दावे ॥ एह कलाए जीते जेही. मुज भरतार करुं हुं तेही ॥ ध० ॥ ५ ॥ भूपतने भूपतिना जाया. पंच सया परिणाम कहाया॥श्री सुदर्शन गधर्व पासे, रात दिवस ए कला अभ्यासे ॥ ध० ॥ ६ ॥ ग्राम तीन स्वर सात कहीजे. मूर्छना एकविस लहीजे ॥ गुण पंचासय तान वखाणी. जाण कहावे ए विधि जाणि ॥ ध० ॥ ७ ॥ पुण्यने दिन मुजरो होवे, एना मुख सामुं जोवे ॥ कारज करवा कोई न सूरो, कुमरी हसी कहे अवतो अधूरो ॥ ध० ॥ ८ ॥ पुनरपि विद्या अधिकी सीखे. हठे पडीया ए भूपति भाखे ॥ वणिनावे छे एलेतन मेलत. मास मास एक आघो ठेलत ॥ ध० ॥ ९ ॥ कुमर गयो आचारज संगे, साचवतो अति सेव सुचगे ॥ कलाग्रहंता वार न लावे, पिण तो वेण विपरीत वजावे ॥ ध० ॥ १० ॥ राजकुमार तव करतां हांसो, मुख भांखे एवडो तमासो ॥ अवर नही पण ए गुणवंतो, थाशे कुमरी केरो कंथो ॥ ध०॥ ॥ ११ ॥ तामस आणे यादव जाचो, अबही जाणशे कुमो साचो ॥ कांसो शब्द करेछे जेही, सोना शब्द करे नाहि तेही ॥ ध० ॥ १२ ॥ पुनमनो दिन आयो जामो, कुमरी मंडप आवी तामो ॥ गाइवाइ वीण वहेली, साथे घणेरी तास साहेली ॥ ध०॥१३॥ तिलोत्तमा उर्वशी उलासो, सूर्य यक्षने पाम्रण पासो ॥ स्वर्ग थ

की जेम चाली आवी, विश्व मोहनी नाम धरावी ॥ ध० ॥ १४ ॥ गावे अने वजावे विणा, मोहीरह्या सव लोक प्रवीणा ॥ कुमरी रुप कला गुण देखी, एही स नामां सुख विपेखी ॥ ध० ॥ १५ ॥ नूप तदा नरमा णा नारी, विसरीया सुघडाइ सारी ॥ आरतियो आ चारज होइ, विणा ग्रही कर कुवर सोइ ॥ ध०॥१६॥ उत्तम घाट वनायो रूडो, कोइ वाते नाहिज कूडो ॥ गान वजावणी वे बेउ सरखी, कुमरी घणुं मनमांही हरखी ॥ ध० ॥ १७ ॥ कुमरी नांखे वात नलेरी, ए सी विणा आणी अनेरी ॥ विण सुघोषा नामे वारु, जेही रिझायो विष्णु कुमार ॥ ध० ॥ १८ ॥ सा विणा कर साहि प्यारे, आचरज तव हूओ जगसारे ॥ कहे अब केवो गाउ गानो, सहुने लागे अमी समानो ॥ ध० ॥ १९ ॥ सा नांखे सुण चतुर सिरोमणि. तुं दे खाय वे नओ मणि ॥ विष्णु कुमारनो टालण क्रोधो, उपद्रव्य मेटणने प्रतिवोधो ॥ ध० ॥ २० ॥ हाहा तुं बुरु नारद आयो, जेहि ग्याने ऋषिजी रिंझायो ॥ जो आवे तो सोहि सुणावो, अवर ग्यान वे मोहि अना वो ॥ ध० ॥ २१ ॥ नेद संगिताहि जाणे सूधो, जेहि ग्याने ऋषिजी प्रतिबोध्यो ॥ सोहि सुणायो ग्यान स याणे, नलो नलो कही खलक वखाणे ॥ ध० ॥ २२॥ रंजी रामा अति अनीरामा. पहेरावी वरमाल सकामा ॥व्याह तणो कीधो मंमाण, ए पिण मोटो पुण्य प्रमाण

॥ ध० ॥ २३ ॥ वहू वरनी सरखीछे जोडी, पोहोचावे मन केरा कोडी ॥ धर्म विषे पिण सरिखा दोइ, सुखमां वासर जाता जोइ॥ ध० ॥२४ ॥ एक दिवस हरी उछव हेते, आवे कुमर निज माहिलसमे ते ॥ ढाल सोलमी कही सुणावे. श्रीगुणसागरजी गुण गावे ॥ ध० ॥ २५॥

दुहा ॥ विद्याधर आव्या घणा. हरीउछवने काज ॥ हसत रमत खेले तिहां, नरनारी शुभ साज ॥ १ ॥ विद्याधरनी कुमरी, नीलजसा नामेण ॥ कुमरी रूपे रंगीली. अमरी जीती नेण ॥ २ ॥ नीलजसा वसुदेवने, दृष्टी रागनी चूर ॥ उपजी जाणी विशेषथी, चमकी भुचरी भूर ॥३॥ प्रीतम लेइ पाधरी. आवी निज आवास ॥ विद्याधर उछव करी, चाली गया आकाश ॥४॥

ढाल १७ मी ॥ हम मगनभये प्रभु ध्यानमे ॥ ए देशी ॥ कुमरी हूइरे उदासणी, हसत न बोलत डोलत चित्तडो, कुमर चरण निवासणी ॥ कु० ॥ १ ॥ भोजन त्याग न पिवत पाणी. सोवत निंद न आवती ॥ लांबा अति निसासा लेती. यदुपतिने चित्त धावती ॥ कु० ॥ २ ॥ प्रेम रागछे तीखोकाती. कालिजने अति कापती ॥ जो सुख चाहे माननी मनमां, परने चित्त मत आपती ॥ कु० ॥ ३ ॥ जाणी आरती अपार अनोपम, धाइ पूछे वातजी ॥ सुत तणा वलनीपरे तुंतो, दिसेछे अकुलातजी ॥ कु० ॥ ॥ ४ ॥ तव सा धाइ प्रते भांखे, श्रीवसुदेव कुमा

रजी ॥ दिठो देव उछव करंतां. चित्तनो चोरण हा
रजी ॥ कु० ॥ ५ ॥ ए वरपासुं तो परणवो, अवर न
परणुं कोइजी ॥ अणसरखे पीउडे पद्मनीनो, आवट
मरणो होयजी ॥ कु० ॥ ६ ॥ धाइ तणा मुखनी सुणी
राजा, ए सघलो वृत्तांतजी ॥ संतोषी वचने वर कु
मरी, चाल्यो आप तुरंतजी ॥ कु० ॥ ७ ॥ सोवंतो कु
मर अपहरियो, करीयो काम अनूपजी ॥ नीजपुर
आणी राजाराणी, पज्यो यादव नूपजी ॥ कु०॥ ८ ॥
कुमरी अमरी सरखी सघली, सात सया परिमाण
जी ॥ परणावी कुमरने हरखे, किधो अति मंमाणजी
॥ कु० ॥ ९ ॥ सोर सुणंतो पूछे प्रभुजी, एशो सोर
प्रकारजी ॥ प्रातिहारणी भांखे स्वामी, एहनो एह वि
च्यारजी ॥ कु० ॥ १० ॥ कुमरी तणी मातासुं भाइ,
बोल्योथो ए बोलजी ॥ जो माहरे होशे सुत सुंदर,
ताहरे सुता अमूलजी ॥ कु० ॥११॥ सगपणनो संबध
करेला, ए हुवो ते न्यायजी ॥ लोक मिली ए झगडो
भाज्यो, नारी किंयो नवी थायजी ॥ कु० ॥ १२ ॥ क
मली रमली करतो अति वरते, भोगी भमरो जेमजी ॥
श्री वसुदेव कुंवर रमतो, पदमनियांने प्रेमजी ॥ कु०
॥१३॥ गिरिसिर खेलत निलकंठसो, आयो होई मो
रजी ॥ निलयशाने लेइ गयो तत्र, कांइ न चाल्यो
जोरजी ॥ कु०॥१४॥ दक्षिणदिश गिरितटवर नगरे,
सोमा राज कुमारिजी, देवतणे वादे जीती प्रभु, पर

णी रति अवतारीजी ॥ कु०॥१५॥ ए केहेता रायथी सुर आवी, लेइ गयो ततखेवजी ॥ यक्ष तणा देवल मांही मूक्यो, साचवतो अतिसेवजी ॥ कु० ॥१६॥ राक्षस एक तणोबे वासो, पेहेला देवल मांहीजी ॥ देश नगरना लोक सहुने. राक्षस दुःख दे त्राहीजी ॥ कु० ॥१७॥ राक्षसने वश करवा सुरवर. करता जय जय कारजी ॥ रायथी पण सघले आवीने, प्रणम्यो कुमर उदारजी ॥ कु० ॥ १८ ॥ कन्या पाच सया परीमाणे, परणावी नृपालजी ॥ सुख मानता विविध प्रकारे. पुछ्यो सालो ख्यालजी ॥ कु० ॥ १९ ॥ कुल अणजाण्या किम परणावी, कन्या ए सतपंचजी ॥ सालो भाखे स्वामी सांभल, सघलीनो एक संचजी॥ ॥ कु० ॥ २० ॥ निमति वचने यदूनायक, राक्षस जीतण सूरजी ॥ कन्या सकल तणो वरथाशे. वाज्या ए जसतूरजी ॥ कु० ॥ २१ ॥ यादव राजा रायगयाना, जिहां जइए तिहां आपजी ॥ गुणसागर सत्तरमी ढाले. पूर्व पुण्य प्रतापजी ॥ कु० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ अचलपुरी प्रभु आवीयो, वनमाला सुखकार ॥ पुत्री सारथ वाहनी. परणावी प्रेम अपार ॥ १॥ सचरतो सोमापुरी, आइ गयो ते स्वाम ॥ कंपीलराथनी कुंवरी. पराणि कपिला नाम ॥ २ ॥ विविधपरे सुख मानता, सरोवरमां झीलंत ॥ निलकंठ गजरूप धरी. आइ कुमर चढंत ॥ ३ ॥

ढाल १८ मी ॥ चांदालिनी देशी ॥ हाथी आकाशे
ालित, विद्याधर विद्या बलित ॥ जन भांखे कुंवर
लियोहो ॥ कुंवरजी ॥ १ ॥ कुंवरजीरुपे निको, कुंव
जी प्यारो जीको ॥ कुंवर कुमरा सीर टिकोहो ॥कु०
२ ॥ हाथी तो चाल्यो जाये, राख्यो कोइनो न र
ाये ॥ कुंवर चित चिंता थायेहो ॥ कु० ॥ ३ ॥
व मुष्टि प्रहारे मारयो, हाथिनो मद उतारयो ॥ आ
णुं काम समारयोहो ॥ कु० ॥ ४ ॥ पडीयो गंगाज
माही, नवकार भणंतो प्राहि ॥ अंगे दुखाणो ना
हो ॥ कु० ॥ ५ ॥ गंगाजल पयरी जामो, अटवि
पमीयो तामो ॥ आगे आयो एक गामोहो ॥ कु०
६ ॥ सिंहगुहा तस नामो, विमलप्रभ नृप गुण
ामो ॥ त्रीय श्रीमति अभीरामोहो ॥ कु० ॥ ७ ॥
त्री पोमांवाइ वारु, अति वेद कला इचारु ॥ सा
ीति आणी उदारुहो ॥ कु० ॥ ८ ॥ परणीने सुख
ानीजे, आपणु पूधन जाणीजे ॥ आंगेकि मति ठां
ाजेहो ॥ कु० ॥ ९ ॥ जयपुरना तो पति साधी,
क कुमरी नीकी लाधी ॥ दिन दिन अति किरति
धीहो ॥ कु० ॥ १० ॥ भद्दिलपुर चाली आयो, ति
ां राजा पोद्र सुहायो ॥ प्रभुजी सौने मन भायो
ो ॥ कु० ॥ ११ ॥ कुमरी धारयो पूर्व वेसो, तस रुप
कला सुविशेसो ॥ परणे जदुराय नरेशोहो ॥ कु०॥१२॥
पुरुप वेशनो भेवो, तव पूछे श्रीवसुदेवो ॥ सा उत्तर दे

ततखेवोहो ॥ कु०॥१३॥ तव एक निमती राइ, पुछयो मुज वरने ताइ ॥ तिहां नाम लीयो गोसाइहो ॥ कु०॥ ॥ १४ ॥ योग कहो किम मिलशे, रुडे जइ रहु म लशे ॥ ए आरति वेगे टलशेहो ॥ कु० ॥ १५ ॥ रूप पुरुषनो ठाणि, सा राज राखंति आणि ॥ प्रभुजी मि लसे वेगो आणिहो ॥ कु० ॥ १६ ॥ गुरु गोत्र जने सुपसाइ. ए एकसरीखे दोइ ॥ सातमे वासर जाइहो ॥ कु० ॥ १७ ॥ अंगारक क्रोधे जरीयो, तिहां रुप हंसको करीयो ॥ सुखे सोवंतो अपहरीयोहो ॥ कु०॥ ॥ १८ ॥ मुष्टी प्रहार ज्यां दीधो ॥ चेतनथी अलगो कीधो ॥ गंगामे पडीयो सीधोहो ॥ कु० ॥ १९ ॥ पा णि तरी कांठे आवे, अटवि तजी वसती पावे ॥ इ लावर्धन नगर सुहावेहो ॥ कु० ॥ २० ॥ हाटे बेठा वेपारी, ते लक्ष्मीवंता भारी ॥ एक शेठ अछे अधि कारीहो ॥ कु० ॥ २१ ॥ कुमर बेठो तस पासे, ति हां मिलिया लोक तमासे ॥ ए मोटो शेठ विमासेहो ॥ कु० ॥ २२ ॥ तव अन्न वस्त्रने नाणुं. जुहरीयाने कि रीयाणुं ॥ ते दिन अधिकुं वेचाणुंहो ॥ कु० ॥ २३ ॥ लाभतणो नही पारो, तव शेठ करे सुविच्यारो ॥ ए तो एहनो उपगारोहो ॥ कु० ॥ २४ ॥ आदर अ धिके घर आण्यो, भोजनशुं प्रेम परमाण्यो ॥ वस्त्र आवर पुरुष पिछाण्योहो ॥ कु० ॥ २५ ॥ कन्या छे रुप रसाली. सा रतनवति सुविशालि ॥ परणावी का

क क्षमालिहो ॥ कु० ॥ २६ ॥ अष्टादशमी ढाले प्रेमो, सुख विलसे सुरपति जेमो ॥ गुणसागर जांखे ए मोहा ॥ कु० ॥ २७ ॥

दुहा ॥ लाभे लोभ वाधे घणो, उद्यमे अधिको लाभ ॥ लाभे सीर जाइ अडे, उचो तो अति आभ ॥१॥ लाभ विशेष विचारवे. आगे चाल्यो स्वाम ॥ महापुरी आयो सहि, हरख्यो अचरज पाम ॥ २ ॥ ठाम ठाम दिसे घणां. मंदिरनां मंडाण ॥ निश्चे करवा कारणे. पूछ्यो पुरुष प्रधान ॥ ३ ॥

ढाल १९ मी ॥ पांचमी वाडे परमेश्वरु ॥ ए देशी ॥ पुरुष कहे प्रभुजी सुणो, ए वातज वारु ॥ अचरजकारीछे घणी, चतुरा चितचारु ॥ १ ॥ सोमदत्त राजा भलो, राणी सुविचारी ॥ पूरणभद्रा जाणीए नृपने सुखकारी ॥ २ ॥ सोमश्री नामे भली, कुंमरी अभिराम ॥ स्वयंवर मंडप तेहनो, ए कीधां धाम ॥३॥ राय घणा चाली आवीया, ए भिम्भसरीखो ॥ विचे हुवो संबंधजी, ते सुणए सरीखो ॥ ४ ॥ उपर भोमी एकदा, सा राजकुमारी ॥ देखे लंगन चंद्रलुं, लय लागी भारी ॥ ५ ॥ ऋषि केवल उछव भणी, सुर जात देखी ॥ जाति समरण पामियो, मूरछा सुविशेखे ॥ ६ ॥ उठाडी बेठी करी, करी सीतलताइ॥ मौन ग्रहिने सा रहि, कही वात न कांइ ॥ ७ ॥ धाय माय ने पूछतां, दिए जवाब गरीठो ॥ ज्ञान बले परभव

तणो, में प्रितम दीठो ॥ ८ ॥ हुं हुती देवांगना, तुं हुतो देवो ॥ भोगवी आयु सुरगति तणो, चवीयो ततखेवो ॥ ९ ॥ तुं उपन्यो हरिवंशमें, हुं आइ इहांजी ॥ दैव विछोहो पाडियो, केम कीजे लाजी ॥ १० ॥ जो पति पामुं मूलगो, तो थें परणावो ॥ नहीतर परणवा आखडी, सही संजम लेवो ॥ ११ ॥ धाय जणावी वातडी, राजाने जाइ ॥ लोक विसरजा वेगशुं, मन मां दुचिंताइ ॥ १२ ॥ तुठ भूचर राजवी, माहारो खग नाम ॥ विषम वात आवी बनी, केम सीझे काम ॥ १३ ॥ एटले एक निमीत्तीयो, भाखे सुसनेहो ॥ इंद्र उछव देखण भणी, आवशे एहो ॥ १४ ॥ हाथी पासे छेडायने, परणशे आपो ॥ इम सुणंता हरखीयो, कुमरीनो बापो ॥ १५ ॥ हरीध्वजने देखण भणी, अंते उर आयो ॥ वाहन विविध प्रकारनां, अति सोर मचायो ॥ १६ ॥ बंधन तोडी जोरशुं, हाथी विखरायो ॥ अवला उपरे आकुलो, होइने धायो ॥ १७ ॥ सुभट न आवे आसना, सहु जाइ भाग्या ॥ शस्त्र ग्रहिने सामटा, संबाहण लाग्या ॥ १८ ॥ साचो सूर सिरोमणी, यादवजी जाचो ॥ अटल टल्यो नहीं ठामथी, नरफाडे भाचो ॥ १९ ॥ अग्नी झाल गज केसरी, एह सामुं होणुं ॥ निःसत्व नरने दोहिलुं, साहसियाने जोणुं ॥ २० ॥ श्वासभरी आवी धसी, शरणे सा बाल ॥ राख राख प्राणेशजी

कोप्योठे काल ॥ २१ ॥ वलवल केलवी घणो, हाथी वश आण्यो ॥ उवारी कुमारीका, जग जादव जाण्यो ॥ २२ ॥ राय त्रीयाने कुमरी, हरख्यां मनमाहि ॥ ए मोठो उपगारियो, पुरुषोत्तम प्राहि ॥ २३ ॥ सूर घणो ने बल घणो, धन्य यौवनवंतो ॥ ए उगणिसमी ढालमां, गुणसूरि कहतो ॥ २४ ॥

दुहा ॥ विस्मय उपजावी घणो, सहू जणी सुकुमार ॥ शेठ कुवेरज दत्तने, घर आयो तेणिवार ॥ १ ॥ कुमरीने राणी सह, निज घर करे प्रवेश ॥ वाट वधी ए अति घणी, उछव कीयो विशेष ॥२॥

ढाल २० मी ॥ सुगण नरनारी रूप नजोय ॥ ए देशी ॥ एह सुणी नृप हरखीयोरे, करे प्रशंस अपार ॥ वारंवार वधामणारे, मिलियो सह परीवाररे ॥ मोहनजी ॥ १ ॥ तुं सूरतिका सोहनजी, तुं दूपजलका प्रोहणजी ॥ तु गणमणिका रोहणजी, तुं चित्त कजका बोहनजी॥तेरारे तेरा धन अवताररे, मोहनजी॥ मेरारे मेरा तुजशु प्याररे ॥ त्रुठ्यो त्रुठ्यो मुज किरताररे, पायोरे पायो नल भरताररे ॥ मो० ॥ ए आंकणी ॥ व्याह तणी विधी साचवीरे, जेसा चित्त वित्त होय ॥ आनंद रंग विनोदमां रे, वासर जाता जोयरे ॥ मो० ॥२॥ मनोवेग मनोहरुरे, विद्याधर बलवंत ॥ निशभर सुखे सोवतोरे, आइ गयो मयमंतरे ॥ मो० ॥ ॥ ३ ॥ सोमश्री कुमरी हरीरे, चाली गयो आकाश॥

जाग्यो श्री वसुदेवजीरे, देवी न दिठी पासरे ॥ मो०
॥ ४ ॥ प्रीया प्रीया पूकारतां रे, सोमश्री आकार ॥
अरि नगरनां आवी धसीरे. वेगवति वर नाररे ॥ मो
ह० ॥ ५ ॥ नेद न जाण्यो नृपतिरे, पूछण लाग्यो
तास ॥ किहां गइथी बाहीरारे, बोले सा उल्हासरे ॥
मो० ॥ ६ ॥ गर्मि हुइ मुजने घणीरे, सीतलताइ जा
ण ॥ उन्नीथी हुं वायरेरे, प्रीतम आरति मत आणरे ॥
॥ मो० ॥ ७॥ रामा रची रूपसुंरे, ना कीयो किश्यो वि
चार ॥ करी अति खिजमत खरीरे, नोगवे नोग उ
दाररे ॥ मो० ॥ ८॥ पोढ्यो प्रनुजी पालंकरे, पोढ्यो
पद्मनी प्रेम ॥ विमासण विधी साचवीरे अवसर पा
मी तेमरे ॥ मो० ॥ ९ ॥ एक दिन सुखे सोवतांरे,
खेचरी ए अनिराम ॥ रूप धरियो मूलगोरे, जागी
यो प्रनु तामरे॥ मो० ॥१०॥ बाल मुद्रा शशिकलारे,
युवा हारच्या दाम ॥ दिवस बीजे प्रगटेरे, तिसही ए
ह अकामरे ॥ मो०॥११॥ पूछी प्रनुजी पद्मनीरे, को
णछो तुमे आप ॥ रजुपणे नांखो नलोरे, कोइ न रा
खे पापरे ॥ मो० ॥१२॥ रुपाचल दक्षणदिशेरे, स्व
र्ण प्रनपुर देख्य ॥ चित्तवेग विद्याधररे, राय रुडो
पेख्यरे ॥ मो०॥१३॥ त्रीय अंगारवति कहीरे, मनो
वेग तस नंद ॥ नंदनी तो हुं नलीरे, अबु नयना
नंदरे ॥ मो० ॥ १४ ॥ रूप अधिको सांनलीरे, मनो
वेग नरेश ॥ सोमश्री लेइ गयोरे, सीता ज्युं लंकेशरे ॥

रे ॥ मो०॥१५ ॥ सोमश्री साची सतीरे, जोर न चा
ल्यो चोर ॥ केश मणिने कामनिरे, न लेवाइ जोररे
॥ मो० ॥१६ ॥ हुं सखीछुं तेहनीरे, प्राणहीथी प्या
र ॥ मोकलीछुं तुम्ह कन्हेरे, आणी एह विचाररे ॥
मो० ॥१७॥ मुझ संघाते छे घणोरे, नाथजीको नेह ॥
चाकतो होइ खरोरे, मति तजे नीज देहरे ॥ मो०
॥ १८ ॥ रूपे मोही प्रभुतणेरे, शुद्धही नाठी दूर ॥
हणि मनमथ बाणशुंरे, उपज्यो राग सनूररे ॥ मो०
॥१९॥ रूप धरीने बेहनी तणोरे, मानीयो में भोग ॥
स्वारथीयो संसार छेरे, आपवंगो लोकरे ॥ मो०॥२०॥
स्वामी थारी सुंदरीरे, हुं हुइ सुख हेत ॥ छंमी मणि
चिंतामणीरे, काच कुण चित्त देतरे ॥ मो० ॥ २१ ॥
सोमश्री अपहारनिरे, एहवी सुणी वात ॥ हुउ नृप
उदासीयोरे, अरतिमें दिन जातरे ॥ मो०॥ २२॥ ढा
ल भली ए विसमीरे, करत भोग विलास ॥ श्री गुण
सागर सूरिजीरे, पुण्ये पूरे आशरे ॥ मो० ॥२३ ॥

दुहा ॥ श्री वसंत ऋतु राजीयो, आयो अधिक
विराज ॥ फूल फल शोभा खरी, कोयल बोले गाज ॥१॥
मीत्रोना परीवारसुं, खेले वसंत नरेश ॥ सुखे सोवंतो
अपहरयो, मानसवेग विशेप ॥ २ ॥ मुष्टी प्रहारे मा
रता, शुद्ध रही नही कोय ॥ समरंतो नवकारने, उर
होइ आयो सोय ॥३॥ गंगा तट विद्याधरु, विद्या साधे
जाम ॥ आणी पड्यो उपर प्रभु, विद्या सिद्धी ताम ॥ ४ ॥

ढाल २१ मी ॥ आजको दिहाडो मोहे भावे हो न णदी ॥ ए देशी ॥ आवी एक विद्याधरी हेयादु, ले इ चाली जाम ॥ प्रभुने मेली बागमे हेयादु, खवर क री अभिरामहेयादु ॥ १ ॥ ऊगमागियोराय तेहवे, पर खंड परदेशमे हेयादु ॥ शोभा अधिकी पावे हेया दु ॥ ऊ० ॥ २ ॥ राजा अमृत द्वारना हेयादु, खेचर बंधव तिन ॥ दधिमुख दिलनो सूरछे हेयादु, चतुर शिरे सुप्रविण हेयादु ॥ ऊ० ॥ ३ ॥ दढसुवेग वि राजतो हेयादु, चंडसुवेग प्रचंड ॥ आया प्रभुनी सा मा हेयादु, माने आण अखंड हेयादु ॥ ऊ० ॥ ४ ॥ पधरावी निज मंदिरे हेयादु, श्रीवसुदेव नरेश ॥ मद न सुवेगा वेगसुं हेयादु, परणावी सुविशेष हेयादु ॥ ऊ० ॥ ५ ॥ प्रीतम पद्मनी प्रेमशुं हेयादु, मग्न महा मनमांही ॥ उलट अति घणी मानतो हेयादु, सुख मां ही दिन जाइ हेयादु ॥ ऊ० ॥ ६ ॥ उगंतो दिनकार नो हेयादु, घणीए वधतो तेज ॥ तिम नरिंद वसुदेव नो हेयादु, चढतो तेज सहेज हेयादु ॥ ऊ० ॥ ७ ॥ बाप गोभावण कारणे हेयादु, दधिमुख भाखे वात ॥ श्रीनमीवंश विशेपथी हेयादु, विद्युत वेग विख्यात हे यादु ॥ ऊ० ॥ ८ ॥ पुत्र पनोता तेहना हेयादु, एह म ति नविआण ॥ थारा मननी भावती हेयादु, पुत्री चो थी जाण हेयादु ॥ ऊ० ॥ ९ ॥ निमित्तिने पूछीयुं हेया दु, कुमरी कारण कंत ॥ निर्मल मति बोलीयो हेयादु.

निमतीए गुणवंत हेयादु ॥ ऊ० ॥ १० ॥ चंडसुवेग कु
मारने हेयादु, विद्या साधन जोइ ॥ परूशे खांधा उप
र हेयादु, पुत्रीनो वर सोइ हेयादु ॥ ऊ० ॥ ११ ॥ ते
दिनथी लघु नाइजी हेयादु, निश्चय करवा हेत ॥ वि
द्या साधे वेगशुं हेयादु. शुनवंगीत फलदेत हेयादु ॥
ऊ० ॥ १२ ॥ नजनु तिलक सुहामणुं हेयादु, नगर
नीरोपम नाम ॥ श्री त्रिशिखर नरेश्वर हेयादु, सर्पक
सुत गुण धाम हेयादु ॥ ऊ० ॥ १३ ॥ तेहने अरथे
मागता हेयादु, पुत्री नापी तात ॥ युद्धे हरावीता तेह
ने हेयादु, चाल्यो लेइ आरात हेयादु ॥ ऊ० ॥ १४॥
बंधीखाने राखीया हेयादु, देव हमारो बाप ॥ जोरन
चाले माहरो हेयादु, अरिनो प्रवल प्रताप हेयादु ॥
ऊ० ॥ १५ ॥ पुन्य प्रताप करी खरो हेयादु, सरसे
सघलो काज ॥ आज थकी तो आगले हेयादु, कुमर
ने सवलि लाज हेयादु ॥ ऊ० ॥ १६ ॥ विद्या साधी
सादरी हेयादु. बंधव तुम प्रसाद ॥ साह्यजे करी स्वामि
ने हेयादु, होसि ए आहिलाद हेयादु ॥ ऊ० ॥ १७ ॥
दीन वचन सानली हेयादु, उठयो मूछ मरोड ॥ आ
रति कोइ मतराखजो हेयादु, करशुं कारज कोड हेया
दु ॥ ऊ० ॥ १८ ॥ साला पासे शिखयो हेयादु. अ
स्त्र अनेक प्रकार ॥ आग्नि अने ब्रह्मानला हेयादु, श्री
महेंद्र उदार हेयादु ॥ ऊ० ॥ १९ ॥ वैष्णव वारु नाम
थी हेयादु, जमदंड अस्त्र विचार ॥ स्थंनन मोहन तो

टिका हेयादु, अण रोहण अविधार हेयादु ॥ ऊ० ॥ ॥ २० ॥ बंधनमोक्ष न जाणीए हेयादु, जंभनने ए सान ॥ वायव्य बेदन भेदना हेयादु, आरुढ अस्त्र प्रधान हेयादु ॥ ऊ० ॥ २१ ॥ सर्व सुअस्त्राहि गादना हयादु, शल्य निवारण हार ॥ गुणसागर गुण गाजतो हेयादु, ढाल एकवीसमी सार हेयादु ॥ ऊ० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ साहण वाहन सामटो, साथे घणा नरेश॥ चढीयो आडंबर घणे, अरि उपरे सुविशेष ॥ १ ॥ मंगल मिलियो मलपतो, घोमो दक्षिण हाथ ॥ मंगल गाती गोरमी, सात पांचनो साथ ॥ २ ॥ उदयो भणती योगिनी, सामो आव्यो शाह ॥ दक्षिण भयरव कलकली, उपज्यो अति उगाह ॥ ३ ॥ खर देवी भाबी भली, बोले होमाहोड ॥ कुंकर वामे उतरयो, काज समारे कोम ॥ ४ ॥ हरिणमाल अधूरडी, जमणी जाइ भात ॥ सांड चास दक्षिण दिशे, वामे वायस जात ॥ ५ ॥ डांबा लाली बोलीयां, अवर अनेरा सार ॥ शुकन विच्यारी चालीयो, श्री वसुदेव कुमार ॥ ६ ॥ अरि पिण आयो सामुहो, दल बलनो नही अंत ॥ रेणु रही उंची चढी, समजे न कोई पडंत॥७॥

ढाल २२ मी ॥ ततरीया भाई ततरीया ॥ ए देशी ॥ पुण्य बले अधिको यदुराजा, करतो अधिक दिवाजारे ॥ खेचर सामे आणी अडीयो, वाज्या शुभ जश वाजारे ॥ पु० ॥ १ ॥ हाथीउथी हाथी साथीउथी

साथी, असवारे असवाररे ॥ रथसाथे रथ भिडीया भारी, मच्यो युद्ध अपाररे ॥ पु० ॥ २ ॥ नील सुक ठ अगारक आतुर, सूर्पक मानसवेगोरे ॥ चंद्रसंवे ग तणे आगे ए, हारयो नकूरी तेगोरे ॥ पु० ॥ ३ ॥ खेचरने यादवने लडवे, एवो अचरिज पायोरे ॥ विविध प्रकार विशेष विशेषे, बाणे अंबर गायोरे ॥ पु०॥४॥ अग्निसु बाणे अग्नी विकुर्वि, हाथी घोडा बालेरे ॥ वारुण वाणे घन वरसावी, एह उपद्रव टलेरे ॥ पु० ॥ ५ ॥ मोहन बाणे निदतणे बल, लोक सहु ते सोयरे ॥ वाण प्रबोधे निंद निवारी, हुशीयारिमां होयरे ॥ पु० ॥ ॥ ६ ॥ श्री माहेन्द्र बाणे हणतो, खेचर पडीयो मंदरे ॥ यादवनी जग जीत गवाणी, उपज्यो अति आनंदरे ॥ पु० ॥ ७ ॥ सुसरो बंधनथी छोडावी, देइ दमामे घावरे ॥ पामी यश निज नगर भणी ते, आवे सहु परीवाररे ॥ पु० ॥ ८ ॥ सुर्पनखा नामे अरि नारी, वैर विशोधन आवीरे ॥ मदन सुवेगा रूम विराजी, प्रभुजीके मन भावीरे ॥ पु० ॥ ९ ॥ छल पामीने प्रभु सोवंतो, चाली लेइ आकाशरे ॥ मान सवेग भणी प्रभु सोप्यो, करवा काज विनाशरे ॥ पु० ॥ ॥ १० ॥ अरि करथी खसी अणु मांही, पमीयो लागी थोभीरे ॥ राजग्रही नगरी चाली आयो, जीती कंचन कोभीरे ॥ पु० ॥ ११ ॥ कंचन वाटे देतां बोले, किरति चारण भाटोरे ॥ श्रीवसुदेव पधारया पहिली,

जरासंध उच्चाटोरे ॥ पु० ॥ १२ ॥ निमीत्तिने पुछ्योथो राजा, मुजने मारण हाररे ॥ वेग बतावी करु उपक र्मा, केरो कोइ विचाररे ॥ पु० ॥ १३ ॥ जोतिषि जा ए कहे जीतशे, जूआ खेली जेहरे ॥ कंचन कोडी त णा वरदाता, गुण मणि केरो गेहरे ॥ पु० ॥ १४ ॥ तेनो जायो कृष्ण कुंवर वर, ते तुम हंता जाणरे ॥ निश्च य वात विशेष विचारी, संशय एक न आणरे ॥ पु० ॥ १५ ॥ एम सुणी नासुसिकारण, नृपना लोक फिरंतारे ॥ कंचन जाती त्याग करंता, मिलीयो तंते तं तारे ॥ पु० ॥ १६ ॥ चाम तणा नाथामें घाली, डुं गरथी नाखंतोरे ॥ गरु गरुतो आवी पड्यो नू उपर, प रमेष्टि नाखंतोरे ॥ पु० ॥ १७ ॥ वेगवति राणी सांभ लीयो, जब ए श्री नवकारोरे ॥ नाथा खोली देखत दी ठो, प्यारो प्राण आधारोरे ॥ पु० ॥ १८ ॥ वेगवति रोवे प्रनु आगे, प्रनुजी सुसतो होइरे ॥ नारी निहा ली नेह धरीने, पूठी नांखे सोइरे ॥ पु० ॥ १९ ॥ तुम अपहरी श्रेणी दोयमें, शोधी शोध्ये नरतीरे ॥ मद न सुवेगा घरथी तुमने, सुर्पनखा अपहरतीरे ॥ पु० ॥ ॥ २० ॥ सुर्पनखाथी मानस वेगे, लीधो मारण हेतो रे ॥ मारी न शक्यो राजग्राहिमें, आयो शुन संकेतोरे ॥ पु० ॥ २१ ॥ ढाल बाविसमी हुं धन प्रनुजी, जे तुम सेवा लाधीरे ॥ श्रीगुणसागरसूरि नलो जे, जा णे अवसर साधीरे ॥ पु० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ वेगवति साची सती, आवी पीउने काम ॥ प्रिती विशेप विच्यारवे, अति सनमानि साम ॥१॥ गिरि कांठे उद्यानमें, खेल खेलंता जाम ॥ नागपाश बांधी थकी, दीठी कुमरी ताम ॥ २ ॥ बंधन छोड्यां हाथशुं, सा भाखें सुविच्यार ॥ विद्या सिद्धी माह्यरी, ए प्रभु तुम उपगार ॥ ३ ॥

ढाल २३मी ॥ वेधक जग विरला ॥ ए देशी ॥ उप गारी राजाहो, थारा अधिक दिवाजा हो ॥ उ० ॥ ए टेक ॥ दक्षिण श्रेणि नगर निरुपम, नामे गगन प्रिय वारुहो ॥ विद्युतदंत नरेश्वर निको, गुणमणिनो भं डारु हो ॥ उ० ॥ १ ॥ तेनो नंदन बाल सुधाकर, हुं बु तास कुमारी हो ॥ विद्या साधत वेरीए मुझने, बां धी बंधन भारीहो ॥ उ० ॥ २ ॥ बंधन छोड्यां करुणा आणी; हुं थाइश तुमारी राणीहो ॥ अमृत छंडी खारो पाणि, कोण पीए सुख जाणीहो ॥ उ० ॥ ३ ॥ विद्या आपुं विविध प्रकारे, अंतर न आणुं कोइ हो ॥ वेगवतिने आप पनोति, भाखे प्रितम सोइहो ॥ उ० ॥ ४ ॥ प्रभु आदेशे वेगवतिने. लेइ निज घर आवीहो ॥ विद्या साधन करती वरते, वेगवति सुख पाविहो ॥ उ० ॥ ५ ॥ तापस स्थानक पधारयो वनमें, अचरिज अधिको पायोहो ॥ नौतम तापस ते सहु दिसे, एक तदाद्दत लायोहो ॥ उ० ॥ ६ ॥ सो भांखे तुं सांभल स्वामी, वात अचंभा कारिहो ॥ सावरती

नगरीनो नायक, इंद्र तणो अवतारीहो ॥ उ० ॥ ७ ॥ एणी पुत्र पवित्र पनोतो, तास सुंदरी नारीहो ॥ कुम री अमरीनें अनुसरती, प्रियंग सुंदरी प्यारीहो ॥ उ० ॥ ८ ॥ स्वयंवर मंडप तेहतणेजी, नृप घणा बोलाव्या हो ॥ कुमरीने मन कोइ न मान्यो, ताम घणं अक लायाहो ॥ उ० ॥ ९ ॥ झगडो मच्यो कुमरी पिताशुं, दिए पुत्री परणावीहो ॥ कमरी हठीली अधिक अडी ली, समजे नही समझावीहो ॥ उ० ॥ १० ॥ नृप न णे हम जोरे वरसां, कुमरी पिता तव कोप्योहो ॥ युद्ध करवा कारण काठो, सद्रपणाथी रोप्योहो ॥ उ० ॥ ११ ॥ कोइ नरपति लढी लढी मूआ, कोइ नाठा जुजूआहो ॥ लाज धरी वनवास ग्रहीने, तापस रुपि हूआहो ॥ उ० ॥ १२ ॥ ते कुमरीने देखण केरी, य दुपतिनी मति जागीहो ॥ नगरी वनमे चाली आयो, अत्रयतो अनुरागीहो ॥ उ० ॥ १३ ॥ देवल एक जलोछे उत्तम, द्वार जडीत अति वारुहो ॥ पेखी पू छिउ पुरप प्रभाविक, सो भांखे सुविचारुहो ॥ उ० ॥ ॥ १४ ॥ सकल सिरोमणि शेठ प्रसीद्धो, कामदेव स कामहो ॥ ताघर सुंदरी सुंदर नारी, रूपगुण अभि रामहो ॥ उ० ॥ १५ ॥ तासपुत्री अछे गुणवंति, वं धुमति सुकुमारीहो ॥ जोवन तन जन मोदन गारी, वा ली झाकझमालीहो ॥ उ० ॥ १६ ॥ शेठे पूछ्यो निमत्ति कवाऊं, सुता वर कुण थाइहो ॥ द्वारखोलशे देवल के

रो. सोइ वर सुखदाइहो ॥ उ० ॥ १७ ॥ एम नीसु
णी मन ख्यालज लाग्यो, देउलमांही जायहो ॥ सवी
बार ए अर्गला केरो, द्वार खोल्यो रायहो ॥ उ० ॥
॥ १८ ॥ देखी प्रभुने देवलमांही, शेठ आश्चर्य पाइ
हो ॥ परणावी पुत्री निज हाते, ढील न कीधी कांइहो
॥ उ० ॥ १९ ॥ ढाल ए तेविशमी वरचारु, भोगवे
भोग उदारुहो ॥ श्री गुणसागर सूरि पयंपे, यादव
यश विस्तारुहो ॥ उ० ॥ २० ॥

दुहा ॥ अंतेउर परीवारशुं, राजा वनमें जाय ॥
दिठो प्रभु बाजारमें, नयण रह्यां लोभाय ॥ १ ॥ लो
भाया लोचण घणा, देखी कुमरनी शोभ ॥ कुमरीने
संभोगनो, लाग्यो अधिको लोभ ॥ २ ॥ शोध करंतां
सांभल्यो, बंधुमति भरतार ॥ बोलावी पूछे तदा, स
खियणने सुविचार ॥ ३ ॥

ढाल २४ मीं ॥ धन धन जंबुस्वामीने ॥ ए देशी
॥ बहिन भणे बाइ सुणो, ए वसुदेव कुमार ॥ भोग
पुरंदर सुंदरू, कामतणो अवतार ॥ १ ॥ भाग्य प्रब
ल वसुदेवनो, एतो गुणमणि रयण भंडार ॥ भाग्यवं
ति जे भामानि, एतो पामे भल भरतार ॥ भा० ॥२॥
एकांते तव दूतिका, आवी प्रभुजीने पास ॥ कुमरी
काम समारवा, आप करे अरदास ॥ भा० ॥ ३ ॥ देव
पधारो मंदिरे, पूरो कुमरीनी आस ॥ हसी रसी रस
रंगमे, कीजीए भोगविलास ॥ भा० ॥ ४ ॥ जो नवि

मानो वात ए. तो थाशे विपरित ॥ प्राण तजशे कुमरी. अति दुखदाइ छे प्रित ॥ ना० ॥ ५ ॥ उत्तर दीधो अवसरे, ज्ञानी दीठो होइ ॥ संतोषी घर मोकली, हरखी कुमरी सोइ ॥ ना० ॥ ६ ॥ वडमाता कुमरीतणी, वितरणि अभिराम ॥ चलण प्रभ सह चारणी, नागश्री तसु नाम ॥ ना० ॥ ७ ॥ सोवंतो नरनिंदमें, देवी कीयो अपहार ॥ आवी बेठी बागमें, वाणी वदे सुविचार ॥ ना० ॥ ८ ॥ आरति कोइ मत आणजे, हुं थारी हितकार ॥ चरी सुणावुं आपणी, आलस निंद निवार ॥ ना० ॥ ९ ॥ अमोघ दर्शन नामथी, चंदनपुरनो राय ॥ चारुमति पति जाण ए, लोक सहुने सुखदाय ॥ ना० ॥ १० ॥ चारुचंद्र नामे भलो, नंदन महा सुखकंद ॥ राज करे रलीयामणो, छे सुख कंद निकंद ॥ ना० ॥११॥ अनंगसेनानी सुता, सरुपे अति अभिधान ॥ काम पताका प्रगटी, हवी नामनी भीने वान ॥ ना० ॥ ॥१२॥ काम पताका कामनी, ललित मनोहर गात ॥ राजा कीधी रागनी, सख मांही दिन जात ॥ ना० ॥ ॥ १३ ॥ दिन केताने अंतरे. राजा तापस थाय ॥ गर्भ वहे वैरागनी, साथ रही सुख पाय ॥ ना० ॥ ॥ १४ ॥ तापसी दिन पूरते, प्रसवी पुत्री सार ॥ ऋषिदत्ता अभिधानथी, वाधे रूप अपार ॥ ना०॥१५॥ ए चोवीसमी ढालमें, श्रावकनां व्रत पंच ॥ श्री गुणसागर आदरे, भंग न आणे रंच ॥ ना० ॥ १६ ॥

दुहा ॥ सावरथी नगरीनो धणी, शीलायुध नरिंद ॥ घोडे खांच्यो आवीयो, तापस वन आनंद ॥१॥ पगे लागतां तापसे, आदर दीयो अपार ॥ तापस पुत्री साचवे, विनय तणो आचार ॥ २ ॥ भोजन भक्ति वि शेषथी, करती वरते जाम ॥ आ पुण्य मांही ऊपज्यो, काम राग अभिराम ॥ ३ ॥

ढाल २५ मी ॥ हुं तुज साथे नही बोलुं ॥ ए दे शी ॥ काम राग अछे जग मोटो, जेहथी खांइ खोटो जी ॥ एकलडे तीहुं जग हरायो, कुण बभो कुण छो टोजी ॥ का० ॥ १ ॥ राजानी आतुरता जाणी, ऋ पिपुत्री व्रत राखेजी ॥ व्याहतणो विधि साचवी, प्रेम तणो रस चाखेजी ॥ का० ॥ २ ॥ राजा बोले काडम भोले, नाम प्रकासे मारोजी ॥ सावरथी नगरीनो नाय यक, छे मुज प्रितम प्यारोजी ॥ का० ॥ ३ ॥ विविध प्रकारे सुख विलसंता, वारु वचन वदे एवोजी ॥ जो उ धान रहेशे माहरे, तो शो उत्तर देवोजी ॥ का० ॥४॥ राजा निकली गया पिछे, लोक घणा अकुलायाजी ॥ शुद्ध न लाधे तास पुत्री, पुछया उत्तर पायाजी ॥ का० ॥ ५ ॥ तापस वन राजा छे नीसुणी, सामा लोक सि धावेजी ॥ राजा सन्मुख देखी आवत, परम महा सु ख पावेजी ॥ का० ॥ ६ ॥ तापस पुत्री मातपिताने, वात जणावी एहोजी ॥ गर्भी राखत जायो बेटो, रु पकला गुण गेहोजी ॥ का० ॥ ७ ॥ वात सुणीने मा

ता मूइ. सुरगतिनो अवतारोजी ॥ साहू नाग आवि तरणि, नहीं संदेह लिगारोजी ॥ का० ॥ ८ ॥ श्री जिनधर्म अछे जग साचो, जो आराधे कोईजी ॥ मोक्ष तणा घल आपणहारो, सुरगति सहेजे होइजी ॥ का० ॥ ९ ॥ ज्ञान वले में देख्यो पाछे, जाग्यो नेह घणेरोजी ॥ मातापिताने सुत संघाते, मोही रह्यो मन मेरोजी ॥ का० ॥ १० ॥ चाली आव्यां मातापितातो, दुखीया दीठा दोइजी ॥ मा पाखे बालक जिम जीवे, करे विमासण सोइजी ॥ का० ॥ ११ ॥ बालपणे माता मरी जाइ, तरुण पणे जो नारीजी ॥ वृद्धपणे सुत मरतां जाख्या, ए तिने दुःख नारीजी ॥ का० ॥ १२॥ आप जणावी मातापितानी, आरति अलगी टालीजी ॥ इणपरे आप पधरावी, वालक लीधो पालीजी ॥ का० ॥ १३ ॥ इणे पुत्र कही बोलाव्यो, तापस सघले तामोजी ॥ एहज नाम प्रसिद्धो चाल्यो, लोक वचन अभिरामोजी ॥ का० ॥ १४ ॥ मरण समे निज मातपिताने, जिनमतशुं स्थिर स्थापीजी ॥ आणसणने आराधन बले, सुरवर पदवी आपीजी ॥ का० ॥१५॥ तापसणी होइने हुतो, वालक लेइ लारोजी ॥ शिला युद्ध तणे घर आवी, सुपण बाल कुमारोजी ॥ का० ॥ ॥ १६ ॥ राजा साथे वदे मृदुवाणी, ए ल्यो थारो नंदोजी ॥ अपुत्रियाने नंदन क्यांथी, भांखे ताम नरिंदोजी ॥ का० ॥ १७ ॥ मूलथी वात सुणावत जाण्यो,

साचो शीयल विचारोजी ॥ बालक लीधो कारज सी धो, मान्यो अति उपगारोजी ॥ का० ॥ १८ ॥ इण पुत्र कीयो वम्रराजा, राय हुवो व्रत धारीजी ॥ नेमि तीर्थंकर तीर्थें एतो, वात तणो विस्तारोजी ॥ का० ॥ १९ ॥ इण पुत्र तणेवर पुत्री, प्रियंगु सुंदरी बाला जी ॥ रुपकला गुण सुंदर साची, स्वामी ते सुखमाला जी ॥ का० ॥ २० ॥ तुमसु राग धरे अधिकेरो, सा रो एहनो काजजी ॥ जाणी अदत्ता मत खींचावो, में दीधी ए आजजी ॥ का० ॥ २१ ॥ ए घरमें हु हरतां फिरतां, महारुं कीधुं चालोजी ॥ राजाजी तो एकम नो अति, आण हमारी पालोजी ॥ का० ॥ २२ ॥ का मदेवना देवल मांही, प्रित पनोती पोखीजी ॥ करी विवाह विनोद करीने, सुंदरीने संतोखीजी ॥ का० ॥ ॥ २३ ॥ देवल माहि देवि ज्ञापित, कीधो लीधो ला होजी ॥ राय लिखी वींतरणी विलसीत, प्रगट कीयो विवाहोजी ॥ का० ॥ २४ ॥ ए पचविशमी ढाले भा खी, जिहां तिहां अधिकाइजी ॥ श्रीगुणसागरसूरि क हेजी, पुण्य सदा सुखदाइजी ॥ का० ॥ २५ ॥

दुहा ॥ एकवार एकलपणे, जागो जोवे जाम ॥ किं चित् कुमरी आगले, उभी दीठी ताम ॥ १ ॥ कवण अछो तुम कामनी, कहो आपणो नाम ॥ काम किने आवीअछो, सोइ प्रकाशो काम ॥ २ ॥

ढाल २६ मी ॥ श्री सिमंदर साहेब

देशी ॥ स्वामी सुणेने सुंदरी भांखे, संप कोइ न राखे रे ॥ काज करवा कारण आवी, सोइ कारज दाखे रे ॥ स्वा० ॥ १ ॥ गिरि वैताढ्ये नगरी निरोपम, गंध स्म्रद्धि सोहावेरे ॥ गुणनो सागर अधिक उजागर, राय गंधार कहावेरे ॥ स्वा० ॥ २ ॥ प्रथवी राणी रंभा जाणी, कुमरी तेहनी जाइरे ॥ नाम प्रसिद्धि प्रभावति हुं, सुजनपणे सुखदाइरे ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ मानसवेग तणे घर गइथी, स्वर्णसुप्रभपुर मांहीरे ॥ मात अंगारवति सतीयामें, सती सीरोमणि प्राहिरे ॥ स्वा० ॥ ॥ ४ ॥ वेगवति निज पुत्री केरी, आश अधिकी आणेरे ॥ में पुछी सा क्यां गइछे, खबर कोइ न जाणेरे ॥ स्वा० ॥ ५ ॥ सखियापणे सोमश्री बोली, माहरे काम सिधावीरे ॥ श्री वसुदेव नरेश्वर पासे पिण, पाछि फिरी न आवीरे ॥ स्वा० ॥ ६ ॥ मानसवेग महा मयमंतो, मुजशुं अडीयो आवेरे ॥ माय दबावे शील सुधर्मणी, पोहचो वान वीपावेरे ॥ स्वा० ॥७॥ तुं उपगारी सिरोमणि साची, माहरो कारज सारेरे ॥ संदेसो साइ संघाते, कहिता जीव उवारेरे ॥ स्वा० ॥ ॥ ८ ॥ आश बले में ए दिन लिधा, आगे आशा तुटेरे ॥ झुरी झुरी पंजर हुइ, अब मुझ हियडो फूटेरे ॥ स्वा० ॥ ९ ॥ वेगे वार कीजीए माहरी, नहीतर गेडुं प्राणोरे ॥ शीलभंगथी नर्के जाणो, शाण घणा घट आणोरे ॥ स्वा० ॥ १० ॥ जीवन मरण तणुं शुं

माहरुं, अबला तो धुर नामोरे ॥ पुरुषपणो तेहनो
श्यो उपाजो, जेहथी न सरे कामोरे ॥ स्वा० ॥ ११ ॥
दिन वचन में एही वीनविउ, जिम जाणो तिम कीजे
रे ॥ एटलो जाणी जोर अरिनो, क्युंए सुयश न ली
जेरे ॥ स्वा० ॥ १२ ॥ चालो तो प्रभुने पोंहोचावुं,
सोमश्रीने पासेरे ॥ चाली कहंता चतुरपणाथी, चाली
लेइ उल्हासेरे ॥ स्वा० ॥ १३ ॥ स्वामी निरखी सुंद
री हरखी, आरति कीधी कोणेरे ॥ नारी रुप धरी प्या
रो पिउडो, पद्मनिशुं सुख माणेरे ॥ स्वा० ॥ १४ ॥
काम समारी सैहर केरो, प्रभावति घर चालीरे ॥ लो
काचार व्यवहार विशेखे, चितमो पिउने आलीरे ॥ स्वा०
॥ १५ ॥ दिन केताने अंतरे मानस, वेगे लिखी ए वा
तोरे ॥ कोपतणे वश कलकलिउ अति, कालो पीलो
थातोरे ॥ स्वा० ॥ १६ ॥ मांडी समर तणीरे सजाइ,
शोचन कीधो कोइरे ॥ सिंहतणीपरें सूरपणाथी, आ
णी अडीयो दोइरे ॥ स्वा० ॥ १७ ॥ जाणी अन्याइ
गोडे जाइ, जाइ धर्म सहाइरे ॥ खेचर प्रभुनो पक्ष
करता, मची अधिक लडाइरे ॥ स्वा० ॥ १८ ॥ तव
तो वेगवतिनी माइ, जाणी जमाइ प्यारोरे ॥ दिव्य
तीरना तरकस दोई, दीधो धनुष्य उदारोरे ॥ स्वा० ॥
॥ १९ ॥ प्रज्ञापति वर विद्यावारु, प्रभावतिथी पाइरे
॥ विद्या बलने भुज बले वली, बांध्यो त्रीयनो भाइरे
॥ स्वा० ॥ २० ॥ सासु सामी आवी मांगे, पुत्र भिक्षा

मुझ दाजेरे ॥ बंधन छोडी साला साथे, परिघल प्रीति कीजेरे ॥ स्वा० ॥ २१ ॥ सोमश्रीने प्रभु पहिरावी, साथे हुवो खग सोयरे ॥ बेसी विमाने महापुरी आ या, सासरीया सुख होयरे ॥ स्वा० ॥ २२॥ वीस अ ने पटमी ए ढाले, दिन जाता न जणाइरे ॥ श्री गुण सागर सुरि सलुणो, साजनीयो सुख दाइरे॥स्वा०॥२३॥

दुहा ॥ सुरपक नामे खेचरु, खेचरपणे तिवार ॥ रूप धरी घोडा तणो, कीधो नृप अपहार ॥ १ ॥ उं चो जातां अंबरे, दीधो मुष्टि प्रहार ॥ गंगाजल मां ही पड्यो, श्री वसुदेव कुमार ॥ २॥ गंगाजलथी नी कल्यो, तापस वन आवंत ॥ अवसर देखी अति घ णो, गाढो सुख पावंत ॥ ३ ॥

ढाल २७ मी ॥ वनमालीनी देशी ॥ एक दीठी र मणी राइरे, सासु धन जाणे कांइ ॥ विकल रुपणी दी सेरे, सा दांत घणेरु पीसे ॥ १ ॥ वस्त्र विहुणी बा लीरे, नर हारु धरया विकराली ॥ ए गेली नाम धरं तीरे, नृप देखीने रंग करंती ॥ २ ॥ तव पूछीयो ता पस राजारे, ते उत्तर आपे ताजा ॥ए जरासंधनी जा इरे, ए केतुमतिरे कहाइ ॥ ३ ॥ जीत शत्रु नरेशर रा णीरे, ए रूपे रंभा समाणी ॥ ए सर्व सुलक्षणा धा रीरे, ए मात पितानी प्यारी ॥ ४ ॥ ए कर्म न छूटे कोइरे, सुंदर दानव होइ ॥ एह अवस्था पामीरे, तव पुनरपि पूछे स्वामी ॥ ५ ॥ ए वाय तणो छे जोरोरे,

किणही कीधो मांमो दोरो ॥ जे जीम हशे तिम भासोरे, हुं जोशुं एह तमासो ॥ ६ ॥ कोई मत्रवादियो आयो रे, ते आपण परे खीजायो ॥ ए तेहनां कीधां कामो रे, ए वे राजसुता अभिरामो ॥ ७ ॥ ए परवश हुं जामोरे, धूर फेरीयो तेहनो ठामो ॥ ए मारीविदारी देहोरे, तस हाडा साथे सनेहो ॥ ८ ॥ तव करुणा नीमति आणीरे, सा कीधी ताम सयाणि ॥ श्री नवकार पसाइरे, न वांछित काम सराइ ॥ ९ ॥ नम रुपीया जण ध्यायारे, राजाना रोश भराया ॥ उपकार कोई न जाण्योरे, प्रभु राजग्रहि में आण्यो ॥ १० ॥ पुछंता उत्तर भाखेरे, ते कांई न छानो राखे ॥ ए केतुमतिने वापेरे, वर एक निमितिए आपे ॥ ११ ॥ ए पुछ्योथो पेहलुं वारुरे, जगजीवन आ सहु मारु ॥ मुझ हता आप्यवता विरेरे, तुं भाख्य भावि भलीपेरे ॥ १२ ॥ तव जाणे नर साहि नाणिरे, कही दासीए अहिनाणि ॥ तुम पुत्री सारी कंस्येरे, तस नंदनथी तुम रंस्ये ॥ ॥ १३ ॥ ते दिनथी नृप आदेशरे, हुशियारीमें सुविशेष ॥ वरतता तुं अव लाधोरे, सुर इष्ट भणी आराधो ॥ १४ ॥ अव वध भूमीका लेइरे, तुज घाव करेस्यां केइ ॥ ए सुंदर काया कापीरे, दिश देवाने बलि आपी ॥ १५ ॥ स्वामीनो काम समारीरे, हम वाहला होस्यां भारी ॥ एह सुणंतां वातोरे, प्रभुनो मन अकुलातो ॥ १६ ॥ चिंताए चांप्यो जामोरे, एक खेचर आयो

मुझ दीजेरे ॥ बंधन छोडी साला साथे, परिघल प्रीति कीजेरे ॥ स्वा० ॥ २१ ॥ सोमश्रीने प्रभु पहिरावी, साथे हुवो खग सोयरे ॥ बेसी विमाने महापुरी आ या, सासरीया सुख होयरे ॥ स्वा० ॥ २२ ॥ वीस अ ने पटमी ए ढाले, दिन जाता न जणाइरे ॥ श्री गुण सागर सुरि सलुणो, साजनीयो सुख दाइरे॥स्वा०॥२३॥

दुहा ॥ सुरपक नामे खेचरु, खेचरपणे तिवार ॥ रूप धरी घोडा तणो, कीधो नृप अपहार ॥ १ ॥ उं चो जातां अंबरे, दीधो मुष्टि प्रहार ॥ गंगाजल मां ही पड्यो, श्री वसुदेव कुमार ॥ २ ॥ गंगाजलथी नी कल्यो, तापस वन आवंत ॥ अवसर देखी अति घ णो, गाढो सुख पावंत ॥ ३ ॥

ढाल २७ मी ॥ वनमालीनी देशी ॥ एक दीठी र मणी राइरे, सासु धन जाणे कांइ ॥ विकल रुपणी दी सेरे, सा दांत घणेरु पीसे ॥ १ ॥ वस्त्र विहुणी बा लीरे, नर हाड धरया विकराली ॥ ए गेली नाम धरं तीरे, नृप देखीने रंग करंती ॥ २ ॥ तव पूछीयो ता पस राजारे, ते उत्तर आपे ताजा ॥ ए जरासंधनी जा इरे, ए केतुमतिरे कहाइ ॥ ३ ॥ जीत शत्रु नरेशर रा णीरे, ए रूपे रंभा समाणी ॥ ए सर्व सुलक्षणा धा रीरे, ए मात पितानी प्यारी ॥ ४ ॥ ए कर्म न छूटे कोइरे, सुदर दानव होइ ॥ एह अवस्था पामीरे, तव पुनरपि पूछे स्वामी ॥ ५ ॥ ए वाय तणो छे जोरोरे,

किणही कीधो मांभो दोरो ॥ जे जीम हशे तिम भासोरे, हुं जोशुं एह तमासो ॥ ६ ॥ कोई मंत्रवादियो आयो रे, ते आपण परे खीजायो ॥ ए तेहनां कीधां कामो रे, ए वे राजसुता अभिरामो ॥ ७ ॥ ए परवश हुं जा मोरे, धूर फेंकीयो तेहनो ठामो ॥ ए मारीविदारी दे होरे, तस हाडा साथे सनेहो ॥ ८ ॥ तव करुणा नीम ति आणीरे, सा कीधी ताम सयाणि ॥ श्री नवकार प साइरे, न वांछित काम सराइ ॥ ९ ॥ नम रुपीया ज ण ध्यायारे, राजाना रोश भराया ॥ उपकार कोई न जाएयोरे, प्रभु राजग्रहि में आएयो ॥ १० ॥ पुछंता, उत्तर भाखेरे, ते कोई न छानो राखे ॥ ए केतुमतिने वापेरे, वर एक निमितिए आपे ॥ ११ ॥ ए पुछयोथो पे हलुं वारुरे, जगजीवन आ सहु मारु ॥ मुक हता आ प्यवता विरेरे, तुं भाख्य भावि भलीपेरे ॥ १२ ॥ तव जाणे नर साहि नाणिरे, कही दासीए अहिनाणि ॥ तुम पुत्री सारी कंस्येरे, तस नंदनथी तुम रंस्ये ॥ ॥ १३ ॥ ते दिनथी नृप आदेशरे, हुशियारीमें सुविशे प ॥ वरतता तुं अव लाधोरे, सुर इष्ट भणी आराधो ॥ १४ ॥ अव वध भूमीका लेइरे, तुज घाव करेस्यां केइ ॥ ए सुंदर काया कापीरे, दिश देवाने बलि आ पी ॥ १५ ॥ स्वामीनो काम समारीरे, हम वाहला हो स्यां भारी ॥ एह सुणंतां वातोरे, प्रभुनो मन अकुला तो ॥ १६ ॥ चिंताए चांप्यो जामोरे, एक खेचर आयो

तामो ॥ प्रभु लेइ चाल्यो ठेडाइरे, ते सुभट रह्या मों हवाइ ॥ १७ ॥ आकाशे जाता जोइरे, खग साथे पु छे सोइ ॥ तुं कुण अछे सुखकारीरे, कहे वात विशेष विचारी ॥ १८ ॥ हुं प्रभावतिनो बाबोरे, माहरो छे आ धिक असाबो ॥ मुझ भागीरथी अभीधानीरे, हुं राया नो राजानो ॥ १९ ॥ अब पोतिने परणावारे, वैताढ्य गिरिरे वसावा ॥ तुझ लेइ जाउंबुं विरारे, तुम साहस वंत सधीरा ॥ २० ॥ ए दृष्टीरागनो साजोरे, छे प्रभा वति शुं झाझो ॥ ए सत्ताविशमी ढालोरे, गुणसू रि कहे सुविशालो ॥ २१ ॥

दुहा ॥ भूमंडलने परहरी, गावो वीसहजार ॥ उंचो जाता अंबरे, दक्षिण श्रेणि उदार ॥ १ ॥ गंधसमृद्धा पुरवरां, आइ गया ततकाल ॥ खबर जणावी सादरी, सहु भणी सुविशाल ॥ २ ॥

ढाल २८ मी ॥ तुं सांभल हो जिनपति ॥ ए दे शी ॥ जग जाचो हो यदुपति, तस माथे दिपति राति ॥ सुर मानवने माटायति, अति किराति गावे गति ॥ ज० ॥ १ ॥ साजन सनमुख आवीयां, ते प्रभुजीने मन भावीयां ॥ पुरमाहि सीधाविया, ते परम महा सु ख पावियां ॥ ज० ॥ २ ॥ मुहूर्त्तनो मंडाणोजी, तब कीजे कोरुकल्याणोजी ॥ तब मल्या जोसी जाणोजी, दिन साध्यो सार प्रधानोजी ॥ ज० ॥ ३ ॥ प्रभाव तिने प्रभु तणो, तब कीधो व्याह सोहामणो ॥ वर

रुडोने रलीआमणो ॥ तव घर घरबार वधामणो ॥ ज० ॥ ४ ॥ सुख सागरमांही झीलेए, तब तन मन शुं अति फूलेए ॥ तव नेम सुराति पूलिए, पागो सघ लो हि नूलिए ॥ ज० ॥ ५ ॥ सुपक आप विगोवतां, तव आणी पोहतो जोवतां ॥ अति निंद्रावश होवतां, प्रनु लेइ चल्यो सुखे सोवतां ॥ ज० ॥ ६ ॥ अंबर जातां जागीयो, तव काठो दोइ लागीयो ॥ गरदन में गडदो वागीयो, तव वैरीनो वल नागीयो ॥ ज० ॥ ॥ ७ ॥ उंमा पाणिमें पड्यो, जल पयरीने कां अड्यो ॥ प्रनु वसति नणि अति दडवड्यो, तव कुंदनपुरी आवी चड्यो ॥ ज० ॥ ८ ॥ राजा राज करे नलो, ते पद्मप्रन्न वे निर्मलो ॥ ते गुण आचारे उजलो, ते तेगने त्यागे आगलो ॥ ज० ॥ ९ ॥ पद्मश्री नारी सती, त स पुत्री वे गुणवति ॥ सा चाले चाले मलपती, सा कोमल वाणी जलपती ॥ ज० ॥ १० ॥ सा राग कला ए अति ताणे, अनिमानपणो मनमां आणे ॥ सा नली वुराइ न पीबाणे, जग सगलो हि तृण करी जा णे ॥ ज० ॥ ११ ॥ इम सुणी आयो चाली, जीती ने परणी सा बाली ॥ सा नारी मेली जे टाली, लही ए जो जिन आज्ञा पाली ॥ ज० ॥ १२ ॥ रस रंगे रमतो संचरे, तव निलकंठजी अपहरे ॥ तव सीख दे तां करगरे, प्रनु पर्मीयो चंपा सरवरे ॥ ज० ॥ १३ ॥ मंत्रिनी पुत्री परणी, सा कंचन वरणी सुख करणी ॥

सा रुपे रंभा मनहरणी, सा इंद्राणी उपम धरणी ॥ ज० ॥ १४ ॥ सुखकारी सुधरे घणी, जाणे सुख पावुं एहभणी ॥ पिण जेहनो रखवालो धणी, तिहां कीसी चले वैरि तणी ॥ ज० ॥ १५ ॥ तव अरि आ खुण जाणयो कीयो, प्रभु जल क्रिडा करतो लीयो ॥ तव मुष्टिशुं हणतां हियो, ते अंबरथी नाखी दियो ॥ ज० ॥ १६ ॥ तव पडीयो गंगाजल मांहि. तव अट विमे फीरतो प्राहि ॥ प्रभुवन राजा उठाहि, नगरीए आणयो धरी बाहि ॥ ज० ॥ १७ ॥ कुमरी राज पर णावतां, तव गीत घणेरा गावतां ॥ तव मंगलाच्यार करावतां, तव सुंदरीशुं सुख पावतां ॥ ज० ॥ १८ ॥ तव नंदन नीके जाइउ, राजाने आणी सुणाइयो ॥ तव दाने दरिद्र गमाइउ, तेजरथ कुमर मन भाइउ॥ ज० ॥ १९ ॥ तव अयवंति सुंदरी करी, तव सुरसे न्याशुं वरी ॥ सामा देवी तव आवे खरी. विनति क रे करधरी ॥ ज० ॥ २० ॥ बेसी विमान प्रभु आवे, अशनीवेगने सोहावे ॥ सेन सकल लेइ भावे, चा ली अरिनोपुर पावे ॥ ज० ॥ २१ ॥ अंगारक चढी आयो, सुर्पक निलकंठ बोलायो ॥ रणथंभ तीहारो पा यो, बहुविध युद्ध बणायो ॥ ज० ॥ २३ ॥ विद्याध र बहु थाठा, युद्ध करता अति त्राठा ॥ जाए अ पुठा नाठा, प्रभुजीशुं अति गाठा ॥ ज० ॥ २३ ॥ अशनीवेगने राज आप्यो, सहु वदीतो स्थिर स्था

प्यो ॥ श्रेणीमांहि मुख्य करी गण्यो, सघलो तेहनो दुःख काप्यो ॥ ज० ॥ २४ ॥ निलयशा आवी घरी, हाथ जोडी विनति करी ॥ ए दोइ विनावर सहचरी, ए सह सवहुं तेरे गुणभरी ॥ ज० ॥ २५ ॥ ए ढाल आठावीशमी, शीवपुरी जाशे आतम दमी॥ ए नारी सहु सरखी समी, श्री गुणसागर मनसा रमी॥ज०॥२६॥

दुहा ॥ शुद्धि सघली लेइ करी, श्री वसुदेव कुमार ॥ मध्य खंममें आवता, सुणीयो एह विचार ॥ १ ॥ श्री अरिष्ट पुरवर भलो, श्री हरी ब्रह्म नरेश ॥ पट राणी पदमावति, पद्मा वास विशेष ॥ २ ॥ कुमरी नामे रोहिणी, अमरीनो सुविलास ॥ नख शिख तांइ शोभति, स्वयंवर मंडप तास ॥३॥ जरासंध सुत बांधवा, पांडव कौरव राय ॥ यादव खेचर नृप अवर, मिल्या एकठा आय ॥४॥ बैठा वड वड आसणा, वडा वडा नूपाल ॥ वडी वमी शोभा करी, दिसे झाकझमाल ॥५॥

ढाल २९ मी ॥ धन प्रभु रामजी, धन्य परिणाम जी ॥ ए देशी ॥ कुंवर आयो श्री वसुदेववे ॥ रुप विरुप करी कोलिको, भाइ न लहे भेववे ॥ कुं० ॥ १ ॥ रोहिणी रंभा सरस विराजे, साजी सवरो वेसवे ॥ मंडप आवी जगत सोहावी, भिन्न करी सुविशेषवे ॥ कुं० ॥ २ ॥ प्रतिहाराणि आगे होइ, प्रगट करे नृप नामवे ॥ जरासंध त्रीखंम नरेश्वर, ए प्रभुजी अभिराम वे ॥ कुं० ॥ ३ ॥ अपराजीत बंधन कुंवरजी, कालयवन

कुलमांहिबे ॥ दाता भोक्ता दल दरिआको, नाम धरा वत प्राहिबे ॥ कुं० ॥ ४ ॥ पांडव पंच प्रतापवले अति, कौरवसत ए देखवे ॥ कर्ण कहावे कल्पतरु जे, जे ए परतख पेखवे ॥ कुं० ॥ ५ ॥ उदधिविजय आदे नव भाइ, अधिकाइमें आणबे ॥ उग्रसेन अलोल करंता, यादव राजा जाणवे ॥ कुं० ॥ ६ ॥ खेचर भूचर सर्व प्रकारे, आगे एह नीहालबे ॥ कुमरी मुह मचकोडी चाली, हां आगेरे चालवे ॥ कुं० ॥७॥ वड वड राणा वड वड राजा, परहरीया सब दूरवे ॥ चतुरपणाथी चाली आवी, श्री वसुदेव हजूरवे ॥ कुं० ॥ ८ ॥ आप वजावे वाजा वारु, सुघमाइनो संचवे ॥ कुमरी देखे रुप मूलगो, नजर न खंचे रंचवे ॥ कुं० ॥ ९ ॥ धौं धौं धप पम मुञवर, मांदल शब्द करंतवे ॥ धसी वरमाला रलियात रोहिणी, कुंयर कंठ धरंतवे ॥ कुं० ॥ १०॥ आप मने कुमरी तो कीधो, एतो सर्व सयाणबे ॥ मर्म अणल हेवे राजा सघला, हुया अधिक अयाणबे ॥ कुं० ॥ ११ ॥ जधंत कुंवर कालयवनजी, कोप वशे उच्चरंतवे ॥ अवर वरानी नाठी पडीथी, ए वर न्याय वरंतवे ॥ कुं० ॥ १२ ॥ कुमरी भूली हम नहि भूल्या, ल्यो वरमाल छिनायवे ॥ काग गले कचननी माला, एतो भली न देखायवे ॥ कुं० ॥ १३ ॥ चाकर आवी माला मांगे, नृप सुत वचन सुणायवे ॥ कुमर कहे किम राज करेछे, करता एहवो न्यायवे ॥ कुं० ॥

॥ १४ ॥ कर्महिनने क्लेश किहांथी, कांइ करन चढा यवे ॥ पाणिग्रहणने रजक ए मोठो, अण सरज्यां न लहायवे ॥ कुं० ॥ १५ ॥ निर्नर्ग्यो ते जरासंधशुं, बोल्यो चटक लगायवे ॥ ए मातंग अछे मयमंतो, हम सरखा शुं थायवे ॥ कुं० ॥ १६ ॥ जरासंध कोपे कल कलीयो, वड वमा सुन्नट सजायवे ॥ हाथी घोडा रथ थी उठी, रेणुं रही नन्न गायवे ॥ कुं० ॥ १७ ॥ श्री हरि ब्रह्म नरेश नाखे, अवसर जाण कहायवे ॥ जो तरी रथ कुंमरी वेसारी, अब तो तुं टली जायवे ॥ कुं० ॥ १८ ॥ कुमर कहे सुसराजी एहवो, बोलने फेरी बोलवे ॥ एतो संग लाचार हमारी, था दृढता मम डोलवे ॥ कुं० ॥ १९ ॥ विंद्या वलने मन वले वलीयो, वलीया वे नूज दंडवे ॥ तृण जीम सुन्नट उमाइ नाख्या, प्रनुनी पवन प्रचंडवे ॥ कुं० ॥ २० ॥ बीजी फोज वनी अति आवी, कुंवर कुलीयो घेरवे ॥ कांइ अधरम करो सुर कहेता, लाजी चल्या दल फेरवे ॥ कुं० ॥२१॥ संघकेतु नूपाल पधारयो, दल बल सबलो साजवे ॥ जदुपति सिंह उठावणी आगे, मृग जेम चाल्या नाजवे ॥ कुं० ॥ २२ ॥ महाबल राजा अति बलवंतो, सन्मुख आयो चालवे ॥ उगंता रवी आगे तम जीम, सोपिण गयो मुह टालवे ॥ कुं० ॥ २३ ॥ उदधिविजय नृप वीडो पायो, ए तुम सरीखो काजवे ॥ जादव जोर विशेष जणावत, आवत करत अवाजवे ॥ कुं० ॥ २४ ॥

कुलमांहिबे ॥ दाता भोक्ता दल दरिआको, नाम धरा वत आहिबे ॥ कुं० ॥ ४ ॥ पांडव पंच प्रतापवले अ ति, कौरवसत ए देखवे ॥ कर्ण कहावे कल्पतरु जे, जे ए परतख पेखवे ॥ कुं० ॥ ५ ॥ उदधिविजय आ दे नव भाइ, अधिकाइमें आणवे ॥ उग्रसेन अलोल करंता, यादव राजा जाणवे ॥ कुं० ॥ ६ ॥ खेचर भू चर सर्व प्रकारे, आगे एह नीहालबे ॥ कुमरी मुह म चकोडी चाली, हां आगेरे चालवे ॥ कुं० ॥७॥ वड वड राणा वड वड राजा, परहरीया सब दूरवे ॥ चतुरपणाथी चाली आवी, श्री वसुदेव हजूरवे ॥ कुं० ॥ ८ ॥ आप वजावे बाजा वारु, सुघमाइनो संचवे ॥ कुमरी देखे रु प मूलगो, नजर न खंचे रंचवे ॥ कुं० ॥ ९ ॥ धौं धौं धप पम मुरुवर, मांदल शब्द करंतवे ॥ घसी वरमा ला रलियात रोहिणी, कुंवर कंठ धरंतवे ॥ कुं० ॥ १० ॥ आप मनें कुमरी तो कीधो, एतो सर्व सयाणवे ॥ म र्म अणल हेवे राजा सघला, हुया अधिक अयाणवे ॥ कुं० ॥ ११ ॥ उधंत कुंवर कालयवनजी, कोप व शे उच्चरंतवे ॥ अवर वरानी नाठी पडीथी, ए वर न्या य वरंतवे ॥ कुं० ॥ १२ ॥ कुमरी भूली हम नहि भू ल्या, ल्यो वरमाल छिनायवे ॥ काग गले कंचननी मा ला, एतो भली न देखायवे ॥ कुं० ॥ १३ ॥ चाकर आवी माला मांगे, नृप सुत वचन सुणायवे ॥ कुमर कहे किम राज करेछे, करता एहवो न्यायवे ॥ कुं० ॥

॥ १४ ॥ कर्महिनने क्लेश किहांथी, कांइ करन चढा यन्ने ॥ पाणिग्रहणने रजक ए मोठो, अण सरज्यां न लहायवे ॥ कुं० ॥ १५ ॥ निर्नगर्यां ते जरासंधशुं, बोल्यो चटक लगायवे ॥ ए मातंग अछे मयमंतो, हम सरखा शुं थायवे ॥ कुं० ॥ १६ ॥ जरासंध कोपे कलकलीयो, वड वम्रा सुन्नट सजायवे ॥ हाथी घोडा रथ थी उठी, रेणुं रही नन्न गायवे ॥ कुं० ॥ १७ ॥ श्री हरि ब्रह्म नरेश न्नाखे, अवसर जाण कहायवे ॥ जो तरी रथ कुमरी वेसारी, अव तो तुं टली जायवे ॥ कुं० ॥ १८ ॥ कुमर कहे सुसराजी एहवो, वोलन फेरी बोलवे ॥ एतो सग लाचार हमारी, था दृढता मम डोलवे ॥ कुं० ॥ १९ ॥ विद्या वलने मन वले वलीयो, वलीया वे न्नुज दंडवे ॥ तृण जीम सुन्नट उनाइ नाख्या, प्रन्नुजी पवन प्रचंडवे ॥ कुं० ॥ २० ॥ वीजी फोज वनी अति आवी, कुंवर कुलीयो घेरवे ॥ कांइ अधरम करो सुर कहेतां, लाजी चल्या दल फेरवे ॥ कुं० ॥२१॥ संघकेतु न्नूपाल पधारयो, दल वल सवलो साजवे ॥ जदुपति सिंह उठावणी आगे, मृग जेम चाल्या न्नाजवे ॥ कुं० ॥२२॥ महावल राजा अति वलवंतो, सन्मुख आयो चालवे ॥ उगंता रवी आगे तम जीम, सोपिण गयो मुह टालवे ॥ कुं० ॥ २३ ॥ उदधिविजय नृप वीडो पायो, ए तुम सरीखो काजवे ॥ जादव जोर विशेष जणावत, आवत करत अवाजवे ॥ कुं० ॥२४॥

आनंददुंदुभी साहमो आयो, हाको हाक होवंतवे ॥ अचरिज पामी अंबरस्वामी, कौतुक अति जोवंतवे ॥ कुं० ॥ २५ ॥ आगे पाव न ठावे कोई, होइ रह्यो ए सोचवे ॥ किंज न धसे अरि उपर राजा. लोगा ए आलोचवे ॥ कुं० ॥ २६ ॥ सिर लोचनने नुज पिण द क्षिण, राजाना फूरकंतवे ॥ करत विचारण ए स्थिर स्थापी, कोइक इष्ट मिलंतवे ॥ कुं० ॥ २७ ॥ कुमर क हे लरुवो नहि जुगतो, नृप मुज बाप समानवे ॥ स्व अक्षर बाण चलाव्यो आव्यो, नृप आगे अहिनाणवे ॥ कुं० ॥ २८ ॥ अक्षर वाच्या लघु नाइना, जीलो प्रनु प्रणामवे ॥ बहुत्तर सहस ए गुण राणी, जाणी आज सकामवे ॥ कुं० ॥ २९ ॥ साजन मेले वसीए सोतो, वास नलो कहेवायवे ॥ साजन मेला पाखे व सवो, जंगल मांही गणायवे ॥ कुं० ॥३०॥ नाइ धाइ सन्मुख आयो, कुंवर लाग्यो पायवे ॥ उठाइलियो जे अधिकेरे, लीधो कंठे लगायवे ॥ कुं० ॥ ३१ ॥ चाम रुधिरने मांस हाडथी, नींजी नीतर जाइवे ॥ पंचहि पुट नेदाणी नारी, गाढी सीतलताइवे ॥ कुं० ॥३२॥ जरासंध नरेश्वर आदे, हरख्या राय अपारवे ॥ धन रोहणी कुमरी करमेंति, पायो नल नरतारवे ॥ कुं० ॥ ॥ ३३ ॥ सो वर साने अंतर आयो, ऋद्धि घणेरी पाय वे ॥ विद्या विविध प्रकारे लायो, लब्धि वली वरु रा यवे ॥ कुं० ॥ ३४ ॥ सघली रमणिशुं प्रनु प्रगट्यो,

सौरिपुर आवंतवे ॥ घर घर मंगलाचार वधाइ, साजन सुख पावंतवे ॥ कुं० ॥ ३५ ॥ साह सहु मिलि चरणे लाग्या, प्रभु दीधो सनमानवे ॥ रामचंद्र जेम गुणनो ग्राहक, नाणे मनमे आनवे ॥ कुं० ॥ ३६ ॥ गज सायरने चंद सिंहवर, देखी सुपना च्यारवे ॥ शुभ वेलाइ रोहिणी जायो, श्री बलभद्र कुमारवे ॥ कुं० ॥ ३७ ॥ एकुणत्रीशमी ढाल रसाल, उपज्यो पुरुष प्रधानवे ॥ गुणसागरे हरि वंश तणेछे, दिन दिन च ढतो वानवे ॥ कुं० ॥ ३८ ॥

चोपाइ ॥ खंड खंड रस छे नव नवा, सुणतां मीठा साकर जेवा ॥ श्री हरिवंश चरित्र जयजयो, प्रथम अधिकार ए पूरो थयो ॥ १ ॥ इति ढालसागर प्रबंधे श्री हरिवंश विस्तार वर्णनो नाम प्रथम खंड समाप्त॥

॥ अथ हरिवंश ढाल सागर ग्रंथस्य द्वितीय खंड प्रारंभ ॥

दुहा ॥ श्रीमंधर स्वामी तणा, चरण नमुं चित्त लाय ॥ अत्र बीजो अधिकार वर, यःभणतां सुख थाय ॥ १ भुजंगविष्णु नरेंद्रजी, मनमें करे विचार ॥ अब अवसर संजम तणो ॥ तजिए विषय विकार ॥ ॥ २ ॥ वय पलट्या बाला पणो, वांछे विविध प्रकार ॥ विटल विगोवे आपने, नह ले शोच लिगार ॥ ३ ॥ उग्रसेन निज पुत्रने, राजभार आपंत ॥ धर्मघोष मुनिवर कने, संजम लीयो तुरंत ॥ ४ ॥ संजम पाल्यो

आनंददुंदुभी साहमो आयो, हाको हाक होवंतवे ॥ अचरिज पामी अंबरस्वामी, कौतुक अति जोवंतवे ॥ कुं० ॥ २५ ॥ आगे पाव न ठावे कोई, होइ रह्यो ए सोचवे ॥ किम न धसे अरि उपर राजा. लोगा ए आलोचवे ॥ कुं० ॥ २६ ॥ सिर लोचनने भुज पिण द क्षिण, राजाना फूरकंतवे ॥ करत विचारण ए स्थिर थापी, कोइक इष्ट मिलंतवे ॥ कुं० ॥ २७ ॥ कुमर कहे लरुवो नहि जुगतो, नृप मुज बाप समानवे ॥ स्व अक्षर बाण चलाव्यो आव्यो, नृप आगे अहिनाणवे ॥ कुं० ॥ २८ ॥ अक्षर वाच्या लघु भाइना, कीलो प्रभु प्रणामवे ॥ बहुत्तर सहस ए गुण राणी, जाणी आज सकामवे ॥ कुं० ॥ २९ ॥ साजन मेले वसीए सोतो, वास भलो कहेवायवे ॥ साजन मेला पाखे व सवो, जंगल मांही गणायवे ॥ कुं० ॥३०॥ भाइ धाइ सन्मुख आयो, कुंवर लाग्यो पायवे ॥ उठाइलियो जे अधिकेरे, लीधो कंठे लगायवे ॥ कुं० ॥ ३१ ॥ चाम रुधिरने मांस हाडथी, भींजी भीतर जाइवे ॥ पंचहि पुट भेदाणी भारी, गाढी सीतलताइवे ॥ कुं० ॥ ३२॥ जरासंध नरेश्वर आदे, हरख्या राय अपारवे ॥ धन रोहणी कुमरी करमैति, पायो भल भरतारवे ॥ कुं० ॥ ॥ ३३ ॥ सो वर साने अंतर आयो, ऋद्धि घणेरी पाय वे ॥ विद्या विविध प्रकारे लायो, लब्धि वली वरु रा यवे ॥ कुं० ॥ ३४ ॥ सघली रमणिशुं प्रभु प्रगट्यो,

सोरिपुर आवंतवे ॥ घर घर मंगलाचार वधाइ, साजन सुख पावतवे ॥ कुं० ॥ ३५ ॥ साह सहु मिलि चरणे लाग्या, प्रभु दीधो सनमानवे ॥ रामचंद्र जेम गुणनो ग्राहक, नाणे मनमे आनवे ॥ कुं० ॥ ३६ ॥ गज सायरने चंद सिंहवर, देखी सुपना च्यारवे ॥ शुभ वेलाइ रोहिणी जायो, श्री बलभद्र कुमारवे ॥ कुं० ॥ ३७ ॥ एकुणत्रीशमी ढाल रसाल, उपज्यो पुरुष प्रधानवे ॥ गुणसागर हरि वंश तणेवे, दिन दिन च ढतो वानवे ॥ कुं० ॥ ३८ ॥

चोपाइ ॥ खंड खंड रस छे नव नवा, सुणता मीठा साकर जेवा ॥ श्री हरिवंश चरित्र जयजयो, प्रथम अधिकार ए पूरो थयो ॥ १ ॥ इति ढालसागर प्रबधे श्री हरिवंश विस्तार वर्णनो नाम प्रथम खंड समाप्त॥

॥ अथ हरिवंश ढाल सागर ग्रंथस्य द्वितीय खंड प्रारंभ ॥

दुहा ॥ श्रीमंधर स्वामी तणा, चरण नमुं चित्त लाय ॥ अब बीजो अधिकार वर, यःभणतां सुख थाय ॥ १ भुजंगविष्णु नरेंद्रजी, मनमें करे विचार ॥ अय अवसर संजम तणो ॥ तजिए विषय विकार ॥ ॥ २ ॥ वय पलट्या बाला पणो, वांछे विविध प्रकार ॥ विटल विगोवे आपने, नह ले शोच लिगार ॥ ३ ॥ उग्रसेन निज पुत्रने, राजभार आपंत ॥ धर्मघोष मुनिवर कने, संजम लीयो तुरंत ॥ ४ ॥ संजम पाल्यो

साचशुं, केवल कीधो प्रकाश ॥ भुजंगाविष्णु महा मुनि, साध्यो मोक्ष निवास ॥५॥ मथुरा पुरी राज करे भलो, उग्रसेन राजान ॥ न्याय निति गुण धारणो, शोभा गुण मणि खाण ॥ ६ ॥

ढाल ३० मी ॥ रामको सुजश घणो ॥ ए देशी ॥ राजा गुणवंतो, न्याय धर्म प्रतिपालहो ॥ रा० ॥ गुरु उ गोत्र गोवलहो ॥ रा० ॥ ए टेक ॥ उग्रसेन राजा भलोहो, पाले राज उदार ॥ प्रजा तणीं प्रतिपालणा हो, नहि अनित्य लिगारहो ॥ रा० ॥ १ ॥ आप आपणो साचवेहो, सहुए कुल आचार ॥ जोर न जस्ती करी सकेहो, को केहनी कण वारहो ॥ रा० ॥ २ ॥ नाम प्रणामे धारणीहो, पटराणी सुविशाल ॥ पति भक्ति साची सतीहो, गजगति चाल रसालहो ॥ रा० ॥ ॥ ३ ॥ आनन एहु विराजतोहो, वयण सुधारस सार ॥ मनसा धर्मज तत्वनीहो, रति देवि आकारहो ॥ रा० ॥ ४ ॥ स स्नेहि परीवारशुंहो, देव गुरुशुं प्रेम ॥ पोसा पडिक्कमणां करेहो, पाले सुधा नेमहो ॥ रा० ॥ ५ ॥ प्रीतमशुं अति प्रीतमीहो, जीव एक तनुदोय ॥ आनंद रंग विनोदमेहो, राजा राणी होयहो ॥ रा० ॥ ६ ॥ तापस एक निदानशुंहो, राणी उर अवतार ॥ उपजावे ते मोहलाहो, पति कालेजानो हारहो ॥ रा० ॥ ७ ॥ मंत्रि बुद्धि विशेषथीहो, डोहलो पूरो होय ॥ जयो जलहि प्रवाहिउहो, भुंडा सगो नही कोय

हो ॥ रा० ॥ ८ ॥ सौरीपुर व्यवहारीयोहो, शेठ सुभ द्र उदार ॥ कांसाथी काढी लीयोहो, नामे कंस कुमारहो ॥ रा० ॥ ९ ॥ बालाने विहामणोहो, कंस स्वभावे आप ॥ शंक न माने कोईनीहो, न खपे तेज प्रतापहो ॥ रा० ॥ १० ॥ शेठ कलेस विचारवेहो, कीधो राय हजूर ॥ श्रीवसुदेव कुमारनेहो, दिधो जाणी सनूरहो ॥ रा० ॥ ११ ॥ पासे रहे वसुदेवनेहो, सारे सेव अपार ॥ कुमर न क्षण अलगो करेहो, विनय वडो संसारहो ॥ रा० ॥ १२ ॥ ब्रहद्रथ वारु महाहो, हरिवंशी राजान ॥ राणी नामे श्रीमतिहो, जायो पुत्र प्रधानहो ॥ रा० ॥ १३ ॥ जरासंध वड राजविहो, त्रिखंड तणो नृपाल ॥ राज ग्राहिमां राजतोहो, पिशुन न रानो कालहो ॥ रा० ॥ १४ ॥ अपराजित आदे करीहो, बंधव केरी जोड ॥ कालयवन आदे घणाहो, कुमर मूछ मरोडहो ॥ रा० ॥ १५ ॥ सिंहरथ राजा बांधीयोहो, राय तणे आदेश ॥ श्री वसुदेव कुमरजीहो, सुजश लियो सुविशेषहो ॥ रा० ॥ १६ ॥ करत जमाइ आपणोहो, हरख्या लोक अशेष ॥ कुमरी जाणी कुलक्षणीहो, कीधो कंस नरेशहो ॥ रा० ॥ १७ ॥ निश्चय लाधो वातनोहो, लोक वचनथी जाम ॥ मास्युं रीस न उपजीहो, ज्ञान विचारत तामहो ॥ रा० ॥ १८ ॥ पतित पिताथे छोरुवोहो, माय न छोडी जाय ॥ गर्भ धरेवे पोखवेहो, मा मोठी कहेवायहो ॥ रा० ॥

॥ १९ ॥ मांगी कर मेलावणेहो, मथुरा करण उपाय ॥ बाप दियो कठ पिंजरेहो, वयर विलय नविजायहो ॥ रा० ॥ २० ॥ असमंजस देखी घणोहो, श्री अतिमुक्त कुमार ॥ पाले चारित्र सादरोहो, राग न रोस लिगारहो ॥ रा० ॥ २१ ॥ कंस वतंसक सारीखो हो, वरते आण अखंड ॥ मर्दन मान महाबलीहो, पाले राज प्रचंडहो ॥ रा० ॥ २२ ॥ ढाल भली ए त्रिसमीहो, निसुणे जे नरनार ॥ गुणसागर गर्जे महाहो, अन धनने अधीकारहो ॥ रा० ॥ २३ ॥

दुहा ॥ अनिकजस्या जस आगलो, अनंत सेन दयाल ॥ अजीत सेन सुहामणो, अनहित रिपु सुकुमाल ॥ १ ॥ देवसेन तो देवता, शत्रुसेन अतिधीर ॥ उपजशे हरी माहिरे, सामल वरण शरीर ॥ २ ॥ वीरा वरणे सामला, वीरा शोभ निधान ॥ वीरा सघला सारिखा, वीरा पुरुप प्रधान ॥ ३ ॥ वीरा भोगी भमरला, भोगवशे भल भोग ॥ त्यागी तो त्रिभुवन सीरे, योगवशे वरयोग ॥ ४ ॥ वीरा साधु सलुणडा, जोतां सहस्र अढार ॥ होशे शिवपद साधणां, साचा संजम धार ॥५॥ ए षटहि वीरा तणा, पूर्व भवंतर सार ॥ मुज कहेतां तुमे सांभलो, भविक जनो सुविचार ॥६॥

ढाल ३१ मी ॥ परभव वात सुणावेरे स्वामी ॥ ए देशी ॥ षट भाइना पूर्व भवंतर, देवकी नंदन भेरे सुहंकर ॥ चरम शरीरी उत्तम प्राणी, नेम जिनेसरजी

नी ए वाणी ॥ प० ॥ १ ॥ मथुरा नामे नगरी बोली,
जाणी ए इद्रपुरी सम तोली ॥ भानु नामे शेठ उदार,
कंचन कोडी अछे तसुवार ॥ प० ॥ २ ॥ जमुना नामे
निरुपम नारी, साहने सुहाणीछे अति प्यारी ॥ पुत्रो
सात जनी ते माता, जगमांहि छे अधीक विख्याता ॥
प० ॥ ३ ॥ सुभानुने भानुकिरति, भानुखेण ए त्रि
जो विरति ॥ चोथो सूरज ने सूरदेवो, छठो सूरदत्त क
हेवो ॥ प० ॥ ४ ॥ सूरसेन ए साते भाइ, नारी साते
ए परणाइ ॥ कालिंद्रि तीलकाने कांता, श्री कांता सुं
दरी अति माता ॥ प० ॥ ५ ॥ द्युति समुद्युति वेसे
विशाली, चंद्रसुं कांता रुप रसाली ॥ सात सहोदर
साते नारी, साता माने विविध प्रकारी ॥ प० ॥ ६ ॥
शेठ अने शेठाणी दिक्षा, लेइ पाले सुधी सिक्षा ॥
संथारो करी छोडी प्राणो, ततखिण पाम्या अमर वि
मानो ॥ प० ॥ ७ ॥ पाछे कुंअर कुव्यसने पडीया, ध
न उजाडीने रडवडीया ॥ आपद चुरथाने अति भां
ग्या, तव ते चोरी करवा लाग्या ॥ प० ॥ ८ ॥ उजे
णी नगरे चाली आया, चोरी करवा काज सीधाया ॥
लघु भाइने मूकी मसाणे, बिजो चोरीनी मति ठाणे
॥ प० ॥ ९ ॥ तिणे अवसर तिहां राजा निको, वृप
ध्वजराय राया सिर टिको ॥ कमलाराणी मगी कुमरी,
रुपे रुडी जेहवी अमरी ॥ प० ॥ १० ॥ दृढ सुष्टिने
सात विवाही. सासरडे आवीरे उमाहि ॥ सासु क्रोध

णी बहु वडवेति, नीत लमाइ सासु सेति ॥ प० ॥११॥ सासु हुय थाए वहु आगे, तो वहु सासुने पगे लागे ॥ जो सासु अति आप खेंचावे, तो वहु सासुने वश नावे ॥ प० ॥ १२ ॥ पापज प्यारो ने धर्म न प्यारो, घरमे वरते वहुनो वारो ॥ नारी नेहनो नाध्यो पिउम्रो, माथी दूर त्रियाथी नैडो ॥ प० ॥ १३ ॥ आयो मास वसंत विराजी, खेलण केरो साज सुसाजी ॥ राय जमाइ वनमे आवे, खेल करी रलीयायत थावे ॥ प० ॥ १४ ॥ पापणी पाप विच्यारे गाढो, विपहर मोटो आणी सदाढो ॥ घटमें राखी कहे विकराला, वहु ला वो कुसुमकी माला ॥ प० ॥ १५ ॥ विपहर दडमी सा ह्यो हाथों, सा मुर्छाणी मिलीयो सहु साथो ॥ मुइ जा णी मसाणे मेली, परम महासुख पामि पेलि ॥ प० ॥ ॥ १६ ॥ राते घर आयो भरतारो, दुचिंतो देखि प रिवारो ॥ खबर लहि समसाने आवे, एक ऋपि देखी सुख पावे ॥ प० ॥ १७ ॥ पगे लागीने उभो होइ, भाखे आरतिवंतो सोइ ॥ जो हुं मंगी नारी पाउं, तो तुम चरणे अति चित लाउं ॥ प० ॥ १८ ॥ आगे जाता मंगि पामी, साधु समीपे लायो स्वामी ॥ ऋपि तनुवाये फरसी जामो, विपहर विप उत्तरीयो तामो ॥ प० ॥ १९ ॥ मंगी मूकी मुनिवर सगे, आपण घर आ यो मन रंगे ॥ लेवा महिला साज सुचंगे, भ्राभूपण वस्त्र बहु भंगे ॥ प० ॥ २० ॥ एतले वितक वितो के.

हवो, ते सांजलिए जे वे जेहवो ॥ सूरसेन मसाणे वे
साथो, ते मगीनी दृष्टि आयो ॥ प० ॥ २१ ॥ रूप
वणो ने यौवनवंतो, तरुणी त्रियानो चित्त हरंतो ॥
मगी मोहि देखी तासो, पति करवानी मांडी आसो
॥ प० ॥ २२ ॥ वनिता वेली सरखी साची, पासे ल
हे तस साथे राचि ॥ ते शुं मंगी घाले जाखो, सुख
विलसणानि वे अजिलापो ॥ प० ॥ २३ ॥ चोर कहे
तुऊ पतिथी सकु, मगी मुह कियुं तव वंकु ॥ पति मा
री तुऊ साथे आवु, पिण जो थारी वाचा पाउं ॥ प०
॥ २४ ॥ कौतुक जोवा वाचा आलि, मंगी पति तव
आयो चालि ॥ खांडो मंगीने पकडायो, ऋषि पग पू
जणने चित्त लायो ॥ प० ॥ २५ ॥ मंगी चोट करंति
जाणि, मा कहि बोल्यो करुणा आणि, रंडी चंडीरे कु
लनंडी, शुं चाहे नीजपति शीरखंमी ॥ प० ॥ २६ ॥
प्रितम प्रेम वसे हसी जाखे, ए शुं सा तव उत्तर दा
खे ॥ जाम्हे मारी मुऊ कर कंपे. म्यान पड्यो वटकी
इम जंपे ॥ प० ॥ २७ ॥ जुंमाने उपजे अति आइ,
पेली जिम यक्ष मूरति लाइ ॥ प्यारि थइ प्रितमने
जमाइ, तिम मंगीए वान बणाइ ॥ प० ॥ २८ ॥ जा
इ चोरीनो धन लाया, वाटा साथे ताम कराया ॥ ल
घु जाइ वाटो नवि इछे, सजम लेवो मनमां वछे ॥ प०
॥ २९ ॥ जाइ पूछे ए किण कारण. मंगी चरीत्त सु
णायो तारण ॥ हलुकर्मी वैरागे राता, धन सघलो ले

इ वड भ्राता ॥ प० ॥ ३० ॥ घर आवी वहु याने आ
पी. आपण संजमनी मती थापी ॥ कारण जाणी स
हु हुए वैरागी, चउदे माणस हुआ त्यागी ॥ प० ॥
॥ ३१ ॥ दृढ मुष्टिने मंगी मीलिया, सोले माणस सु
रगति भलिया ॥ दो सागरनो पालि आयो, स्वर्ग सौ
धर्मे पुण्य प्रभावो ॥ प० ॥ ३२ ॥ द्वाइ खंडे भरत
वखाणु, गिरी वैताढ्य दक्षिण दिसी जाणं ॥ नित्या
लोक नगरिनो नामो, चित्रचूड राजा अभिरामो ॥
प० ॥ ३३ ॥ नामे प्रणामे नारि मनोहर, साते सुत
उपना तस उदर ॥ एक निमतिज मोठो देख्यो. सा
त भने वैराग्या विशेख्यो ॥ प० ॥ ३४ ॥ संजम पा
लि सनतकुमारे, देव थया करणि अनुसारे ॥ सागर
साते आयुज हुवो. वड बंधव उपजीयो जूवो ॥ प०
॥ ३५ ॥ कुरु जंगल हथीणापुर केरो, गंगदेव बे भूप
भलेरो ॥ नंदजसा राणि मन भावि. पटहि सुत उपजी
या आवी ॥ प० ॥ ३६ ॥ गंग गंग दत्त गंग सुमित्रो.
नंद सुनंद नंदिखेण पवित्रो ॥ ए पटहि बंधवनि जो
रू. मात पिताना पुरे कोड ॥ प० ॥ ३७ ॥ माता पु
त्रो चारित्र लिधो. सीनप जन्म कतारथ किधो ॥ अ
णसण अवसर सुत मुख जोवे. मात मोह तणे वस
होवे ॥ प० ॥ ३८ ॥ किधो एह नियाणो माइ. आगे
होज्यो एह सगाइ ॥ स्वर्ग सातमे तेह सिधाया. सो
ले सागर आयु लहाया ॥ प० ॥ ३९ ॥ देश मृगा

वइ नामे वारु. नगर दसारण सोने अपारु. देवसे न राजा गुण भरीयो, बहु परिवारे अछे परवरियो ॥ प० ॥ ४० ॥ धन देवि राणी सुखदाइ, नंदजस्या जीव उपजी आइ ॥ देवकि नामे कुमरी जाइ, रूप कला गुणनि अधीकाइ ॥ प० ॥४१॥ इहा पट बंधव लीयो अवतारो, किण विध तेनो सुणो अधीकारो ॥ ढाल एक त्रिसमी इम भाखे,श्री गुणसागर पुन्य प्रकाशे ॥प०४२॥

॥ दुहा ॥ कस प्रशंस करी घणी, श्री वसुदेव नरेश ॥ दीधी देवी देवकि, किधो व्याह विशेष ॥ १ ॥ हय गय रथ कचन रयण, घणा तेम पटकुल ॥ आप्या वरने दायजे, मणी माणिक बहु मूल ॥ २ ॥ एक सहस गोकल वली, नंद गोकूलि साथ ॥ देवक राय पुत्री भणि, आपे बहुली आथ ॥ ३ ॥ कंस नंद साथे थही, श्री वसुदेव नरिंद ॥ मथुरा नगरी आविया, मनमां धरी आणंद ॥ ४ ॥ कंस हिवे तिहां पिण करे, सहुने जिमणवार ॥ विचमें जे बितक हुवो, ते सुणजो सुविचार ॥ ५ ॥

ढाल ३२ मी ॥ हरीया मन लागो ॥ ए देशी ॥ एक दिन बेठि गोखमें, जीवजस्या वरनाररे ॥ मुगधा मानभरी ॥ नणदि साथ कुतुहलि, सखियनके परीवाररे ॥ मु० ॥ १ ॥ करे पवन अतिचारणा, आपे केइ मुखवासरे ॥ मु० ॥ केइ अमृत जलथी भरी, दासी उभी पासरे ॥ मु० ॥ २ ॥ केइ विलेपन कर धरी,

कुंकुम गंटे केयरे ॥ मु० ॥ केइ ऊभी मुख आगले,
आदरसी कर लेयरे ॥ मु० ॥ ३ ॥ सूरज रथ खेंचि र
ह्यो, मध्याने आकासरे ॥ मु० ॥ जोवा नृप नारी त
णा, रूप रंग सुविलासरे ॥ मु० ॥ ४ ॥ एहवे मुनी
वर मलपतो, ऐमंतो ऋषीराजरे ॥ मु० ॥ ऊंच नीच
मज्झम कुले, फिरतो आहारने काजरे ॥ मु० ॥ ५ ॥
मुह मचकोडी माननी, देखि देवर लाग्यरे ॥ मु० ॥
एहवा रतन ते जनमीयां, धन्य माता तारो भाग्यरे
॥ मु० ॥ ६ ॥ मद गाकि बोले इसु, जीवजस्या त
जी लाजरे ॥ मु० ॥ भले आव्या ऋषिरायजी, उछ
व दिन छे आजरे ॥ मु० ॥ ७ ॥ धन्य घमी धन्य आ
जनी, मुझ मन अधीकि प्रीतरे ॥ मु० ॥ आवो देव
रजी आपणे, मिलीने गाइए गीतरे ॥ मु० ॥ ८ ॥ नि
सुणि वचन ते मुनिश्वरु, निरखे ऊंचो ते वाररे ॥ बेठी
दिठि गोखरे, वड बंधवनी नाररे ॥ मु० ॥ ९ ॥ अ
संमजस देखी थयो, रोषांकुल ऋषिरायरे ॥ मु० ॥ आ
जो कीमी वापडी, चमी सोनइए जायरे ॥ मु० ॥ १० ॥
ज्ञानी तव बोले इस्युं, दूर करण अहंकाररे ॥ मु० ॥
मतकर अंजस कारमा, भाभी मुगध गिमाररे ॥ मु० ॥
॥ ११ ॥ देखी जोबन धन आपणो, तुं मन फूलेछे
एमरे ॥ मु० ॥ पिण जेम वितिपातने, कुफल आखर
तेमरे ॥ मु० ॥ १२ ॥ थोडा दिवसने कारणे, ग्रहे
किस्यो अभिमानरे ॥ मु० ॥ संझा राग तणि परें,

ए सुख जातो जाणरे ॥ मु०॥१३॥ नणदलनो सुत सा
तमो, करसे सही संहाररे ॥ मु० ॥ तुझ पिताने कंत
नो, नहि संदेह लिगाररे ॥ मु० ॥ १४ ॥ साधु वचन
तव सांभलि, जीवजस्या मद जायरे ॥ मु० ॥ मन
में भय अति उपन्यो, मुझ कोप्यो ऋषिरायरे ॥ मु०॥
॥ १५ ॥ आवि कंतने विनवे, साधु कह्यो विरतंतरे ॥
मु० ॥ नीसुणी कंस मनमें धरे, साधु वचन एकंत
रे ॥ मु० ॥ १६ ॥ को नवी जाणे ज्यां लगे, त्यां पहि
लो उपायरे ॥ मु० ॥ साते गर्भ देवकी तणा, मांगी
स हुं समझायरे ॥ मु० ॥ १७ ॥ मांग्याजो मुज नाप
से, सात गरभ निज तेहरे ॥ मु० ॥ तो प्रतिकार बि
जो करी, जिम तिम राखीस देहरे ॥ मु० ॥ १८ ॥ इम
चिंतवी निज चित्तमें, महुआ जनपरें कंसरे ॥ मु० ॥
आयो घर वसुदेवने, राखेवा नीज वंसरे ॥ मु० ॥
॥ १९ ॥ दूर थकी करजोडीने, देखी करतो सेवरे ॥
मु० ॥ आदर देइ मिली करी, इम बोले वसुदेवरे ॥
मु० ॥ २० ॥ प्राण थकी मुज वहालो, ताहरे मन शी
वातरे ॥ मु० ॥ कहे तिम तुझ चिंतत करुं, ए मुज
वात सोहातरे ॥ मु० ॥ २१ ॥ कंस कहे करजोडने,
माणस तें मुज किधरे ॥ मु० ॥ जीवजस्या देवरावी
ने, सुजन पणे जस लीधरे ॥ मु० ॥ २२ ॥ तिम हि
वे देवकी पुत्रनां, सात गरभ यदुरायरे ॥ मु० ॥ प्रस
ति मात्र देवरावशो, जिम मुज मन सुख : मु

कुंकुम गंटे केयरे ॥ मु० ॥ केइ उभी मुख आगले,
आदरसी कर लेयरे ॥ मु० ॥ ३ ॥ सूरज रथ खेंचि र
ह्यो, मध्याने आकासरे ॥ मु० ॥ जोवा नृप नारी त
णा, रूप रंग सुविलासरे ॥ मु० ॥ ४ ॥ एहवे मुनी
वर मलपतो, ऐमंतो ऋषीराजरे ॥ मु० ॥ उंच नीच
मझम कुले, फिरतो आहारने काजरे ॥ मु० ॥ ५ ॥
मुह मचकोडी माननी, देखि देवर लाग्यरे ॥ मु० ॥
एहवा रतन ते जनमीयां, धन्य माता तारो भाग्यरे
॥ मु० ॥ ६ ॥ मद गाकि वोले इसु, जीवजस्या त
जी लाजरे ॥ मु० ॥ भले आव्या ऋषिरायजी, उब
व दिन छे आजरे ॥ मु० ॥ ७ ॥ धन्य घमी धन्य आ
जनी, मुझ मन अधीकि प्रीतरे ॥ मु० ॥ आवो देव
रजी आपणे, मिलीने गाइए गीतरे ॥ मु० ॥ ८ ॥ नि
सुणि वचन ते मुनिश्वरु, निरखे उंचो ते वाररे ॥ बेठी
दिठि गोखरे, वड बंधवनी नाररे ॥ मु० ॥ ९ ॥ अ
संमजस देखी थयो, रोपांकुल ऋषिरायरे ॥ मु० ॥ आ
जो कीमी वापडी, चमी सोनइए जायरे ॥ मु० ॥ १० ॥
ज्ञानी तव बोले इस्युं, दूर करण अहंकाररे ॥ मु० ॥
मतकर अंजस कारमा, भाभी मुगध गिमाररे ॥ मु० ॥
॥ ११ ॥ देखी जोवन धन आपणो, तुं मन फूलेछे
एमरे ॥ मु० ॥ पिण जेम वितिपातने, कुफल आखर
तेमरे ॥ मु० ॥ १२ ॥ थोडा दिवसने कारणे, अहे
किस्यो अभिमानरे ॥ मु० ॥ संझा राग तणि परें,

ए सुख जातो जाणरे ॥ मु०॥१३॥ नणदलनो सुत सातमो, करसे सही संहाररे ॥ मु० ॥ तुफ पिताने कंतनो, नहि संदेह लिगाररे ॥ मु० ॥ १४ ॥ साधु वचन तव सांजलि, जीवजस्या मद जायरे ॥ मु० ॥ मन में जय अति उपन्यो, मुक कोप्यो ऋषिरायरे ॥ मु०॥ ॥ १५ ॥ आवि कंतने विनवे, साधु कह्यो विरतंतरे ॥ मु० ॥ नीसुणी कंस मनमें धरे, साधु वचन एकंतरे ॥ मु० ॥ १६ ॥ को नवी जाणे ज्यां लगे, त्यां पछी लो उपायरे ॥ मु० ॥ साते गर्न देवकी तणा, मांगीस हुं समफायरे ॥ मु० ॥ १७ ॥ मांग्याजो मुज नापसे, सात गरज निज तेहरे ॥ मु० ॥ तो प्रतिकार बिजो करी, जिम तिम राखीस देहरे ॥ मु० ॥ १८ ॥ इम चिंतवी निज चित्तमें, महुआ जनपरें कंसरे ॥ मु० ॥ आयो घर वसुदेवने, राखेवा नीज वंसरे ॥ मु० ॥ ॥ १९ ॥ दूर थकी करजोडीने, देखी करतो सेवरे ॥ मु० ॥ आदर देइ मिली करी, इम बोले वसुदेवरे ॥ मु० ॥ २० ॥ प्राण थकी मुज वहालो, ताहरे मन शी वातरे ॥ मु० ॥ कहे तिम तुफ चिंतत करुं, ए मुज वात सोहातरे ॥ मु० ॥ २१ ॥ कंस कहे करजोडने, माणस तें मुज किधरे ॥ मु० ॥ जीवजस्या देवरावीने, सुजन पणे जस लीधरे ॥ मु० ॥ २२ ॥ तिम हिवे देवकी पुत्रनां, सात गरज यदूराजरे ॥ मु० ॥ प्रसुति मात्र देवरावशो, जिम मुज मन सुख थायरे ॥ मु०

राणी देवकी, चरम शरीरी जीवोरे ॥ केम मरे ते छ छे आवुषे, ए जिन वचन सदिवोरे ॥ भा० ॥ ३ ॥ नहील पुरनीरे वासण श्राविका, सुलसा एहवो नामो रे ॥ सूर आराध्योरे सुतने कारणे, सुत सहुने अभीरामोरे ॥ भा० ॥४॥ सूर भाखेरे पुण्य प्रभाविका, तुं मृत वंझा नारोरे ॥ आणि आपुं हुं तुज पारका, देव कुमर अनुहारोरे ॥ भा० ॥ ५ ॥ वलतुं वनिता इणी परें उचरे, सांभल सुर सुख दायोरे॥ हु स्युं जाणुं तुं लावे केहना, ते मुझने न सुहायेरे ॥ भा० ॥ ६ ॥ कंसरायेरे मारण मांगीया, देवकी तनया नंदोरे ॥ आणी आपीश तुझने भाननी, करीदेशुं आणंदोरे ॥ भा० ॥ ७ ॥ एक समेरे राणी श्राविका, गर्भ धरे ते दोयोरे ॥ सारयो फेरो सुर शक्ति करी, भावीने बल जोयोरे ॥ भा० ॥ ८ ॥ इम विजो ने त्रिजो चतुरथो, पंचम छठो तेमोरे ॥ सुलसामंदिर होइ वधामणा, पुण्य तणे बल एमोरे ॥ भा० ॥९॥ षट सुतनी जोडी बिराजती, मातपिता आणंदोरे ॥ बत्रीस बत्रीस नारी सुहामणी, परण्या सघला नंदोरे ॥ भा० ॥१०॥ दस दस वार आवि दायजे, कंचन केरी कोडीरे ॥ नेमजी वचने वैरागी थायशे, कामनि कंचन छोडीरे ॥ भा०॥ ॥ ११ ॥ करणीने बले केवल पामशे, लेहसे मोक्षनो वासोरे ॥ एहवा मुनिवर केरा होइए, चरण कमलना दासोरे ॥ भा० ॥ १२ ॥ मूवा बालक कंसे पछाडीया.

॥ २३ ॥ सरल चित्त नृप सांभली, कहे कंसने एमरे ॥ मु० ॥ अंगीकार किधो अमे, वयण कह्यो तें तेमरे॥ मु० ॥ २४ ॥ कंस वात अणजाणतां, कहे नृप वसु सुविचाररे ॥ मु० ॥ मुझ सुत ते सुत ताहरा, इहां अंतर मत विचाररे ॥ मु० ॥ २५ ॥ तें जे अम जोडी करी रे, तेणे तोमुं अति प्याररे ॥ मु० ॥ तुमनो उणो मत हुवे, वालाजी तन आधाररे॥ मु० ॥ २६ ॥ घणो बोल्यो कारमो, लागे कहे दसाररे॥ मु० ॥ सात गर्भ देवकीतणा, देवरावे सुविच्याररे ॥ मु० ॥ २७ ॥ ढालभली बत्रीसमी, निपट रसिली वातरे ॥ मु० ॥ श्रीगुणसागर ए कही, हरीया गीतनी जातरे॥मु०॥२८॥

दुहा ॥ महापसाउ लही करी, मद पर दुरगमाय॥ प्रिती करी वसुदेवशुं, कंस हिवे घर जाय॥ १ ॥ मुणिनी वात सुणी करी, सोचे हिवे दसार॥ देखो कंसे हुं छल्यो, बचन ग्रह्यो अविच्यार ॥ २ ॥ गरभ धरे जब देवकी, तब तिहां कंसराय ॥ चोकी राखी पाखथी, कपटे खेले दाय॥ ३ ॥

ढाल ३३ मी ॥ कोमल वचनेरे कंत प्रत्ये कहे॥ ए देशी॥ भावी न मिटे भावियण सांभलो, भाविनो घनजोरोरे ॥ रचना आघीपाछी होइ सके, सिद्ध करोछो सोरोरे ॥ भा० ॥ १ ॥ बांधु कीयारे जतन अनेकजी: आगे नायो कोइरे ॥ बांधव दोइ वावी, मुवा सही. चंपक ग्रहपति होइरे ॥ भा० ॥ २ ॥ गरभ धरेरे

जे घमे समारेहो ॥ ह० ॥ ३ ॥ हरी नव नव नाम ध
रावे, पिण गणतां पार न आवेहो ॥ ह० ॥ हरी सां
धा जोडा लावे, हरी मांहोमांहि मीडावेहो ॥ ह० ॥
॥४॥ हरी हेतु हेत जणावे, अणहेतु सार न पावेहो ॥ह०॥
हरी नौतन वस्तु निपावे, हरी निपजी वेग खपावेहो
॥ ह० ॥५॥ हरी रूप निरखन काया, हरी घट घट
मांहि समायाहो ॥ ह० ॥ हरी जिहां जोवुं तिहां तेह
वो, पिण तेहवानो तेहवोहो ॥ ह० ॥ ६ ॥ हरीब्रह्मा
व्यास वखाण्यो, किणही तो अंत न जाण्योहो ॥ ह०
॥ सो हरी करण उपायां, हरी वसुदेवा घर आयाहो
॥ ह० ॥ ७ ॥ हरी उदर देवकी माया, हरी सुपना
सात देखायाहो ॥ ह० ॥ सिंहणी सुत सिंह सनूरो,
माय देखी प्राक्रम पूरोहो ॥ ह० ॥ ८ ॥ आनंद अं
ग अपार, धनधन राणी अवतारहो ॥ ह० ॥ तेज पुं
ज रवि रूडो, हेतकार महा नही कूडोहो ॥ ह० ॥ ९॥
अग्नी सिखा दिपंती, ते मंगल गुण जीपंतीहो ॥ ह०
॥ गज गाजंतो आवे, राणी मन हरख उपावेहो ॥ ह०
॥ १० ॥ ध्वज गगने अवलंब्यो दिसे, सुभकारी वि
स्वा विशेहो ॥ ह० ॥ देव विमाने विराजे, तिहा धप
मप मांदल वाजेहो ॥ ह० ॥ ११ ॥ पद्म सरोवर पाणी,
भरीयो अति शोभा वखाणीहो ॥ ह० ॥ ए सुपना
देखी माइ, पियु पासे वधाइ खाइहो ॥ ह० ॥ १२ ॥
गर्भ वधंतो जाणी, प्रिय साथे वदे तव राणी हो ॥

रिस तणे वस जोयोरे ॥ तेह तणा फल आगे लाग शे, ते सुणज्यो सहु कोयोरे ॥ ज्ञा० ॥ १३ ॥ वडा व मेरी जगमां न्नाखए, स्यो कुठो अनिमानोरे ॥ चंद त णी तब लागे चांदणी, जब लग न उगे न्नाणोरे ॥ ज्ञा० ॥ १४ ॥ मींडक मातो सलपतो फीरे, सर्प न नरेथी दूरोरे ॥ हरण हरिलो हरीने आगले, न सके आइ हजूरोरे ॥ ज्ञा० ॥ १५ ॥ ढाल तेत्रीसमीरे हो णहार होवे, न होवे बीजो कोइरे ॥ गुणसागर सम न्नावे वरतए, नले सलाइ होइरे ॥ ज्ञा० ॥ १६ ॥

दुहा ॥ एक उगे एक आथमे, एक हरखे एक सोग ॥ एक संकुचे एक विकसतां, सहु सरखा नही लोग ॥ ॥ १ ॥ जे न्नाखे बालक बतां, जे न्नाखे अणगार ॥ जे न्नाखे वरकामनी, ते निफल न हुवे लिगार ॥ २ ॥ दुष्ट दैत्य निकंदवा, करवा जग उद्धार ॥ विष्णुदेव शिवमततमें, फिर फिर लीए अवतार ॥ ३ ॥

ढाल ३४ मी ॥ बिंदलीनी देशी ॥ हरीके गुण गा उ, हरिलीला कहीय सुहावो ॥ हरी रसतें अधिक सुख पावोहो ॥ ह० ॥ हरी योगीमांहि योगी, हरी न्नोगीमांहि वड न्नोगीहो ॥ ह० ॥ १ ॥ हरी न्हाना मां हे नाहनो, हरी मोठो गगन समानोहो ॥ ह० ॥ हरी एकण रुपेंही एक, हरी पसरो रुप अनेकहो ॥ ह० ॥ ॥ २ ॥ हरी आपन बुढो बालो, हरी जग मेलावो चालोहो ॥ ह० ॥ हरी लोग लगायोलारे, हरी न्नां

जे घरे समारेहो ॥ ह० ॥ ३ ॥ हरी नव नव नाम ध
रावे, पिण गणतां पार न आवेहो ॥ ह० ॥ हरी सां
धा ज़ोडा लावे, हरी मांहोमांहि भीडावेहो ॥ ह० ॥
॥४॥ हरी हेतु हेत जणावे, अणहेतु सार न पावेहो ॥ह०॥
हरी नोतन वस्तु निपावे, हरी निपजी वेग खपावेहो
॥ ह० ॥५॥ हरी रूप निरखन काया, हरी घट घट
मांहि समायाहो ॥ ह० ॥ हरी जिहां जोवुं तिहां तेह
वो, पिण तेहवानो तेहवोहो ॥ ह० ॥ ६ ॥ हरीब्रह्मा
व्यास वखाण्यो, किणही तो अंत न जाण्योहो ॥ ह०
॥ सो हरी करण उपाया, हरी वसुदेवा घर आयाहो
॥ ह० ॥ ७ ॥ हरी उदर देवकी माया, हरी सुपना
सात देखायाहो ॥ ह० ॥ सिंहणी सुत सिंह सनूरो,
माय देखी प्राक्रम पूरोहो ॥ ह० ॥ ८ ॥ आनंद अं
ग अपार, धनधन राणी अवतारहो ॥ ह० ॥ तेज पुं
ज रवि रूडो, हेतकार महा नही कूमोहो ॥ ह० ॥ ९॥
अग्नी सिखा दिपंती, ते मंगल गुण जीपंतीहो ॥ ह०
॥ गज गाजंतो आवे, राणी मन हरख उपावेहो ॥ ह०
॥ १० ॥ ध्वज गगने अवलंब्यो दिसे, सुभकारी वि
स्वा विशेहो ॥ ह० ॥ देव विमाने विराजे, तिहा धप
मप मांदल वाजेहो ॥ ह० ॥ ११ ॥ पद्म सरोवर पाणी,
भरीयो अति शोभा वखाणीहो ॥ ह० ॥ ए सुपना
देखी माइ, पियु पासे वधाइ खाइहो ॥ ह० ॥ १२ ॥
गर्भ वधंतो जाणी, प्रिय साथे वदे तव राणी हो ॥

ह० ॥ तुम मुझ पुत्र मराया, पिण में गाढा दुख पा
याहो ॥ ह० ॥ १३ ॥ पुत विना जग सुनो, त्रिय जा
णे जगत अलुणोहो ॥ ह० ॥ पशु पंखीणी धन क
हीए, जे पुत्र तणो सुख लहिए हो ॥ ह० ॥ १४ ॥
थारे तो पुत्रा केरी, नही कोइ मणा अनेरीहो ॥ ह०
॥ हुं दुखीयारी झुरूं, विण पुत्र आशा किम पुरुंहो ॥
ह० ॥ १५ ॥ जिणे कीधो ए कर्म अपार, तिणे फि
री करतां सिवारहो ॥ ह० ॥ दूधे दाधा नर जेह, ग
शे सि लावे तेहहो ॥ ह० ॥ १६ ॥ ए बालक किमही
उगारो, इहां रहेशे नाम तुमारोहो ॥ ह० ॥ ए सुपना
ने अनुसारे, पिउडा तुं क्युं न विच्यारेहो ॥ ह० ॥
॥ १७॥ नंदतणि जे नारी, ते नाम जसोदा प्यारीहो
॥ ह० ॥ ते सहियर छे मेरी, नपति जुं नारी अनेरी
हो ॥ ह०॥१८॥ गर्भ वृद्धि जीम पावे, तिम तिम दो
हला उपजावेहो ॥ ह० ॥ सिंहा साथ रमीए, माता ह
स्तीने अति दमिएहो ॥ ह० ॥ १९ ॥ खड्गमांहि मु
ख जोवे, तिम तिम रलियायत होवेहो ॥ ह० ॥ शत्रु
शिरे पाद धरेवा, ए माय मनोरथ करेवाहो ॥ ह० ॥
॥ २० ॥ गर्भ सातमो जाणि, नृप कंस तणा आगे
वाणिहो ॥ ह० ॥ रखवालि कारण रहिया, तिहां क
ष्ट महा दुःख सहियाहो ॥ ह० ॥ २१ ॥ उवेला नवि
पामि, जिहां कारज सिझे स्वामिहो ॥ ह० ॥ मिनिना
वांछ्या सिकां, नवि तुटे जे छे निकांहो ॥ ह० ॥२२॥

रखवाला सघला सूता, निंद्रावसे होए विगुताहो ॥ ह० ॥ को मति जलफल करजो, सहु सरजासु अनु सरज्योहो ॥ ह० ॥ २३ ॥ कंस हणेवा काजे, एहि उतावल साजेहो ॥ ह० ॥ मास घटावे दोइ, तव सात मासनो होइहो ॥ ह० ॥ २४ ॥ शुभ वेला सुत जायो, तनु तेजे तिमिर मिटायोहो ॥ ह० ॥ स्वजन घरे उल्लासो, दुर्जन घर पडियो त्रासोहो॥ह०॥२५॥ कोइ न विलंब करायो, तव राणिये राय बुलायो ॥ ह० ॥ वज्र सुरासुर झाल्यो, तव नृप सुत लेइ चाल्योहो ॥ ह० ॥ २६ ॥ दोइ पासे चामर ढाले, दिपकसुं पंथ दिखवालेहो ॥ ह० ॥ सानिधकारी देवा, हरजीकि सारे सेवाहो ॥ ह० ॥ २७ ॥ दीधा छे दरवाजा, ए आरति अधिकी राजाहो ॥ ह० ॥ हरी पाय अंगुठा अमीया, तव ताला तो ऊड पमियाहो ॥ ॥ ह० ॥ २८ ॥ उग्रसेन कहे ए कोइ, तुम बंधन छोडसे सोहिहो ॥ ह० ॥ एह सुणि सुखदाइ, कहे वेगे सिधावो भाइहो ॥ ह० ॥ २९ ॥ पुर बाहिर चालि आया, जमुनासे मारग पायाहो ॥ ह० ॥ सुत जाइ जसोदा दिधो, मनवंछित कारज सिधोहो ॥ ह० ॥ ३० ॥ जसोदा जाइ बाला, नृप लेइ आया ततकालाहो ॥ह० ॥ कर्म जेहनो बलियो, स्यो किजे अमरख अलियो हो ॥ ह० ॥ ३१ ॥ नंद घरे आणंदा, तव वाजे मांदल छंदाहो ॥ ह० ॥ गोकलकि नारी हरखी, ते हर

ए पोढावीयो ॥ मोह गातिहो कोइ मधुरे सादके, हे त घणो हुलरावीयो ॥ १४ ॥

देवकीरा गीत ॥ ऊरमरीयानी देशी ॥ पन्नणे राणी देवकीहो, त्रिभुवन सिर टिको ॥ वाइ थारो वालुमो निको ॥ ॥ तुजवड वखत यशोमतिहो, थारे एकीको ॥ सुरनर ना मन मोहतोहो, प्यारो हमजीको ॥ बा० ॥ १ ॥ अद्भुत सुहामणोहो, मदन कीयो फिको ॥ रंग रमावे गोदमेहो, भाग्य ताहिको ॥ वा० ॥ २ ॥ मान महा मद मारणोहो, देवि केरीको ॥ कुंवर कनइयो सालसेहो, उपज्यो वयरिको ॥ वा० ॥ ३ ॥ आननचंद विराजतोहो, वालो सव त्रियको ॥ ग्वाल ग्वालणी भावतोहो, दर्शन जग पियको ॥ वा०॥४॥ सजन जन जननी तणोहो, हार ज्युं गातिको ॥ दुरजन जन अ सुहामणोहो, घाव ज्युं कांतीको ॥ वा० ॥ ५ ॥ शोभा गुण विस्तारहो, किरति कांतिको ॥ देवादेवि खेंचराहो, रंगे रातिको ॥ वा० ॥ ६ ॥ दहिअरु दुध ख वाडजेहो, धेनु मातिको ॥ हम तुम कुल उजवालणो हो, दिवो वातिको ॥ वा० ॥ ७ ॥ नखसीखताइ सलुणफोहो, सुखसोभारागीको ॥ जोतां तृप्ति न पाइएहो, धन जीवत माजीको ॥ वा० ॥ ८ ॥ दरस फरस कुपंथमेहो, नाह इंद्राणिको ॥ सो खेले तुऊ आंगणेहो, सारंग पाणीको ॥ वा० ॥ ९ ॥ योग ध्यान ध्यावे अतिहो, सुयश वधारीको ॥ पूत कहावे ताह

रोहो, अचरिजकारीको ॥ वा० ॥ १० ॥ नाम वल्लन जग जाणियोहो, गीरवरधारीको ॥ गुणसागर सुख पा वहिहो, अमीय आहारीको ॥ वा० ॥ ११ ॥

ढाल तेहिज ॥ जे लेणोहो सो लिजए आजके, ए ह मनमां निश्चे धरे ॥ मन मेलिहो निज सुतने पास के, राणि आवि नीज घरे ॥ १५ ॥ जिण दिनथीहो गोकुल हरी मातके, गोपूजा व्रत करी गइ ॥ तिण दिनथीहो सगले जगमांहिके, गोपुजाव्रत तिथि थइ॥ ॥ १६ ॥ इम करताहो विती एक वरसके, एहवे एक वितक नयो ॥ सना सजीहो वेठा कंसरायके, एक विव्रुद्द तव प्रगट थयो ॥ १७ ॥ देइ आदरहो तेज्यो निज पासके,पूछे ऋषि नाखीत सहि॥सो नाखेहो नवि तथ्य जेहके, अन्यथा ते होवे नहि ॥ १८ ॥ नृप ना खेहो केम जाणुं तेहके, अनुग्रह करी मुफने कहो ॥ तुमनेहो मिलसे वहु द्रव्यके, मुफ अरिनो होए निश्च हो ॥ १९ ॥ निमित्तकहो बोले तव एमके, पूरो ज्ञान न अन्यासियो ॥ साहि नाणीहो तुफ देउं वतायके, जिम तुमने होए विसासियो ॥ २० ॥ तुफ मासिहो पूतना छे दोयके, निस्यंदता चूसी करे ॥ जिम लुले हो अहि मक्षिका जाणके, प्राण दोयना तिम हरे ॥ ॥ २१ ॥ तुम शत्रुहो जाणो निःसंदेहके, इम काहि वि वुद्ध गयो ॥ कंसे तेडीहो काहि वैरीनी वातके, मासी मन उत्कर्ष थयो ॥ २२ ॥ हिवे तिहाकणेहो निज वा

पनो वयरके, लेवाने अती उमही॥ वसुदेवसुंहो नवि लागे जोरके, सवलासुं वल को नही ॥ २३ ॥ इम चिंतविहो मनमांहि विचारके, सुरपनखारी दिकरी ॥ मदमातिहो आणे अहंकारके, संकुनी पूतना खेचरी ॥ २४ ॥ कंसे प्रेरीतहो गइ गोकुल माहीके, वालक ने मारण भणी ॥ गोवालणीहो संतारू निज वालके, भीती मन आणी घणी ॥ २५ ॥ नंद सदनहो चाली गइ तेहके, विप खरभी स्तनमे धरी॥ धवरावती हो तव जसोदा देखके, मांगे हरीने कोसे करी॥२६॥ अश्रु पूरितहो थइ आप्यो जाणके, हरि मनमांहि विचारियो ॥ ए दिसेहो सहि कोइ विपक्षके, एहथी भय अव धारियो ॥ २७ ॥ चूसि लीधोहो रुधिरने दूधके, अलि जिम कुसुमनी वासने ॥ थइ निश्वास हो फाट्या तस नयणके, हरि गया मातने आसने ॥ २८ ॥ बोलाव्योहो नंदने तेणिवारके, आव्यो अति उतावलो ॥ जसोदाएहो कह्यो सर्व व्रतांतके, निसुणी मनमां खलभल्यो ॥ २९ ॥ हु मुढियोहो सुख कहेतो नंदके, कृष्ण भणी खोले धरि ॥ तिहां जोवेहो हरिनो ते अंगके, वारमवार हेते करि ॥ ३० ॥ निशा समेहो गोवालिया पासके, प्रेत वने सवने धर्यो ॥ नंदसहित आव्या निज गेहके, प्रछनपणे सहुए कर्यो ॥ ३१ ॥ इम बिजीहो कंत पूतना नामके, सा पिण थइ तिणहीजपरे ॥ कंसे जाणीहो मासीनी वा

तके. प्रेत कार्य तेहनां करे ॥ ३२ ॥ गोकुलमांहेहो क
रे वारमवारके, उदघोसण जाणण जणि ॥ नंदे वरजी
तहो न करे कोइ वातके, जिम घुक सूर्य तणी॥३३॥
गोवालियाहो पूछ्यो हिवे नंदके, अमे ए मरम न जा
णियो ॥ किम मुइहो साइण सम एहके, एह अचं
भो आणियो ॥ ३४ ॥ पाडोसणहो इण गीते जाण
के, ढाल कहि पेंत्रिसमी ॥ सारंगेहो रागे मन लाय
के, सूरि गुणसागर मनशुं गमी ॥ ३५ ॥

दुहा ॥ गोप कहे हिवे नंदने, बाल एकेले एण॥खे
चरीया बे मारीया, टाल्यो विघन बलेण ॥ १ ॥ एह
वात नंद सांभली, दाखे उत्तर तिवार ॥ एहनी खब
र मुजने नही, मानो प्रपंचाचार ॥ २ ॥ कंस सोचे
निज हृदयमां, अहो अहो दैव कुलक्ष ॥ मासी मूइ
वैरीतणो, काइ न थयो प्रतक्ष ॥ ३ ॥ मंत्रीने तेणे
कहे, शो करवो हिवे उपाय ॥ विण उलख्या पोहोचे
नही, मारा मननो दाय ॥ ४ ॥ सचिव कहे तुम बेहे
नीने, पुत्री हुइ एकंत ॥ ए सर्व प्रत्यक्ष निरखतां,
मूको एहनो तंत ॥ ५ ॥ नंद घरे आव्यो धसी, बो
लावी निज नार ॥ करी शिखामण एहवी, मत जा
जे कोइ ठार ॥ ६ ॥ कृष्ण एकेलो मूकिनें, पडते पि
ण घृत ठाम ॥ ते अनत्र न जाइवुं, किणहि विजे का
म ॥ ७ ॥ कान्ह भणी शुभपरे रखे, हिवे जसोदा मा
य ॥ तोपिण चंचल बल करी, आघो पाछो थाय ॥

॥ ८ ॥ तिणसुधी नथी बिहतो, दामणिसु हरी तेह ॥ बांधी उखुलसुं जइ, पाडोसण रही गेह ॥ ९ ॥ वयर पितामह सांभली, सुप्पंक सुत तिहां आय ॥ पिछवाडे श्री कृष्णने, जमलार्जुन तरु बाय ॥ १० ॥ हिवे तेणे बेहु तरुविचे, हरीने मारण रुप ॥ भांजी ते तरु हरी सूरा, मारे तेह विरुप ॥ ११ ॥ हरी कुंजपर ऊखरया, जमलार्जुन तरु जाण ॥ नंद जसोदा गोपने, मुख थी ए सुणि वाण ॥ १२ ॥ नद जसोदा आवीने, भुज सुं भीडे बाल ॥ दामोधर तिण दिन थकी, नाम कहे गोपाल ॥ १३ ॥ सिवादेवि सिवकारीया, सुपना दे खी उदार ॥ प्रितम पासे विनवे, स्वामी कहो सुविच्या र ॥ १ ॥ नृपति भाखे भामनी, होस्ये कुंवर सार ॥ तिन भूवन सिर सेहरो, सुरनरको आधार ॥ १२ ॥ वाय अनुकुळ वाइया, हरखित सहु परिवार ॥ श्रा वण सुदी पंचमी दिने, जनम्या नेक कुमार ॥ १३ ॥

ढाल ३६ मी ॥ कोइलो परवत धुंधलोरे लाल ॥ ए देशी ॥ शुभ वेला सुत जाइयोरे लाल, वरत्यो ज य जय कार ॥ सुख दातारे ॥ सुरनर घरहि वधामणीरे लाल ॥ हरख्यो सहु संसार ॥ सु० ॥ १ ॥ मेरे मन जिनजी वस्यारे ॥ ला० ॥ श्री श्री नेमकुमार ॥ सु० ॥ मुरति सुरति मोहनीरे ॥ ला० ॥ शोभा गुण भंडार ॥ सु० ॥ मे० ॥ २ ॥ आवी छप्पन कुंवारीकारे ॥ ला० ॥ नि ज निज करवा काज ॥ सु० ॥ गावे गीत सुहामणा

रे ॥ ला० ॥ सफल गणे दिन आज ॥ सु० ॥ मे० ॥
॥ ३ ॥ चउसठ इंद्र पधारीयारे ॥ ला० ॥ मंदिर गी
रीने श्रृंग ॥ सु० ॥ जन्म मेहोछव करवा भणीरे ॥ला०
॥ आणी अति उछरंग ॥ सु० ॥ मे० ॥ ४ ॥ पंच रू
प करे भलां रे ॥ ला० ॥ सोहम इंद्र उदार ॥ सु० ॥
हाथे लिया एक रूपशुरे ॥ ला० ॥ त्रिभूवन तारणहा
र ॥ सु० ॥ मे० ॥ ५ ॥ बिजे छत्र धरे भलोरे ॥ ला० ॥
चामर ढाले दोय पास ॥ सु० ॥ वज्र लेइ आगे चले
रे ॥ ला० ॥ करतो अरिअण नाश ॥ सु० ॥ मे० ॥
॥ ६ ॥ न्हावण केरी विधी साचवीरे ॥ ला० ॥ पहि
रावे शिणगार ॥सु०॥ भावे भक्ति घणी करेरे ॥ ला०॥
नाटक नृत्य अपार ॥ सु० ॥ मे० ॥ ७ ॥ धौ धौ धपमप
वाजहिरे ॥ ला० ॥ मांदल नव नव छंद ॥ सु० ॥ झां
जर नाद उपांगसोरे ॥ ला० ॥ होइ रह्यो आनंद ॥
सु० ॥ मे० ॥ ८ ॥ इंद्राणी नाचे भलीरे लाल, थै थै शब्द उ
चार ॥ सु० ॥ प्रभू उपर करे लुंछणारे ॥ ला० ॥ जा
इ हरी बलीहार ॥ सु० ॥ मे० ॥ ९ ॥ माता पासे मे
लीयारे ॥ ला० ॥ सुर पोहोता निज ठाम ॥ सु० ॥
रायें मोहोछव मांडीयोरे ॥ ला० ॥ मिलीया साजन आ
ण ॥ सु० ॥ मे० ॥ १० ॥ यादव जलधर उमह्योरे ॥
ला० ॥ वरसे कंचन धार ॥ सु० ॥ याचक जन संतो
खीयारे ॥ ला० ॥ घर घर मंगल च्यार ॥ सु० ॥ मे०
॥ ११ ॥ टोले टोले सामटीरे ॥ ला० ॥ आवे कामनी

चाल ॥ सु० ॥ धवल दिए नृप आंगणेरे ॥ ला० ॥ रमती रंग रसाल ॥ सु० ॥ मे० ॥ १२ ॥ बारसमो दिन आइयोरे ॥ ला० ॥ सुतिक कर्म नीवार ॥ सु० ॥ नाम दियो वर नेमजीरे ॥ ला० ॥ थंभण सहु परीवार ॥ सु० ॥ मे० ॥ १३ ॥ चंदकला जिम वाधतोरे ॥ ला० ॥ देह कला गुण सार ॥ सु० ॥ रुप करे सुर तेहवारे ॥ ला० ॥ जेहवा प्रभुने प्यार ॥ सु० ॥ मे० ॥ ॥ १४ ॥ राखण चलण हसतथेरे ॥ ला० ॥ नृत्यने गायन ग्यान॥ सु० ॥ जलपने जन मन रंजवेरे ॥ ला० ॥ लाल ने लीलां थान ॥ सु० ॥ मे० ॥ १५ ॥ वनक्रिडाने कारणेरे ॥ ला० ॥ राजा वनमें जाय ॥ सु० ॥ अंतेउर परीवारसुंरे ॥ ला० ॥ साथे नेम सुहाय ॥ सु० ॥ मे० ॥१६॥ इण अवसर सोहमजीरे ॥ ला० ॥ इंद्र अनोपम ज्ञान ॥ सु० ॥ क्रिडारंग विनोदसुंरे ॥ ला० ॥ दिठां श्री भगवान ॥ सु० ॥ मे० ॥ १७॥जेह जेहना होय रागीयारे ॥ ला० ॥ तेह तेहनां गुण गाय ॥ सु० ॥ अणरागी असुहामणारे ॥ ला० ॥ हुता पिण न कहाय ॥ सु० ॥ मे ॥ १८ ॥ इंद्र प्रसंसा आ करीरे ॥ ला० ॥ जननी करे तेहिवार ॥ सु० ॥ वाल पणे बल आगलोरे ॥ ला० ॥ नही बीजो संसार ॥ सु० ॥ मे० ॥ १९ ॥ एक आमी सहु लोकनोरे ॥ ला० ॥ एक आडी जिनराय ॥ सु० ॥ तोहि न होवे बराबरीरे ॥ ला० ॥ जिन बल अधीक कहाय ॥ सु० ॥

मे० ॥ २० ॥ एह वचन सहि नाशक्योरे ॥ ला० ॥ अमरख आणी अपार ॥ सु० ॥ सुर सुरलोकथी उत्त र्योरे ॥ ला० ॥ आयो विपन मझार ॥ सु० ॥ मे ॥ ॥ २१ ॥ काका साथ कुतुहलीरे ॥ ला० ॥ होइ रह्या जिनराय ॥ सु० ॥ एक खेलावे गोदमेरे ॥ ला० ॥ ए कलीए कठ लगाय ॥ सु० ॥ मे० ॥ २२ ॥ एक आं गुलीया लेइ फिरेरे ॥ ला० ॥ एक खेलण खेलाय ॥ सु० ॥ एक नचावे रंगसुरे ॥ ला० ॥ तालि नाद सु णाय ॥ सु० ॥ मे० ॥ २३ ॥ घम घम वाजे घूंगरीरे ॥ ला० ॥ ठम ठम ठमके चाल ॥ सु० ॥ मेरे वगन मगनारे ॥ ला० ॥ होइ रह्यो अति ख्याल ॥ सु० ॥ मे० ॥ २४ ॥ कबहु आंख अंजावतोरे ॥ ला० ॥ प रहो वटकि जाय ॥ सु० ॥ बोलायो फिर नावहिरे ॥ ला० ॥ माता पकडे धाय ॥ सु० ॥ मे० ॥ २५ ॥ तव प्रभुजी रहे रिसायनेरे ॥ ला० ॥ टबकि गाल कराय ॥ सु० ॥ विद्याधर सुर मानविरे ॥ ला० ॥ सबहु रहे रींझाय ॥ सु० ॥ मे० ॥ २६ ॥ गगने विलंबि वारांग नारे ॥ ला० ॥ मोहनसुं मन मेल ॥ सु० ॥ सूरज र थ थंभी रह्योरे ॥ ला० ॥ देखि कुमरनी केल ॥ सु० ॥ मे० ॥ २७ ॥ तृणचरां त्रण छोडीयारे ॥ ला० ॥ पंखी चुग न चुगाय ॥ सु० ॥ जंगम जीव जिके तिकेरे ॥ ला० ॥ प्रभुसुं रहे लवलाय ॥ सु० ॥ मे० ॥ २८ ॥ अवगु णहारा देवतारे ॥ ला० ॥ गुणतो को न ग्रहाय ॥ सु० ॥

ऐ अनंग ॥ च० ॥ ए टेक ॥ जीहो हिवे हरी चल
ता बलदने लाला, पूठ ग्रहे जइ जाम ॥ जीहो कृष्ण
जोर ते देखीने लाला, अचरिज पामे राम ॥ च० ॥
॥ २ ॥ जीहो जिम जिम हरी वाधे तिहां लाला, तिम
तिम गोपिरे चित ॥ जीहो काम विकार लहे घणो
लाला, घुमे लागी प्रीत ॥ च० ॥ ३ ॥ जीहो राधा सु
ता व्रखुभानुनि लाला, कंचन कोमल गात ॥ जीहो ख्या
ल लागी हरी आगले लाला, महि वेचण मीस जात
॥ च० ॥ ४ ॥ जीहो रोके तव आडो फिरी लाला,
मोहन श्री नंदलाल ॥ जीहो हठ नरी हरी आगले
लाला, बोले राधा बाल ॥ च० ॥ ५ ॥ जीहो हम गो
पीयनपर दाननी लाला, किण किधीछे आद ॥ जी
हो आपसमे हरी राधीका लाला, करतां ऊखवख वा
द ॥ च० ॥ ६ ॥ जीहो आ व्रजमां वसतां थकां ला
ला, कदिय न दिधोरे दाण ॥ जीहो कुंवर बाबा नंद
ना लाला, जात नहि व्रखुभान ॥ च० ॥ ७ ॥ जीहो
जावाद्यो हठ किम करो लाला, मुझ वेचण हजी मा
ट ॥ जीहो वेला वनमें बहू थइ लाला, माता जोति
हशे वाट ॥ च० ॥ ८ ॥ जीहो नीत नीत इम हरी रा
धीका लाला, करे वचन रस केल ॥ जीहो नेह घेलि
आवे तिहां लाला, काज सकल अवहेल ॥ च० ॥९॥
जीहो सोलेसहस्स गोवालणि लाला, हरीने रंजन का
ज ॥ जीहो दाखे नव नव चातुरी लाला, हाव भाव करी

लाज ॥ च० ॥ १० ॥ जीहो गोपी हरी पाव्ळ मिली लाला, घुमर गावेरे रास ॥ जीहो लुवधा भ्रमरा जीम भ्रमे लाला, कमल तणे नीत पास ॥ च० ॥ ११ ॥ जीहो हरीने जोती गो पिका लाला, नयण न मिचेरे केम ॥ जीहो कृष्ण कृष्ण इम बोलवे लाला, हो वनमेले तेम ॥ च० ॥ १२ ॥ जीहो एकसमे गोपि तिहां लाला, गाय दुहे न्रूपिठ ॥ जीहो टलि नजाणे दोहणा लाला, हरीसुं लागी दिठ ॥ च० ॥ १३ ॥ जीहो विविध कुसुम गुंथातिके लाला, माल्ल करी उतकंठ ॥ जीहो वरमाला पेरे गोपीका लाला, घाले हरीने कंठ ॥ च० ॥ १४ ॥ जीहो जिमतिम वि ध करी हरीनणि लाला, गोप तणिते नार ॥ जीहो बो लावे फरसे मिले लाला, करति काम विकार ॥ च० ॥ १५ ॥ जीहो मोरपिछ माथे धरी लाला, हरी गोवाल णि साथ ॥ जीहो गावे धूनि पूरतिके लाला, झाली हरखे हाथ ॥ च० ॥ १६ ॥ जीहो निर अथाहे झील तो लाला, हंसपरे हरी जाण ॥ जीहो पंकज गोपी मां गीया लाला ॥ लिलाए दिए आण ॥ च० ॥ १७ ॥ जिहो गोवालणीया रामने लाला, उलंभे एकवार ॥ जीहो तुम बंधव अम नेहरे लाला ॥ अण दिठे बहुवा र ॥ च० ॥ १८ ॥ जीहो मधुर बजावे वांसली लाला, गिरिकडणे आणंद, जीहो घणुं हसावे रामने लाला ॥ नाचें नव नव छंद ॥ च०॥१९॥ जीहो गोवालणी साथें

लाला, नाचे कृष्ण कुमार, जीहो रंगाचार तणी परे लाला, तालदिए हलधार ॥ च० ॥ २० ॥ जीहो इम रमता हरी रामने लाला, बोल्या वरस इग्यार ॥ जी हो गुण सागरसूरि ए कही लाला, ढाल साडत्रिस मी सार ॥ चतुर० ॥ २१ ॥

दुहा ॥ कंसराय मथुरापुरी, सुखमें राज करंत ॥ बहिन तणे घर आवीयो, कन्या देखी हसत ॥ १ ॥ बहिने गर्भ जे सातमो, किम मुझ मारण हार ॥ के ऋपि भाख्यो अन्यथा, के कोइ वात विचार ॥२॥ नि मतियाने पूछीयो, ऋपिवर वचन विच्यार ॥ सो भाखे नृप नवी मीटे, होण हार विवहार ॥ ३ ॥ नृप भणे निमति सुणो, हुं किम जाणुं तास ॥ अण जाण्या अ णओलख्या, किम करुं तस नास ॥ ४ ॥ निमतिए स ही नाणीका, राय बतावे ताम ॥ केसी हय खर मख वृ ष ॥ एहनो फोडण ठाम ॥ ५ ॥ धनुष्य चोहेरे भुज ब ले, नाथे कालिनाग ॥ तुम युग हाथी पाटनां, मारी मेलावे साग ॥ ६ ॥ मल्ल आखाडे मल्लने, झाली पछा ड्ये जोर ॥ ते तुम वैरी जाणजो, एह हलावी डोर ॥७॥ कंस नृप अति खलभल्यो, अरिनो सुणी अधीकार ॥ वृपभ मेल्यो मोकलो, पुंठे घणा असवार ॥ ८ ॥

ढाल ३८ मी ॥ मत कोइ रमज्यो हो साजन सोगटे ॥ ए देशी ॥ हिवे संझाकाले हो कंसनरिंदनो, अरिष्टबलद बलवंत ॥ चतुरनर ॥ व्रजरावनमें हो

आवे आकलो. करतो कोप अनंत ॥ च० ॥ १॥ सुणजो साजन अचरिजनी कथा ॥ ए आंकणी ॥ सिंगे उपाडी पछाडे गाथले. नदीय कडपपरे ताम॥च०॥ तिम वली कोप धरी पग पाडले, ढोके घृतनां ठाम॥ च० ॥ सु० ॥ २ ॥ राम सहित गोविंद तव सांभले, कोलाहल अति होय ॥ च० ॥ लेइ हथीयार धसी हरी आवीयो, अरिष्ट बलद तिहां जोय॥च० ॥ सु० ॥ ॥ ३ ॥ वारे सहु इहां नंद गोवालीया, नहीं गो घृतनो काम ॥ च० ॥ विनवे सहु पिण नवी रहे, बलद बोलावे ताम॥च० ॥ सु० ॥ ४ ॥ सोपिण आयो हो हरीने उपरे, रिस भरयो विकराल ॥ च० ॥ मारे अपुठो हो हरी निज भुज बले, हरख्या बालगोपाल ॥ च० ॥ सु०॥५॥हरी रमतां वली आयो हो अन्यदा, केसी कंस किशोर ॥ च० ॥ मही तल गाजे हो पग खुड तालसुं, हय हिंसारव जोर ॥ च० ॥ सु० ॥ ६ ॥ ग्रहतो हो दंत विचाले लोकने, खूरे हणतो गाय ॥ च० ॥ देखिहो सोर मच्यो वन गोकुले, गोधन नाठो जाय ॥ च० ॥ सु० ॥ ७ ॥ लोक पुकार सुणी हरी आवीयो, तुरीने पासे जाय ॥ च० ॥ हरीने हो मारण धायो हयवरु, लोक रह्यां अकुलाय ॥ च० ॥ सु० ॥ ८ ॥नाखीहो फाल केसी जव आवीयो, दोड करी हरी आप ॥ च० ॥ मुखशुं हो झाली ताम विदारीयो, टाल्यो सबल संताप ॥ च० ॥ सु० ॥ ९ ॥ कंस तणा खरमे

ख तिमहिज वली, गोकुलमें समकाल ॥ च० ॥ फि
रतां वनमें हो हरी द्रष्टे पडे, नाखे ताम उगाल ॥ च०
॥ सु० ॥ १० ॥ एक दिन जमुना हो जलमें परिसरे,
हरि रमे सुविचार ॥ च० ॥ गिंदुक ऊछलीने तव प
ड्यो, कालिंद्रह मझार ॥ च० ॥ सु० ॥ ११ ॥ ते ले
वाने हरी द्रहांतर गया, सोधी लीयो गयंद ॥ च० ॥
पिछे फिरतां तव पेखीयो, आवास तेजनो कंद ॥ च०
॥ सु० ॥ १२॥ भितरे दीठी एक गवाक्षिका, कौतुक
अधिको पाम ॥ च० ॥ दइ फलांग माहि गया, निरी
क्षण करे काम ॥ च० ॥ सु०॥१३ ॥ आगे जाता पलंग
पें झीलंता, देखे कालीनाग ॥ च० ॥ सहस्रफणो सु
तो सुख निंदमें, महीधर विखनो बाग ॥ च० ॥ सु०
॥ १४ ॥ करे तिहां नागणी नागपतालनी, नव नव
भात विनोद ॥ च० ॥ पामी अचरिज ताम हरी भणी,
बोले वचन सरोद ॥ च० ॥ सु० ॥ १५ ॥

नागणिवाच ॥ कांइ तुं वाट विसारियोरे बाला,
कांइ तुं मारग भुलियो ॥ कांइ ते तारो कालघटियो,
जे इणे मारग आवियो ॥ जल कमल छंडि जायरे
बाला, स्वाम मोरो जागसे ॥ १ ॥ कानवाच ॥ नहि ते
वाट विसारियोरे नागण, नहि ते मारग भुलियो ॥ न
हि ते मारो काल घटियो, हुं एणे मारग आवियो ॥
जल० ॥ २ ॥ नागणीवाच ॥ किहां तुमारो बेसणोरे बा
ला, कुण तुमारो गामरे ॥ कुण रायनां चलण चाले,

स्युं छे तुमारो नामरे ॥ ज० ॥ ३ ॥ कानवाच ॥ मथुरां हमारो बेसणोरे नागण, गोकुल हमारो गामरे ॥ कंसरायना चलण चाले, गोवालीओ माहरू नामरे ॥ ज० ॥ ४ ॥ नागण जगाडो तोरा नाहने, वली केसे जे विसासीयो ॥ कसरायथी जुवटे रमतां, नाह तुमारो हारीयोरे ॥ ज० ॥ ५ ॥ नागणी नाग प्रबोधनवाच ॥ चरण चोली अंग मोमी, नागणीए नाहो जगावीयो ॥ उठोने बलवंत बेठा थाउ, बालुओ हम घर आवीयोरे ॥ जल० ॥ ६ ॥

देशी तेहिज ॥ उठ्यो हो महिधर विप भरे लोचने, कोप धरी ततकाल ॥ च० ॥ आयोहो सनमुख हरीने उपरे, रोस भरयो विकराल ॥ च० ॥ सु० ॥ १३ ॥ नाथ्यो हो काली बेल तणीपरें, पाम्यो अधिको त्रास ॥ च० ॥ उपरे बेशी हो हयपरे वाहियो, जोर कीसो हरी पास ॥ च० ॥ स० ॥ १४ ॥ थाको हो नाग तजी अभीमानने, प्रणमे प्रभुना पाय ॥ च० ॥ हुं तुम पायक लायक साहीबा, मेहेर करो महाराज ॥ च० ॥ सु० ॥ १५ ॥ हिवे हुं सेवकआजथी ताहरो, न भजुं अवर भूपाल ॥ च० ॥ लेइ सतकार आयो हरी निज घरे, मिलीयां बालगोपाल ॥ च० ॥ सु० ॥ ॥ १६ ॥ हिवे वृषभादिक हणीयां सांभली, वयरी जाणण हार ॥ च० ॥ सारंग धनुष्य पूजण थापीयो, परखदामें महाराज ॥ च० ॥ सु० ॥ १७ ॥ कंसे करावीहो

तिहां उदगोषणा, भांमा कुमरी व्याह ॥ च० ॥ सा रंग धनुष्य चढावे जे भुज तले, परणे तेह उछाह ॥ च० ॥ सु० ॥ १८ ॥ एन नीसुणीहो आवे तिहां कणे, अलगाथी राजान ॥ च० ॥ धनुष्य चडावी पिण को न वी सके, सारंग जे असमान ॥ च० ॥ सु० ॥ १९ ॥ एहवे नंदन श्री वसुदेवनो, शूर सुभट गुणधीर ॥ च० ॥ उलाकि रथ उपर बेसीने, अनाधृष्ट वडवीर ॥ च० ॥ सु० ॥ २० ॥ मारग जातांहो गोकुल गाममें, वास रह्या सुभटेव ॥ च० ॥ मथुरां वाट देखाडण तव लिया, साथे हरी बलदेव ॥ च० ॥ सु० ॥ २१ ॥ वड उनमे लियो हरी मारग करे, हरख्यो बल महि राण ॥ च० ॥ हरी बल देखिहो मन अचरिज लह्यो, रथे तेडे राजान ॥ च० ॥ सु० ॥ २२ ॥ अनुक्रमे जमुना तट जल उतरी, पइसे मथुरां मांहि ॥ ॥ च० ॥ धनुष्य सभाइमे आया रंगसु, बेठा धरी उछाहि ॥ च० ॥ सु० ॥ २३ ॥ भामाहो हुइ अति अनुरागणि, निरखी हरी नुं रूप ॥ च० ॥ सारंग धनुष्य खेंचण तव उठिया, हुंस धरी वड भूप ॥ च० ॥ सु० ॥ २४ ॥ निरखि धनुष्यहो पाछा ऊसरे, महिपति मोठा राय ॥ च० ॥ होइ अपुठाहो नव परणीत परे, उभा मुख छिपाय ॥ च० ॥ सु० ॥ २५ ॥ एतले कुमर श्री वसुदेवनो, होइ सनध तनु मोर ॥ च० ॥ चडवको चाल्योहो भय मन अवगुणि, चाप ग्रही करे जोर ॥ च० ॥ सु० ॥ २६ ॥

लडथड्यो तामहो होइ अधोमुखे, पडीयो भूमी आ
य ॥ च० ॥ हांसो करताहो देखि सभा सहु, तव उ
ठो हरी राय ॥ च० ॥ सु० ॥ २७ ॥ मो धर्म फरसे
हो जीम निज वभ्रने, सारंगपाति पिण तेम ॥ च० ॥
चोहडी धनुष्यने टंकारव कियो, हरी बल अधीको ए
म ॥ च० ॥ सु० ॥ २८ ॥ लेइ वरमालाहो हरी कंठे
धरी, नवल सनेहि नार ॥ च० ॥ ढाल आगत्रिसमी
गुणसागर कहे, घरे आयो मूरार ॥ च० ॥ सु० ॥२९॥

॥ दुहा ॥ कंसराय हिवे एकदा, आखाडे मल्ल युद्ध ॥
करवा कारण तेडिया, राय अनेक विसुध ॥ १ ॥ व
सुदेवने तेडीया, सघला आपणा भाय ॥ अक्रुरादिक
पुत्रसुं, कंस हिवे चित लाय ॥ २ ॥ सनमानी बेसा
डीया, कंसे ते सहु कोह ॥ ऊंचे माचे दिपता, पामे सो
भा सोह ॥ ३ ॥ मल्ल युद्ध हिवे सांभलि, कृष्ण राम
ने एम ॥ कहे मथुरां जाइए, अचरिज जोवा जेम ॥
॥ ४ ॥ मानी वचन बलभद्रजी, एम जसोदा पास ॥
न्हावण कर अम्हे जावसां, मथुरां चित्त उलास ॥५॥
देखि जसोदा मातने, हटक कहे बलदेव ॥ कंस ह
णयो हरी बंधवा, वात कर सुन टेव ॥ ६ ॥ पाहे लु
णो स्युं विसरयो, तुझने दासी भाउं ॥ जिन न कि
यो कारज तुरत, वचन गण्यो अम्ह वाउं ॥ ७ ॥ एह
सुणि हरि कोपीयो, उपजी रीस अपार ॥ बोलाव्यो
बोले नहि, तव चिंते हलधार ॥ ८ ॥

ढाल ३९ मी ॥ मेलि माथे मार ॥ ए देशी ॥ हलधर साहि हाथ, बोलावे नरनाथ ॥ भाइ किम अणमणो ए, वचन दयामणो ए ॥ १ ॥ वादल गयो चंद, दुरवल दिसे मंद ॥ तिम तुम मुख इसो ए, कहो कारण किस्यो ए ॥ २ ॥ इणवाते गुणगेह, त्रुटो दिसे नेह ॥ बंधव तुम तणो ए, साचो मुझ भणो ए ॥ ३ ॥ हरी भाखे इम वाय, तुं मोटो महाराय ॥ हुं मन जाणतो ए, हठ नवि ताणतो ए ॥ ४ ॥ पिण तुम अधीक गुमान, दिसेछेरे राजन ॥ मुझ जननी वडि ए, कही तुम दासडी ए ॥ ५ ॥ इण वाते तुम लाज, नवि आवि माहाराज ॥ विण वेधे वह्यो ए, अणघटतुं कह्यो ए ॥ ६ ॥ पामी अंतर भेय, हसि बोले बलदेव, नहि तुम जामनि ए, जसोदा स्वामनि ए ॥ ॥ ७ ॥ तुमारी देवकि माय, देवक सुता सुखदाय ॥ वछ तुम मावडी ए, वसुधामां वडी ए ॥ ८ ॥ नंद सदन सुख हेत, माता धरीय संकेत ॥ मूक्यो तुम भणि ए, आरति मन घणि ए ॥ ९ ॥ पिण न करे तुझ गोर, कंस तणो भय जोर ॥ तुझ विरहातुरीए, रहे मथुरां पुरी ए ॥ १० ॥ मास मासने छेह, माता धरि मन नेह ॥ आवे विलखती ए, तुम मुख निरखती ए ॥ ११ ॥ नंद जसोदा नार, सखीयपणे सुविच्यार ॥ राखे हेत धरी ए, हेजघणे करीए ॥ १२ ॥ वसुदेव आपणो तात, मुझ मूक्यो विख्यात ॥ कंस कारण प

खे ए, वात न को लखे ए॥१३॥ बांधव दसें दसार, जादवनो परिवार ॥ तुझ सीर राजतो ए, जग जस गाजतो ए ॥ १४ ॥ हुं वड बंधव सार, गुपतपणे सु विच्यार ॥ रहुं मन नेहथी ए, प्रेम विसेपथी ए ॥ ॥ १५ ॥ दासी जणी करी रीस, तिण कारण तुम इ स ॥ अलेक गुनो कहेए, वन्ह वीरच्यो सहिए ॥१६॥ ढाल नवत्रिसमी सार, पाम्यो जेद मूरार ॥ फिरी पू छे इसुंए, गुणसागर कीसुंए ॥ १७ ॥

दुहा ॥ हिवे पूछे बलजद्रने, किम मूक्यो मुझ तात ॥ कारण विण इहां कणे, तेम जणो सहु वात ॥ ॥ १ ॥ वलतुं बलजद्र कहे, वात सविविस्तार ॥ कंसे तुझ बांधव हण्या, कोप धरी तिण वार ॥ २ ॥ तात मात मथुरां रहे, कंस तणे हठ जोर ॥ सोल वरसतो वही गयां, कोय न आवे नोर ॥ ३ ॥ जरासंधना प क्षथी, चसकी न शके कोय ॥ मोटा साथे बांधवी, घ णी विमासण सोय ॥ ४ ॥ आज कंस वड राजीयो, पाले राज अखंड ॥ आवीने केइ नम्या, पुहवी पाल प्रचंड ॥ ५ ॥ वल्ह आपण सुत पापति, वरते ए विर तंत ॥ तो एम जाणी सींघनो, खाज सीयाल जखंत ॥ ६ ॥ बांधव मरण सुणी करी, कोप्यो कृष्ण मूरार॥ चरीत करे जे आगले, ते सुणजो सुविच्यार ॥ ७ ॥

ढाल ४० मी ॥ राणापूरो रळीयामणोरे लाल ॥ ए देशी ॥ आज पवाडो कंसनोरे लाल ॥ इम करी

पण रीसालरे ॥ सोभागी ॥ हरी हलधर बेहु चाली यारे ॥ लाल ॥ साथे घणा गोपालरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ १ ॥ हरी हलधरने कानजीरे ॥ ला० ॥ बेहु गुणे अमोलरे ॥ सो० ॥ मथुरां दिसे चालतारे ॥ ला० ॥ पामे पुरनी पोलरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ २ ॥ पद्मोतर चंपक नलारे ॥ ला० ॥ कंस तणा गज दोयरे ॥ सो०॥ पुर प्रवेश करता थकारे ॥ ला० ॥ साहमा आव्या सोयरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ ३ ॥ दांत उखेडी मारीयोरे ॥ ला० ॥ हरी पदमोतर तेहरे ॥ सो० ॥ तिम वलभद्रे मारीयोरे ॥ ला० ॥ चंपक गज तिहां जेहरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ ४॥ राम कृष्ण बेहु देखीनेरे ॥ ला० ॥ कहे लोक सहु कोयरे ॥ सो० ॥ अरिष्ट प्रमुखइणे हणयारे ॥ ला० ॥ नंदपुत्र ए दोयरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ ५ ॥ लुंटे बाजार दयामणारे ॥ ला० ॥ गोवालीया तेणीवाररे ॥ सो० ॥ वस्त्र भुषनने सुखडीरे ॥ ला० ॥ कोइ न वर्जनहाररे ॥ सो० ॥ आ० ॥ ६ ॥ व्यापारी मिली एकठारे ॥ ला० ॥ कंस भणी कहे तामरे ॥ सो० ॥ गोवालीए पुर लुंटीयोरे ॥ ला० ॥ न राखी कोइनी मामरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ ७ ॥ कंस कहे धीरा रहोरे ॥ ला० ॥ आवणद्यो इण ठामरे ॥ सो० ॥ कुटी करशुं पाधरारे ॥ ला० ॥ पोचाडीस जम धामरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ ८ ॥ निले पीले फूलडेरे ॥ ला० ॥ कंठे धरी वरमालरे ॥ सो० ॥ मल्ल अखाडे आवियारे ॥

ला० ॥ रामकृष्ण रढियालरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ ९ ॥ कं
स विना परीवारसुरे ॥ ला० ॥ बेसे हरीहलधाररे ॥
सो० ॥ मोठा एक माचा थकीरे ॥ ला० ॥ सुभट सब
उताररे ॥ सो० ॥ आ० ॥ १० ॥ राम देखावे कृष्णनेरे
॥ ला० ॥ कंस भणी तेवाररे ॥ सो० ॥ समुद्रविजय
आदे करीरे ॥ ला० ॥ ए आपणडो परिवाररे ॥ सो०
॥ आ० ॥ ११ ॥ हिवे तिहां मल्ल कुंफतारे ॥ ला० ॥
जोवे राणो राणरे ॥ सो० ॥ कंस आदेसे उठियोरे ॥
ला० ॥ चाणुरमल्ल बलवानरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ १२ ॥
मेहतणी परे गाजतोरे ॥ ला० ॥ थापोटे निज हाथरे
॥ सो० ॥ उंचे स्वरे इम बोलतोरे ॥ ला० ॥ सकल न
रेसर साथरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ १३ ॥ वीर जननी जे
जाइयारे ॥ ला० ॥ राजपुत्र मछरालरे ॥ सो० ॥ आ
वि अडो मुफ आगलेरे ॥ ला० ॥ अहो मोठा भूपाल
रे ॥ सो० ॥ आ० ॥ १४ ॥ अणसहेतो हरी उठियो
रे ॥ ला० ॥ न्हानो पिण मन मोटरे ॥ सो० ॥ मांचेथी
आयो उतरीरे, ॥ ला० ॥ भुजा आप थापोटरे ॥ सो० ॥
आ० ॥ १५ ॥ कृष्ण थापोटे बाहनेरे ॥ ला० ॥ गयण
धरा कंपायरे ॥ सो० ॥ देखी गयण घन उमह्योरे ॥
ला० ॥ अष्टापद अकुलायरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ १६ ॥
दूधमुखे ए बालडोरे ॥ ला० ॥ सेवे सदा वनवासरे ॥
सो० ॥ तिण वढवो जुगतो नहिरे ॥ ला० ॥ एक हाण
ने वलि हासरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ १७ ॥ मुलकि, दामो

धर बोलीयोरे ॥ ला० ॥ वचन वदे तव गोररे ॥ सो० ॥ आव्य चाणुर उतावलोरे॥ला०॥ जोउं थारो जोररे॥सो० ॥ आ० ॥ १८ ॥ नंद गोपनो पुत्रछुरे ॥ ला० ॥ दू ध तणी मुज देहरे॥ सो० ॥ तो हुं हरी गजनी परेरे॥ ला० ॥ उतारुं बल एहरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ १९ ॥ वचन चातुरी कृष्णनीरे ॥ ला० ॥ देखी बीजो मल्लरे ॥ सो० ॥ कंस आदेसे उठियोरे ॥ ला० ॥ सूष्टीक ना मे मुगल्लरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ २० ॥ उठि बीजा म ल्लनेरे॥ला०॥साथे अमो हलधाररे॥सो०॥ थापटी नु ज तिम आवियोरे ॥ ला० ॥ चाणुर हरीनी लाररे ॥ सो० ॥ आ० ॥ २१ ॥ राम अने सूष्टीक लडेरे ॥ ला० ॥ तिम हरीने चाणुररे ॥ सो० ॥ विंद्याचल गज नी परेरे ॥ ला० ॥ लाग्या रोस आतुररे ॥ सो० ॥ आ० ॥ २२ ॥ कंपे धरा पगला तसुंरे ॥ ला० ॥ उम्हे रज अतिपूररे ॥ सो० ॥ उठि सत्ना अलगी थइरे॥ ला० ॥ निरखे जना दूररे ॥ सो० ॥ आ० ॥ २३ ॥ केशव मूठे चाणुरनेरे ॥ ला० ॥ नांख्यो धराति उटरे ॥ सो० ॥ वज्र जिम सक्रेसनोरे ॥ ला० ॥ पडीयो अ हे कण चोटरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ २४ ॥ सात धनुष्य पाछो पड्योरे ॥ ला० ॥ तिण घाते चाणुररे ॥ सो० ॥ सासलहि चाणुरनेरे ॥ ला० ॥ कृष्ण हकारे सूररे॥सो० ॥ आ० ॥ २५ ॥ केम्हे जाली नीज जानसुंरे ॥ ला० ॥ बांहे सीस न मायरे ॥ सो० ॥ हियडे हणीयो मूठ

सुरे ॥ ला० ॥ किंण हरी जोर खमीयरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ २६ ॥ मुहंडे लोहि नाखतोरे ॥ ला० ॥ फाटि देखि आंखरे ॥ सो० ॥ प्राण गंड्यो पापीएरे ॥ ला० ॥ हरी पिण दिधो नाखरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ ॥ २७ ॥ ढाल भली चालिसमीरे ॥ ला० ॥ युद्ध करी बहू भातरे ॥ सो० ॥ गुणसागर हिवे कंसनीरे ॥ ला० ॥ आगे निसुणो वातरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ २८ ॥

दुहा ॥ कंस हिवे भय कोपथी, बोले कंपित देह ॥ आलसे तजी गोवालीयो, मारो उभो एह ॥ १ ॥ जेणे ए पापि पोसीया, ते पिण मारो नंद ॥ थंथ ग्रहो सहू तेहनो, काढो घरनो कंद ॥ २ ॥ भीडे करे जो बीचको, तेहने राखण काज ॥ ते हणवो मुझ आणथी, नीश्चे सुतजी लाज ॥ ३ ॥

ढाल ४१मी ॥ नृपति आइ मिल्यां ए देशी ॥ ईम सुणी हरी कोपीयोरे, कंस भणी कहे एम ॥ चाणुर मारया तु जीवावरे, मूरख वंछे केम ॥ १ ॥ सो अवसर आय मिल्यो, ऋपिवर भास्यो जेह ॥ सो० ॥ ए आंकणी ॥ राख्य जीव तुं ताह्यरोरे, जबलग हणुं तुझ ॥ पछी नंद हणवा जायजेरे, देखी पराक्रम मुझ ॥ सो० ॥ २ ॥ इम कहि कूदि आवियोरे, मांचापर हरीराय ॥ कंस पामी भय आकरोरे, नाठो मुख विलखाय ॥ ॥ सो० ॥ ३ ॥ सासभरयो आव्यो धसीरे, अंतेउरमें चाल ॥ जीवजस्या रहि बारणेरे, मान भरी मछरालरे

॥ सो० ॥ ४ ॥ रामे तव मूष्टीक भणिरे, पोहोचाड्यो ज म पास ॥ लोक नाठा सहु वेगलारे, पामीने अति त्रास ॥ सो० ॥ ५ ॥ एटले सुभट कंसनारे, धाया ले इ हथीयार ॥ हरी हलधर हणवा भणिरे, सुभट मो ठा सिरदार ॥ सो० ॥ ६ ॥ इंस एक मांचा तणिरे, राम लेइ निजदाय ॥ मधुपर मांखिनी परेरे, नासी सुभट सहु जाय ॥ सो० ॥ ७ ॥ जिवजस्या आडी फिरीरे, बोले गेडी जाल ॥ मांमि अब अलगा रहो रे, मामो मिलवो आन ॥ सो० ॥ ८ ॥ इम कहि तल पि आवियारे, लाते भांगी किवाड ॥ जाणे कंस दर बारमेंरे, पडीउ चिंति धाड ॥ सो० ॥ ९ ॥ अंतेउर स हू अवगणिरे, रोस भरयो हरीराय ॥ केशग्रहि कंस रायनेरे, नांख्यो धरणी आय ॥ सो० ॥ १० ॥ मुगट पड्यो हार गीर गयोरे, तरवा लाग्या नयण ॥ मरण दशा आवि कंसनेरे, कान्ह वदे इम [illegible] ॥ सो० ॥ ११ ॥ जीव तव राखेवा कारणेरे,

जी, जमुनाने तट जाय ॥ सो० ॥ १५ ॥ कंसनि मा
त तिम नारीएजी, जलतणी अंजली दीध ॥ जीवज
स्या निज पति तणोरे, प्रेत कारज नवी कीध ॥ सो०
॥ १६ ॥ राम अने कृष्ण तणोजी, प्रेत कारज करी
तेम ॥ कारज करी सहु नाहनोरे, कोप धरी कहे एम
॥ सो० ॥ १७ ॥ एकतालीसमी ढालनेरे, प्रगट्यो श्री
हरी आप ॥ गुणसागर जादव तणोजी, प्रबल पुण्य
प्रताप ॥ सो० ॥ १८ ॥

दुहा ॥ सतभामा पुत्री भणी, परणावे त्यां नृप ॥
उग्रसेन हरी रायने, अभीनव रंभा रूप ॥ १ ॥ नित
नित नवलां आभर्णा, नित्य नित्य नवला वेश ॥ नित्य
नित्य नवली रतिकला, करे हरी सुविसेश ॥ २ ॥ सोरिपुर
आव्या हिवे, जादव सकल विख्यात ॥ श्रोता सांभ
लजो तुमे, जीवजस्यानी वात ॥ ३ ॥ विलखी जीव
जस्या हिवे, जरासंधने गेह ॥ पाहोती परतक्ष चालती,
अस्त्री रूपे एह ॥ ४ ॥ जरासंध पूछे थके, रोति जंपे वा
त ॥ जादव कुमर हरी हलधरु, करी मुझ प्रितम घात ॥ ५ ॥

ढाल ४२ मी ॥ सोवन सिंघासण रेवति ॥ ए दे
शी ॥ आसुडाने लुह्या निज हाथसुं, चांपी चांपी हि
यभाने वाररे ॥ गहेवरयो मन अति बापनो, पूछयो पू
छयो सकल विच्याररे ॥ १ ॥ आवीरे पनोति जरासं
धने, कंतनो करीय संहाररे ॥ बाप तणो करवा भणी,
बंधव काली कुमाररे ॥ आ० ॥ २ ॥ सोमसभट तव

ांकल्यो, समुद्रविजे नृप पासरे॥ कसना मारणहारने,
ांकलो शिख दिवो तासरे ॥ आ० ॥ ३ ॥ समुद्र
ाजय कहे सोमजी, ए हमकुल शिणगाररे॥ रामने कृ
ा दो भाइला, थंभण सहु परीवाररे ॥ आ० ॥४ ॥
ाम तुं सीसके धनुष्यने, मुक्य तुं मानके बाणरे॥घर शी
आणके टोपने, वहाला जोयछे प्राणरे॥ आ०॥५॥
त्र तो प्रभु नही स्वामीजी, जो प्रभु तो नहि पुत्ररे
दोइमें एकज होयशे, तिम करो जीम रहे सुतरे॥
ा० ॥ ६ ॥ पुत्र तो आपथी उपजे, प्रभु कर आ
नो भेदरे ॥ जड विना भालतो सुकशे, थाशेथाशे वं
विछेदरे ॥ आ० ॥ ७ ॥ एह सुणी हरी कोपीयो,
ठियो खडग संभालरे ॥ सोमनो राहु हुं सांभलो,वे
देउ आमलो टालरे ॥ आ० ॥ ८ ॥ नृप भत्रिज
ां विनवे, मारवो नही अवसिठरे ॥ स्वामीने बले ब
ळ्यो महा, शेवक होवे अति ध्रिठरे ॥ आ० ॥ ९ ॥
ोम सुभट तव चालीयो, पोह्रोतो नृपति संगरे॥वा
ा सुणी अति परजल्यो, अग्नी ज्युं घृत प्रसंगरे ॥
ा० ॥ १० ॥ समुद्रविजय सहु तेडिया, किधो कि
ो वात विच्यारररे॥हिवेरे इहां रहेवो नही, रह्या होवे
असुख अपाररे ॥ आ० ॥ ११ ॥ कोष्टक एक नीमति
ो, पूछ्यो पूछ्यो यादव नाथरे ॥ किहांरे गया हम
गरा, बिगडीछे मोटका साथरे ॥ आ० ॥ १२ ॥सोरे
हे नृप सांभलो, आरति कांइ न ठामरे ॥ नृप ह

णी निज भुज बले, त्रिखंड धणी होसे स्वामरे॥आ०
॥ १३ ॥ नेमने हलधर कृष्णजी, जेहना वंशमां होय
रे ॥ दैवजो आप कोपे घणु, पोहची शके नही कोय
रे ॥ आ० ॥ १४ ॥ एह स्थानक तुमे परीहरो, इहां
सुख नहि लिगारेरे ॥ तात तलाहि जाणके, खाइ खा
इ गारी गिमाररे ॥ आ० ॥ १५ ॥ पश्चिमदिश तुम्हे
शीद्य करो, सायर तट अभिरामरे ॥ सतभामा सुत
जनमस्ये, भानु भमरतसु नामरे ॥ आ० ॥ १६ ॥ ति
हारे करज्यो तुमे सादरो, वासतणोरे मंमाणरे ॥ अन्न
धन चिरकपुरसुं, पामशो कोड कल्याणरे ॥ आ० ॥
॥ १७ ॥ अष्टारेदश कुल कोमस्युं, चालीयो जादवरा
यरे ॥ मरे व्यापे घणो पाछलो, तेहथी निकल्या जा
यरे ॥ आ० ॥ १८ ॥ भोमिने मत कोइ झूरज्यो, भो
मी तजी किम जायरे ॥ भोमीतजी भल जादवा, अ
वरतणी कुण वातरे ॥ आ० ॥ १९ ॥ नृपति भलीपरे भां
खही, कोयछे बावनवीररे ॥ जादव साथेरे लागणी, जे
करे साहसधीररे ॥ आ० ॥ २० ॥ काल कुंवर भख्यो
बिडलो, हुं जाउं यादवाळाररे ॥ जिहांरे जाय तिहा के
डले, जइ लावुं परीवाररे ॥ आ० ॥ २१ ॥ यवन अ
नुज राजा पांचसे, हय गय पायक तेमरे ॥ काल को
प करी धड हज्यो, दडवड्यो जादवा केडरे ॥ आ०
॥ २२ ॥ जेहनो पुण्य सखाइयो, तेहना वड रखवाल
रे ॥ तिहांरे न चाले बल दैवनो, केतलो ए कुंवर का

लरे ॥ आ० ॥ २३ ॥ लगबग आया ए आशना, तव सूरि करेहि विच्याररे ॥ तेम परपंच उठाइयो, काल कियो तव कालरे ॥ आ० ॥ २४ ॥ यवन कुंवर सहु राजवी, पाछा वली चालीया तेहरे ॥ नृपती सुख दुख पामीयो, वात सुणी घुर नेहरे ॥ आ० ॥ २५ ॥ वीर संहारीयो पापाणी, लाग्यो लाग्यो पाप अपाररे ॥ वलतीरे जिहां जाइ गाडरी, तिहा तिहां बालण एहाररे॥आ०॥२६॥जादव विघन सहुए टल्योरे, सहु टल्यो रूर ततखेवरे ॥ दांन ने पुन्य किया घणा, किधी गुरु देवनी शेवरे ॥ आ० ॥ २७ ॥ सल्प प्रीयाणरू आवीया, सोरठ देशमझाररे ॥ दूरथी दीठो अति रुयडो, विमल पणे गीरनाररे ॥ आ० ॥ २८ ॥ सायरने तट आसना, आवीया जादवरायरे ॥ सतभामा सुत जनमीया, तिहां कियो कटक पडावरे ॥ आ० ॥ ॥ २९ ॥ ढाल भली बेंतालीसमी, भय हरणी अभीरामरे ॥ श्रीगुणसागर पूरवे, मन तणा वंछित कामरे ॥ आवीरे० ॥ ३० ॥

दुहा ॥ उदधी विजय परीवारशुं, करेरे मसलत ताम ॥ विण सुरवर आराधीया, सरे न मोटो काम॥ ॥ १ ॥ जिहां जंबुक वासो वसे, ते तो बहुला ठाम॥ते तरुवर जग थोरूला, जिहां ले गज वीश्राम ॥ २ ॥ तप विन सानिधी नवि करे, देव महा सुखदाय ॥ तप विण लब्धि न उपजे, पाप विलय नवि जाय ॥ ३ ॥

दुःकराथि दुःकर महा, जे जग दुस काम ॥ ते तप करी आराधीए, इम चिंते नृप लाम ॥ ४ ॥ निम तिए दिन आपियो, स्नान कियो वलि कर्म ॥ सायर पूजा साचवि, साधेवा सुख शर्म ॥ ५ ॥

ढाल ४३ मी ॥ एक दिवस लंकापति ॥ ए देशी ॥ कृष्ण करे उपवासजी, अण महा उलासजी, वासनी वास करेवा कारणे ए ॥ लिजा दिननी जामनि, जाणे के प्रगटि दामनी, स्यामनी जाय ते सुर उवारणे ए ॥ १ ॥ हरीके शंख पंचायण, दियो रोहिणि नंदन, नंदन शंख सुघोष सुहामणो ए ॥ वर वस्त्र पहिरामणि, किधी सायरने घणी, अति घणी भक्ति करी जांखे घणो ए ॥ २ ॥ कहे हुं किम आराधियो, तप बले आयो साथीयो, मुजने ते दियो कारज आदेशडो ए ॥ हरी जाखे सुर सांजलो, आपो थानक निरमलो, अतिजलो थानक अमारो पडपडो ए ॥ ३ ॥ सुर सुरपति पासे गयो, सुरपति मन हरखित थयो, हरखीत थयो धनदने कारज सोंप्यो सहु ए ॥ धनद समारे अति जली, पुरी द्वारिका मन रलि, मन रलि पुगी आस फलि बहु ए ॥ ॥ ४ ॥ नव जोयण वीस्तारजी, लांबपणें ते बारजी, सारजी सुवर्ण कोट गढ जलि ए॥ हाथ अढार उंचापणे, नव धरणी पायो खणे, पोलापणे हाथ बार शंगु चलि ए ॥ ५ ॥ रतन तणा वर कांगुरा, देखी

मोहे सुरनरा, किधा एकोठा नवरंग झलकंता ए ॥ एकसो अडसठ पोळहो, दिसे सरखि ओळहो, ओळ हो सात भोमी ध्वज लहकंता ए ॥ ६ ॥ त्रतत्रंस चउरंसहो, देव करे परसंस हो, किधी मंदिरनि अ ति मांडणी ए ॥ दस भोमी रत्ने जडी, सहे सबहु तेरे परवडी, वसुदेवना मेहेल तणी शोभा घणी ए ॥ ॥ ७ ॥ मध्य एकविसे भोमियो, थंभ हजारे शोभीयो, शोभीयो मणि माणीकज लुसीयो ए ॥ धनद करे हरी हेतथी, नव नव घाट विशेथी, रंगभुवन करी थापीयो ए ॥ ८ ॥ इंद्राणी अनुहारना, सहेस बत्री से नारनां, नारनां मेहेल तणि शोभा घणी ए ॥ बां ध्या सोवन घाटहो, मांहि हिंडोला खाटहो, विविध प्रकारे कोरणीए॥९॥मेहेल सोल हजारहो,उंची भोमी अढारहो, दिपे श्री बलदेवना ए ॥ गोल त्रंस चउकुणिया सोल विविध सुहाविया, सुहाविया दस भोमी द सारना ए ॥ १० ॥ सभा सुधर्मा मन रलि, किधि शोभा झलमलि, झलमलि रामकृष्ण घर आगले ए ॥ वंभा श्री गजराजहो, मद झरंत सकाजहो, का जहो हाथी साडा पांचसे ए ॥ ११ ॥ मोटा वि वीध भातहो, सोल भोमीया सातहो, सातहो ब प्पन कोरू परीवारने ए ॥ राज मार्गने पासहो, सोव न जडीता वासहो, वासहो राय उग्रसेन कारणे ए ॥ १२ ॥ घर घर घोभा सालहो, उत्तम वाग

विशालहो; विशालहो कल्पवृक्ष घर वारणे ए॥ वा
विनो विस्तारहो, नीरपूरीत सारहो, सारहो नासि
मंजण कारणे ए॥ १३॥ एकखंभा द्वारिका कही, त्रिखंभा
सतखंडा लही, गह गह्या साठ कोडी वस्ती खरी
ए॥ नाम जुजूआ धारिए, ऋद्धी घणी विस्तारीए, वि
स्तारीए अन धनसुं भेल्या भरी ए॥ १४॥ दिपंती
घर ठलहो, बणति बणति पोलहो, पोलथीहो पोलं
तो उंचि काहिर ॥ कलश कांति अपारहो, उगंतो
दिनकारहो, कारहो कांतिकिरणे मिलराहिए॥१५॥हाट
तणि घर सोहहो, सोहनो संदोहहो, दोहनहो सोह गुणे
धन गाजीयो ए॥स्वर्ग मृत्यु पातालहो, तिन लोक र
सालहो, रसालहो सार सोधीने आणियो ए॥१६॥
कुवा वाव सरोवरु, वन वाडी अति मनोहरु, हरी
पुर हरीपुर सरस कहात्रियो ए॥ एसघलो विस्तार ए,
गढनढ पोल प्राकार ए, वारुहो अहोरात्रि मांहि
कियोए॥ १७॥पितांबर अति निर्मलो, नक्षत्रमाला अ
ति भलो, कौस्तुभहो गरुडध्वज रथआपियो ए॥कौमुदि
गदावर, सारंग धनुष्य भला सर, नंदकहो खड्ग मुगट ह
रिने दियो ए॥ १८॥वनमाला मुसल हल, वसन ता
ल ध्वजरथ भल, हलधरहो पुजो तृण धनुष्य दे
इ ए॥ ग्रीवा आभरण वेहेरखा, हारसुं कुंडल नवल
खा, जिनजीनेहो आये भूषण सुर केइ ए ॥ १९॥
गंग तुरंग विराजता, वसन समुजल राजता, पुन

रपीहो रतन तेज हार सुंदरुंए ॥ समुद्रविजयने वस्त्र
जी, दिव्य सुररथ शस्त्रजी, खांडुहो चंद्रहास्य नामे
खरुंए ॥ २० ॥ यथा योग्य ते जाणीया, ते सहूए स
नमानीया, मानीयाहो राजा राज कुमार तदाए॥इंद्रतणे
आदेसए, ए सघलो विसेषए, किधोहो देव कुवेरे घरी
मुदाए ॥ २१ ॥ राम रथे सिंघारथी, हरीने दारुक
सारथी, परवारथि बेसी रथ उपर भला ए ॥ पेसारो
पुरमां कियो, सहूको मन हरखीत थयो, देखिहो सुं
दर नगरी झलामलाए ॥ २२ ॥ सुरपति साथे मिलि,
करता सोहोछव मन रलि, मन रलि पहुराव्या द्वा
रामतिए ॥ रत्न कनक धनधानसुं, वरसावे मन खां
तसुं, खांतसुं त्रण दिवस लगे व्रतिए ॥ २३ ॥ नर सु
र असुर विद्याधरु, धनददेव अग्रेसरु, अग्रेसरु मंग
ल चार कियां भला ए ॥ किधो नृपपद अभीषेक, ह
री हलधर सुविशेष, तेज पुंज्य गुण आगला ए॥२४॥
भुचर खेचर राजीया, सेवकरे अति साजीया, गाजी
या नगर द्वारकां यदुपति ए ॥ लोक भोगवे भोग ए,
सुपनांतर नहि सोग ए, लोक ने आरति चिंता नहि
रति ए ॥ २५ ॥ आप आपणो आचार, सहु पाले
सुविच्चार, अतिच्यारको नसके तिहां करीए ॥ ढाल
ए त्रेतालिसमी, गुणसागर गुरु मनरमी, मनरमी
कमला केल करे खरीए ॥ २६ ॥

दुहा ॥ कमला केल करे खरी, कमला हरी अरधंग,

॥ कमला सर्व व्यापिरही, तीन लोक परसंग ॥ २॥ कमला ब्राह्मण वाणीया, कमला अवर अशेष ॥ कमलापतिना राजमां, कमला तणो विशेष ॥३॥ यादव जगमे झगमगे, यादव जोति अपार ॥ यादवपतिनी साहेबि, चंद कला विस्तार ॥ ४ ॥

ढाल ४४ मी ॥ वंदु श्री आदि जीणंद ॥ ए देशी ॥ चंद कला जिम वाधे श्री हरी तेज अपार, कारन लोपे सुरनर मानव एक लिगार ॥ श्री हरी वंस वतंस कहंस प्रसंस अनूप, कृष्ण कृपाल के सुरीजन दुरीजन सालस रूप ॥ १ ॥ सोमकि सीतल ताइ के तेजे तपत दिणंद, मेरु ज्युं धीर गंभिरके गुणे गिरुउ गोविंद ॥ सिंह अबिह सुलिहके सुरमें सुर सनूर, इद्रकि प्रभुता प्रगटित पूरव पुण्य अंकुर ॥ २ ॥ दाता दिल दरीयाको नाम धरंत अनंत, पिण ए तिनु त्याग तणे मन नेम वसंत ॥ परनारीने हियो ने न दिधो वैरीने पूठ, याचकने नाकारो न किधो साहमो ऊठ ॥ ३ ॥ सब विधि सुंदर राज करंत कलेस न कोइ, नामे सुभामा भामनी गुण अभिरामा जोइ ॥ चंद मुखी अदुखी सखि सुंदर सोहे, मेलि आण अनूप के उपमनोरे संदेहे ॥ ४ ॥ नेह घणेरे घडीयो विधीनां घाटसुघाट, अवर सकल त्रिया साथ मथ्यो विधी फोगट माट ॥ रुप सोहागणी रागणी राजा राग असेष, पंचेंद्रि सुख माणत जाणत जन्म विसेष ॥ ५ ॥

एक दिवस नारायण परखदा पूरी जाम, समुद्रविज य राजादिक राजा बेठा ताम ॥ गगनथी उतरतो दीठो एक सतेज, अग्नी पुंज्यको को कहे सूरज तेज सहेज ॥ ६ ॥ एटले ते यति नेमो आयो जाण्यो जेवार, तिम ऋषिश्वर दिठो के नारद नाम उदार ॥ नारायण पगे लाग्यो के जाग्यो जरम अपार, हरी ऋषिश्वरने आप पूछे सुख वारंवार ॥ ७ ॥ नारद ना रायणने पूछे प्रित प्रकार, तुम्ह पटराणि सुणि में अ मरीनु अवतार ॥ सो हुं देखण चाहुं बंधव तुम आदे श, कृष्ण कहे धन स्थानक जिहां तुम्हे करो परवेश ॥ ८ ॥ मुनि जाण्योथो जामा जामनि लागशे पाय, जाविने वस रहि कछु उपजी इहां आय ॥ दैवने दु खण दिजे कह्यो नर एक लिगार, होवणहार होवे स हि निश्चे एह विचार ॥ ९ ॥ सतजामा तव आगले मांडी दरपण सार, मनगमता रस आण्या तनुपरे शिणगार ॥ प्रिति रूपे मोहि सोहि करे हास विलास, आप सराहण करति के धरति अंग उलास ॥ १० ॥ पाछल उभो आइ रह्यो तिहां महा मुनिराय, अंग वभुत जटा शिर रुप विरुप देखाय ॥ मुलकि मुल कि सतजामा जाखे मनसु ताम ॥ एक रूप ए एक ए जोजो विधीको काम ॥ ११ ॥ मेरोतो वदन चंद के जाणी सुधारस वास, ए कोइ मुखको राहु चंद आयो पास ॥ मुह मचकोडी ऋषीनी सुजामा किधी हा

स, चाल्यो तव पिछताय नारद मन हुउ उदास ॥ ॥ १२ ॥ वानरडो अति चंचल पिधो मदिरा पान, विंछुडे चटकायो के लाग्यो भूत अयान ॥ आगे नारदने हरीनारी खिजायो जोइ, खिजावणना फल लागे ते सुणज्यो सोइ ॥ १३ ॥ अणदीवाज्यां जे नर नाचे नाच अपार, वाजां वाजे ते नर केम न नाचणहार ॥ अण छेड्योहि अनर्थ कारी नारद होय, छेड्यो क्यु क्युं न करे विमाशी जोय ॥ १४ ॥ नारद चिंते काहुं आयो इस घर आज, जे घर मान न पाइए के तिहां नही जावानो काज ॥ जइ बेठो कैलास गिरे समुदोष प्रणाम, जो ए खुणसु न काढुं तो स्यो मुफ नारद नाम ॥ १५ ॥ जो अपहार करावुं तो दुःख पावे नित्त, जोरे कलंक चढाउं तो ए चिंता चित्त ॥ सति शिरोमणी शील तणे बले साची थाय, आगे हि मुज वचन न माने को हरीराय ॥ १६ ॥ इम चिंतवता उपजी ए ऋपिने मनमांहि, शोक्य तणो दुःख गाढो के नारीने अति प्राही ॥ चमालीसमी ढाल भली नारद सुविलास, श्रीगुणसागर पुण्य तणे बले पूरे आस ॥ १७ ॥

दुहा ॥ दुसमण दाव न चूकही, वैरी न तजे वाण ॥ वैरी वाघथकी बुरो, अरति उपावे आण ॥ १ ॥ सहु साथे सुख राखीए, सहु साथे समभाव ॥ पूरो पडवो दोहिलो, जल अध विचे नाव ॥ २ ॥ भामा भमें

न नाम धरविरे ॥ सो० ॥ २० ॥ अंतर हरखि पूछि यो, एहने बहिनड कोइरे ॥ पुज्य प्रसाद तुम्हारडे, बहिन भलेरी होइरे ॥ सो० ॥ २१ ॥ परणावि के कुं वारीका, राजा उत्तर दिधोरे ॥ आजलगी तो कुवारी का, ऋपिनो कारज सिधोरे ॥ सो० ॥ २२ ॥ ऋषिने लागी चटपटी. अंतेउरमें आवेरे ॥ रलियायतमें रु खमणी, भुवा आणि वंदावेरे ॥ सो० ॥ २३ ॥ ऋषि जी दिधी आशिसका, कृष्ण घरे पटराणिरे ॥ होजे भाग्य विशेषथी, कूठ नहि अम वाणीरे ॥ सो० ॥२४॥ नाम सुणी हरजी तणो, रुखमणिनो मन राच्योरे ॥ गयणागण घन गाजीयो, मोर महितले नाच्योरे ॥ सो० ॥२५॥ पिसतालिसमी ढालमें, नारद वंछित फलसेरे ॥ गुणसागर गुरु इम भणे, रुडे रुडो मिलशेरे॥सो०॥२६॥

दुहा ॥ रुखमणि भांखे सुण भुवा, किसी कहे ऋ षि वात ॥ कवण कृष्ण नरेशरू, कवण पुरी विख्यात ॥ १ ॥ कवण संदेसां देसडो, कवण वंस विलास ॥ क वण ऋद्धि रुपे कवण, कवण तास परीवार ॥२॥ कवण नाम माता पिता, कवण शुं बंधव जोड ॥ बंधवने प रसादडे, पोहोचें सघला कोड ॥ ३ ॥ कवण बहिन सु हामणि, विक्रम तणो विच्यार ॥ भुवा भणे ऋषिरा यजी, कहो सहु विस्तार ॥ ४ ॥ नारद बोल्यो गह ग ह्यो, सुणो वडबाइ वात ॥ संभलावुं धुर थेहथी, कृ ष्णतणा अवदात ॥ ५ ॥

ढाल ४६ मी ॥ इडर आंबा आंबलिरे, इरूर दारूम द्राख ॥ ए देशी ॥ द्वारीकां नगरी अति भलि हो, द्वारीकां कृष्ण नरेश ॥ द्वारीकां सहु मन भावति हो, द्वारीकां पुण्य विशेस हो ॥ हरजी द्वारीकां केरो राय, जेहनां सेवे सुरनर पाय हो ॥ ह०॥ ॥ १ ॥ देश सोरठ देशडो हो, देसांनो शिणगार ॥ रत्न पांचसु राजतो हो, शोभा अधीक उदार हो ॥ ह० ॥ २ ॥ जल तंबोल रेवत भलो हो, द्वारीकां अधीक उदार ॥ वंश श्री हरीवंशजी हो, सहु वंसा शिरदार हो ॥ ह० ॥ ३ ॥ वय जोबन जेहनि अवे हो, वंछे जे वर नार ॥ ऋद्धि कुबेर सारखिहो, लाख वसे घरबार हो ॥ ह० ॥ ४ ॥ रुप अनूप सुहामणो हो, मदन तणो अवतार ॥ दश दशार आदे करी हो, यादवनो परीवार हो ॥ ह० ॥ ५ ॥ माता नामे देवकि हो, करमेति कहेवाय ॥ बाप भलो वसुदेवजी हो, महिमा कह्यो न जाय हो ॥ ह० ॥ ६ ॥ बंधव श्री बलदेवजी हो, दिसे केइ हजार ॥ बहिन सुभद्रा शोभति हो; अर्जुन तस भरतार हो ॥ ह० ॥ ७ ॥ विक्रम शक्र तणो वहे हो, जे नहि केहने मान ॥ रिपु कुल काल कहावियो हो, गुण मणि केरी खाण हो ॥ ह० ॥ ८ ॥ बालपणे उपाडीयो हो, गोवरधन गी री तेण ॥ दुष्ट व्यंतरी पुतना हो, मारू करी हरी ते ण हो ॥ ह० ॥ ९ ॥ जमना जलमें झीलतां हो, ना

काम ॥ १ ॥ राजसभा आयो धसी, कृष्ण दियो बहू मान ॥ कुशल वात पूछि खरी, नयण बतावी सान ॥ २ ॥ निर्वजन स्थानक जइ, हरी ऋषी बेठा जाम ॥ पट पसारि दिखाइयो, नारी रूप चित्राम ॥ ३ ॥ रुखमणि रूप विलोकतां, विस्मय पाम्यो भूप ॥ नारद ने पूछे तदा, कवण नारीनुं रूप ॥ ४ ॥ आप विधाता निरमइ, नारी निरोपम प्रांहि ॥ एहवि हूइ न हू वसे, कृष्ण चिंते मनमांहि ॥ ५ ॥

ढाल ४७ मी ॥ ताहरा मेहला ऊपर मेह, झबुके विजलिहो लाल ॥ झबुके विजलि ॥ ए देशी ॥ गीरधर रुखमणि रूप, निहाले फिरी फिरी होलाल ॥ निहाले फिरी फिरी ॥ ए कुण नवलि नार, अपछरा किन्नरी होलाल ॥ अ० ॥ निरखि सुंदर अंग, वखाणे तेहनो होलाल ॥ व० ॥ फूल्या ज्युं सुरंग, चरण तल एहना होलाल ॥ च० ॥ १ ॥ मस्तक वेणि शाम के जैसि नागणी होलाल ॥ के० ॥ मुख उदय पूनम चंद, के रूप सोहागणि होलाल ॥ के० ॥ नव पल्लव केसुवान, अधर रंग रातडो होलाल ॥ अ० ॥ लहके लोडाबे बांहके, मोह्यो जग बापडो होलाल ॥ मो० ॥ २ ॥ कठण कंचुकि नाग, निलांबर खेंचियो होलाल ॥ नि० ॥ देइ तनु काम, आवि जग वंचियो होलाल ॥ आ० ॥ जेहवुं पोयण पान, उदर तस पातलुं होलाल ॥ उ० ॥ झलके मोवन वान सोहे जेम मांडलुं होलाल ॥ सो० ॥ ३ ॥

सुंदर कटिनो भाग विराजे लंकथि होलाल ॥ वि० ॥ भावे करतल भाग भलो मध अंकथि होलाल ॥ भ० ॥ सुडा चांच समान सोहावे नासीका होलाल ॥सो० ॥ मणि दरपण उपमान कपोले ओमिका होलाल ॥ क० ॥ ४॥ काने कुंडल जोरु सोहे शिणगारथी हो० ॥ सो० ॥ रति पतिने घर एहवि न दिठि आकारथी होलाल ॥ न० ॥ देखि कृष्ण मुरार थयो मदनाकुलो होलाल ॥ थ० ॥ वाध्यो विरह विशेष अलेख उपापलो होलाल ॥ अ० ॥ अहो अहो रूप निहाल चतुर गुण धारीका होलाल ॥ च० ॥ ५॥ परणिठे ए बाल के हजी कुवारिका होलाल ॥ ह० ॥ कवण अठे ए जात रहे किहां वली होलाल ॥ र० ॥ नाम कवण कुण तात विचारे महा बलि होलाल ॥ वि० ॥ ६ ॥ कहे कहे नारद एह सरुप तुं सादरो होलाल ॥ स० ॥ मुजशुं आणि सनेह मथाइस निरादरो होलाल ॥म० ॥ देश कुंनलपुर तणि महिमा गति होलाल ॥ त० ॥ राय भीपम घरे पटराणि श्रीमति होलाल ॥ प० ॥ तेहनि जाइ नामे रुखमणि गुणवंति होलाल ॥ रु० ॥ रूप रंभा समान कहुं उपमा गति होलाल ॥ क० ॥ भमियो भोमी अपार जीहां रवि संचरे होलाल ॥जी० ॥ विजी कोइ न नार जे एहनि सरीकरे होलाल॥जे० ॥८॥ ए परणी के कुवारि हो नारद ते कहो होलाल॥ ना०॥तुरत कुंआरी मूरारि ए साचुं सरदे होलाल ॥ए०

मांगी नृप शिसुपालने मेंए सुणि खरी होलाल॥ मे०॥ पिण तुम्ह स्या नूपालने योग्य ए कुमरी होलाल॥ यो० ॥ ९ ॥ नारद रढ लगाइ गयो तव संचरि होलाल ॥ ग० ॥ मूरछाणोहरी राय सचेत थयो फिरी होलाल ॥ स ० ॥ एहवे कुमरी लेख लिखी जेज्यो जले होलाल ॥ लि० ॥ हेत जणवाण काज हरीने आगले होलाल॥ ह० ॥ १० ॥ माधवे सकल उदंत चतुरपणे वांचियो हो लाल॥ च० ॥ पद पद अंग अनंत हरख रोमांचियो होलाल॥ ह०॥ तुम विरहे मुझ काय रहि ए खलबलि होलाल ॥ र० ॥ नेट देइ महाराय करो हिवे सिय लि होलाल ॥ क० ॥ ११ ॥ वांचि इम विरतंत हरी मन वेधीयो होलाल ॥ हं० ॥ नेह निवडनें तंत वेहु मन संधीउ होलाल ॥ वे० ॥ हरी लिख्युं सुण वाल, करो चिंता किसी होलाल ॥ क० ॥ करवा तुम सना ल आवि सहु उलसी होलाल ॥ आ० ॥ १२ ॥ ला गी चटपट चित्त चन्द्रानन उपरे होलाल ॥ चं०॥ जीग तनु खुल्यो साल कह्यो इम सूतरे होलाल ॥ क०॥ हलध रे जाण्यो एम हरी उदासीयो होलाल ॥ ह० ॥ मरम लहि सुख हेत वचन प्रकाशीयो होलाल ॥ व० ॥ ॥ १३ ॥ रुखमणी लेसुं जाव देसुं शिसुपालने होला ल ॥ दे० ॥ हुवो निसुणि वातके सुख गोपालने होला ल ॥ के० ॥ नामा थइ निकाम रुखमणिरूपे करी होलाल ॥ रु०॥ तेल न लागे मीठ खाधो जीणे

घ्रत वरी होलाल ॥ खा० ॥ १४ ॥ अणदिठा अनुरा
ग ए उपज्यो अति घणो होलाल ॥ ए० ॥ जो जो
अति सोनाग के जग रुखमणि तणो होलाल ॥ के०
॥ चित्ततो पद्मनि पास वस्यो हरी रायनो होलाल ॥
व० ॥ श्रवण सुणंत उल्हास सकल सुखदायनो होला
ल ॥ स० ॥ १५ ॥ रुखमणी रुखमणी नाम जपे जी
हां जापथी होलाल ॥ ज० ॥ तरूफडे तनु अकुलाय
के मिलवा आपथी होलाल ॥ के० ॥ ढाल चालीसने
सात नली सरसि तिहां होलाल ॥ न० ॥ गुणसागर
वरबाल वेहु मिलशे इहां होलाल ॥ वे० ॥ १६ ॥

दुहा ॥ एह अवसर शिसुपाल नृप, लग्न गणायो
जोइ ॥ मनगमता कारज नणी, ढिल करे नही कोइ
॥ १ ॥ रुडाने चाहे सहु, ए जगनो व्यवहार ॥ पिण
रुडे रुडो मिले, इहां नही कोइ विच्यार ॥ २ ॥ रुख
मणि मनमा खलनली, कहे नुवासु जाय ॥ चंदेरी
पति आवियो, कहांठे जादवराय ॥ ३ ॥ मुज मन ए
निश्चे सहि, वरु तो देवमुगर ॥ कनक कुसमनी उप
मा, मन माहरा मजार ॥ ४ ॥ नुवा नतीजीसुं कहे,
चिंता मतकर लिगार ॥ आपणा इतने आसना, गरु
ड तणो असवार ॥ ५ ॥ कुमरी चित चिंता खरी, र
खे न आवे स्वाम ॥ नयणे आंसुडा झरे, मोहत त
णो ए धाम ॥ ६ ॥

रुखमणीना कागलनी-ढाळ ॥ तट जमनानोरे अति

रलीयामणोरे ॥ ए देशी ॥ रुखमणीना मनमांरे चिंता वली उपनीरे, हजीय न आव्यो दिनारे नाथ ॥ आ तुर थइ बेठीरे लिखवा लेखनेरे, कुमरी मन हुइरे अ नाथ ॥ १ ॥ चंद्रगढ घेरोरे वेलेरा पधारजोरे, करो मु ऊ अबलानी सार ॥ हुंतो मांफी बेठीरे आशा तुम उपरेरे, अहो प्रभु प्राणनारे आधार ॥ चं० ॥ २ ॥ अरनिंद्रामां सुतारे आज मुऊ मंदीरे रे, दिठो कांइ सुपनोरे रसाल ॥ जाएयु में सांजलीयोरे आव्यो मुऊ परणवारे, साथे लेइ बंधवनो परीवार ॥ चं० ॥ ३ ॥ चौरी विचे बेठारे नाथ माहरा एकठारे, हाथे बांधी मींफलनोरे आचार ॥ आमी नजरे फांखुरे फिरी फि री साहिबोरे, परो करी घुंघटपट उदार ॥ चं० ॥४॥ इम सुपनामारे आवे पोहोर माहेरारे, जायवे कांइ मिलवानी आश ॥ पिउजी उवेखिरे अलगा केम रहोरे ॥ नाखी मुने प्रेमनो पास ॥ चं० ॥ ५ ॥ आज उदयथी रे दिवस सातमेरे, शुक्ल अष्टमी भृगुवार ॥ जान लेइ जोरे रे दावल राजीयोरे, आवशे कांइ नयरी मोझार ॥ चं० ॥ ६ ॥ मुऊ अंतरनीरे साहिब मारा जाणजोरे, तुऊथी कांइ बांध्या ए प्राण ॥ तुम नवि आव्यारे मुज मरणो सहिरें, आवे एम जाणमजाण ॥ चं० ॥ ७ ॥ करुणा किजेरे हिवे मूऊ वालहारे, हे जे धरी लिजेरे हाथ ॥ ते आपवसुरे किधो जग जोवतांरे, नसनाहि तुं केहनेरे नाथ ॥ चं० ॥ ८ ॥ आसना अवलंबनरे

एति अवधारजोरे, राची हुं तुमचेरे राग ॥ आपण डी करिनेरे राखो दिलनरीरे, आपीजे मुझ एह सो हाग ॥ चं० ॥ ९ ॥ नाइ रुखनियोरे एहेनी वातमां रे, जाणे जेका एह जगदीश ॥ माहरा मनथीरे मेंतो एम आदरयोरे, जीम गोरीधर इश ॥ चंद्र० ॥ १०॥ अंतरजामीरे दुर दुःख त कररे; जाणिये आपणी लाज ॥ हिवे गोरी किजेरे निज साचापणेरे, किस्युं घणुं गरीब निवाज ॥च०॥११॥ कागलीयो तो नीलोरे लिखतां आंसुएरे, तेहवोज बीटीने दिध ॥ पूरव लिख्याथीरे संबध जे हुयोरे. वली मुख वचने इम किध॥चं०॥१२॥

दुहा ॥ कुमरी काज समारवा, लेख लिखी अनीराम ॥ दूत चलाव्यो द्वारीकां, करह चढावी ताम॥१॥

ढाल ४८ मी ॥ करहला तुं वेगो चालेरे, तुंने चारिश अमृतवेल ॥ क० ॥ तुं जाजे मारग ठेल ॥ क० ॥ ए आंकणी ॥ शुभ सुकने प्रेरयो घणुं, दूत कुशल अभिधान ॥ आयो नगरी द्वारीकां हो, देख्यो बहु मंडाण ॥ क० ॥ १ ॥ अनुक्रमें आयो चालके, देवतणे दरबार ॥ प्रतिहार आगे धरीहो, किधोराय जूहार ॥ क० ॥ २ ॥ राजा पूछे कवण तुं, कहे विदेशी दूत ॥ बेठो नृप आदेशथी हो, चतुराइ अदभूत ॥ क० ॥ ३ ॥ रामकृष्णने दूतए, बेठा जइ एकंत ॥ लेख धरयो आगे मुदा हो, वांचे कृष्ण तुरंत ॥ क० ॥ ॥ ४ ॥ कागल माड्यो वांचवा, वरणन दिसे कांइ ॥

जिहां तिहां टचका आसुडा तणा हो, समजयो मनमा मांहि ॥ क० ॥ ५ ॥ आसुआ आदे न लिखी सकिरे, माहरे विरहे एम ॥ हुं न गया ए भामनि हो, दिवस निगमशे केम ॥ क० ॥ ६ ॥ मुख वचने कहे दूतजी, सांभल देव विच्चार ॥ श्री कुंडनपुर राजीयो हो. भी षम नाम उदार ॥ क० ॥७॥ पटराणी तस श्रीमतिहो, तस उदरे उतपन्न ॥ सर्व सुलक्षण गुणवंति हो. रुख मणि कुमरी रतन ॥ क०॥८॥ सुरलोका सोधी घणु, मा णस लोक मझार ॥ पाताला पामि नहि हो, रुखम णिनि अनुहार ॥ क० ॥ ९ ॥ मांगी नृप शिसुपालने, बंधव लहि बहु मान ॥ एतले नारद भाखियो हो, परतो श्री भगवान ॥ क० ॥ १० ॥ माघ शुकल अ ष्टमि दिने, लग्न लियो राजान ॥ कांतो थाउ प्रभु या रुरू हो, कांतो तुटे प्राण ॥ क० ॥ ११ ॥ प्रभुने उ पनि सोचना, ए मोटो जंजाल ॥ न गया मरणो रु खमणि, गया मरे सीसुपाल ॥ क० ॥ १२ ॥ मार्ग न मेले मानविरे, ना नाहीए न्याय ॥ नारी प्रतिज्ञा नवि तजेहो, कहो किसी पेरे थाय ॥ क० ॥ १३ ॥ कुभाउ कहे तुम्हाहि अगे, अंतरजामी आप ॥ सोइ करा जीम एहि मिटेहो. रुखमणीनो संताप ॥ क०॥१४॥ सिखे से तुमाहे थकीरे, तुम्ह किहां शिखण जाउ ॥ सोच्यो सल बेसे नहीहो, एम मतो ठहराउ ॥ क० ॥ ॥ १५॥ हलधरने हरी पूछीयोरे, दुत कहो शुं किध ॥

हरीनो हेत विचारवे हो, हलधर उत्तर दिध ॥ क० ॥
॥ १६ ॥ अबला प्राण उगारवा, पुरुष तणो ए धर्म
॥ एम विमासी पूछीयो हो, मिलवा केरो मर्म ॥ क०॥
॥ १७ ॥ प्रमोद नाम उद्यानमे, कामदेवनो ठाम ॥
वृक्ष अशोक सुहामणो हो, उपर ध्वज अभीराम
॥ क० ॥ १८ ॥ ए सहि नाणी कर धरीने, गमन जा
णवा काम ॥ वेग करी पाउ धारजो हो, गुप्तपणे सु
ण स्वाम ॥ क० ॥ १९ ॥ चतुर शिरोमणी रुखमणि,
पूजानो मिस ठाण ॥ ओहि थानक चली आवशे हो,
चोरी सकलके कांण ॥ क० ॥ २० ॥ जो प्रभु वयणे
निरखशे हो, तो होसे सुख प्रित ॥ अण दिठी आ
तुर थइ हो, करसे अति विप्रीत ॥ क० ॥ २१ ॥ ह
मे जणावी वात ए, कारज तो प्रभु हाथ ॥ देइ दा
न नवि सरजे हो, दूत तदा जगनाथ ॥ क० ॥ २२॥
दूत चल्यो ते वेगसुं हो, आयो रुखमणी पास ॥ का
ज सर्यो दुःख विसर्यो हो, उपज्यो अति उल्लास
॥ क० ॥ २३ ॥ हरजी हलधर हरखसुंरे, जोतरीया रथ
दोय ॥ शस्त्रतणो करी संग्रहो हो, सधनबंध अति
होय ॥ क० ॥ २४ ॥ नामा नय नारे धरीरे, गुप्तप
णे निसी प्रांही ॥ चाली आया उतावला हो, कुंदन
पुर वनमांहि ॥ क० ॥ २५ ॥ रथ छेमी हय बाधीया,
जोवे रुखमणी वाट ॥ फूल्या अगन मावहि हो, र
मन करे उचाट ॥ क० ॥ २६ ॥ ए ढाल आठेचालीस

मी, हरी आयो त्रिय हेत ॥ गुणसागर गुरु इम भ णे हो, शुभ वंछीत फल देत ॥ क० ॥ २७ ॥

दुहा ॥ नारद नाम प्रणामथी, नारद सोचन को इ ॥ साजो भाजन फोडके, फेर घडंतो जोइ ॥ १ ॥ अणमिलते मेलो करे, मिलंते करे बिकार ॥ ज्ञान विना नवि जाणीये, नारद चरित्र अपार ॥ २ ॥ रुखमणी म न हरी आणीयो, हरी मन रुखमणी नार ॥ चदेरी पतिसुं जइ, बोल्यो कवण प्रकार ॥ ३ ॥

ढाल ४९ मी ॥ नणदलनी देशी ॥ हो नारद, चं देरी पतिसु कहे, मैं सुण्यो तुमरो विवाह हो ॥ ना० ॥ घर घर रंग वधामणा, तुझ मन अधीक उछाह हो ॥ ना० ॥ चं० ॥ १ ॥ कलहकारी जनमारणो, मन वच न योग समपाप हो ॥ ना० ॥ सांधा जोडा मेलवे, करे अधिक संताप हो ॥ ना० ॥ चं० ॥ २ ॥ हसी बो ल्यो सिसुपालजी, स्वामी तुम प्रसाद हो ॥ ना० ॥ रंग व्याह हम ए हुंसे, बिजा व्याह सोवाद हो॥ ना० ॥ चं० ॥ ३ ॥ कवणपुरी किणकी सुता, किस्यो कुमरी को रुप हो ॥ ना० ॥ कुंभनपुर भीषम सुता, रुखमणी रूप अनूप हो ॥ ना० ॥ चं० ॥ ४ ॥ कवण लग्न ते व्याहको, लग्न देखायो राय हो ॥ ना० ॥ ऋषि भां खे दूषण घणा, इहां उपद्रव थाय हो ॥ ना० ॥ चं० ॥५॥हम निसप्रही दरवेसनी, नही ग्रह चित्या काम हो ॥ ना० ॥ प्रिती भणी तुमसु कहुं, हुसीयारीको का

म हो ॥ ना० ॥ चं० ॥ ६ ॥ एम कही रूपी पागर्यो, रंगमांहि करी नग हो ॥ ना०॥ जगत मांहि अति पर गटो, ए कु सेहेजो अंग हो ॥ ना० ॥ चं० ॥ ७ ॥ शिसुपाल हिवे जानली, करे सजाइ जोर हो ॥ ना०॥ वंद टकोरा गडगडे, गुहिर निसाणे घोर हो ॥ ना०॥ चं० ॥ ८ ॥ साथे सबला राजवी, जोर जुगति झूझा र हो ॥ ना० ॥ हयगय रथ पयदल तणा, कहेतां ना वे पार हो ॥ ना० ॥ चं० ॥ ९ ॥ को कवाण आगे कि यां, तोफारो नहि हो पार ॥ ना०॥ झूंजाला साथे लिया, साथीडा सिरदार हो ॥ ना० ॥ चं० ॥ १० ॥ सलकर मिलीउं सामटु, पंचक्षोणी परमाण हो ॥ ना० ॥ हय दल पयदल गज घणां, मिलीया आप समान हो॥ना० ॥ चं० ॥ ११ ॥ सकल सनाह सजी करी, हयगय र थ परीवार हो ॥ ना० ॥ राजा रूके रावणे, आयो हो इ हुसीयार हो ॥ ना० ॥ चं० ॥ १२ ॥ कुंदनपुर विं टी रह्यो, तारा जिम गिरि मेर हो ॥ ना०॥ अहि जिम चंदन तरुवरा, विंटाणा चौफेर हो ॥ ना०॥ चं०॥१३॥ राजाना वेसी गया, दरवाजे दरवान हो॥ना०॥ आवाग मन न होइ सके, कुमरी दुःख असमान हो ॥ ना० ॥ चं० ॥ १४ ॥ सुवा भलीपरे मेलवे, पूजा तणा प्र कार हो ॥ ना० ॥ मंगल गीत सुछंदसु वाजे नाद अपार हो ॥ ना० ॥ चं० ॥ १५ ॥ पांच सात साहे लीया, अलबेलीया उदार हो ॥ ना० ॥ चाली जाये

णि कुवरि लेइ सिधावा ॥ सु० ॥ १ ॥ अवर जे सुभट अति विकट बल धारके, जोध जे जगतमें रहे तदावे ॥ आवियो धावियो वेग करि पाछले, माग धारि हम साथ्य आवे ॥ सु०॥२॥ एम सुणता शिसुपाल नृप परजल्यो, अग्नी जाणे घृत होम पायो ॥ सेन दल सबल अतिप्रबल प्रतापसु, आप बल प्रबल लेइ धायो ॥ सु०॥ ३ ॥भिषम राय अति लाज पाम्यो घणि, रुखमियो कुंवर जिम काल कोप्यो ॥ उठियो धसमसी धरणि तव कसमसी, दसमसी आगले आणि रोप्यो ॥ सु० ॥ ४ ॥ गडगडे गयंवर हिंसता हयंवर, वीर रथ शोभ अधकेरो पावे ॥ पायक लायक काज सहायक, नायक नव जस काज धावे ॥ सु० ॥ ५ ॥ ढाल नेजा वरां फरहरे फरहरां, वगतर तोफ तव तेज झलके ॥ आयुधकारका जे छत्रिस स्वयंवरा, झलहले खग्ग अतिसय चलके ॥ सु०॥ ६ ॥ ढोल निसाण सरणाइ वर काहला, झुंझको राग सिंधु सुणावे, कायर थरहरे जीव आशा धरे, परहरी स्वामि परहापुलावे ॥ सु० ॥ ७ ॥ रेणु उडी घणी गयण रवि छाइयो, आपणो पर नवि जाय जाण्यो ॥ देव देवी घणी चउसठ जोगणी ॥ अंबरे आप सुख आज मान्यो ॥ ॥ सु० ॥ ८ ॥ नाचतो नारद फिरत रस रंगमे, अंग मे आनंद अधीक पावे ॥ खिणक सिसुपाल नृप खिणक हरी हलधरा, बाप म्हारा इम काहि सुणावे ॥

॥ मु० ॥ ९ ॥ उदधी किलोल दल पसरीयो चिहुं दिसे, रे रे गोपाल किहां जाय भाग्यो ॥नृप शिसुपाल कुअर वर रुखमीयो, इम कहेतो प्रभु पुठे लाग्यो ॥ सु० ॥ १० ॥ आवतां दल हरि हलधरे रोकिया, नदिअना पुर जिम उदधी रोके ॥ फोज वांधी रह्या सुभट अति गहगह्या, पिण कहो सिंहने कुण रोके ॥ सु०॥११॥देखि दल पूर घटि भूर रुखमणि हुइ, आरति उपजि एह अपारो ॥ एह घणो रावणो अधीक विहामणो, एह तो वंधव दोइ सारा ॥ सु० ॥ १२ ॥ कठिन घन लोह तन लोक माहि भण्यो, पिण वहु मिले जो लीहाला॥गालवे लोहनें एह अचरिज वडो.एम जाणी थरहरी एहि वाला ॥ सु०॥१३॥ कृष्ण वोले हम कोण तोले अछे, घणी थोरा तणो स्यो पंथारो॥रातनो संचियो अति घन माचियो, ऊगंते सूर नासे अंधारो ॥ सु० ॥ १४ ॥ तोइ पिण शंक जाइ नहि रुखमणी. मुद्रडि वज्र हरी तामचूरे॥ करी अति चून पडी पुन चिपटि करी, साथीयो हाथ मांहेज पूरे॥सु०॥१५॥ एक वाणे करी विंधीया तव हरी, ताड साते त्रियाने दिखावे॥ तव अति खलभलि एह अतुलि वलि, मारसे सहि मुज वाप भाइ ॥ सु० ॥ १६ ॥ कृष्ण वोल्यो हसी एह चिंता किसी, ताहरो वाप भाइ नवि मारूं ॥ अवगुण सा सहु अवर कोति कहूं, बुरो न मनावसुं देवि थारूं ॥ सु० ॥ ॥ १७ ॥ हलधर इम क

हे कुण मुझ बळ सहे, पिण सिसुपाल नृप मारयो न जाय ॥ अवरने आगसुं रंग रणमें रमु, अति दमुं साहमो तु जेह थाय ॥ सु० ॥ १८ ॥ कहे हरी केसरी खांग उचो करी, कुण सिसुपाल सियाल साचो ॥ रण मांहे रोलवु पवन तृण ढोलवुं, तो जाणजो पितु दुध काचो ॥ सु० ॥ १९ ॥ इम रुखमणि मूकि वेरी भणि आविया, दोइ बंधव रण मांहि सनूरा ॥ कृष्ण सिसुपाल असराल क्रोधे चढ्या, भटभिड्या आप आप मांहि सूरा ॥ सु०॥२०॥ श्री बलदेव ततखिण रण रोसे चढ्यो, वरू वडा राय जाइ पुलाणां, सिंहकि दोरू गजराज गिर गिर परूे, आंकतां प्राण ठेरूे खलाणां ॥ सु० ॥ ॥ २१ ॥ सेन दल भंग रणतरंग देखि करी, रुखमीये बलभद्रप्रति बाण साध्यो ॥ वज्र काया भणी बाण लाग्यो नहि, नागपासे करी सोइ बांध्यो ॥ सु० ॥ २२ ॥ नखशीखे जखडीयो गाढो करी पकडियो, अकडीयो अंग मिट गयो दावो॥आणि रथमें धरयो वयण इम उचरयो, कुल वहू भाइ मांखि उभावो ॥ सु० ॥ २३ ॥ कृष्ण सिसुपाल चिरकाल रण साचव्यो, अस्त्र शस्त्राकरी मांहो मांहि ॥ जितीयो इस जगदिस जग जस्पना, पुण्य प्रसादे जय हुवो प्राही ॥ सु० ॥ २४ ॥ दोय वरू विर अति धीर गंभिररण करी, रुखमणि तणे पास आया ॥ ढाल कमूखातनी सुणत सुहामणी, तिस अरु विसमी हरप पाया ॥ सु० ॥ २५ ॥ पिसुन मद मान म

देन भगवानजी, साधुपरे त्राण ए बीदनिको ॥ श्री गुणसागर अधीक उजागर, नागर नवेलजस सुजस टिको ॥ सु० ॥ २६ ॥

दुहा ॥ रुखमणी रिंजी अति घणी, देखी जेठ प ति काम ॥ एह अदभुत पराक्रमी, अवर पुरुष स्यो नाम ॥ १ ॥ करजोनीने विनवे, पिउजी केरे पसाय ॥ बंधव बंधज छोडीए, माहरे मन ए नाय ॥ २ ॥ बं धन छोड्यो हाथसुं, कृपा करी जगनाथ ॥ सुजन पणे अति राखज्यो, प्रिती भाव हम साथ ॥ ३ ॥

ढाल ५१ मी ॥ रघुपतिजीत्योरे ॥ ए देशी ॥ य दुपति जीत्योरे, जीत्यो जीत्यो श्री वसुदेव कुमार ॥ ॥ यदु० ॥ जीत्यो जीत्यो रुखमणीनो भरतार ॥ य०॥ जीत्यो जीत्यो बाइ सुभद्रानो वीर॥ य० ॥ जीत्यो जी त्यो साहसवंत सधीर ॥ य० ॥ जयजयकार करे घ णो, आकाशे सुरनार ॥ देइ ददामा जीतनाहो, चा ल्यो देवमुरार ॥ य० ॥ १ ॥ श्रीगीरनारे आवीया, मनमें अति उछाह ॥ आरण कारण साचवियो हो, किधो रुखमणी व्याह ॥ य० ॥ २ ॥ व्याह हुउ जेह थानके, रुखमणी वन तस नाम ॥ संगति मोटा मा णता हो, सवहीपरे अभीराम ॥ य० ॥ ३ ॥ खवर हुइ द्वारामांने, परणी आवे नाथ॥सजन सुभटजन सामटा हो, आइ मिल्या सहु साथ ॥ य० ॥ ४ ॥ नगरीनी शोभा करी, आवी भात अनूप ॥ घरघर बार वधामणा

हो, हरख्या यादव नृप ॥ य० ॥ ५ ॥ कोइ हटालें उरडे, कोइ आंगणे अपार ॥ गोखे चढी कोइ गोर डीहो, को चातुरी चौवार ॥ य० ॥ ६ ॥ को गलीए को चोतरे, चाचर उभी कोइ ॥ लाजन सुसरा जेठकिहो, कौतुक मीठो होइ ॥ य० ॥ ७ ॥ बिंद बिंदणी देख वा, लालच लागी नार ॥ होइ रही बेफूमताहो, तन मन सुधन विसार ॥ य० ॥ ८ ॥ अचरिज किधां ए तलां, चुडाबंध उदार ॥ केडे पेहेरयो कटीमेखलाहो, माथे करत सिणगार ॥ य० ॥ ९ ॥ कुंकुम लाया लोच नां, काजल दियो कपोल ॥ उघाडे माथे फिरेहो, नि र्लज्ज थइ निटोल ॥ य० ॥ १० ॥ पुत परायो लेचली, आपरो वंतो मेल ॥ अलजा लगे आधी घसेहो, एक एकने टेल ॥ य० ॥ ११ ॥ कोइ वधावे फूलडे, कोइ हिरालाल, मणी माणिकने मोतीया हो, अक्षत थाल रसाल ॥ य० ॥ १२ ॥ कोइ वदे वरकामनी हो, धन रुखमणी अवतार ॥ सब विध सुंदर सामलो हो, जे ह पाम्यो भरतार ॥ य० ॥ १३ ॥ अवर अनेरी भा मनि हो, भांखे वारंवार ॥ वडवखता श्री कृष्णजी हो, पामि नार उदार ॥ य० ॥ १४ ॥ विविध विनोद वि चारनि, वात सुणतां स्वागी ॥ सोहासण कत मंगले हो, मंदिर आया ताम ॥ १५ ॥ धन्य धन्य माता दे वकि, वर वहु लाग्या पाय ॥ दिये आसिस सहामणि हो, फूलि अंग न माय ॥ य० ॥ १६ ॥ मंदिर डंबो

नव खणो, अधीक अनोपम सार ॥ रुखमणिने हरि आपियो हो, अन धन भरित अपार ॥ य० ॥ १७॥ हय गय रथ वर वाहणि, आयुध विविध प्रकार ॥ हरि आलुधय अति घणा हो, ते घर मांहि उदार ॥ य० ॥ १८ ॥ दास अने दासि तणो, बहुलो तस परीवार ॥ स्वामी मघाथी सहु हुवे हो, ए सुधो व्यवहार ॥ य० ॥ १९ ॥ स्नान अने भोजनपणे आसन सयन विचार ॥ हसन विलोकन भांखणो हो, रुखमणिनो अधीकार ॥ य० ॥ २० ॥ मनसा ने वाचाये करी, काया केरो तेम ॥ खीर नीर जीम मिलि रह्यो हो, श्री हरी रुखमणि प्रेम ॥ य० ॥ २१ ॥ दक्षणश्रेणि जंबुपुरी, जाबु पुत्रि जाण ॥ जंबुवंति रुषि वाक्यथि हो, आणि श्री भगवान ॥ य० ॥ २२ ॥ ततक्षण रोमज राजियो, सघला नायक जोइ ॥ लखमणा नामे कुंवरी हो, परणि श्री हरी सोइ ॥ य० ॥ २३ ॥ राष्ट्रवर्धन्त रायजी, सोरठ केरो इस॥सुसिमां पुत्रि वरि हो, बंधव हणी जगदिस ॥ य० ॥ २४ ॥ सिंधु देशनो स्वामीजी, मेरु भूप वड राय ॥ पुत्रि गोरी गुणभरी हो, गीरधरने सुखदाय ॥ य० ॥ २५ ॥ हलधरनो मामो भलो, हिरण्य नाम नरेश॥पुत्रि तो पद्मावति हो, स्वयंवर वरीय विशेस ॥ य० ॥ २६ ॥ देश महा गंधारजी, इंद्रगीरी पति तास ॥ पुत्र मारी, पुत्रि वरी हो, गंधारी सोल्हास ॥ य० ॥ २७ ॥ ए आठे पटरागणि, ए

आठे समतोल ॥ ए आठे सिव गामनि हो, ए आठे निरमोल ॥ य० ॥ २८ ॥ ए एकावनमी ढालमे, वंछित फलि जगीश ॥ श्री गुणसागर सूरिजी हो, पुण्य करो निशदिस ॥ य० ॥ २९ ॥

चोपाइ ॥ खंड खंड रस छे नव नवा, सुणतां मीठा साकर जेवा ॥ श्री हरीवंश चरित्र जय जयो, बीजो खंड ए पूरो थयो ॥ १ ॥ इति द्वीती खंडसमाप्तः ॥

॥ श्री हरी वंस ढाळसागर प्रबंधे त्रीतीय खंड प्रारंभः ॥

दुहा॥अरि हणवे अरिहंतजी, तास करी परणाम ॥ अब त्रिजा अधीकारनो, उद्यम करुं सकाम ॥ १ ॥ रुखमणी रागे राचियो, सुख माने हरी राय ॥ तिम तिम भामा आवटे, ते दुःख कह्यो न जाय ॥ २ ॥ नारद आवि बोलियो, भामासुं ततखेव ॥ वाको मुख किया तणो, ए फल भोगव देह ॥ ३ ॥ तिम तिन सा गाढि वळे, आरति घणि मन मांहि ॥ सोक्य साल हियडे खळ्यो, ते उतरे नाहि प्रांहि ॥ ४ ॥ उत्तम उत्तमता भजे, न करे ताणो ताण ॥ रुखमणी हरिसुं विनवे, भामा आराति जाण ॥ ५ ॥

ढाल ५२ मी ॥ श्री श्री मंदिर साहिब मोरा ॥ ए देशी ॥ एक दिवस रुखमणी हरि साथे, किधी ए अरदासोरे ॥ भामा घर प्रीतम पाव धारो, सहुने पिउ नि आशोरे ॥ ए० ॥ १ ॥ कृष्ण कहे ए सा अहंकार

णि, तेहथी न लहे मानोरे ॥ ते सोनो सुं करवो सुं
दरी, जेहथी त्रुटे कानोरे ॥ ए० ॥ २ ॥ रुखमणी बो
ले अमृत तोले, यद्यपी जो त्रुटे कानोरे ॥ तोपिण सो
नोकोइ न नाखे, ए प्रगट उखाणोरे ॥ ए० ॥ ३ ॥ आ
पण आदरीयुं केम अलगुं, किधुं जाइ कतोरे ॥ विष
अने विषधर दुखदाइ, शंकर संग वसंतोरे ॥ ए० ॥
जोगवणो जग खाटुं खारुं, जेतो लाग्युं लारोरे ॥ ज
ना आगे नहि नहि नाखे, शिव साता दातारोरे ॥
॥ ए० ॥ ५ ॥ नोतन हिरो लाल नगीनो, नोतन नारी
निरखिरे ॥ जोरे पुरातनने परहरीये, तो ए नहि घर
सरखीरे ॥ ए० ॥ ६ ॥ आग थकि अधिको आति उ
न्हो, नारीनो निसासोरे ॥ नाह नीपटनी तेह पण त्रि
य, तजवी नही नीरासोरे ॥ ए० ॥ ७ ॥ वेगे सिधावो
वार म लावो, पोखो परीघल प्रेमोरे ॥ जो न
गया तो तुम्हसुं बोलण, आज थकी मुज नेमोरे ॥ ए० ॥ ८ ॥ रुखमणी वचने राय विच्यारी,
वात सकलहि वारुरे ॥ निर नरेसरे न्याय क
हाणां, फेरणहारा सारुरे ॥ ए० ॥ ९ ॥ रुखमणि
मुखनो सुरभी सुगंधो, लेइ तंबोल नरिंदोरे ॥ भामा
भामनिने घरआयो, भामा मन आणंदोरे ॥ ए० ॥
॥ १० ॥ वक्र वचनसुं भामा भाखे, ए तुम्ह नेह न
होवेरे ॥ भूलें पधारया प्रथविपति तुम्हे, रुखमणि
मारग जोवेरे ॥ ११ ॥ कृष्ण कहे हां उ घर नाहि, पि

ए आयो सो आयोरे ॥ नमंसु गर्भ वचन केलवता, राना अति सुख पायोरे ॥ ए० ॥ १२॥ कृष्ण कहे मुज निंद्रा आवे, एतो मे धूर जाणिरे ॥ सोवा कारण हम घर आया, उ नव परणित राणिरे ॥ए० ॥ १३॥ जिम जिम आवो नीत नीत आवो, सुख निंद्रा प्रभु किजेरे ॥ हमे पुरातन उतो नोतन, नव नव लाहो लिजेरे ॥ ए० ॥ १४ ॥ कृष्ण कहेरे तुं इम शुं बोले, नवि घणेरी नारीरे ॥ तु महारे घुरकी पटराणी, आदि लगे सुविचारीरे ॥ ए० ॥ १५ ॥ कपट निंदमें प्रभुजी पोढ्यो, अंचल गाठ निहालीरे ॥ खोलीलियो तबोल तेवारे, भभे चुली सा बोलीरे ॥ ए० ॥१६॥ उर सीए सूकी चंदन साथे, घसी लियो सतभामारे ॥ करे विलेपन वदन शरीरे, वशीकरण अभीरामारे ॥ए० ॥ १७ ॥ एतले जागी उठ्या जगपति, रे भोली भर माणीरे ॥ रुखमणी मुख तंबोल शरीरे, तुं दिसे लप टाणीरे ॥ ए० ॥ १८ ॥ हांसो कृष्ण तणो न समावे, हाथे वजावे तालीरे ॥ होइ खिसाणी हरी पटराणी, बोले उत्तर वालीरे ॥ ए० ॥ १९ ॥ थारो सेहज न गयोरे गोवालीया, स्युं यमराय कहायोरे ॥ प्रीती पनोती काजे आज, ए जाणी बुझी तनलायोरे ॥ ए० ॥ ॥ २० ॥ कृष्ण कहे हां तो तुं साची, पुनरपी भाभा भाखेरे ॥ रुखमणी मिलवा तणो उमाह्यो, पिउभा जो छिन दाखेरे ॥ ए० ॥ २१ ॥ भूप भणे हुं तुज न प्रति

ज्यूं, के साची के ऊठीरे ॥ ऊठ कहे ऊठाना जाया, जाणी के अधिको उठीरे॥ए०॥२२॥ मुलकत मुलकत ताम मुरारी, माननीनुं मन मोहेरे ॥ ए नव हीथि रीस करेवि, सुंदरी शुं सति सोहेरे ॥ ए० ॥ २३ ॥ सुस करे जो बाबाजीका, कपट न करवो कोइरे ॥ खिरनिर जिम मांहोमांहे, मिलस्यां वहेनड दोइरे ॥ ए० ॥ २४ ॥ तो हुं तुऊने रुखमणी मेलुं, भामा कहे ए नीकीरे॥खिसाणी पिण हुइ अयाणी, न पिछांणी प्रनुकीकिरे ॥ ॥ ए० ॥ २५ ॥ कृष्ण देव रुखमणी घर आया, नामा पाय लगावारे ॥ कुण उपाय करे करमे तो, लागो चात्र सुणावारे ॥ ए० ॥ २६ ॥ स्वेत साटीकारक कांचली, जल नुषण पहिरायोरे ॥ वृक्ष अशोक तले भामा वन, पद्मासन पूरायोरे ॥ ए० ॥ २७॥ नामा शुं नांखे जल नावनि, सही करी रुखमणी मिलसेरे॥ कृपानाथ कृपा जो करशे, दूधे साकर नलसेरे ॥ ए० ॥ २८ ॥ आप गुलममें गुप्तपणे रही, कौतुक जोवे जामोरे॥सतनामा एकाकी रामा, वनमे आवि तामोरे ॥ ए० ॥ २९ ॥ पद्मसीला उपर सा बइठी, दिठी रूप रसालीरे ॥ सतभामा जाणी वनदेवी, लागी तनमनतालीरे ॥ ए० ॥ ३० ॥ के अमरी के किन्नरी सारदा, रोहीणी रति जगजाचीरे ॥ कमला नाग तणी वरकुमरी, सुरपति रमणी साचीरे ॥ ए० ॥ ३१ ॥ कोइ होज्यो ए देवि परतक्ष, पुण्य जोगे प्रगटाणीरे ॥ से

वा फल देसे इम जांणी, त्यांवीं पाती पाणीरे ॥
॥ ए० ॥ ॥ ३२ ॥ पूजी प्रणमीने वर मांगे, माधव
मो वश आवेरे ॥ मात मया करशो परकिजें, रुखम
णीना मन भावेरे ॥ ए० ॥ ३३ ॥ नाथ्या वेलतणी
परे चाल्यो, हरी आवे मुज पासेरे, तो तुम सेवा
जाणु साची, उनथी अलगो नासेरे ॥ ए० ॥ ३५ ॥
एम कही पगे लागी भामा, करती लालच लाखोरे
॥ अरधी दोस न देखे कोइ, सहुने सुख अभि ला
खोरे ॥ ए० ॥ ३५ ॥ ए बावनमी ढाले भांख्यो, पगे
लागण अधिकारोरे ॥ गुणसागर कहे साही सोहागण,
जेहने वश भरथारोरे ॥ ॥ ए० ॥ ३६ ॥

दुहा ॥ भामा भरमपडी घणुं, भांखे वारंवार ॥
देवि वरदे वेगशुं, रुखमणी आवणहार ॥ १ ॥ आ
ख भरे आतुर थइ, देवी न आपे वाच ॥ एतले हरी
परगट थयो, माग माग वर साच ॥ २ ॥

ढाल ५३ मी ॥ सीयल सुर तरुवर सेविए ॥ ए
देशी ॥ माग्य माग्य वर मानती, अवर न एहवी दे
वि हो ॥ जो चाहे सुख संपदा, सुधी एहने सेवि हो
॥ मा० ॥ १ ॥ हरी हरणाक्षी शुं कहे, तजी बिजो जं
जाल हो ॥ रुखमणी रागे राचतां, सघळी वात रसा
ल हो ॥ मा० ॥ २ ॥ उठी ततक्षण तारणी, रुठी भार
णहार हो ॥ अवर न देवी एहवी, जेहवी एह वरनार
हो ॥ मा० ॥ ३ ॥ क्रोध न किजे कामनी, क्रोधे होय

विणास हो ॥ क्रोध तजी एधावतां, पूरेम
नि आश हो ॥ मा० ॥ ४ ॥ नामानरी
वडवके, उठी अति वरडाय हो ॥ रे रे धूरतसि
रोमणी, वादे हस्यां शुं थायहो ॥ मा० ॥ ५॥ ए पर
देशण प्राहुणी, सगो न को कहेवाय हो ॥ जो हुं मन
खेंची रहु, फाटी हियो मरी जाय हो ॥ मा० ॥ ६ ॥
ते माटे पगे लागीने, में दियो सनमान हो ॥ नंद नं
दन तुं मोहशुं, मेलण लागो तान हो ॥ मा० ॥ ७ ॥
जे नर बाहिर सामला, मनमां मइला सोइ हो ॥ दुमुहा
माणस माणसा, मांहि गणे नहिकोइहो ॥ मा०॥ ८॥
उदर वस्यो जब मायने, तबहीथी परपंच हो ॥ उप
जीयाथी अति घणा, आजलगेउ संच हो ॥ मा० ॥९॥
वाध्या जइ घर ग्वावालने, ग्वालतणा गुण जोडहो ॥
नाच्यो राच्यो रंगशुं, करत कुतुहल कोम्हो ॥ मा० ॥
॥ १० ॥ रित न जाणी राजनी, जाणी गाय चराय
हो ॥ किसो पटेखो किजीए, देवां अवलो न्याय हो ॥
मा० ॥ ११ ॥ निपमनि गोकि हरि, करि घणा संहा
र हो ॥ जोगीनि वाहे वहि, लागी तो नटलारहो ॥ मा०
॥ १२ ॥ जेति मनमा उपजे, तेति मुहंडे मतआण हो
॥ लोहिने लरुत्रे करी, चंमालि चित्त आण हो ॥ मा०
॥ १३ ॥ कृष्ण कुतहल केलवि, आयो पुर मंझार
हो ॥ लेहणो लाने आपणो. ए दोइ वडनार हो ॥ मा०
॥ १४ ॥ रुखमणि उठि धसमसि. लागी नामा पाय

हो ॥नामाये नल नावसुं. लिधी कंठ लगाय हो ॥ मा० ॥ १५ ॥ कुशल वात पूछि घणि, नामा धरी अति प्रेम हो ॥ थारी देवि कृपा थकि, महारे नित हि खेम हो ॥ मा० ॥ १६ ॥ हसी रमी हेत प्यारसुं, चालि लहिय पलाया हो ॥ आंबो पाक्यो उपरे, मांहि न जाय कसाय हो ॥ मा० ॥ १७ ॥ अवर अनेरी वातनो, थोमो धरे गुमान हो ॥ नामाने पगे लागणो, साले साल समान हो ॥ मा० ॥ १८ ॥ जलण जलं तो जाणिये, जलसुं रहिए लाग हो ॥ जो जल आप णाहि जले, तो किहां जाय नगायहो ॥ मा० ॥ १९ ॥ जो पिउ पाडे आंतरो, लोगासुं स्यो रोस हो ॥ नामा मन समझावसि, कर्म आपणो दोश हो ॥ मा०॥२०॥ ए त्रेपनमी ढालमें, रंग विनोद विलास हो ॥ गुणसा गर शुज कर्मथी, पोहोचें मननि आश हो ॥ मा०॥२१॥

दुहा ॥ रवि उगे शशी आथमे, शशी उगे रवि तेम ॥ रवि शशी होवे एकठा, एक अकाशे केम॥१॥ वासुदेव वसुधा विषे, आण मनावे ताम ॥ प्रतिमल मद मारवे, सुजस लहे अभिराम ॥ २ ॥

ढाल ५४ मी ॥ बे बे मुनिवर वोहरण पांगर्यारे ॥ ए देशी ॥ होवे हो कृष्ण सकल जगनो धणि, जोवो हो नवमां प्रतिमल्लने हणिरे ॥ ए आंकणी ॥ पवन्नही पथी आवियारे, वेपारी वड नामोरे ॥ रत्न कांबल रु यडारे, मूल घणे अभीरामोरे ॥ हो० ॥ १ ॥ लाभ वि

च्यारी अति घणोरे, राजग्राहि आवंतोरे ॥ जीवज, स्याने आगलेरे, वस्तु जलि लावंतोरे ॥ हो० ॥ २ ॥ घटी मोल जब साम्भल्योरे, विणजारा बोलंतोरे ॥ गो. भी नगरी द्वारिकांरे, न्याय हमे भोलंतोरे ॥ हो० ॥३॥ चमकि जीवजस्या खरीरे, सुणि नवलो अभीधानोरे ॥ कवण देश पुर केवडोरे, केहेनि वर्ते आणोरे ॥ हो० ॥ ४ ॥ सोरठ देश सुहामणोरे, सायरदत नि वासोरे ॥ नव बारी नगरी भलीरे, कृष्ण नरेसर ता सो रे ॥ हो० ॥ ५ ॥ आदि विगोइ व्यंतरिरे, नाथ्यो कालि नागोरे ॥ गोवर्धन गीरि धारीयोरे, जेहनि अ विचल पागोरे ॥ हो० ॥ ६ ॥ दांत उखालण गयं वरो, मल्ल पछाडण हारोरे ॥ कंस कंद निकंदणोरे, उ ग्रसेन आधारोरे ॥ हो० ॥ ७ ॥ चदेरि पति मद मा रणोरे, अरि कुल केरो कालोरे ॥ कृष्ण कहावे के इरीरे, नामे दुर्जन सालोरे ॥ हो० ॥ ८ ॥ विरुद सुणयां अ ति आकरोरे, अंगुठाथि जालोरे ॥ नथी आवि मस्त केरे, आतुर थइ असरालोरे ॥ हो० ॥ ९ ॥ हइइंचो हटा आण केरे, कंत अने भलाभाइरे ॥ विरहे विगो हि विलविलेरे, वेदन सहि न जायरे ॥ हो० ॥१०॥ य दुपतिनी पदमणिरे, पोखे पिउसु प्रेमोरे ॥ हु रंभापो भो गवुरे, अब मुझ जीवण नेमोरे ॥ हो० ॥ ११ ॥ ज रासंध पासे जइरे, पापणि मरणो मांगेरे ॥ कंत अ ने भाइ तणोरे, अरि फिरे मुझ आगेरे ॥ हो०॥१२॥

नृप नणे मत रोवहिरे, रोसे तुऊ रिपु राणिरे ॥ अरितो वरतो जीवतोरे, पिण में खबर न जाणिरे ॥ हो० ॥१३॥ स्वामी द्रोहना पातकिरे, रे मंत्रि तु दिसेरे ॥ वयरी किम वधवा दियोरे, होठ डसे नृप रीसेरे ॥ हो० ॥ १४ ॥

ढाल तेहीज ॥ रांग कडखो ॥ कोपियो राज ग्रहि पति राजवि, वयरी निसुणि पुत्रि तणा बोल न्नारी ॥ कहे राजा जरासंध सुण पुत्रिका, पूरवु आज आशा तुमारी ॥ को० ॥ १ ॥ मूलथी वंस उनमूलसुं यदु तणो, कोपियो मगधेश कहे एम वाणि ॥ चढतरी वात सेना न्नणि, आदिसे मंत्र विवारीयो पिण राय गुमानि ॥ को० ॥ २ ॥ थयो परन्नात करी शिणगार शोन्ना धरी, नंन्नासाले ताम नंन्नावजावे ॥ राय राणाजीको हाथ लोढो धरे, नाना मोटा कोइ रेण न पावे ॥ को० ॥ ३ ॥ निसणि प्रवल दल सबल न्नेला हुवा, केरू कशीया तणा देइ तशीया ॥ थापन्ने कंध एक एक हयवर तणा, सूठ वल घाल संग्राम रसिया ॥ को० ॥ ४ ॥ रज चढि गयण रणथंन्न जिम उपज्यो, पाखरे रोल घमसाण वाजी ॥ स्वामि तणि वात अखियात करवा न्नणि, सुन्नटानि नयन न्नझाड लागी ॥ को० ॥ ५ ॥ सब लढि चाल सीशुपाल सुगाल तिम, सकल सिमाडिया नृप आया ॥ पुत्र सहदेव आदिक वन्ना राजवि, शस्त्र गत्रिस धरी वेग धाया ॥ को० ॥ ६ ॥ तेम दुर्योधनादिक वडा रा

जवि. राण राजा नरा उत्तर ढाळां ॥ सहस्र गमे ति हां नृप आवी मिल्या, केइ गजरथ तुरंगम केइ पाला ॥ को० ॥ ७ ॥ चढतवेला मुगट सीसथी गीर पड्यो, अटकी निज हाथशुं हार त्रुट्यो ॥ वाम तसु आंख फूरके घणुं उपरे, लोक सघला कहे पुण्य खुट्यो ॥ को० ॥ ८ ॥ गृध्र अंबरे फिरे छिंक आगल करे, वा यरो ते प्रतिकुल वाजे ॥ बहुल अपसुकन वारी जतो राजीयो, खिजतो आपणा बोल काजे ॥ को० ॥ ९ ॥ पारविण पायदल तुरीय गयंवरतणो, कलकलाट श ब्दें वधीर लोक थायो ॥ अश्व शूरा आहणी सबल रज साधणी, छल भणी जाय आकाश छायो ॥ को० ॥ १० ॥ धडहडे धरणीतल सबल सेनाभरे, जलधी जल उछले अति जोरे ॥ सघसले पनंग भारे करी संकतो, खलभल्या देव कटक घणघोरे ॥ को० ॥११॥ मगध देशाधीपति मदे भरयो मलपतो, गंध हस्ती चढे गर्व गेहलो ॥ सामुहो द्वारकां नगरी सीमा भणी, चाल्यो सेन्या लेइ राय वहेलो ॥ को०॥ १२ ॥ एहवे आवीयो नारद मुनी कौतुकी, जरासंधशुं हसी इम भाखे आज हरी हलधर प्रबल प्रताप धर, नवी चाले एहथी घणुं शुं झाखे ॥ को० ॥१३॥ राय सुभट तव कोपी नारद भणी, देइ चपेटा चरण लात कुट्यो ॥ फोडी कमंडलु कोपिन खेंचो घणो, हा हा नहि नहि करी मांडछुट्यो ॥ को० ॥१४॥ राग आशा अने सिंधुए ए सुणी, जरा

सिंधु चढतरी वार ए ठामे ॥ जात कमखे कही ढाल लावण जाणि, सुणतां सूरमा सूर पामे ॥ को० ॥ १५॥

ढाल तेहीज ॥ राग मूलगो ॥ जंजा वजावी ततखी णेरे, किधो राय प्रयानोरे ॥ वेलापुगी आण केरे, दूर गयो सयाणोरे ॥ हो० ॥ १५ ॥ साहण वाहण साम टोरे, साथे सहु राजानोरे ॥ धसमस धाया आवही रे, दलबलने प्रमाणोरे ॥ हो० ॥ १६ ॥ ए चोपनमी ढालमेरे, जावी लीधे जातोरे ॥ गुणसागर नवी शुं क रेरे, होवे होनहाररी वातोरे ॥ १७ ॥

दुहा ॥ सेन लेइ जरासंध ते, आयो रणनी सीम ॥ चक्र व्युह आकारमें, संप साजथी जीम ॥ १ ॥ आ रा सहस्र कियां जलां, लशकर मेली थाट ॥ एक आ रे राय सहस्रछे, रोके आडा घाट ॥ २ ॥ रथ बे सह स्र मांहे जला, गज एक सहस्र वखाण ॥ पाच सह स्र तेजी तपे, पाय सोल प्रमाण ॥ ३ ॥ आठ सह स्र जोधा जला, सुरामें सीरदार ॥ चक्र मुखे कौरव घणा, कहेतां नावे पार ॥ ४ ॥ मध्य जाग पोते रहे, आरा सहस्रने मांहि ॥बल अरि चाली नवी सके, अ तुली बलछे त्यांही ॥ ५ ॥ नारद मुनि कोपे चढ्यो, अवगुणीयो मुज आज ॥ गुमानी माने चढ्यो, रा खी नहीं मुज लाज ॥ ६ ॥ उत्पत्यो अंबर मारगे, क लुष जरयो ऋषी ताम ॥ आयो नगरी द्वारीकां, हरी ने जणावण काम ॥ ७ ॥ तव नारद कृष्णने कहे, आ

ण्यो नृप जरासंध ॥ कृष्णे भंभा वजाडीने, करी क
टकनोबंध ॥ ८ ॥

गाथा ॥ हरी सुतो थइ सधीर, आव्यो जरासिं
धु भडवीर ॥ मुझ दीठे सही करी मानो, कीम अरी
अणराखस्ये छानो ॥ १ ॥

ढाल ५५ मी ॥ थारा मेहेला उपर मेह. झबुके
वीजली हो लाल ॥ झबु० ॥ ए देशी ॥ मिल्या तिहां
दशे दशार, जाणे दुर्धर केशरी हो लाल ॥ जा० ॥
समुद्रविजय अति सूर, समुद्र जीत्यो तनुजे करि हो
लाल ॥ जी० ॥ १ ॥ माहानेमी सत्यनेमी द्रढ, नेमीसु
नेमी लह्यो हो ॥ ला० ॥ नेमी० ॥ रथनेमी श्री अरि
ष्ट नेमी, जिनवर जग गुरु ते जयो हो ॥ ला० ॥ जि०
॥ २ ॥ साहाजयने जयशेन गौतम, चित्रा रुवठे
गुणि हो ॥ ला० ॥ चि० ॥ सुकल्क तेजशेन, सूरा
मांहि जे शिरोमणि हो ॥ ला० ॥ सु० ॥ ३ ॥ जय
मेघ अने सिवनंद, विश्वकसेनादि बळे पुराहो ॥ ला०
॥ वि० ॥ समुद्र विजयनां ए पुत्र, एकरथी छे अधी
क सूरा हो ॥ ला० ॥ छे अधिक० ॥ ४ ॥ विजो दशा
र अक्षोभ, आठ पुत्र तेहनां जाणिए हो ॥ ला० ॥
ते० ॥ उद्धव अक्षुभित, वामदेव द्रढव्रत वखाणिए हो
॥ ला० ॥ द्र० ॥ ५ ॥ महो अंभोजलने आगल्ये, नि
धी शब्द जिहांरे जोभिए हो ॥ ला० ॥ जिहां० ॥ हो
जी थाए तिहांरे त्रिणे ताम, सूत्रने किम अवखोमीए

हो ॥ ला० ॥ कि० ॥ ६ ॥ स्तमित त्रिजो दशार, पा
चते पुत्र तेहने अछे हो ॥ ला० ॥ ते० ॥ ऊर्म्मिमांन
ने वसुमान, विरपाटल स्थीर युधे गेछे हो ॥ ला० ॥
यु० ॥ ७ ॥ सागर चोथो दसार, षट पुत्र तेहना वा
ल्हेसारि हो ॥ ला० ॥ वा० ॥ कंपन निःकंप लक्ष्मिवा
न, श्रीमान युगांतने केशरि हो ॥ ला० ॥ यु० ॥ ८ ॥
पांचमो दशार हेमवान, त्रण पुत्र तेहनां जाणजो तुमे
हो ॥ ला० ॥ जा० ॥ विद्युतप्रभने माल्यवान, गंध
मादन गणयां अमे हो ॥ ला० ॥ ग० ॥ ९ ॥ अच
ल छठो दशार, सात पुत्र तेहनां समकि लिया हो ॥
ला० ॥ ते० ॥ माहेद्र मलय माहागिरी शैल, नाग वले
कुल निर्मल किया हो ॥ ला० ॥ कु० ॥ १० ॥ धरण
नामे सातमो दशार, पंच पुत्र तेहनां पूछयो हो ॥ ला०
॥ ते० ॥ विश्वरुप धनजय कर्कद, श्वेतमुख वासुकि
ए थयो हो ॥ ला० ॥ वा० ॥ ११ ॥ पूरण नामे आठ
मो दशार, सुत चार तेहने सुंदरुं हो ॥ ला० ॥ ते०
॥ कसुंख कर्कर कःपुरः, कर्धर महाबल नाधरु हो ॥ ला०
॥ म० ॥ १२ ॥ नवमो दशार अभीचंद्र, षट पुत्र ते
हनां जाणो खरा हो ॥ ला० ॥ ते० ॥ शशि चंद्र चं
द्राभ शशांक, सोम अमृतप्रभ सुंदरा हो ॥ ला० ॥
अमृ० ॥ १३ ॥ दशमो दशार वसुदेव, तेहने तो पुत्र
बे घणा हो ॥ ला० ॥ पुत्र० ॥ कुर अंकुर ज्वलनप्र
भ ॥ अशनीवेग वायुवेग नही मणा हो ॥ ला० ॥ १४ ॥

माहेंद्रगती सिद्धार्थ, अमितगती वली सादर्यो हो॥ ला०॥वली०॥सुदारुक दारुक अनादृष्टी, रेंमसुष्टी सिला युद्ध कर्यो हो ॥ ला० ॥ सिला० ॥ १५ ॥ जरा कुमारने वाहलीक, गंधार पिंगल आदे घणा हो ॥ ला० ॥ पिंगल० ॥ राम विदुरने शारणं, रोहीणीना पुत्र त्रणे ए हो ॥ ला० ॥ पुत्र० ॥ १६ ॥ देवकीनो पुत्र श्रीकृष्ण, जग विख्यात जाणो जेह हो॥ ला०॥जाणो०॥शूरवीर कोटीर, अधिक तेजे भाण जो हो॥ ला० ॥ तेजे० ॥ १७ ॥ राम पुत्र नीरुध उल्मुक्र पीठ, मारुदत्त शक्रदमणो हो ॥ ला० ॥ शक्र०॥ कृष्णनो पुत्र एक, भानु भमर आगे सुणो हो ॥ ला० ॥ आगे० ॥ १८ ॥ धीर गंभीर गोतम, सोधर्मा उदवी वली हो ॥ ला० ॥ उद० ॥ धर्मसेन जिन सूर्य, चंद्रमारु कणक आता मीली हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ १९॥ उग्रसेन आदि नरेस, यादव वंशी ना गण्या हो॥ला०॥ वंशी०॥ अंग जात्र जाणो अनेक, ज्ञानी वीण न जाए गण्यां हो ॥ ला० ॥ न जा० ॥ २० ॥ मामाइ फूइयाइ अनेक, स्वशुर पक्षनां जाणजो हो॥ ला०॥ पक्ष०॥एतो ढाल रसाल, उदय करी मनमां आणजो॥हो॥ला०॥म०॥२१॥

दुहा ॥ कोष्टुकेथकी तसु मुहुरते, गरुडध्वज रथारुढ ॥ कृष्ण थया तव दारुके, अश्व ते जोड्यो प्रौढ ॥ ॥ १ ॥ चतुरंगी सेनासजी, लिया सहु जादव साथ॥ शुभ शकुने इशान दिशामां, चाल्या श्री यदुनाथ॥२॥

जादवने पांडव तणां; कटक तणो नही पार ॥ चालं ता अचलाचले, फूलाचल जाणया तीणीवार ॥ ३ ॥ पेंतालीस जोजन अरह्या, आवी करयो पडाव ॥ शत्रपालि गामनि सिममां, बहुविध करिय वनाव ॥ ४॥ एहवे तिहां कृष्ण सैन्यमां, वैताढ्य वाशि अनेक ॥ विद्याधर आवि नमे, समुद्रविजयने विवेक ॥ ५ ॥ कहे स्वामि तुज बांधवे, वसुदेवे धरि नेह ॥ सेवक करि अम थापियां, उपकार किया अछेह ॥ ६ ॥ युद्ध समय जाणि करि, आव्योवुं तुम पास ॥ सेवक अमने लेखवि, काम बतावो खाश ॥ ७ ॥ वचन सुणिने हरखियां, समुद्रविजय राजान ॥ नेह नजरे निरखि तदा, आपे अति सनमान ॥ ८ ॥ वसुदेवे पिण तव तिहां, खेचरने बहु प्रेम ॥ अति सनमानि राखियां, पूछि कुशलने खेम ॥ ९ ॥ विद्याधर कहे रायजि, राम कृष्ण समजात ॥ जगमां कोइ लाग्ने नहि, जरासिंधु कुण मात ॥ १० ॥ वलि खेचर हरिने कहे, अमने द्यो आदेश ॥ वैताढ्य वाशि विद्याधरा, अन्य अछे सुविशेष ॥ ११ ॥ जरासिंधुना पक्षथी, तुमने न माने जेह॥तेहने जीतवा कारणे, जाइए अमें गुण गेह ॥ १२ ॥

ढाल तथादेशी तेहिज॥सुणी नारद वयण वेधाला, वाजे गुहीर त्रंबालु गुंजाला॥सिंहनाद हरी तव मूके, सज यादव थइने घूके ॥ १ ॥दस सेने दसारथ चाल्या, जुजुआ नवी रहे खाल्या ॥ उठ कोड पुत्र परवरीया,

पेहेरी सनाह खड्ग वेगे धरीया ॥ २ ॥ उग्रसेन कटक पोतानो, लेइ चाल्यो देइने तानो ॥ माहसेन राजा युद्ध रागी, बलतेग चीहु खुटवागी ॥ ३ ॥ मांहे पांच पांडव वड जोध, रण करतां न आवे बोध ॥ तीम सुसरा साला बहु मिलीया, कायराचीत मांही खलभलीया ॥ ५ ॥ सर्व कटक मिल्युं शुभ शुकने कुण चूके ए जाणी तकने॥रण वाजित्रभभा वाजे, रथ बेठा श्रीकृष्ण बिराजे ॥ ५ ॥ वली निखट कुमर सीरदार, धरयो महानेमी सेननो भार ॥ आवी खेंच्या रणने तीर, फेरा देइने उतराधीर ॥ ६ ॥ गरुड व्युह आकारे कहीए, चंचु अग्रे बलभद्र लहीए ॥ एहवे इंद्रपुरीमें बेठो, अवधे सौधर्मे इद्रे दीठो ॥ ७ ॥ प्रभु युद्ध कारण परवरीया, बालपणे कौतुक रस भरीया ॥ मूक्यो सारथी मातुल सार, रथ पोताने तेयार ॥ ९ ॥ वत्रीसे आयुद्ध धरीया, भेट मूकीने संचरीया ॥ कंचन सनाह पहेरी सयणे, चाल्यो सारथी नेमने वयणे ॥ ॥ १० ॥ प्रभु बेशी रथ सोभाव्यो, सवी जोतां सैन्यमे लाव्यो ॥ केइ सूर सूभट सज्ज थावे, अष्टापद ज्युं उपमा पावे ॥ ११ ॥ मांहे भीम गदानो रसियो, परसेन देखीने हसीयो ॥ एम सुभटनी कोडा कोडी, रण करवाने होमाहोमी ॥ १२ ॥ समपाधर जोइन चोखाल्युं, सेन आप आपणुं वाल्युं ॥ रणथंभ तीहां आरोप्यो, धज दंडे करी बहु ओप्यो ॥ १३ ॥ वी

र विद्याधर बहु मिलीया, संघवटे सहु आवी भली या ॥ कोइ कौतुक जोवा आवे, भट देखीने भय पा वे ॥ १४ ॥ गजसुंडे साकलनां खलकां, मोरचा बांधी करे वलकां ॥ हयवर पाखरीया पलाणे, भाता वल गाड्या भरी वाणे ॥ १५ ॥ वीर रसें चढ्या रजपूत, रणखेत मच्यो अदभूत ॥ दल पसरीया चीहुं ओर, का लीखांस घटा घनघोर ॥ १६ ॥ वरछीए करत जुहा रा, बीजली जेम वहे खगधारा ॥ मंडीया अति जो ध अखाडा, शीर वीना धड करे रमाडा ॥ १७ ॥ आव्यो सूर सह्यो असिधारी, जो हुंय होस अपछरा नारी ॥ बोले बोल सुभट एम ह्राडा, एक कायर धरे हाथ आडा ॥ १८ ॥ जादव सुभट चढ्या रसपूर, करे सिंधु सेना चकचूर ॥ दल भंग देखीने राय, आव्या धसमसतो अति धाय ॥ १९॥ प्रियंगद धुमकेतु नरिं द, जादव सेनने पाडंतो मंद ॥ वही एक धारी करपा ण, हरी कटकमां पड्युं भंगाण ॥ २० ॥ उठ्यो म हानेमी तीणीवार, अनाहष्टी निखट कुमार ॥ चाल्या रथ बेशी गुणवंत, आवतां रीपू दल रोकंत ॥ २१ ॥ शेसे भरयो रुखमीयो राय, दुर्योधन साथे सहाय ॥ साते नृप आव्या रण खेत, एक एकने पाडल लेत ॥ २२ ॥ समकाले साते नृप हांडि, भरमुठी अने सर छोडे ॥ महानेमी सुभटने आगे, रुखमीया साथे अ छ्यो मध्य भागे॥२३ ॥ सणण बाण वहे अति वेगे, वा

गे खड़ेडाट सुभ नेतेगे ॥ खलके लोही वहे जीम वारी, पड़ीया हय गय पाय पसारी ॥ २४ ॥ योगणी पत्र पुरेरे असंखी, त्रपत हुया घणा अध पंखी ॥ महाने मी तणा तिर छूटे ,रुखमीया रथनी साथ वछूटे ॥ ॥ २५ ॥ रुखमीयो ने दुर्योधन भूपाल, कोपे चढीया आ असराल ॥ वेणुदाली प्रमुख सरोखी, खटरा व आव्या वल पोखी ॥ २६ ॥ महानेमी तणो रथ घेरी, आठे राय रह्या चहु फेरी ॥ भाइ सभारो इष्ट तुम्हारो, आज आव्यो सही जमवारो ॥ २७ ॥ रेरे सोर करे स्यो गिमार, आव्य सनमुख था हुसीयार ॥ इम कही त्रोडे सरधारा, धनुप आठे तणा तिणिवारा ॥ २८ ॥ सक्ति पुरण दाव अरिने, मूके रुखमइयो रीस भरीने ॥ तरू तड नाद करंत जोर, देखी सुभट करे अति सोर ॥ २९ ॥ नांखे शस्त्र घणा तुरचंगा, जाणे अग्नी मांहि बले पतंगा ॥ एहवे अरिष्ट नेमी सर स्वामी ॥ सूर मातली कहे शिरनामी ॥३०॥ वली इंद्र थकी इणे पामी, एह शक्ति महा तप कामी ॥ पामी प्रभुतणोरे आदेश, सुर सानीध्य करे सुविशेप ॥३१॥ तिणे वज्रशरे अति त्राडी, टेइ शक्ति भणी भूए पाडी ॥ जयजयकार करे नरदेव, जादव विघन टल्यो ततखेव ॥ ३२ ॥ हुइ सांजने विल्यो संग्राम, आव्या आप आपणे मुकाम ॥ गुणसागर कहे अभीराम, ढाल पंचावनमी गुणधाम ॥ ३३ ॥

दुहा ॥ नित्य प्रते युद्ध होवे घणा, कहेतां नावे पार ॥ जरा मूकी एहवे, ते सुणजो अधीकार ॥ १ ॥ नालधबुके नवनवी, रजमें गयो भाण ॥ सुरा रणमें आथडे, रथ जूत्या केकाण ॥ २ ॥ तसलीम करतां थकां, एक एक ने ग्रही बाह ॥ जस जगमें करो जय करशे जगनाह ॥ ३ ॥ सुकलीनी माता तणा, धाव्या हशे जे दुध ॥ ते पग पाछा नही दिए, घणा कियाछे युद्ध ॥ ४ ॥ इम हुकाहुक करी रह्यां, जाणे हनुमंत वीर ॥ जइ आभा रण थंभने, वडा वडा रण धीर ॥ ५ ॥ बाणधार वरशे घणी, धरणी न धरे धीर ॥ कायर नर नाना छपे, साहसीक शाम सधीर ॥ ६ ॥ युद्धारंभ थयो घणो, नवीको हारे ताम ॥ एहवे सेनानी सिंधु तणो, हिरण्य नामी अभीराम ॥ ७ ॥ कहे एम नीज स्वामी भणी, सुणजो जादव रंक ॥ द्यो आदेश संग्रामनो, टालु एहनो बंक ॥ ८ ॥ राय पसाय लेइ करी, रथ बेशी तिणीवार ॥ चडीयो आडंबर घणे, दल बलनो नही पार ॥ ९ ॥

ढाल ५६ मी ॥ श्रेणीकराय हुरे अनाथी निर्ग्रंथ ॥ ए देशी ॥ सेनानी रोसे भरयो, आवेहि दल ठेल ॥ घसरयो दल सिंधु तणो, जीम साअरनि वेल ॥ १ ॥ रंगीला राय आवी मिल्या रणखेत, कांइ पागीरे पुंठ न देत ॥ रं० ॥ ए आंकणी ॥ आरजुन सेनानी तणो, आवंता छेदे तिर ॥ एहवे भीम भूजा

घली, उपाडी गदारे आयो अमीर ॥ रं० ॥ २ ॥ मे
नानी रथ उपरे, मेली गदा बलपुर ॥ सेनानी पाछो
खस्यो, रथ भागीरे हुवो चकचूर ॥ रं० ॥ ३ ॥ आ
व्यो केसरी जेम गाजतो, नीम उपर धरी छाग ॥
तिक्षण बाण वरसावतो, कोइ नवीपामेरे रेहवालाग
॥ रं ॥ ४ ॥ जयसेन कुमर माहा बलि, समुद्रविजेनो
नंद ॥ आवि आमो आंतरयो, खेंचि धनुष्य उन्नो सो
नंद ॥ रं० ॥ ५ ॥ गय हसी इम बोलिउ, तुं कां मरे
नाणेज ॥ इम केहेता तस सारथी, हणियोरे जयसेन
सहेज ॥ रं० ॥ ६ ॥ खेंचि बाण अति आकरो, सेना
नी सरदार ॥ तस सारथी नेदी करी, कांइ मारयोरे
जयसेन कुमार ॥ रं० ॥ ७ ॥ महाजय आयो वेगसुं,
बंधव मारयो देख ॥ ते पिण मारयो सेनानीए, देखि
कोप्योरे अनाद्दष्टी विशेष ॥ रं० ॥ ८ ॥ हिरणनाभी
राजा तणो, छेदे धनुष मनरंग ॥ नीम अर्जुन याद
व अवर, कांइ कुफेरे बीजा नृप संग ॥ रं० ॥ ९ ॥
अनाद्दष्टीने मारवा, रथथि उतरीउ वेग ॥ होठ पीसे
रीसे नरयो, हिरणनाभीरे आव्यो धरी तेग ॥ रं० ॥
॥ १० ॥ आनद्रष्टी पिण रथ थकिरे, उतरीयो ले तर
वार ॥ आमो खेडो देइने, कांइ वदेरे तसु बहुवार
॥ रं० ॥ ११ ॥ आनदष्टि छल पामीने, लब्ध लिखि
करवाल ॥ हिरणनाभीने हणि करी, कांइ नाख्योरे शिर
उगल ॥ रं० ॥ १२ ॥ अष्ट विस पुत्र रायना, पोहोंचाड्या

परलोक ॥ भीम अर्जुन करी आकरी, देखिरे राय हुवो निशोक ॥ रंग० ॥१३॥ कुमर वध देखि करी, सेन्या नागी लाग ॥ जरासिंधु चित चिंतवी, तिणे अवसर कुलदेवी आजिराम ॥ रं० ॥१४॥ जरादेवी कुलमें वमी; समरथां आवो आग ॥ अरी अटारो रणमें मिल्यो, कांइ राखोरे कुलनि लाज ॥ र० ॥ १५ ॥ देवि कोपे ततखिणे, आवि यादव सेन ॥ जरा विकुर्वि अति घणि, जाणे प्रगट्योरे अचानक पेन ॥ रं० ॥ १६ ॥ उठकोडी ब व्यल करन्तां, मुख चूवे बहु लाल ॥ मध्य निसाने मुकिने, गइ देविरे अंबर ततकाल ॥ रं० ॥ १७ ॥ प्रसरी जरा जादव सैनसां, व्याकुल थया नरराय, नेम हरी हलधर विना, शेप जरामय सहु थाय ॥ रं० ॥१८॥ जूरे हलधर एकलो, निसुणि कृष्ण एह वात ॥ सुर सुभट विण किम थायशे, उपनोरे सूरि तणो उतपात ॥ रं० ॥ १९ ॥ एहवे मातुल सारथी, प्रभुने कहे वारंवार ॥ हणिए प्राति विष्णु आपणे, तो कांइ पामेरे हार अपार ॥ रं० ॥ २० ॥ देव वयणे प्रभु इम कहे, विष्णु हणे प्राति वीष्ण ॥ ए नित परंपरा वे भलि, होसेरे त्रिखंडाधीप कृष्ण ॥ रं० ॥ २१ ॥ इम कहि चाल्यो रथ भूतले, करतो नाद गंभीर ॥ क्षिरोदधीमां भीम नावडि, कांइ तरतिरे दिसे तिर ॥ रं० ॥ २२ ॥ झंभा काप्या जोरसु, विर्य अनंत भगवंत ॥ सिंधु सेन भागी गयो, जिम सिंह देखिरे अजाना संत ॥ रं०

॥ २३ ॥ कृष्ण पूछे प्रभु नेमने, स्वामी अन किम हाय ॥ िंक आया सुर साहमो, हुश धरीरे जोवे सेवे सहु कोय ॥ रं० ॥ २४ ॥ हरी आरति देखि करी, मातुलि कहे इम वात ॥ प्रभु न्हवण जल छांटता, कांइ रेहेशेरे वक्रनो उपघात ॥ रं० ॥ २५॥ प्रभु पूजी प्रणमी करी, नवण छांटे तिणीवार ॥ जरा नाठि लोटि उठिया, कांइ सूरारे सुभट शिरदार ॥ रं० ॥ ३६ ॥ प्रभु रथ रेणु फरसी जेहने, अंगे अडे तिल मात ॥ तेहना उपद्रव्य सर्वे टले, अकथ कथानि छे वात ॥ ॥ रं० ॥ २७ ॥ ढाल ए षट पचासमी, प्रभु महिमा नि वात ॥ ब्रह्मचारी जिन बाविसमो, गुणसागर गुण गात ॥ रं० ॥ २८॥

दुहा ॥ हिवे जरासिंधु आपणा, मंत्रि तेड्यां ताम ॥ नामे हांसोहिंशके, उभा करी प्रणाम ॥ १ ॥ यादव सेन जिहांअछे, जइ आवो करी गुज ॥ सेना साहमा आवजो, वहिला करजो जूझ ॥ २ ॥ नृप जुना जाणे सहि, पूरण प्राक्रम मोय ॥ समुद्ररायने विनवि, लघुपणनो राखे तोय ॥ ३ ॥ पशु टोले गोवालियो, आपो मुजने आज्ञ ॥ हलधर जुग पांडव वलि, आप्यां सरसे काज ॥ ४ ॥ हांसो आव्यो तिहां थकि, प्रणमे समुद्रना पाय ॥ विनंति स्वामी नक्रनी, करवा माडी ठाय ॥ ५ ॥ समुद्रविजय ऋटकि कहे, रे सांभल मंत्रिश ॥ मांगवा कृष्ण तुं आवियो, हिन बुद्धी

तुक इश ॥ ६ ॥ हरी जे कंसने मारीयो, करतो कुल में उतपात ॥ उग्रसेनने पांचसें, मारंतो कसा घात ॥ ७ ॥ इम निसुणि पाछो चल्यो, चीनव्यो निज नरेश ॥ अब केटलवो जलो, जादव जोर विसेष ॥ ८ ॥ थयो प्रभात उग्यो तपत, कर्ण राजा तेणीवार ॥ सेनापतीने तेडीने, भांखे वात विचार ॥ ९ ॥ सेना सज्ज करो सहु, जासु जादव लार ॥ संग्राम करवा कारणे, मत लगावो वार ॥ १० ॥ इम सुणी सेनापती, कीधुं कटक तैयार ॥ हय गज रथ पायक घणां, ते कहेतां नावे पार ॥ ११ ॥

ढाल ५७ मी ॥ चीत्रोड़ा राजानी ॥ ए देशी ॥ करण सज्ज थयो हिवे जाम, वढवाने अती अभीराम ॥ आयो जरासिंधुने आगे, पाए लागीने अनुमति मांगे ॥ १ ॥ प्रभु किरपा करो तुमे नाथ, आज जइ देखाडुं हाथ ॥ इम बोले मधुरी वाणी, जरासिंधु कहे गुणखाणी ॥ २ ॥ जावो वेगे मतलावो वार, रणमांहे रहेजो हुशीयार ॥ इम सुणी रागी थयो मनमां, पहेर्यो सनाह कछोटो तनमां ॥ ३ ॥ करपा किरण सम्रछे तेज, जग देखतां उपजे हेज ॥ रथ बेठो करवा काज, हाथ मुदगल लेई महाराज ॥ ४ ॥ नाग ससरो सानीध्यकारी, आवीरथे बेठो अधीकारी ॥ और देव घणा तस लार, करण आव्यो थइ हुशीयार ॥ ५ ॥ गांगेय गुरुनो गुणखाणी, करण रण चड्यो इम जाणी ॥ आ

वी नेरो थयो उमाह, मुसंढी सल हाथमां साई ॥ ॥६॥ रणथंभ आवीने रोप्यो, करण जादव उपर कोप्यो ॥ देखे करण केरी अधीकारी, नाठा सुभट हता जे भारी ॥ ७ ॥ आल पानी आव्या हरी पासे, पाए लागीने वचन प्रकाशे ॥ आव्या करणने भीषम होइ, प्रभु अमथी तो कार्य न होइ ॥ ८ ॥ भिम गदा लेइने सनूर, अरजुण उभो बाणावरी सुर ॥ सज थया रण रमवाने काज, तव वरजे जुधीष्ठर माहाराज ॥९॥ भीषम पितामहने करणछे भाइ, इणथी वढतां न होए वडाइ ॥ मारीए मरीए तो नरके जइए, ते माटे सामा नवि थइए ॥ १० ॥ तव वसुदेव चढीया आप, दसार हाथ ग्रही रणथाप ॥ उग्रसेन केरी अधीकाइ, चाल्या वढवाने दसे भाइ ॥ ११ ॥ हलधर तव हेत ज जाणी, कहे तात प्रते एम वाणी ॥ लेओ गदा अमारी पास, इणथी वेरी पामशे त्रास ॥ १२ ॥ गदा लेइ प्रभु रणमांआवे, देखी करण प्रते बोलावे ॥ आवो सामा सुरजनानंद, आपणे लडशुं दोए आनंद ॥ १३ ॥ वसुदेव करण ए दोए, वढे हुंश न राखे कोए ॥ एकबीजाने करे प्रहार, वदे कोप चड्यां असरार ॥ १४ ॥ उग्रसेन गांगेयज साथ, झूझे बिजा घणा नरनाथ ॥ रमाया अति रण रसीया, एकबीजाने मारण धसीया ॥ १५ ॥ भीषम गडओछे अति भार, करे चोट हुइ हुशीयार ॥ भीषम दिपावरीनो वे

टो, भीपम उग्रसेन रायने जेटो ॥ १६ ॥ उग्रसेन त
णुं दल मोडे, वली धनुष्य रायनां तोडे ॥ रिसे करे मु
संदी प्रहार, राय मूरछी पड्यो तेणीवार ॥ १७ ॥ भी
पम छद्मस्थ पिण मानो, भीपम रणमां न रहे छानो
॥ भीपम मारे हाक वजावे, भीपम सुर सूभट नवी
सारे ॥ १८ ॥ सारथी जोवे नजर पसारी, राय मूर
छी पड्यो दुखकारी ॥ हाहा भीपमे अनरथ कीधो, रा
यने प्रहारज दीधो ॥ १९ ॥ रथवारी बाहेर लीधो, व
ली जलसिंची सावध कीधो ॥ एम कीधां घणां उपचार,
राय सुखता थया तेणीवार ॥ २० ॥ करण वसुदेव सं
ग्राम चार, जोवा देव आव्या तेणीवार ॥ जोवो मा
णस पिण देव जेवां, सा वढतां दीठां तेवां ॥ २१ ॥
करण कोप करी करसाइ, ग्रही मुदगर मूके धाइ ॥
बाणवरी अधीके जोरे, मूके श्रीवसुदेवनी कोरे ॥२२॥
मुदगर आवंतो दीठो जाम, हलधरे गदा दीधी ते
ताम ॥ गदा उपाडी ते तारे, मुदगरने ते भूंए पाडे
॥ २३ ॥ वसुदेव कहे सुणराय, कर्ण उभोरे पग ठाय
॥ अगन बाण थकी तुजने मारुं, सेन सघलीनुं का
रज सारुं ॥ २४ ॥ डुंगर उपर देवथी पामी, हाथ ली
धुं वसुदेवे स्वामी ॥ मूके करण राजानी लार, अगन
भार वहे असराल ॥ २५ ॥ अगन देखीने देवज ख
शीयां, सहु आघा पाछा धशीयां ॥ नाग जेरा हता
जे देव, सुर नाशी गया ततखेव ॥ २६ ॥ बाण दे

खीने अतिशे नारे. नाग सामो आव्यो तस लारे ॥
जल लेइने अगन ओलावे, बाण देव ते नाशी जावे
॥ २७ ॥ करण बाणावरी केवाए, एथी जोध जीत्यो
नवि जाए ॥ वली नाग साह्य जो पामी, वढतां कांये
न राखे खामी ॥ २८ ॥ वसुदेव तणां नट जेह, ते तो
नासी गया ततखेव ॥ देखी हियडे रह्या विचारी, कर
ण मोटो ए अधिकारी ॥ २९ ॥ वसुदेव विचारे मन,
करण मोटो ए राजन ॥ तेज प्रताप करीए पूरो, जो
ध लडवामा अति सूरो ॥ ३० ॥ जोधे जीत्यो ए नवी
जाए, वली पाछुं पिण न खसाए साप ग्रही छछुंदर ते
ह, ए उखाणु मिलीउं एह ॥ ३१ ॥ एटले नारदऋपीस
र आवे, वासुदेव प्रते बोलावे ॥ शुं राय ऊंखाणोटो
आज, आव्या रण रमवाने काज ॥३२॥ वसुदेव कहे
ऋपीदेव, पाए लागीने करी शेव ॥ में नवी दीठो ज
गतमां कोइ, जेवो करण लडेछे सोइ ॥ ३३ ॥ नारद
कहे मत विमासो, करण रथ बेठो देव खासो ॥ बाण
तुमतणा सरवे भांगे ॥ करणरायने एक नवि लागे ॥
॥ ३४ ॥ हिवे एहनो उपाव करशुं, राए चिंत्या सघ
ली हरशुं ॥ एम कहिने ऋपि सर जाए, प्रभु देखीने ब
हु सुख पाए ॥ ३५ ॥ मातोली प्रते कहे ऋषीराज,
चालो संग्राम देखण काज ॥ देवमां पिण एवो न दे
ख्यो, वसुदेव करण लडे ते पेखो ॥ ३६ ॥ एम कहीने
ऋपी तेमी आवे, वसुदेव तणे रथ बेठावे ॥ नाग देखत

आसो मास, खडनमीत अति घणुं तत्र ॥ ३७ ॥ इत्तो आ तणो देव मोटो, कदीए नवी थाए खोटो ॥ जो जीवित राखवी आशा, तो एथी जावो नाशा ॥३८॥ देव नाशी गयो निज भुवन, सूरज आथम्यो हुवो तम ॥ दोड राजा रथ वाली वरीयां, सज्जन जनमां सहु मिली या ॥ ३९ ॥ एतो ढाल भली रसाल ॥ पुण्ये फले म नोरथ माल ॥ गुणसागर कहेसार ॥ सत्तावनमी राग रसाल ॥ ४० ॥

ढाल ५८ मी ॥ शियल सुंदरनी खरीरे प्यारी, जे पाळे नर नारजी ॥ ए देशी ॥ एहवे राजग्रहि पति आगे, बिजा मुहता संगजी ॥ वचन कहे इम हांसो मुहतो, करी आलोच अनंगजी ॥ ए० ॥ १ ॥ पहिलुं विण अविमासुं कीधुं, कंस मूवो अकालजी ॥ विण आलोच कीया दुख थाये, निश्चे उतर कालजी ॥ ए० ॥ ॥ २ ॥ अरि सबलो निबलो जो एहवो, लेवो जेहनो गुजजी ॥ ए सबलो गोपाल बले करी, तेशुं इणशुं झूझजी ॥ ३ ॥ सयंवरा मंडप रोहिणी, श्री वसुदेव दसा रजी ॥ तक नृपति सघला भांज्या, ए आगे तिणवा रजी ॥ ए० ॥ ४ ॥ जुवटे जीति कोडी इणे तुज, सुता जीवाडी रागीजी ॥ इण अहिनाणे मराव्यो न मूवो, व वसुदेव सभागीजी ॥ ए० ॥ ५ ॥ जीणथी हुआ रा म अने हरी, नंदन अति बलवंतजी ॥ ज्यांने का यो पर्लय किधी, पुरी द्वारकां कंतजी ॥ ए० ॥ ६ ॥

ए वेहु सबला जाणीने, पांकव सेवा काजजी ॥ गरव न जी गुण मनमें आणी, जोरावर शोर ताजजी ॥ ए० ॥७॥ जाणे बिजा हरिनेहलधर, महा नेमि नोम्धट कुमारजी ॥ अथवा जमनेजोर भयंकर, भीम चार्जुन अवलारजी ॥ ए०॥८॥ किस्युं अनेरा सुनट वखाणे, एकलो नेम कुमारजी ॥ लीलाए करी करे भुजावली, धराणि छत्राकारजी ॥ ए० ॥ ९ ॥ दमघोष अंगज रुकमीयो बेउं, तुऊ कटकमें बल धीरजी; एणे बल दिठो बलभद्र रणमें, रुखमणीने अपहारजी ॥ ए० ॥ १० ॥ दुर्योधनने सकुनि नरेसर, आपणे कटके एहजी ॥ न गणे कइ सुभट एयारी, सूरवीरमे रेहजी ॥ए०११॥ अंगाधिपती ते म करण कहीजे, आपणे कटके दुठजी ॥ तेतो दुगण कटक सागर विच, जेणे सोतु मुठजी ॥ ए० ॥ १२ ॥ जेहुनि अच्युतादिक सघला, सेव करे सुरनाथजी ॥ तुझ भणी कहो कुण सजाइ, श्री नेमीसर साथजी ॥ ए०॥१३॥ दिसे गिरधर कटक सनुरो, जोता सघलो वातजी ॥ ओ उणे कटके घणो घणो अंतर, जाणे दिनने रातजी ॥ ए० ॥ १४ ॥ कृष्णपक्ष आदरीने देवी, मारशो तुऊ दल कालजी ॥ तिणे मरवे प्रतिकुल दिहाडो, दिसे तुज काल जी ॥ ए० ॥१५॥ तृण तणि परे तुझने गणतो, जोरावर असमानजी ॥ मथुरागंडी गया द्वारापूरी, दे दरपाँ सनमानजी ॥ ए० ॥ १६ ॥ गिरीकंदर मांहे ते सूतो, कोइ जगावे सिंहजी, उछलतो बलवंत हिने तो, पाछो

ताहरी लीहजी ॥ ए०॥१७॥ सांभली वचन कोप्यो नृप बोले, जरासिंधु धरी खेदजी ॥ साहि सुध तुं यादव फेरयो, तिरो देखावे भेदजी ॥ ए०॥१८॥ शत्रुतणा गुण काहि माने, बिहाके इण वारजी ॥ पिणरे दुरमति सिंह अज्यासु. स्याल तणो फेकारजी ॥ ए० ॥ १९॥ फिट लोने जे रणथी वारे, आव्या रण अधिकारजी ॥ बालगोपाल गोवाल तियाने, हुं मार्गीश करी वारजी ॥ ए० ॥२०॥ हिवे बोले डंभक मंत्रिसर, गमतो नृपने एमजी ॥ अवसर आव्या रणनो कारज, वांके क्षत्री केमजी ॥ ए० ॥ २१ ॥ सामेपाइ रणमें भडतां, मरण तिको जस कामजी ॥ भाग्यारो जीवत अकारथ, होय न आदर ठामजी ॥ ए० ॥२२॥ चक्रव्युह करी निज कटके, हणस्युं ए शत्रु निकजी ॥ भलो कह्यो मंत्रिसर मुकने, तुं मंत्रि निरभिकजी ॥ ए०॥२३॥ एहवे हिंसक रुंभक वेहु मुहतां, बिजा वीरा जानजी ॥ चक्रव्युह करे नृपने वचनें, रीपु पिण असमानजी ॥ ए० ॥२४॥ सहस आरानें ठामे सेहेस नृप, तेहनो बहु परीवारजी ॥ एकण राजाने केडें, सहेस पांच असवारजी ॥ ए० ॥२५॥ दोय सहस रथ तिमहि गयवर, पायक सोल हजारजी ॥ सवा सेहेस ठ तटक, नूपति, रहे चक्र नीरधारजी ॥ ए० ॥२६॥ पांच सेहेस मारगने माथे, तुबि विचे मगधेशजी ॥ रहे तिहां कौरव सो बंधव, नृपने दक्षण देशजी ॥ ए० ॥२७॥ स

कुनि जने सिंधव नृपनो बल, पुंठे रहे गज गाहजी ॥ मगधेश नृप वामे भागे, आगल गण नर नाहजी ॥ ए० ॥ २८ ॥ सांधी सांधी रहे तिहां नरपति, कटक व्यूह पचासजी ॥ विच विचमें रह्यां बीजाहि पिण, पुरेवा मननी आशजी ॥ ए० ॥ २९ ॥ जरासींधुए तव थाप्यो, सेनानीने ठामजी ॥ दावल राजा दल बले बलियो, शिसुपाल इण नामजी ॥ ए० ॥ ३० ॥ सुणतां मिठी गोडी रागे, ए सत्तावनमी ढालजी ॥ गुणसागर इणिपरे पभणे, वेधक वचन रसालजी ॥ ए०॥ ३१ ॥

दुहा ॥ युद्ध करवा वलि सज्ज थयां, पांडवादिक परीवार ॥ यादव कुमर चढिया भला, सेन विद्याधर सार ॥ १ ॥ रथ चूरे मुठे करी, हय नाखे पराति ढ ॥ गज उछाले गयणमे, भांजे सुभटां भीड ॥ २॥ युद्ध करतां थाके नहिं, चाल्या आगे ताम ॥ फेरा उपर जइ अड्या, जरासिंधुने ठाम ॥ ३ ॥ शिसुपाल नाठो हिवे, थयो कोलाहल जोर ॥ देखीने जरासिंधुनो, कंप्यो कालिज कोर ॥ ४ ॥ ॥

ढाल ५८ मी ॥ चेतन ग्यांन अजुवालिये ॥ ए देशी ॥ रोसे करी अति रातडो, राणो जरासिंधु तामरे ॥ हुंकारवे करी उठियो, मेरुपरे अभीरामरे ॥१॥ राजंद आयो जरासिंधुजी, वाजे भंभा रण तूररे ॥ जेहवि बादल नि घनघटा, चाले गगने पूररे ॥ रा० ॥ २ ॥ मेघाडंबर शिर झलकंता, पाखरे जडीया हेमरे ॥ पवन पता

का ते फरहरे, उडे बग पंक्ति जेमरे ॥ रा० ॥ ३ ॥ शीरपर मुगट धरयो वांकडो, आंकडे नीडो सनाहरे ॥ केडे कटारो रतन जडयो, आवी बेठो रथे उछाहरे ॥ रा० ॥ ४ ॥ हय साजे करी साजतो, पाखरीया घ मरोलरे ॥ अपराजीत आदे करी, सूरा सुनटनी को डरे ॥ रा० ॥ ५ ॥ सिंहनाद अति मूकतो, घुकतो आयो रण शिमरे ॥ जादव पग पाछा खसे, अधिक देखी वल इमरे ॥ रा० ॥ ६ ॥ मगध नरिंद इम उच्चरे, इणे कटक उजमालरे ॥ कहे हिंसक मुज आगले, कु ण सुनट नूजालरे ॥ रा० ॥ ७ ॥ एहवे हिंसक कर उंचो करी, देखाडे सुण नूपालरे ॥ कमोत घोडा जे रथ तणा, ते अनादृष्टी रसालरे ॥ रा० ॥ ८ ॥ नि ला अश्वरथी जे हुवे, ते धर्म पुत्र शिणगाररे ॥ धवल अ श्वे अर्जुनजी, धनुर विद्यानो जाणरे ॥ रा० ॥ ९ ॥ निलुतपल अश्व छे नीमना, उना कोपे विकरालरे ॥ सोवन वर्णे अश्व छे सहि, समुद्रविजय दयालरे ॥ रा० ॥ १० ॥ हंसले घोडे उना कटकमां, गरुडध्वजे गोविंदरे ॥ दाहीण पाखे तिम रामजी, ताल ध्वजे न ट चंदरे ॥ रा० ॥ ११ ॥ इम देखावे सुनटने, पार विगर अनेकरे ॥ मगधेश सुणी घनण्य आफले, कोप धरी अविवेकरे ॥ रा० ॥ १२ ॥ युवराय मगध नरिंद नो, जवन नामे कहायरे ॥ वसुदेव सुत अंकुरादिक नणी, हणण काजे धायरे ॥ रा० ॥ १३ ॥ अपरा

जात अन हलधर लग, विंध्याचल गज जेमरे ॥ अनादृष्टि सिशुपालजी, शल्यने अर्जुन तेमरे ॥ रा० ॥
॥१४॥ रथ साथे रथ आभडे, गज साथे गजराजरे ॥ पयदल पयदलशु लडे, अश्व अश्वे करी साजरे ॥ रा०॥
॥ १५ ॥ बाण धारा वहे आकरी, मेघपरे असरालरे ॥ महिधर धीर धरे नहि, डोलिया दिगपालरे ॥ रा०॥
॥१६॥ नाचतो नारद इम कहे, रे जरासिंधु भूपालरे ॥ वाहलो अने वैरी एकठो, दुःकर मिलवो हठालरे ॥
रा०॥१७॥ अंकुरादिक हणतां थका, राम सुत सुकुमालरे ॥ स्यर्णी रथ दोडावियो. जवन साथे ततकालरे ॥
रा० ॥ १८ ॥ बाण वहे अति आकरा, जवन कोप्यो तेणी वाररे ॥भांजियो रथ सारणतणो, मूकी गदा प्रहाररे ॥ रा० ॥ १९ ॥ बेशी सारण रथ दुमरे, रोस भरयो असरालरे ॥ खेचि बाणने आहण्यो. जवन नृप नो भालरे ॥ रा० ॥२०॥ आठ दसार आदिक अवर, यादव नृप भट वीचर ॥ विर नृप बहु आहणी, दुर नसावे दिचेरे ॥ रा० ॥ २१ ॥ तेहवे जरासिंधुना राजवी, नाशिया बिलखे वयणरे ॥ जरासिंधुने ततखिणे, शरण गया सुख लयणरे ॥ रा० ॥ २२ ॥ पुत्र मरण देखी करी, दोडियो तुरत रिसालरे ॥ आनंदादिक सुत रामना, दस राखीया रणकालरे ॥ रा० ॥ २३ ॥
पुत्र वध देखी हरी, फोज भांगी राणरे ॥ मगधेस ध्यायो सिंहनीपरे, गाय केडे जिम जाणरे ॥ रा० ॥ २४ ॥

सैंनानी शिसुपाल हिवे, हसतो जपे वाणरं, गोकुल न हुवे कान्ह ए, क्षत्रिनो रण जाणरे ॥ रा० ॥ २५ ॥ कृष्ण कहे हिवे नाशतुं, नाश पडे अयाणरे ॥ रुकमीया ने रण तुं मिल्यो, चिंता नावे प्राणरे ॥ रा० ॥ २६ ॥ मरम वचन शर विंधीयो, धनुष्य ताणी शिसुपालरे ॥ शर छेदे हरी रायनो, तेहवे श्री गोपालरे ॥ रा० ॥ २७ ॥ धनुष्य तेम सनाह रथ, छेदे हरी ततकालरे ॥ खड्ग काढीने आहण्यो, मुगट सहित शिसुपालरे ॥ ॥ रा० ॥ २८॥ तेहवे मगधेशराजवी, नाम जरासिंधु तामरे ॥ वध देखी शिसुपालनो, कोपियो रिपुने कामरे ॥ रा० ॥ २९ ॥ निज नरपति सुतशुं मीली, मांझे सबलो झुंजरे ॥ उंचे स्वरे कहे यादवा, कांइ मरोरे अबूझरे ॥ रा० ॥ ३० ॥ हजी लगे कांइ नवी गयो, आपो वेहु गोवालरे ॥ सुखे रहो इम सांभली, यादव कोपे करालरे ॥ रा० ॥३१॥ हणो हणो करता धाइया, छोडतां वहु तिररे ॥ तेहवे मगधनो महिपति, युद्ध घोर करे रणधीररे ॥ रा० ॥ ३२ ॥ मागधेश सैन्य दीसोदिशे, भांजियो इम प्रतिकुलरे, तिम रहि नवी शक्यो कोइ मुखे ॥ वाच मुखे जिम तुलरे ॥ रा०॥ ॥३३॥ जरासिंधु सुत रामने, रोके तिहा अठावीसरे ॥ गुणहत्तरी सुतहि मिली, कृष्णजणी शुं जगीसरे ॥ रा० ॥ ३४ ॥ घोर झूंज थयो तिहां, रामदले हिवे खेंचीरे अठावीस ए कुमारने, पिसे मुसल सींचिरे ॥ रा०॥३५॥

मगधेश कहे गोवालिया, तुमहारे मुज नंदरे ॥ इम कहीने मारी गदा, राम पाडे आक्रंदरे ॥ रा० ॥ ३६॥ गदाघाते लोही वहे, यादव कटके तामरे ॥ हाहारव सूराकरे, कहेतां मुख श्रीरामरे ॥ रा० ॥ ३७ ॥ ते हवे देखी रामने, कोपियो श्रीगोपालरे ॥ गुणहुत्तरी ये कुमारने, हणे सबल ततकालरे ॥ रा० ॥ ३८ ॥ जह्रासिंधु चित चिंतवे, मरसे वलि इण ध्यायरे ॥ अर्जुन मारयो शुं होवे, कृष्ण हणु इम धायरे ॥ रा० ॥ ॥३९॥ कृष्ण हणयो इम कटकमें, पसरी सघले वातरे ॥ तेहवे मातलिने मने, विनति करे विख्यातरे ॥ रा० ॥ ४० ॥ साह्यज आपो प्रभु एहने, हरीनो संशय जायरे ॥ स्वस्थ करे यादव चमुरे, धरणी गगन शोभायरे ॥ रा० ॥ ४१ ॥ सूरि गुणसागर एक हि, वांदु अठावनमी ढालरे ॥ हिवे भवी तुह्मे साभलो, प्रभुलीला गुण मालरे ॥ रा० ॥ ४२ ॥

दुहा ॥ नेम कथने मातुली हिवे, रथ फेरे रण मांह ॥ तिर वाह सबलि करे, सामी सहेज उछाह ॥ १ ॥ एकले पिण सामीये, भांज्या लाख नरिंद ॥ जरासिंधुने नवि हणयो, हणशे तसु गोविंद ॥ २ ॥ कृष्ण हणे प्रति कृष्णने, राखे प्रभुनो मान ॥ रथ स्युं रोक्यां स्वामीये ॥ शत्रु तणा राजान ॥ ३ ॥ ताम उछेहा छुटिया, यादव नृप जय गेह ॥ अनुज हणियो पांडवे, लडतां रणमें जेह ॥४॥ सुख थयो बलदेव पुण, उपाडी निज

रीस ॥ जंग करते आहएयो, रणधोरा रापु इस ॥ ५ ॥

ढाल ५९ मी ॥ देखी दुरगंध दरथी, मुह मच-कोडे माणरे ॥ ए देशी ॥ हिवे मगधेश नरिंदो ए, कहे सुण गोविंदोए, आनंदो ए ताहरी मायाये घणो ए॥ हणिओ कंस नुजालो ए, हणियो तिमज कालो ए, ए जालो ए सघलोछे माया तणो ए ॥ १ ॥ शिखीयो रण नाहि ए, ठले सूर कहाहि ए, हिवे वाहिए जो जो हुन खत्रि तणो ए॥ तुझ प्राण सेंति ए, छे माया जेति ए सवि तेति ए, तिने मेलुं तुं धणी ए ॥ २ ॥ पुत्री तणी वाचा ए, पुराउ मन साचा ए ॥ ते काचा ए जाण्या मानु गोवालिया ए ॥ हरी माधव इम बोलेए, शुं नूपति तुं बोले ए, किण तोले ए साचा बोल संभालिया ए ॥३॥ हुंतो माया जालो ए, नहि कूडो नूपालो ए, संभालो ए थेंतो रजवट आपणीये॥ आपण अधीकाई ए, ते परने न कहाई ए, पिण भाइ ए तुं जोजे वडाइ हमतणी ए ॥ ४ ॥ तुझ आगल ऊंपावुं ए, तो हुं कान कहावुं ए, सराहुं ए तुम पुत्री वातां खरी ए॥ इंम मरमनी वाणी ए ॥ हरी मुखथी सहु जाणी ए, सर ताणी ए बहु मुके अती रासे करी ए ॥ ५ ॥ बेहु मिली सर छोडे ए, रणने होडा होडे ए, तिम ओफे ए तिर धनुष्य एक एकनां ए ॥ बेहु सबल बिहावे ए, जल रासि खोभावे ए, कंपावे ए गीरी खेचर नामना ए॥ ६ ॥ देब व्यंतर

बल लेवा ए, उभा आकाशे बलदेवा ए, गयणे देवा ए जोवा मीलिया कौतकी ए ॥ हरीये तव संभारी ए, कुरू मच्यो अति भारी ए, आज अटारीए देखी नाठा जोतकी ए ॥ ७ ॥ बेहु सामा रथ फेरे ए, फेरंता बलु हेरे ए, बहु तेरे ए शस्त्रे कुंक करे सहि ए ॥ नृप मागधीने काजे ए सबलपणे हरी राजे ए, शीर ताजे ए कीयो शस्त्र मन उमही ए ॥ ८ ॥ मन विलखो अती थावे ए, जरासिंधु रीसावे ए, सबाइ ए चक्र संभारे एहवे ए ॥ चक्र हाथे आवे ए, मगधेश मन भावे ए, सभावे ए वचन कहे इम तेहवे ए ॥ ९ ॥ मथुरा मांहि जारक ए, रहेतो करी घणी ठारक ए, कंस मारकए आव्योछुं इहां एकलो ए ॥ वैर पूर्वनुं मातो ए, तिणे घणी मुज वातो ए, रखे जातो ए मार्ग जाणी वेखलो ए ॥ १० ॥ हिवे न मुं कुलआरो ए, करवा टिपणो तारो ए, कहेवुं सारो ए रण साधेठे थइने भलो ए॥ इम घणुं लडकारी ए चक्र भमाडी भारी ए, नभचारी ए नांखे राज्ञी आमलो ए ॥ ११ ॥ खेचर देखि त्रासे ए, सैना जन सह नासे ए, तसु पासे ये सूरा पग मांडी रह्यो ए॥ चक्र उपद्रव टाले ए, पांभव हमा निहाले ए, तसु खाले ए शस्त्र तणी धारा वहे ए ॥ ॥ १२ ॥ गयणां गण गाजे ए, चक्र तणे आवाजे ए, विराजे ए आवी उभो हरी आगले ए॥ बंधव पेरे

सुहावे ए, देखि हरी मन भावे ए, लेइ वधावे ए च
क्र भणि मुक्ताफले ए ॥ १३ ॥ यादव कटक तेवारो
ए, हरख्यो सहु संसारो ए, नरनारी ए मिलिओछव
करे घणो ए ॥ सूर मिलि गुण गावे ए, फूल पगर
वरसावे ए, भल भावे ए करे महिमा हरजी तणी ए
॥ १४ ॥ गगन तले इम वाणी ए, कहे प्रगट्यो गु
ण खाणी ए, महिराणी ए वासुदेव नवमो सहि ए ॥
हरख्या यादव रायो ए, पड्या निशाणे घाउ ए, म
नराउ ए जरासिंधु चिंता लहि ए ॥ १५ ॥ हरी क
हे करो राज ए, में गइ किनी आज ए सुण रा
ज ए, आण वहे तुह्मारी ए ॥ हठ अधीक मति
ताण ए, जीव तणां कल्याण ए, इम वाण एवी
सुणी कोप्यो प्रतिहरी ए ॥ १६ ॥ रे मूरख स्युं भां
खेए, अणघटतुं इम झांखे ए, दिन भांखे ए किम
खत्री रण आवियो ए ॥ पुण्य विस्या इणि वार ए,
तो कुण राखण हार ए, निरधार ए टेक न मुके
राजीयो ए ॥ १७ ॥ चक्र मेले हरी रायए, रिपु भ
णी मन लाय ए, ते जावेए लेवा शीर वैरीतणो ए ॥
मोटाने शिर आइ ए, पुण्य खुटा इम ध्याइये, सु
णो भाइ ये शस्त्र परायो आपणो ए ॥ १८ ॥ चक्र
आयो जिहां राजा ए, करतो अधिक अवाजा ए,
तजी माजाये शिर छेदे मगधेशनो ए ॥ पामी मर
ण अकाम ए, उपन्यो चोथे ठाम ए, जाणो ताम

ए ध्यान रुद्र नरेशनो ए ॥ १९ ॥ जय जय शब्द करंत ए, सुरनर मिली हरखंत ए, करतंत ए फूल वर्षा हरी उपरे ए ॥ यादव कुल विशाल ए, उपना एह नूपाल ए, महिमाल ए जिणे दिठां दिलडुं ठरेए ॥ ॥ २० ॥ समुद्रविजे सहु राय ए, करे दिलासा जाय ए, करे राय ए प्रेत कार्य जरासींधुनो ए ॥ ए गुणसठमी ढाल ए, हरी हलधर जस माल ए उजाल ए, गुणसागर गुण एहनो ए ॥ २१ ॥

दुहा ॥ नृप विणास्यो नूजबले, किधो भारे काम ॥ सुरनर जय जय उचरे, वाजे सुजस ददाम ॥ १ ॥ घर घर बार वधामणा, घर घर मंगल चार ॥ गीत घणां हरजी तणा, गावे गुणी अपार ॥ २ ॥

ढाल ६० मी ॥ झुमखडानी देशी ॥ रंगीला खेलणा ॥ ए देशी ॥ नरेश्वर जीत्यारे, जीत्यो भल संडाण॥ न० ॥ राय सकल आवी नम्यारे, दिधा बहु सनमान ॥न०॥१॥ पूज्यो मातली सारथीरे, स्वर्गे पोहत्यो जाय ॥ न० ॥ स्वामि प्रशंसा सांभलीरे, सुरपतिने सुख थाय ॥ न० ॥ २ ॥ सहदेवादिक सुत भलारे, राजग्रही थापंत ॥ न० ॥ महानेमी कुमर भणीरे, सौरीपुर आपंत ॥ न० ॥ ३ ॥ पांडव राय परगडारे, दिधां वछित देस न० ॥ अवरा सहुने सामीजीरे, आपे देश विशेष ॥ न० ॥ ४ ॥ चक्र बले चित चावशुंरे, तीने खंड अखंड ॥ न० ॥ साधीने प्रभु आवियारे, कोटी सिलाए प्र

चंड ॥ न० ॥ ५ ॥ उंचि जोजन एकनीरे, लांवी चों
डी जाण ॥ न० ॥ च्यार आंगुल धरती थकीरे, उपाडी
वल प्रमाण ॥ न० ॥ ६ ॥ वरस आठ लगे सहीरे,
करतां दिगजय देख ॥ न० ॥ खेम कुशल घरे आवि
यारे, तेज प्रताप विशेष ॥ न० ॥ ७ ॥ दंरु सुनंद
धनुष्य नलोरे, चक्र सुशक्तिसुं चंग ॥ न० ॥ शंख गदा
हरजी तणारे, साते रत्न शुचंग ॥ न० ॥ ८ ॥ सहस
सहस वर देवतारे, रत्न तणा रखवाल ॥ न० ॥ ए आठे
हजारशुंरे, सेवीजे गोपाल ॥ न० ॥ ९ ॥ रत्नशुं मा
ल गदा नलीरे, हलमुसल वर रत्न ॥ न० ॥ हलधरना
ए जाणीएरे, च्यार रत्न सुयत्न ॥ न० ॥ १० ॥ य
क्ष हजारे शेवीएरे, च्यारे श्री बलदेव ॥ न० ॥ महीय
ल महीमा महमहेरे, सारे सुरनर शेव ॥ न० ॥ ११ ॥
हयवर गयवर रथवरुरे, संख्या लाख बयाल ॥ न० ॥
पायक पौढ प्रतापशुंरे, कोडी कह्या अडताल ॥
न० ॥ १२ ॥ सोल सहस सोहामणारे, देश महा
अनिराम ॥ न० ॥ राजाबे पिण तेतलारे, सेवक रूप स
काम ॥ न० ॥ १३ ॥ सत्यनामाने रुकमणीने, जांबु
वंती गुण जाण ॥ न० ॥ गोरी गंधारी नलीरे, पदमा
वती प्रधान ॥ न० ॥ १३ ॥ सुसीमा लखमणा कही
रे, आठे नारी उदार ॥ न० ॥ सोल सहस रमणी तणोरे,
माधवजी नरतार ॥ न० ॥ १५ ॥ वंधुमतीने रेव
तीरे, सीता सुंदर शोन ॥ न० ॥ वर राजीव सुलोच

नारे, पति भेख्यानो लोन ॥ न० ॥ १६ ॥ ए च्यारे
आदे करीरे, रमणी रूप अपार ॥ न० ॥ श्री वलभ
द्रजी तणीरे, नारी आठ हजार ॥ न० ॥ १७ ॥ इंद्र
तणा सुख भोगवेरे, पूरव पुण्य प्रकार ॥ न० ॥ आ
नद रंग विनोदमांरे, पाले राज मुरार ॥ न०॥१८॥
दुर्योधन नामे भलोरे, कुरु जंगलनो राय ॥ न० ॥ दू
त तेहनो आवीयोरे, लाग्यो हरीजी पाय ॥ न०॥१९॥
कागद दुर्योधन तणारे, मांहे एह विच्यार ॥ न० ॥
म्हारे तुम ठाकुर धणीरे, थांसु प्रेम अपार ॥ न० ॥
॥ २० ॥ प्रेम वधामण कारणेरे, मुजने उपजी एह ॥
न० ॥ बेरुना संबंधथीरे, निश्चे किजे नेह ॥ न० ॥
॥ २१ ॥ थांरे पटराणी तणोरे, पूत पनोतो होय ॥ न०
॥ मुज नारी कुमरी जणेरे, व्याह करेवो सोय ॥ न०॥
॥ २२ ॥ दैवजोगे एहवो हुवेरे, मुज त्रिय जणे कु
मार ॥ न० ॥ तुम्ह नारीने पुत्रीकारे, तोपिण व्याह
विच्यार ॥ न० ॥ २३ ॥ हरी हरखी बोल्यो सहिरे, ए
चारु विधी वात ॥ न० ॥ दोय घरा वधामणारे, आ
नंदमे दिन जात ॥ न० ॥ २४ ॥ ए साठमी ढालमेरे
श्रीहरीजी सुख राज ॥ न० ॥ श्रीगुणसागर सूरिजीरे,
सवही विधी सुभ साज ॥ न० ॥ २५ ॥

दुहा ॥ दोगंधक सुर तिपरे, विलसे भोग अपार ॥
रुखमणी उरे उपजे, श्री परजुन कुमार ॥ १ ॥ भा
माने मन भावतो, भानु भलो गुण जाण ॥ एहनो पि

धरे अपार हो ॥ भा० ॥ १९ ॥ पुण्य प्रमाणे डोहला, गुरु वादे पोशाल हो ॥ भा० ॥ दान शीयल तप भाव ना, चउविह धर्म रसाल हो ॥ भा० ॥ २० ॥ श्री जि न सेवा साचवे, संबर साथे प्रित हो ॥ भा० ॥ आश्र वा अलगी रहे, एतो मोठी रीत हो ॥ भा० ॥ २१ ॥ उदर वसंता गर्भ ए, रुखमणी मन उल्हास हो ॥ भा० ॥ आरीसा प्रतीबिंब ज्यु, पेट न पीडा तास हो ॥ भा० ॥ ॥ २२ ॥ गर्भ वधे दीन दीन प्रत्ये, उदर न वाधे रं च हो ॥ भा० ॥ त्रवलि पेटे विलोकतां, शोक लिख्यो परपंच हो ॥ भा० ॥ २३ ॥ एवे जूठा पट पटा, नहि गर्भ अहिनाण हो ॥ भा० ॥ पिण तो माथो मुंमता, जास सयल सयाण हो ॥ भा० ॥ २४ ॥ साचाने सो च नहि, जूठा सोच अनेक हो ॥ भा० ॥ साचा सर ल सभावीया, सोच न व्यापे एक हो ॥ भा० ॥ २५ ॥ दिन पूरे सुत जनमीयो, शुभ वेला शुभ वार हो ॥ ॥ भा० ॥ रुखमणी अती सुख पाइयो, परीयण हरख अपार हो ॥ भा० ॥ २६ ॥ पुरुष वधाउ आविया, नृपति पासे जाम हो ॥ भा० ॥ प्रभुजी पोढ्यो पे खियो, पग तले बेठा ताम हो ॥ भा० ॥ २७ ॥ भामाना पिण आविया, मोठा पुरुष प्रधान हो ॥ भा० ॥ शीराणे ते जइ कीयो, बेसणानो मंडाण हो ॥ भा० ॥ जेहना ठा कुर जेहवा, तेहवा चाकर होय हो ॥ भा० ॥ जो नृपति जो मानवी, एतो परतक्ष जोय हो ॥ भा० ॥ २९ ॥

एटले जगपति जागीयो, उठि बेठो होय हो ॥ भा० ॥ चिरंजीवो कहि बोलिया, रुखमणीना नर सा य हो॥भा०॥ ३०॥ देव वधाइ पाइये, रुखमणी जायो नंद हो॥भा०॥नंदन निरखण सारीखो, दरशन परमानंद हो ॥ भा० ॥ ३१ ॥ राज चिन्ह बाकी करी, अवर अनोपम वस्तु हो॥भा०॥ पुत्र वधाउआं भणी, आपी राय समस्तु हो ॥ भा०॥३२॥ जाणी संचल पाछले, थांकि भीवे जोय हो ॥ भा०॥ भामा सुत जाया तणी, लीये वधाइ सोइ हो ॥ भा०॥ ३३ ॥ए तो एकसठमी कही, ढाल भलेरी होय हो ॥ भा०॥ कहे गुणसागर दोय घरां, आनंद वरत्यो जोय हो ॥ भा० ॥ ३४ ॥

दुहा ॥ कृष्ण नरेशर इम भणे, शेवक सुणो विचार ॥ मंत्रीसर बोलाइ ल्यो, वेगे मतलावो वार॥ १॥ मंत्रीसर आया सहु, नरपति दिये आदेश ॥ पुत्र महोछव पुर तणी, शोभा करो सुविशेश ॥ २ ॥

ढाल ६२मी ॥ राजा दसरथ दिपतो ॥ए देशी ॥ पुत्र महोछव किजीए, मिलीयो सहु परीवारोरे ॥ रुखमणी सतभामा तणे, मंदीर हर्ष अपारोरे ॥ पु० ॥ याचक जन जुगतशुं, दिजे वंछीत दानोरे ॥ करुणा भावे कृष्णजी, मूक्या बंधीवानोरे ॥ पु० ॥ २ ॥ तोरणनी रचना भली, उपर कलस उदारोरे ॥ लहलहति ध्वज अति घणी ॥ दिसे घर घर बारोरे ॥ पु० ॥३ ॥ टोके रचना केलिनी, नारी भणे गुण गाथोरे ॥ आर

ण कारण साचवे, कुंकमनां दिए गंटोरे ॥ पु० ॥ ४ ॥ गुहीर स्वरे तव गोरणी, गावे मगल च्यारोरे ॥ धव ल दिए तस आंगणे, वरते जय जय कारोरे ॥ पु० ॥ ॥ ५ ॥ सहु सुहागण सामटी, नारी आख्याणो लावे रे ॥ दोय घरां अति पूरतो, ते तो आदर पावेरे ॥ ॥ पु० ॥ ६ ॥ ढोल ददामा दडवडे, सरणाइ सुख कारोरे ॥ वाजां वाजे अति घणां, नाचे पात्र अपारोरे ॥ पु० ७ ॥ दिजे सोना सावटुं, वागा वेस विशेषोरे ॥ दिजे हयवर हाथीया, मांहो मांहि आदेखोरे ॥ पु० ॥ ॥ ८ ॥ फुवा भतीजी भाणेजी, बेटी वहुने बोलावेरे ॥ रित भात अने प्रितशुं, आप आपणी पावेरे ॥ पु० ॥ ९ ॥ सज्जन सहु संतोषीया, संतोष्यां सहु भाइरे ॥ यथा योग्य जे जाणीया, दिधी तास वधाइरे ॥ पु० ॥ १० ॥ पुज्य पुरुष ते पूजीया, सह गुरु सेवा साधीरे ॥ साहामी वछल मन मानीया, कुल देवी आराधीरे ॥ पु० ॥ ॥ ११ ॥ हुंस मनावी अति घणी, खांति न राखे कांइरे ॥ पिण तो दैवां अपहरयां, कोण सके न रहाइरे ॥ पु० ॥ १२ ॥ एहवे रंग विनोदमां, करतां कोडी प्रकारोरे ॥ पाच दिहाडा वोलीया, छठीनो अधीकारोरे ॥ पु० ॥ १३ ॥ चलो आसठमी भली, ढाल कहावे सारोरे ॥ गुणसागर कहे सांभलो, केम होवे अपहारोरे ॥ पु० ॥ १४ ॥

दुहा ॥ रुखमणी नंदन अपहरण, महा वडो दुःख जाण ॥ सुर्जे आप आथमी गयो, पसरयो जग तम आ

णं ॥१॥ भली रीते ए पारको, दुःख देख्यो नवी जाय ॥ होइ तो भलपण करे, नहीतर अलगो थाय ॥ २ ॥

ढाल ६३ मी ॥ कदीए मिलशेरे मुनिवर एहवा ॥ ए देशी ॥ कर्म आगे बलीयो कोइ नहीं, राव रंक एक साथोरे ॥ रुखमणी सुतसुं सुख निंद्रा भजे, किशु करे जगनाथोरे ॥ क० ॥ १ ॥ रमणी रंगेराती ज गावही, गावे गीत उदारोरे ॥ वाजे मांदल धौंधौंकारशुं, नाचे पात्र अपारोरे ॥ क० ॥ २ ॥ सुभट घणां घर पासे मूक्या, रखवालीने काजोरे ॥ विविध प्रकारे आयुध धरिने, सूर रह्यां सजी साजोरे ॥ क० ॥ ३ ॥ करी हुशीयारी कृष्ण नरेश्वरु, सुख निद्रावसे थाइरे ॥ अन्य कथांतर एतले वितीयो, रुखमणीने दुख दाइरे ॥ क० ॥ ४ ॥ हेमरथ राजा आगे जे हुतो, इंदुप्रभा तस राणीरे ॥ मधु राजाए जोर करी घणु, सो राणी घर आणीरे ॥ क०॥५॥ मोह वसे सो हेमरथ राजीयो, तापसना व्रत धारीरे ॥ सूरगति पदवी लाधी रुग्रमी, करणी तो फल कारीरे ॥ क० ॥ ६ ॥ बेशी विमाने सो सूर एकदा, निज लीलाए जायोरे ॥ रुखमणी मंदीर उपर आवीयो, एतले विमान थंभायोरे ॥ क०॥७॥ देव विशेषे चिंतातुर थयो, किम मुझ गतीनो भंगोरे ॥ कां को हेठेरे दुखीयो जीवअछे ॥ केको शत्रु विरंगोरे ॥ क० ॥ ८ ॥ केको मित्रज कष्टे पूरीयो, चरम शरीरी देहोरे ॥ मोटा मुनिवर सुरगती भगनो, कारण भाख्या

एहोरे ॥ क० ॥ ९ ॥ ज्ञान करी तव देखे देवता, मधु राजानो जीवोरे ॥ रुखमणी पासे वालक पेखीयो, जाग्यो धेख अतिवोरे ॥ क०॥ १ ॥ इण पापीडे मदमाते घणुं, मुझशुं किधो जोरोरे ॥ एहने ते फल आज देखाडशुं, किया पाप अघोरोरे ॥ क० ॥ ११ ॥ तव तो ए नृप हुतो समर्थ, हुं असमर्थ ते वारोरे ॥ अंब तो हुवुं समर्थ अति घणुं, ए असमर्थ अपारोरे ॥ क० ॥ ॥ १२ ॥ एम जाणीने देवे द्वेपशुं, लियो वाल कुमारोरे ॥ रुखमणीनी गर्ती आगेथी ॥ किशहि न जाणी सारोरे ॥ क०॥१३॥ किउं किजेरे साजन सुभटशुं, आडंवर उगाहोरे ॥ सहु तारागण अंबर देखतां. चन्द्रग्रशी जे राहुरे ॥ क० ॥ १४ ॥ आशा को केहनी मति करो, आशा प्रभुने हाथोरे ॥ रुखमणी सुत कुण मनोरथे, जाग्या आथन साथोरे ॥ क० ॥ १५ ॥ सूर आकाशे जाइ चिंतवे, कुण कुण जाणस्ये मारुंरे ॥ चरम शरीरी पूरो आउखो, ए जिन वचने वारुंरे ॥ क० ॥ १६ ॥ तक्षक पर्वत खदीराअटवीमे, आयो ते ततकालोरे ॥ बावन हात मोटी शीला तले, सुर चांप्यो ते वालोरे ॥ क० ॥ १७ ॥ निज कृत कर्मनो फल भोगवे, एम कही गयो तेहोरे ॥ पुण्य विशेषे नख शिख लगे सहि, आलन आवी देहोरे ॥ क० ॥ १८ ॥ एतो त्रेसठमी ढाले जाणीयो, मदन हरण अधीकारोरे ॥ श्री गुण सागर ए उपदेश अखे, पुण्य वडो संसारोरे ॥क०॥१९॥

दुहा ॥ पुण्य सवाई जेहनो, तेहनो पूरो आय ॥ वाल न वांको करी शके, जइ रुसे जमराय ॥ १ ॥ भावे को भल पण अहो, अहो बूरापण कोय ॥ सरज्याना अनुसारथी, भलो बूरो जग होय ॥ २ ॥ जात मात जळवाहिया, कस कर्ण नीज माय ॥ पिण ते शुभ कर्मा थकी, हुआ वडेरा राय ॥ ३ ॥ जीवाडे तो सिलातले, मारे प्रभु ते जोय ॥ मदन सगरना नंद ज्यु, करता करे सो होय ॥ ४ ॥ रुपाचल दक्षण दिशे, मेघकुट पुर नाम ॥ जमसंवर राजा भलो, राज करे गुणधाम ॥ ५ ॥ तेहने घर भल भामनी, कनकमाला सुकुमाल ॥ बेसी बिमाने दंपति आय गया ततकाल ॥ ६ ॥ बालक सुखने वायरे, ऊंचो नीचो थाय ॥ श्रौढि शिला ते परगडी, ताम बिलोकी राय ॥ ७ ॥ उपाडी अलगी करी, दीठो देव कुमार ॥ सव विध सुंदर मनोहरुं, करतो हास्य अपार ॥ ८ ॥

ढाल ६४ मी ॥ पवडीयाकी देशी ॥ सो मन मोह्यो मोहना, मोहन रूप रसाल हो ॥ खेंचर खेंचरणी सुं कहे, लाल सवे विधी लाल हो ॥ मो० ॥ १ ॥ कोमल कुंतल वांकडा, शाम महा सुकुमाल हो ॥ आठ मकेरा चंदलो, भाल भलो सुविसाल हो ॥ मो० ॥ ॥ २ ॥ भूह भमरकी उपमा, कर्ण सुवर्णाकार हो ॥ नयन कमल दळ पाखडी, सुक नाशा सुविचार हो ॥ मो० ॥ ३ ॥ मुख जाणे पूरो शशी, आवे लाल कपो

ल हो ॥ दांत कली दाडम तणी, अधर प्रवाल अमो
ल हो ॥ मो० ॥ ४॥ ग्रीवा कंबु सारखी, उनत अंस
उदार हो ॥ कमलनाली उनिहारडे, बाहु तणो वि
स्तार हो ॥ मो० ॥ ५ ॥ उदर अनोपम शोभतो, क
टि केहरीको लंक हो ॥ जंघा गयवर सुंडसी, तनमे
को न कलंक हो ॥ मो० ॥ ६ ॥ सोवन वान सुहाम
णो, चंचल पाणी ज्यु पाय हो ॥ कामदेव ए उपज्यो,
शोभा कहि न जाय हो ॥ मो० ॥ ७ ॥ राता
सात सुलक्षणा, कर पग लोचन अंत हो ॥ अधर
होठ नख तालुवे, जिहां एतो ए कंत हो ॥ मो० ॥८॥
उनत ए खट बे सहि, कक्षा कुख ललाट हो ॥ खांध
नाक उंचो हियो, घडीयो देवे सुघाट हो ॥ मो० ॥९॥
दिर्घ पंचे देखीए, नयणा सरने बाहु हो ॥ नास्या थ
भाने हडवची, लांबि न नमे वाहु हो ॥ मो० ॥ १० ॥
सोक्षम पंच प्रशसीए, पर्वांतरने केश हो ॥ नह देह
दृशन वली, सुक्षम मृदु सुविशेष हो ॥ मो० ॥११॥
लघु ग्रीवा जंघा भलि, लघुहि पुरुषाकार हो ॥ स्वर
गंभीर सराहीए, नाभी सत्व सुखकार हो ॥मो०॥१२॥
भाल विशाल वखाणियो, पोहले माथे इश हो ॥ पोह
लि छाती बे घणी, लक्षण ए बत्रिस हो ॥ मो०॥१३॥
सर्व गुणाकर साचलो, सर्वहि शोभ नीध्यान हो ॥
दैत्य महा रिपुजी तणो, दर्शन अमृत पान हो॥ मो०॥
॥ १४ ॥ हेज घणे उठाइयो, लीधो कंठ लगाय हो॥

मुह अने शीर चुंबता, राजा अति सुख थाय हो ॥ मो० ॥ १५ ॥ राजा राणीसुं कहे, तुझ तूठो कीरतार हो ॥ सर्व सुलक्षण गुण निलो, दीधो एह कुमार हो ॥ मो० ॥ १६ ॥ राणी राजासुं कहे, थारे वहुला पूत हो ॥ सघलामें ए नान्हड़ो, किसो वधे घरसूत हो ॥ मो० ॥ १७ ॥ राजा मुख तंबोलशुं, तिलक कीयो शिर तास हो ॥ युवराजा पद थापियो, राणी जाणी उल्लास हो ॥ मो० ॥१८॥ दुर्जन रुठो स्युं करे, जेहना शुभ अंकुर हो ॥ मयंगल जिहां जिहां संचरे, तिहां तिहां वाधे नूर हो ॥ मो० ॥ १९ ॥ राणी बालक झीलीयो, जाणी जाचो रयण हो ॥ प्राण थकी प्यारो खरो, पासी अधीको चयन हो ॥ मो० ॥ २० ॥ राजा मंदिर आवीयो, मिलियो सहु परीवार हो ॥ राणी नंदन जाइयो, वरत्यो जय जयकार हो ॥ मो० ॥२१॥ महा महोत्सव मांड़ीयो, वाजे ढोल निसाण हो ॥ मंगल गावे गोरडी, दीजे वंछित दान हो ॥ मो० ॥ २२ ॥ कीधी शोभा पुर तणी, मिलीया सहु साज हो ॥ वंदीखाना छोडीया, कीधां सीधां काज हो ॥ मो० ॥ ॥ २३ ॥ बारसमे दीन थापियो, राजा नाम उदार हो ॥ पर दमवाने कारणे, श्रीप्रद्युम्न कुमार हो ॥ मो० ॥ २४ ॥ जिम जिम वाधे वये करी, तिम तिम वाधे ऊर हो ॥ हयवर गयवर साहेबी, कण कंचन भरपूर हो ॥ मो० ॥ २५ ॥ कमल कमल

जिम संचरे, भमरो भोगी नाम हो ॥ हाथोहाथे सं चरे, तिम ए कुंवर काम हो ॥ मो० ॥ २६ ॥ स्वघर आदर पामीए, एतो सुधी वात हो ॥ पिण जे पर घर सादरो, ए अधिकी अखीयात हो ॥ मो०॥२७॥ ढाल भली चोसठमी, खेचर घर उल्हास हो गुणसागर दिपक जिहां, तिहां तिहां करे प्रकाश हो ॥ मो० ॥२८॥

दुहा ॥ श्री पद्युम्न हरय्या पिछे, वितक वित्यो जे ह ॥ संक्षेपे तुमे सांभलो, मुज कहेतां भवि तेह ॥ ॥ १ ॥ ततक्षण जागी रुखमणी, बाल न देखे पास ॥ हियडे झाल उठी घणी, आवी मूर्छा तास ॥ २ ॥ स चेतन किधी सति, फिरी फिरी मूरछाय ॥ कुमर न सो ध्यो पाइयो, करुणापणे विललाय ॥ ३ ॥

ढाल ६५ मी ॥ हरी विण राधा किम रहे ॥ ए देशी ॥ हाताशुं हियडो हणे, कुरलेसा असराल, दि न वचन भाखे घणां, किधुं किस्युंरे दयाल ॥ १ ॥ विलवे राणी रुखमणी ॥ ए आंकणी ॥ रे सुंदर सुकुमाल किहां गयो मुझने तजी, ए दुःख झालकराल ॥ वि० ॥ २ ॥ उंडी उठे कुर करी, वेदन सहि न जाय ॥ जाया तुझ सम को नहीं, जे देख्यां सुख थाय ॥ वि० ॥३॥ गुडथी मीठी खांड ए, खांडा स
रथी अमृत भलो, पूत न पुगे कोर
त पनोतीमां गणे, पूत सपूत
न्नतणी ॥ विण पूताए काम ॥

नी विण बांधवा, घर सुनो विण पूत ॥ पूत
पनोता वाहीरो, कुण राखे घर सूत ॥ वि० ॥ ६ ॥
वहुले मिलीए साजने; हेत घणां गुणग्राम ॥ पूत
पनोता वाहीरो, कुण लेवावे नाम ॥ वि० ॥ ७ ॥ न
ली सपूती पंखणी, इंडां पालणहार ॥ चुगन लावे
रंनी चाचमी, उ लीएं मुखें पसार ॥ वि० ॥ ८ ॥ हुं
कां सरजी मनुष्यणी, रे कूंमा किरतार ॥ गर्भ मां
हि गाली नही, आपी आरति अपार ॥ वि० ॥ ९ ॥
जन्म समे मूइ नहीं, झोली नं पडी तूट ॥ रोग
तणो कारण लही, न मुंइ हियमा फूट ॥ वि० ॥ १० ॥
बाल रंगना स्यालमें, पाती लेवा जात ॥ हुं कानड
शी एह रुयें ॥ मरी जाती विलंलात ॥ वि० ॥ ११ ॥
तो कां हुं आवी हरीं घरे, कां पाम्यो बहु मान ॥ सो
क सालथीं सहेजाहि, बूटी जातां प्राण ॥ वि० ॥ १२ ॥
तो कां सुपना देखियां, कां जायो वरनंद ॥ नंद तो
आनंद करी गयो, किशुं करुं मतिमंद ॥ वि० ॥ १३ ॥
कां हुं अधीकी वंजत्रजी, कां में पाडी होड ॥ मु
ऊ दुखियारीनां सखी, कोइ न पुगी कोड ॥ वि० ॥
॥ १४ ॥ चहडी तो हुं गीरवरां, नाखतोरे पयाल ॥ आं
वो वावि आंगणे, तबही लियो उलाल ॥ वि०
॥ १५ ॥ रे पापिष्ट अनिष्ट तुं, रे दुष्टनिठोर ॥ दैत्र द
या नहि तुझने, रांक साथे शो जोर ॥ वि० ॥ १६ ॥
नाणीथी माहरे, सहु वातां सुविसाल ॥ खार धरी

छेदी सही, दव मनोरथ माल ॥ वि० ॥ १७ ॥ पुढवी छेदन भेदना, में किधी बहुवार ॥ सर फोड्यां द्रह सोसव्यां, अणगल निर अपार ॥ वि० ॥ १८ ॥ आग उल्हावी निरशु, दव दीधां वननांहि ॥ वाय कराव्यो विंजणे, मंकाव्यां सढ प्रांहि ॥ वि० ॥ १९ ॥ फूलण मसली पावशुं, चांप्या नव अंकुर ॥ फलनो लेवा कारणे, बेठी होइ सुर ॥ वि० ॥ २० ॥ वेइंद्री ना वध किया, मारी जूने लिख ॥ किडी नगरां वाहियां, ते मुज लागी शिख ॥ वि० ॥ २१ ॥ छाणे विंछी चांपीया, लोक बताया सांप ॥ माला तोड्यां चिमकलां, लाग्या मोटा पाप ॥ वि० ॥ २२ ॥ पशु पंखणी मनुष्यणी, बाल विछोहो दिध ॥ उन्हो जल दर पूरीयां, प्रोढा पातिक किध ॥ वि० ॥ २३ ॥ मछी जाल पसारीयां, हरण पाड्यां पास ॥ कर्म कसाइनां कियां, गो बकरां विणास ॥ वि० ॥ २४ ॥ मोसामर्भ प्रकाशीयां, नाख्या कूडा अपराध ॥ परने मोड्या करकमा, ते में ए फल लीध ॥ वि० ॥ २५ ॥ चोरी किधी परतणी, लीधा हिरा लाल ॥ लाल निरोपन निगम्यो, होई रही बेहाल ॥ वि० ॥ २६ ॥ साच न राख्यो शिलमुं, जेहथी लहीए लील ॥ जगमांहि अपजस लियो, शेवी शेवी कुशील ॥ वि० ॥ ॥ २७ ॥ क्हिा लोटे उठे जइ, क्हिणमें चढे चोवार ॥ कदीए देखुं मुज नान्हडो, प्यारो प्राण आधार ॥

॥ वि० ॥ २८ ॥ रुखमणीने दुखे सहु दुखी, कृष्णे सु एयो तव सोर ॥ धशी आव्यो उतावलो, अहो अहो सुत चोर ॥ वि० ॥ २९ ॥ कृष्ण हिये दुःख संवरी, त्रि यसु कहे सुविच्चयार ॥ नंदन मीलशे ताहरो, करशुं सोइ प्रकार ॥ वि० ॥ ३० ॥ जे पांखरीयां परगडा, शो धन काजे सोय ॥ मोकलीया फीरी आवीया, काज न सरीयो कोय ॥ वि० ॥ ३१ ॥ सुसति किधी सुंदरी, वारु वचन कही वाण ॥ एतले चाली आवीयो, ना रद पुण्य प्रमाण ॥ वि० ॥ ३२ ॥ ढाल एतो पासठ मी, विजोगणीए नाम ॥ गुणसागर सुन कर्मथी, स रसे सघला काम ॥ वि० ॥ ३३ ॥

दुहा ॥ नारद भांखे सुण सुता, आरती म कर लीं गार ॥ तेहने आरती शुं करे, जेहनो हरी भरतार ॥ १ ॥ जे तुज कुखे उपज्यो, जेहनो माधव तात ॥ न मरे ढंबे आउपे, ए निश्चे विधी वात ॥२॥ पूर्व भवा तर वैरीए, किधोछे अपहार ॥ दिन थोडे शोधी करी, मेलुं आणी कुमार ॥ ३ ॥ जो ए कारज नवी करुं, तोशुं माहरो नाम ॥ भामाना मन भावतां, जाणे सरया सब काम ॥ ४ ॥ ज्ञान विना निश्चे न ही, झलफलीयां शुं थाय ॥ श्रीमंधीर स्वामी कने, चाली गयो ऋषीराय ॥ ५ ॥ देइ प्रदक्षणा विधी करी, प्रभुना प्रणमी पाय ॥ नीड जाणी माणस तणी, रह्यो तखते तेले माय ॥६॥ लघु काया करमें करी, जाणीने

आकार ॥ चक्री चतुराई करी, पुछे सकल विचार ॥७॥
ढाल ६६ मी ॥ वहेनी जेहनो जेहशुं रंग ॥ ए देशी ॥ श्रीमिंधर कहोने एह विचार, स्वामी कहे सुण रा जीयारे ॥ चरित तणो नही पार ॥ श्री० ॥ १ ॥ शील शिरोमणी गुण निलोरे, नारद नाम उदार ॥ जरत खेत्रथी आवीयोरे, कांइक पूछणहार ॥ श्री० ॥ ॥ २ ॥ द्वारामती नगरी जलीरे, कृष्ण नरेशर तास ॥ पटराणी वर रुखमणीरे, शील तणो सहवास ॥ श्री० ॥ ३ ॥ तेहनो नंदन अपहर्योरे, छठी रात्रमजार ॥ वैरी वैर न विसरेरे, ए जगनो व्यवहार ॥ श्री० ॥४॥ गाम नगर गीरी कंदरारे, सोधाव्या ते राय ॥ शुद्ध न लाधी तेहनीरे, अति दुःख आणे माय ॥ श्री०॥५॥ निश्चे करवा कारणेरे, ए ऋषी आव्यो जोइ ॥ पक्ष करे जे जेहनोरे, तेही दुखे दुखियो होइ ॥ श्री० ॥६॥ षट खंड नायक विनवेरे, स्वामी प्रकासो एह ॥ कुण वैरी जेह अपहर्योरे, बाल किहांछे तेह ॥ श्री०॥७॥ काल केतले आवशेरे, कुंवर कुल शीणगार ॥ मात पिता मन जावसेरे, निसुणे परखदा वार ॥ श्री० ॥ ८ ॥ मात कन्हेथी बालुमोरे, दैते लिधो जाम ॥ तक्षक पर्वत शीला तलेरे, पाम्यो खेचर ताम ॥ श्री० ॥ ९ ॥ दिन दिन वाधे वये करीरे, चंद कला जिम जोय ॥ अरि त्रिय मित्रहि गतीयारे, साल सरीखो सोय ॥ ॥ श्री० ॥ १० ॥ षोडस लाज लही जलारे, वारु वि

च्या दोय ॥ मिलशे माय बापनेरे, वरस सोलमे सोय ॥ श्री० ॥ ११ ॥ मिलणतणी सहि नाणकारे, जणावी ए सार ॥ पान्हो चडशे पदमनीरे, उपजशे अति प्यार ॥ श्री० ॥ १२ ॥ होस्ये सुकि बावडीरे, जलशुं भरीत अपार ॥ विकशीत पंकज पांखडीरे, भमर करे गुंजार ॥ श्री० ॥ १३ ॥ सुका वृक्ष अशोकजीरे, फलसे विवोध प्रकार ॥ ऋतु विण फल फूले भरयारे, तरुवर अवर अपार ॥ श्री० ॥ १४ ॥ कोइल नाट हू कमारे, मोरा केरा नाच ॥ थाशे विविध वधामणारे, सुंदर मेली साच ॥ श्री० ॥ १५ ॥ मुंगा वचन प्रकासशेरे, वांका सरला होय ॥ अंधा लहेस्ये आंखडीरे, रुप कुरुपा जोय ॥ श्री० ॥ १६ ॥ इण लक्षणे मा जाणसेरे, नंदन आगम वात ॥ सांभल भूप सुलक्षणारे, वयरीना अवदात ॥ श्री० ॥ १७ ॥ देश मगध सुहामणोरे, सालीग्राम प्रधान ॥ सोमदत्त नामे भलोरे, ब्राह्मण गुणनो जाण ॥ श्री० ॥ १८ ॥ तस अग्रेली कामनीरे, नंदनवर अग्नीधान ॥ अग्नीभूती गुण आगलोरे, वायभूती सुजाण ॥ श्री० ॥ १९ ॥ श्री नंदीवर्धन गुरु भलारे, आया विपन मझार ॥ करवा वाद पधारीयारे, बंधव दोय ते वार ॥ श्री० ॥ ॥ २० ॥ विच मिल्यो मुनी सत्यकीरे, भाखे वचन विलास ॥ विप्र किहां तुम्हे चालीयारे, करवा वाद उल्हास ॥ श्री० ॥ २१ ॥ होम किसी हारया तणीरे, विप्र क

हे ल्युं दिव्य ॥ थाप्यो वाद विशेपथीरे, विप्र न माने शीख ॥ श्री० ॥ २२ ॥ मुनी जांखे पूगो तुम्हेरे, सश य होवे जेह ॥ हमने संशय कोइ नहीरे, तुम्हे पूगो संदेह ॥ श्री० ॥ २३ ॥ तुम्हे किहांथी आवीयारे, जां खो विप्र विच्यार ॥ हम आया निज घर थकीरे, ए स्यो प्रश्न प्रकार ॥ श्री० ॥ २४ ॥ ए आगम पूबुं नहीरे, पूबुं परजव वात ॥ परजव कुण कही सकेरे, होइ माणस मात ॥ श्री० ॥ २५ ॥ विप्र सुणो परजव तेणोरे, जाखुं एह विच्यार ॥ इणही ग्रामे विप्र हुतोरे, नामे प्रवर उदार ॥ श्री० ॥ २६ ॥ सो खेति करतो घणीरे, हल खेडावा जाय ॥ आयो जलहर उमहिरे, सो घर सुखो थाय ॥ श्री० ॥ २७ ॥ सात दिहाडा वरशीयोरे, जल हलधार अखंड ॥ उवराज्यो दिन आठमेरे, व्यापी जूख प्रचंड ॥ श्री० ॥ २८ ॥ जंबुक युग तिहां आवियारे, खाधी नाखी तोड ॥ पेट आफरीउ ढोल ज्युरे, चाल्या दशहि गोड ॥ श्री० ॥ २९ ॥ सो जंबुक तुम्ह उपनारे, नहि संदेह लिगार ॥ प्रत्यय कारण साजल्योरे, आगे एह अधीकार ॥ श्री० ॥ ३० ॥ खेत धणी तिहां आवियोरे, खीज्यो देखी जाम ॥ जंबुकनी करी जाथमीरे, मेली उपर वान ॥ श्री० ॥ ३१ ॥ जो न पति जो ब्राह्मणोरे, जाइ देखो सोय ॥ लोक गया तिहां देखवारे, वीग खीसाणो होय ॥ श्री० ॥ ३२ ॥ ए गसठमी ढाल

मेरे, निर्द्धाटण मीथ्यात ॥ गुणसागर आगे कहेरे, ए तो वारु वात ॥ श्री० ॥ ३३ ॥

दुहा ॥ मुनी भाखे प्रवियण सुणो, धरी परतीत अपार ॥ प्रवर विप्रनी आगलें, चारित कहुं सुविचार ॥ १ ॥ हिंस्या कर्म समाचरी, काल कियो तिही वार ॥ मोह वशे आवी लियो, नंदन घर अवतार ॥ २ ॥ देखी मंद्रीर मालिया, जाति समरण लाध ॥ पुत्र पिता जननि वहु, केम कहु अपराध ॥ ३ ॥ एम जाणी मौ ने रह्यो, लोगा मुगो नाम ॥ मुनि भापित साचुं वदे, आगे उभो ताम ॥ ४ ॥

ढाल ६७ मी ॥ सुग्रीव नगरी सुहामणीजी ॥ ए देशी ॥ चक्री भांखे देवशुंजी, तेह मुनीवर केम ॥ बो लाव्यो भाष्या भलीजी, सुणवा लाग्यो प्रेम ॥ १ ॥ जिनेश्वर धन धन थारो ज्ञान ॥ संशय तिमर निवार वाजी, जाणे उग्यो भाण ॥ जि० ॥ २ ॥ मुंगाशु मुनि वर कहेजी, ए जगनो व्यवहार ॥ माता जाये दीकरी जी, पुत्र पिता अवतार ॥ जि० ॥ ३ ॥ वहिन फीरी होय सोकडीजी, वंधव वैरी थाय ॥ विज्ञ लहे मुरखप णोजी, मूरख विज्ञ कहाय ॥ जी० ॥ ४ ॥ ठाकर ते चा कर होवेजी, चाकर ठाकर होय ॥ निर्धन ते धने आ गलाजी, सधन निर्धन होय ॥ जी० ॥५॥ ए व्यवहारे वरततांजी, दोप न एक लिगार ॥ मुंगो भापा वोलि योजी, लीधो संजमभार ॥ जी० ॥ ६ ॥ हारया वाद

विशेषथीजी, होई खीसाणा दोइ ॥ घर आव्या पिता मा
यजी, अति खीजाव्या सोइ ॥ जी० ॥ ७ ॥ साधु उ
पद्रव कारणेजी, शांति आव्या चाळ ॥ यक्ष उपद्रव
टालियोजी, थंभ्या ते ततकाल ॥ जी० ॥ ८ ॥ करु
णा आणी अति घणीजी, छोडाव्या ते राय ॥ दोइ बं
धव माय बापसुंजी, हर्ष्या समकित पाय ॥ जी० ॥
॥ ९ ॥ माय बाप ते मुळगेजी, मारग लाग्या जाण ॥
देश व्रति होइ बांधवाजी, आराधन प्रमाण ॥ जी० ॥
॥ १० ॥ पेहेले स्वर्ग सुलक्षणाजी, पंच पल्योपम
आय ॥ दोइ बंधव देवताजी. विलशे पुण्य प्रभाव ॥
जि० ॥ ११ ॥ नाम अयोध्या छे भलीजी, नगरी अ
ति अभीराम ॥ जयशत्रु नामे भलोजी, राजा गुणनो
धाम ॥ जी० ॥ १२ ॥ शेठ सहु मांहे वडोजी, सागर
दत्त सुजाण ॥ नारी नामे धारणीजी, पाले अरिहंत
आण ॥ जी० ॥ १३ ॥ देव चविने उपनाजी, शेठ
घरे संतान ॥ माणिभद्र मनोहरुजी, पूरणभद्र प्रधा
न ॥ जी० ॥ १४ ॥ प्रज्ञा वले पढिया घणाजी, जोव
नभि वय पाय ॥ परणी सुंदर सुंदरीजी, सुखमें सहु
दिन जाय ॥ जी० ॥१५॥ श्री महेंद्र मुनीश्वरुजी, वन
में आया जाण ॥ राजा शेठ सिधावियाजी, सुणवा
श्री गुरु वाण ॥ जी० ॥ १६ ॥ वाणी सुणी वैरागी
याजी, हुवा संजमधार ॥ श्रावकना व्रत आदरेजी,
तव ते शेठ कुमार ॥ जी० ॥ १७ ॥ काल केतले आ

वीयाजी, साधु दया प्रतीपाल ॥ वंदन जातां वाटमेंजी, मिलियो एक चडाल ॥ जी० ॥ १८ ॥ तेहने साथे कुव रीजी, दोइ साये प्रेम ॥ दुष्ट जातीसुं उपनीजी. हे त जणाव्यो केम ॥ जी० ॥ १९ ॥ श्वाने अने चडाल नेजी, हेज हिये न समाय ॥ नयण जणावे नेहलोजी. अचरिज कह्यो न जाय ॥ जी० ॥ २० ॥ च्यारे आयां चालकेजी, श्री मुनिवरके पास ॥ संशय हरवा मुनि कहेजी, पूर्व नवांतर तास ॥ जी० ॥ २१ ॥ एह थकि नवाति सरेजी, मात पिता तुझ जेह ॥ समकित धर्म वीराधीयोजी, तेहनो फल छे एह ॥ जी० ॥ २२ ॥ ब्रा ह्मण नव पहिले हुवोजी, जीतशत्रु राय उदार ॥ ब्रा ह्मणी होइ रुखमणजी, राजा कीधो प्यार ॥ जी० ॥ २३ ॥ वरस सहस सुख नोगवीजी, नरके पोहतो नूप ॥ मृग हुइ मानस हुवोजी, हुउ गजराज अनूप ॥ जी० ॥ २४ ॥ जाति समरण ज्ञानसुंजी, अणसण दिवस अढार ॥ सु र गतिना सुख नोगवेजी, एह चंडाल विचार ॥ जी० ॥ २५ ॥ ब्राम्हणी नव नमी स्वाननिजी, पामी गती विपरीत ॥ पुरवला संबंधथीजी, मांहो मां हे प्रीत ॥ जी० ॥ २६ ॥ समकीत धर्म ग्रहावियो जी, श्रावकना व्रत बार ॥ अणसण मास ज्युं एकनो जी, आराधी अती सार ॥ जी० ॥ २७ ॥ पहिले सु रलोके गयोजी, ते चंडाल ते वार ॥ पंच पल्योपम आउखोजी, नित्य जिहां जयकार ॥ जी० ॥ २८ ॥

श्रुनि पिण दिन सातनोजी, अणसण पाल्यो जोय॥ काल करी नृप कुंवरीजी, तिणहि नगरी होय॥ जी० ॥ २९ ॥ स्वयंवर मंडप मांडीयोजी, आया राय अनेक ॥ देव करे समझावणीजी, कुमरी लहे विवेक ॥ जी० ॥ ३० ॥ चारित्र पाळी निरमलोजी, पाम्या सुर अवतार॥ एह प्रसगे नांखीयोजी, काम नणी विस्तार ॥ जी० ॥ ३१ ॥ ए जीव दोई थायस्येजी, वटपुर केरा नाथ ॥ कंचनरथने चंद्रप्रनाजी, राजा राणी साथ ॥ जी० ॥ ३२ ॥ अणसण आराधी खरोजी, बंधव दोयसु जाण ॥ स्वर्ग सुधर्में देवताजी, पांच पल्योपम मान ॥ जी० ॥ ३३ ॥ ए सडसठमी ढालमेंजी, समकीत शुद्धी देख ॥ गुणसागर आराधीयाजी, पामे फल सुं विशेष ॥ जी० ॥ ३४ ॥

दुहा ॥ कुशल घणोछे कोसला, नगरी अति मंनाण ॥ पद्मनान्न जग परगडो ॥ राज करे राजान ॥ १ ॥ नाम प्रणामे धारणी, तास धारणी नार ॥ शिलवंति साची सती, सत्यवंति संसार ॥ २ ॥ सुरलोके सुख नोगवी, बंधव दोइ उदार ॥ राणी उरे उपना, युगल पणे अवतार ॥ ३ ॥ वडा तणो मधु नाम वर, लघुनो कैटन्न नाम ॥ थापियो महा मोहोछवे, कुमर दोइ सकाम ॥४॥ परणावि योवन पणे, मधुने दीधो राज ॥ युवराज पदवि लघु नणि, नृप सारया निज काज॥ ५ ॥

ढाल ६८मी ॥ शांति जिणंद सोनागी, हुंतो थयो

तुम गुण रागी ॥ ए देशी ॥ राजा राज करंत, युवरा जा जयवंत ॥ सूरी चंदनी जोड, पूरे मन केरा कोड ॥ १ ॥ सारे परजाना काज, जगमाही जस गाजे. श त्रु कंद कुदाल, मोटा जेह नृपाल ॥ २ ॥ एक दिन सु णयो कोलाहल, नृप पूछे ए स्युं कल कल ॥ प्रतिहारीयो भापे, स्वामी देश विणाशे ॥३॥ भीमसेन नामें नृपाल, दुर्ग वले सुविसाल ॥ पशु माणस लेइ जाय, उज्ज ड देश ए थाय ॥ ४ ॥ नृपति लाग्यो जइ चाहे, दु र्ग तणो बल साहे ॥ फोज फीरी तव आवे, पाछो सो र मचावे ॥ ५ ॥ पुर बाहीरथी जे पावे, तेतो लेइ सि धावे, तेथी ए सहु लोक, पाडे प्रभु पोक ॥ ६ ॥ ए म सुणता ते राय, देइ ददामे घाव ॥ हयवर गयवर गाजी, दलबल अति घणो साजी ॥ ७ ॥ चढीयो वा र न लाइ, रेणु रही नभ छाइ ॥ वाटे सूर वधाए ॥ कायर धूजणी थाए ॥ ८ ॥ आया वटपुर चाली, ना वी सके कुण टाली ॥ हेमरथ सामो आयो, राय त णे मन भायो ॥ ९ ॥ हेमरथ हाथाशुं खोवे, आपे आप विगोवे ॥ नृपने मंदिर लावे, जाणे नारी गमा वे ॥ १० ॥ आदर अति घणा किधा, जिमवा बेसण दिधा ॥ इंद्रप्रभा पट नारी. साथे कहे अविच्यारी ॥ ॥ ११ ॥ भामनी भाजंग फलीयो, आज दिहाडो ए वलीयो ॥ आपण पिरसणों ए किजे, राय तणो मन रिझे ॥ १२ ॥ कामनी कंतशुं बोले, नृपनुं कां डमडो

ले ॥ नृप भुयंगम कालो, तेहथी दिजे टालो ॥ १३ ॥ नटकी बोलीयो इस, मन आणी अति रीस ॥ एवडो स्यो अभीमान, तुंतो दासी समान ॥ १४ ॥ राणी पीरसवा आवी, रायतणे मन भावी ॥ राजा रीझीयो जाणी, उलखीयो मन राणी ॥ १५ ॥ राजा उठी सी धायो, ततक्षण मंत्री बुलायो ॥ ए राणी घर लावो, हमशुं प्रेम मीलावो ॥ १६ ॥ मंत्री राय संकेत, चा ल्या कटक समेत ॥ आई भीमशुं अभीयो, सूर महारण लभीयो ॥१७॥ झगमो अति घणो लाग्यो, नृपति भी भजी भाग्यो, बांधीने जब लीधो, कारज रायनो सीधो ॥ १८ ॥ राजा पाछो एवलीयो, मनमथ भुते एछली यो ॥ तन मन रागसुंराच्यो, राणीशुं मन माच्यो ॥ ॥ १९ ॥ छडा पयाणेए आवे, वटपुर वाट भुलावे ॥ मंत्री मंत्र उपायो, राय अयोध्याये आयो ॥ २० ॥ ए अडसठमी ढाल, जीती आयो भूपाल ॥ श्रीगुणसाग र राय, राजाजी वयर वसाय ॥ २१ ॥

दुहा ॥ राय अयोध्या आवीयो, मनमें अति उ चाट ॥ खीजी कहे केम भुलीयो, वटपुर केरी वाट ॥ १ ॥ वाचा पालतुं आपणी, अहो मोटा प्ररधांन ॥ सो वाता की वात ए, जो चाहे मुझ प्राण ॥२॥ कलीमल अरती असुख अती, सूता निंद म जोय ॥ अन्न न पाणी भा वही, सोक्यो जाइ सोय ॥ ३ ॥ रायकुमरी नवयौवनी, साथे गमन राजान ॥ इंदुप्रभा राणी हीवे, साले सा

ल समान ॥ ४ ॥ सस्नेहां तो दुख लहे, निस्नेहा सुख होय ॥ तिल सरसव जग पिलीए, रेतन पीले कोय ॥ ॥ ५ ॥ रागे वाह्यो उकले, वैरागी समजाय ॥ चोल सजीठा रस लीए, वाकस नवि पिसलाय ॥ ६ ॥

ढाल ६९ मी ॥ नेमीश्वर विनती मानीएजी ॥ ए देशी ॥ राजेसर कहीयो मानीएजी,कहे मंत्रीस सुजाण ॥रा०॥ ए टेक ॥ कुव्यसन केरो संग न किजे, कुविसन दुःख दातार ॥ तिण माही ए अति मोहोटो, परत्रीय केरो प्यार ॥ रा० ॥ १ ॥ विण दोरे ए बंधन कहीए, विण व्याधे असमाध ॥ विण काजल ए काली सा कहावे, विण मदिरा असमाध ॥ रा० ॥ २ ॥ आंख उनी दो निंद तणोक्षय, छिण छिण दाजे देह ॥ तेहने नित्य चद्र वारमोरे. जेहनो परघर नेह ॥ रा० ॥ ३ ॥ वरस सात साढानो मार्यो, थावरनो अति लाग ॥ जाव जीव लगे ए अति पीके, पर रमणीनो राग ॥ रा० ॥ ४ ॥ जगमाहे अपजसनो पडहो, आपदनोरे संकेत ॥ शिवपुर धारक पाट कहावे, पर रमणीनो हेत ॥ रा० ॥ ५ ॥ परनारी मुख जोतां पलटे, पलक पलक जेलीवार ॥ तेताहि वर्ष पचेवो, कुम्भी नरक मझार ॥ रा० ॥ ६ ॥ पररामासुं राग करंता, देवा द्रव्य विणास ॥ साभ्रंसा सातमो गांडी अनेरो, ठामन दिसे तास ॥ रा० ॥ ७ ॥ राजा भांखे सुण मंत्रिश्वर,ए सब साची वात॥ पिण माहरे मन तो रढ लागी,

कल्प समा दिन जात ॥ रा०॥८॥ पंखि पतिने दिवसे न सुझे, राते न सुझे काग ॥ सुझने तो दिन रात न सुझे, केहेण तणो नहि लाग ॥ रा०॥९॥ ढोल बजावे ढोलियारे, पिण बाहरे नवि जाय ॥ हेतवंता तो हेत बतावे, जोर न कोइ थाय ॥ रा०॥१०॥ एतले ऋतु राजा चलि आयो, नामे वसंत वसंत ॥ वनराजी फल फूल चीराजी, लोक हसंत रमंत ॥ रा० ॥ ११ ॥ ठाम ठामना राय बोलाया, खेलणको मीस ठाण ॥ इंद्रप्रभासुं राजा तेड्यो, हेमरथ प्रीत प्रमाण ॥ रा० ॥ ॥ १२ ॥ रमणीए राजा समझाव्यो, ए मुझ उपर खेल ॥ मधु नृप मांड्यो मूरख प्रिडडा, मकर मकर मन मेल ॥ रा० ॥ १३ ॥ रावण पर त्रिया दोष न जाण्यो, राम हेम मृग जेम ॥ जोया दूषण राय युधीष्टर, जाणी शक्यो नहि तेम ॥ रा० ॥ १४ ॥ वात अनेक कहि समझावे, राय न माने एक ॥ होण हार साथे कुण बलियो, ए नर आण विवेक ॥ रा०॥१५॥ राणी लेइ आयो राजा, मधु राजा सुख पाय ॥ खेलि वसत ज्युं लोक विसर्ज्या, राणी राखी राय ॥ रा० ॥ १६ ॥ पटराणी करी थापी सुंदरी, मधु राजा मन रंग ॥ सुख माने ते विविध प्रकारे, इंद्र इंद्राणी संग ॥ रा० ॥१७॥ हेमरथ राजा वात सुणी जब, विव्हल थयो अपार ॥ बलिया साथे जोर न चाले, आइ अइ कर्म विचार॥ रा०॥१८॥ खिण रोवे खिण जोवे दह दिशि,

खिण आगणे खिण सेज ॥ खिण गोखे चड बारे दे
खे, फाटे हियडो हेज ॥ रा० ॥ १९ ॥ वस्त्र विहुणो वि
कल रूपे, धुले घूसरी अंग ॥ प्रीया प्रीया मुख अधी
क पूकारे, सबहि बात विरंग ॥ रा० ॥ २० ॥ पुरी अ
ज्योध्या चालि आयो, मर्म पाड्यो भूपाल ॥ नारी नि
रखणनो अभीलाषी, साथे फिरे बहु बाल ॥रा०॥२१॥
सोर सुणंतां गोखे चढिने, नारी निहाल्यो नाथ ॥
धाय मोकली लीयो बुलाइ, दूर करी सब साथ ॥
रा० ॥ २२ ॥ कां तु एहवो पूछे पदमनी, पूरव प्रेम प्र
कार ॥ नारी विछोहो महा दुखदाइ, कवण अछे तुझ
नार ॥ रा० ॥ २३ ॥ तुं प्यारी हुं प्रितम थारो, राख
ले माहरा प्राण ॥ पहिलि शील न मानी पापी, जल
वहि गयो मुलतान ॥ रा० ॥ २४ ॥ जोरे जाके जाण
लहिने, राजा करशे भांड ॥ भांड पुरुपनुं कोइ न था
शी, भांड थइ तुं गांड ॥ रा० ॥ २५ ॥ कोहिश वने मां
हि कंसारी, घडिया निपट निकाम ॥ वेयर जातिने बा
हिर हींडी, न लहे एकहि दाम ॥ रा० ॥ २६ ॥ चित
डा भींतर चिटपट लागी, साल सरिखो बोल ॥ सा
चो शिल सलुणो जाण्यो, विखीया विख सम तोल ॥
रा० ॥ २७ ॥ मधु राजा माननीसुं मोह्यो, मांने मेरु
समान ॥ आपणा पोज एतले आयो, मोह तणो अव
सान ॥ रा० ॥ २८ ॥ परनारी लंपट दृढ बांध्यो, आण्यो
राजा पास; राजा नाखे वेग विणासो, इहां नहीं अरदास

रा०॥२९॥ राणी पूछे का मारिजे, स्वामी ए नर आज ॥ राजा बोले एणे किधो, मोटो आज अकाज ॥ रा० ॥ ३० ॥ ए काडी ए सतरे पातिक, तोले घाली जोय ॥ ए कासी परनारी गमननो, पातिक भारी होय ॥ रा० ॥ ३१ ॥ परनारीना दूपण ए तो, आप तुम्हे शुं किध ॥ हुं परनारी किधी प्यारी, जगमें अपजस लिध ॥ रा० ॥ ३२ ॥ कहेणी तो जगमांही बहुली, करणी विरला जोय ॥ मोटा भांडा गोत न लागे, रांक हणया सुं होय ॥ रा० ॥ ३३ ॥ एह वचने राजा वेरागयो, मनमे करे विचार ॥ कुलने एह कलंक चढायो, धीग धीग मुझ अवतार ॥ रा० ॥ ३४ ॥ नवजोवनमें वांध्यो जे नर, नृप छोडावे ताम ॥ वोहरो तेमी शीखज आपी, ए हम करजे काम ॥ रा० ॥ ३५ ॥ इण अवसर मुनिराज पधारया, वोहरण केरे काज ॥ नृप आहार सुजतो दिधो, सफल गणयो दिन आज ॥ रा० ॥ ३६ ॥ जेष्ट पुत्र तव पदवी थाप्यो, मधु कैटभ नृप सोय ॥ सजम लेई स्वर्ग वारमे, देव हुआ ते दोय ॥ रा० ॥ ३७ ॥ इंद्रप्रभा दिक्षा व्रत पाली, राजा साथे सहाय ॥ कनकमाला ए आय उपनी, नेह बण्यो न रहाय ॥ रा० ॥३८॥ एगुणसत्तरमी ढाल भलेरी, पूर्व भवांतर भेद ॥ गुणसागर जिनवरने वचने, टलीयो संघलो खेद ॥ रा० ॥ ३९ ॥

दुहा ॥ मधु भूपतीनो जीव जे, चारित्रने संकेत ॥

स्वर्ग तणा सुख भोगवी, पूर्व पुण्यने हेत ॥ १ ॥ श्री
परजन कुमारजी, रुखमणी उर उत्पन्न ॥ कृष्ण घरे हरी
वशमें, माचो पुत्र रतन्न ॥ २ ॥ कैटन्न सुर सुख भोग
वी, लेस्ये वर अवतार ॥ जांबुवती उरे सही, होस्ये
सांब कुमार ॥ ३ ॥ राय हेमरथ नारीनी, आणी अर
ति अपार ॥ काल करी भवमें भमी, कोप तणे प्रकार
॥ ४ ॥ धुमकेतु नामे हुओ, असुरां केरो राय ॥ ते
ए बालक अपहर्‍यो, वयर विलय नवी जाय ॥ ५ ॥

ढाल ७० मी ॥ राधा लोचन रंगमो ए देशी ॥ जि
नवाणी श्रवणे सुणी, भवि पाम्या प्रतिबोध ललना ॥
करे आपणमें खामणा, टाले वैर विरोध ललना ॥ १ ॥
धन श्रीमिंधर स्वामीजी, जे भांजे संदेह ललना ॥ ध
न चक्री जिणे पुछीयो, पूर्व भवांतर एह ललना ॥ ध० ॥
॥ २ ॥ नारद ऋपी करकोसथी, निकलीयो तेहीवार ॥
ल० ॥ अलजयो आतुर थयो, देखण बाल कुमार ॥
ल० ॥ ध० ॥ ३ ॥ गीरी वैताढे आवीयो, यमसंवर
घर जाय ॥ ल० ॥ कनकमालानी भक्तीथी, ऋपी रली
आयत थाय ॥ ल० ॥ ध० ॥४॥ गूढ गर्भणी तुं सुणी,
जायो सुंदर नंद ॥ ल० ॥ ऋपीजी तुम प्रासादथी, नं
दन आनंद कंद ॥ ल०॥ ध०॥ ५ ॥ देखु थारो नानमो,
परखुं लक्षण सार ॥ ल० ॥ ऋपी आगे लोटावीयो
दिए आशीश तेवार ॥ ल०॥ ध० ॥६॥ चिरंजीवो चिं
रनंदजे, पूरे मातनी आश ॥ ल० ॥ ऋपी आदेशे उ

ठाइयो, हियडे धरयो उल्हास ॥ ल० ॥ ध० ॥ ७ ॥ मात
मुखो अरि सनमुखो, लक्षण गुण गरीठ ॥ ल० ॥ स
ब विध सुंदर देखतां, लोचन अमीय पइठ ॥ ल० ॥ ध०
॥ ८ ॥ नारद आव्या द्वारीकां, हरी रुखमणीके पास
॥ ल० ॥ जिनवर वचन सुणावीया, धूरथे ह्वालगे ता
स ॥ ल० ॥ ध० ॥ ९ ॥ हीरा चुनी लालडा, मोती मा
णिक जोय ॥ ल० ॥ जिहां जाये तिहां सादरा, तिम
करमे तो होय ॥ ल० ॥ ध० ॥ १० ॥ हरी रुखमणी आ
नंदीया, सुणी सुतना अवदात ॥ ल० ॥ परम महा
सुख पामीयो, आनंदमें दिन जात ॥ ल० ॥ ध० ॥ ११ ॥
आशा सब जग वालही, आशा अमर अपार ॥ ल०
॥ धर्म कर्म आशा भली, आश म गंमो लिगार ॥ ल०
ध० ॥ १२ ॥ आशाए धन संपजे, आशाए संतान
॥ ल० ॥ आशाए रण जीतिए, आशाए सनमान ॥
ल० ॥ ध० ॥ १३ ॥ एक न हुती पाधरी, नंदीषेणनी
नार ॥ ल० ॥ सहे सबहु तेरे परगटी, आशाने अधी
कार ॥ ल० ॥ ध० ॥ १४ ॥ आशाए हरीचद्रजी, उ
थसेन नृप देख ॥ ल० ॥ आपद काढी आकरी, पुन
रपी राय विशेप ॥ ल० ॥ ध० ॥ १५ ॥ रावण सीता
अपहरी, पमीयो राम विछोह ॥ ल० ॥ सा जीवी आ
शा थकी, फिरी पामी अति सोह ॥ ल० ॥ ध० ॥ १६ ॥
पवनराय घरे अंजना, पतिनो अति अपमान ॥ ल०
आशाए देवावीयो, आदर मेरु समान ॥ ल० ॥ ध० ॥

॥ १७ ॥ रामचंद्र नल पांमत्रा, आशा तणे वल जोय ॥ ल० ॥ फिरी वहोडावि आपणी, आश करे सो होय ॥ ल०॥ घ०॥१८॥ वरस जाशे आशा वमी, फलशे मननी आश ॥ ल० ॥ आश बले रुखमणी तणो, होसे लिल विलास ॥ ल० ॥ घ० ॥ १९ ॥ मंदिर संवर कालने, वाधे बाल कुमार ॥ ल० ॥ हाथोहाथे संचरे, उपजावे अति प्यार ॥ ल० ॥ घ० ॥ २० ॥ जिम जिम वाधे वए करी, तिम तिम वाधे एह ॥ ल० ॥ ऋद्दी वृद्दी सुख संपदा, अरु वाधे धन नेह ॥ ल० ॥ घ० ॥ २१ ॥ प्राण थकी प्यारो घणो, मातानीने सोइ ॥ ल० ॥ पिता परम सुख दायकुं, परी अण प्रितो जोइ ॥ ल० ॥ घ० ॥ २२ ॥ पढीगुणी पंमित थयो, निर्मल बुद्धि उदार ॥ ल० ॥ शस्त्र शास्त्र आदेकला, वहोत्तरना जाणनार ॥ ल० ॥ घ०॥ २३॥ बालपणो वोली करी, यौवननी वय पाय ॥ ल० ॥ धिर विरने साहसिक, सूर शीरे कहेवाय ॥ ल० ॥ घ० ॥२४ ॥ हयगय रथ पायक तणी, सेना सजी अपार ॥ ल०॥ सीमाडा सहु साधीया, साध्या जेह कूंजार ॥ ॥ ल० ॥ घ० ॥२५ ॥ देश जीती घर आवीयो, लावीयो वर वस्त ॥ ल० ॥ भूचर खेचर मानवी, माने आण समस्त ॥ ल० ॥ घ० ॥ २६ ॥ ए शीत्तरमी ढालमें, आण मनावण नाम ॥ ल० ॥ गुणसागर गुरु आपणे, प्रगट थयो जग काम ॥ ल० ॥ घ० ॥ २७॥

चोपइ ॥ खंड खंड रसले नवनवा, सुणतां मिठी साक र जेवा ॥ श्रीहरी वंश चरित्र जय जयो, त्रिजो खं ड ए पूरण थयो ॥ १ ॥ इति श्री हरी वंस विस्तार प्रबंधे ढाल सागर तृतिय खंड समाप्तः ॥

॥ श्री ढालसागर हरीवंस प्रबंध चतुर्थ खंड प्रारंभः ॥

दुहा ॥ कर्म हणी केवल लह्यो, सुगति पहोता स्वा मि ॥ त्रिविध त्रिविध त्रिहु कालनां, सिद्ध नमु शिर नामि ॥ १ ॥ अब चोथा अधीकारना, भविथण सुणो सुविचार ॥ गुणवंतानां गुण ए, सांभलतां सुख अपार ॥ २ ॥ मात पिता सुख पामियां, देखी कुमरनां काम ॥ लोक प्रसिद्धो आपियो, युवराज पद ताम ॥ ३ ॥ प्रचुर वित्तनु व्यय करी, संतोख्यो संसार ॥ याचक जन मुख उच्चरे, मदन सुयश विस्तार ॥ ४ ॥ नृप तिने भल भामनी, पंचसया परीवार ॥ नंदन पिण त स तेतला, महा कला गुण जाण ॥ ५ ॥ प्रभुता पेखी कामनी, दुमनी पडी दुमात ॥ आप आपणा पुत्रसुं, एह जणावी वात ॥ ६ ॥ सिंहणी एकज सुत जणीं, निर्भय थाए अपार ॥ खरी खरी दश पुत्रणी, वहे गा रको भार ॥७॥ मदन बलि महिमा निलो, तुमतो सघ ला रंक ॥ दिन थोडामां देखज्यो, राजा हुउ निसंक ॥८॥

ढाल ७१ मी ॥ इण पुर कंबल कोइ न लेशी ॥ ए देशी ॥ वचन सुणी निज माता केरां, कोपे चमयां

ने पुत्र घणेरा ॥ मारा मदनने वार न लावा, तो तुम आगे हम फिरी आवा ॥ १ ॥ मदनसुं मांडे प्रिति अपार ॥ माहरे तुं ठाकोर अधार ॥ कूड केलवे कपटि केतां, सांभलजो मुझ कहेतां तेतां ॥ २ ॥ भोजन आसन शयनमझारी, खान पानमें दिए विष भारी ॥ अमृत होई भणमे सोइ, पहुंची शके उपावन कोइ॥३॥ डाकणी शाकणी न सके लागी, भूत पिशाचणी जाए भागी ॥ वांको ते फिरी सुधो थाय, दिन दिन महिमा अधिक दिखाय ॥ ४ ॥ गिरी वैताढ्य गयां एकवार, सहेस शिखरनो भुवन उदार ॥ सहुको आवी बेठां जाम, वात कहे आपसमें ताम ॥ ५ ॥ गिरी शिखरे एक गोपुर देखि, वज्र मुखे तव वात विशेखी ॥ जो जाए कोइ गोपुर मांहि, मन वंछित फल पावे सांहि ॥ ६ ॥ मदन गयो तिहां हाली चाली, जाग्यो देव वजावी ताली ॥ मदन साथे कियो संग्राम, हारि दियो सिंघासण ताम ॥ ७ ॥ मत्र तणो गण दिधो वारू, अवर दियो भडार अपारू ॥ मुकट दियो रत्नाको निको ॥ आभ्रण सहिलमुं दीधो टीको ॥ ८ ॥ गूफा दुसरी मांहि सीधावे, छत्र भलो युग चामर पावे ॥ खड्ग मनोहर वस्त्र विशाल, कुसुम वासन अधिक रसाल ॥ ९ ॥ गूफा तिसरी माहि आवे, नाग सेज वर वेण लहावे ॥ पाय पिढ सिंघासण कोमल, वस्त्र विभूषण पावे सोमल ॥ १० ॥ मंदिर कारी विद्या विधि, सेन तणी र

खवाली सीधी ॥ ए दोए विद्या आपी देवा, करजोडी ने मागे सेवा ॥ ११ ॥ चउथीवारे सो अवगाहे, जल वावीने पर्णायो हलावे ॥ मकरध्वज वर वारु लहियो, मकरकेतु सो नाम कहियो ॥ १२ ॥ अग्नीकुंड मांहे पग ठावे, वार पंचमीसुं शोभा पावे ॥ कनक वस्त्र अग्ने धोवाए, युग्म लह्यां ते पुण्य पसाए ॥१३॥ मेपाकारे पर्वत दोई, छठिवार गयो तिहां सोइ ॥ मिलतां कोपर साथे खंडे, कुंडल युग्म लहि अती तडे ॥ १४ ॥ वार सातमीए सहकार, उपर चढियो मदन कुमार ॥ झंझोडी फल पाडी नांखे, वानर रूप तदा सुर नांखे ॥ १५ ॥ आप जणावी चरणे लागी, बोल्यो देव प्रभु वडभागी ॥ गगन गतिनी पावडी विशाला, आपे मुकट सुधारस माला ॥ १६ ॥ वार आठमी कपीठ तणो वन, चाल्यो मदन महा निर्भय मन ॥ तरु उपर चढियो ततकाल, गज रूपि सूर अती विकराल ॥ १७ ॥ युद्ध करी प्रभुने वश होइ, मन गमतो वर आपे सोइ ॥ गज रूपी सूर हुं तुं स्वामी, समय समरवो अवसर पामी ॥ १८ ॥ नवमी वारे परवत उपर, चाल्यो कामदेव साहस धर ॥ भुजंगासुर मेहेला तव जाइ, उठियो करी संग्राम सजाइ ॥ १९ ॥ जाती भणी दीधो हयरत्न, काठो कवच जीवनो यत्न ॥ मुद्रीका मन मोहन आपी, चाल्यो तास तिहां थीर थापी ॥ २० ॥ दशमी वार सराव मुखे गिरी, हरी

अंगज आयो जिम निज घरी, अंगद कंठीका वर लाधी, कंदोरो लायो सूर साधी ॥ २१ ॥ एकादशमी वार मनोज्ञव; बराह तणे आकारी गयो तव ॥ धनुष्य पुष्प त्रय पाम्यो पूरो, जय नामां वर शंख सनूरो ॥ २२ ॥ बारसमी वारे बलवतो, पंकज वनमें जाय रमंतो ॥ विद्याधर बांध्यो छोडावे, कंन्या काम त्रणि परणावे ॥ २३ ॥ विद्या दोइ अनेरी दिधी, इंद्रशुं जाल करी प्रसिद्धी ॥ हार हरख शुं आप्यो रुडो, मान्यो गुण नवि ए कूडो ॥ २४ ॥ तेरसमि वारे अति तंडन, काल वने आयो कुल मंडन ॥ जीत्यो दैत्य न लागी वार, आप्यो कुसम धनुष्य उदार ॥ २५ ॥ मदन मोहन तायन सोपण कर, उन्मादन ए पंच बाण वर ॥ जन मोहन युवति उन्मादन, मदन नाम तिहांथी हरीनंदन ॥ २६ ॥ चउदशमी वारे सु उपचारे, भीम गूफा मांहे पाव धारे, छत्र पुष्पको फूलकि सेज, आपे असुर धरी अती हेज ॥ २७॥ भाइ मरवा कारण मेल्यो, आपणमें चतुराइ खेल्यो ॥ पुण्य वले रुखमणीको जायो, तिम तिम वधतो जाय सवायो ॥ २८ ॥ वने रणे अरीधे रणमांहि, अग्नी नीर सागरमें प्राही ॥ सोवन जागत विच विचालो ॥ पुण्य एक मोटो रखवालो ॥ २९ ॥ एकाहत्तरमी ढाल वखाणी, वक्ता श्रोता ने मन मानी ॥ श्री गुणसागर पण्य करीजे, मदन कथा मन मांहि धरीजे ॥ ३० ॥

दुहा ॥ लाज देखी नव नव परे, आणे रीस अपार ॥ जोर न चाले जबरसुं, पिण न तजे अविचार ॥ १ ॥ खेदि काढे नित्यको, सूरज जग हितकार ॥ तिमर न व्याप्या विण रहे, ए दुर्जन अविचार ॥२॥

ढाल ७२ मी ॥ निमजी ज्ञान वरसोनी ॥ए देशी॥ वज्रमुखो कहे माइजी ॥ मन मोहना ॥ तुम्ह सम अवर न कोइ ॥ लाल मन मोहना ॥ जिहां जिहां जाई संचरो ॥ म० ॥ लाज घणेरो होय ॥ ला० ॥ १ ॥ पनरस मी वारे हिवे ॥ म० ॥ विपुल वन पाउधार ॥ ला० ॥ गज जिम आयो गाजतो ॥ म० ॥ तव ते विपन मझार ॥ ला० ॥ २ ॥ नाग जयंतक वे तिहां ॥ म० ॥ वाहनी एक विसाल ॥ ला० ॥ तेहने कांठे तरु तले ॥ म० ॥ पद्म शिला सुवीशाल ॥ ला० ॥ ३ ॥ रुपशुं योवन गुणवंती ॥ म० ॥ पद्मासन आकार ॥ ला० ॥ स्फटीक तणी जप मालिका ॥ म० ॥ ध्यावे ध्यान अपार ॥ ला० ॥ ४ ॥ श्वेत वसन विराजतां ॥ म० ॥ मस्तक बुटा केस ॥ ला० ॥ शोभा पोखे सुंदरी ॥ म० ॥ वर्णे गौर विशेष ॥ ला० ॥ ५ ॥ चंद्रमुखी मृगलोचनी ॥ म० ॥ वांकी भमुह कमाण ॥ ला० ॥ तिन लोकनी नारीनो ॥ म० ॥ बेठी लेइ गुमान ॥ ला० ॥ ६ ॥ सर्व अवेवां सोहनी ॥ म० ॥ रमणी रुप रसाल ॥ ला० ॥ मदन तणे मन मोहनी ॥ म० ॥ लागीए ततकाल ॥ ला० ॥ ७ ॥ पंच बाण लागा खरां ॥ म० ॥ म

दन थयो बेफाम ॥ ला० ॥ हम न जावा पावही ॥म०
॥ जेसु जीनकी रहाम ॥ ला०॥८॥ विबुधवत शक आ
वीयो ॥ म० ॥ उनो करीय जुहार ॥ ला० ॥ कुवर पू
छे देवसु ॥ म० ॥ कुमरीनो सुविचार ॥ ला० ॥ ९ ॥
देव भणे कुवर सुणो ॥ म० ॥ खेचर प्रभंजन नाम ॥
ला० ॥ वाग देवी दिपती भली ॥ म० ॥ जाइ कुमरी
सकाम ॥ ला० ॥ १० ॥ रती नामे गुण आगली ॥म०
॥ नव योवनमें एह ॥ ला० ॥ कुंअर कहे कष्टे करी ॥
म० ॥ कां खीजावे देह ॥ ला० ॥ ११ ॥ रायतणे घर
आवियो ॥ म० ॥ योगी लेवण आहार ॥ ला० ॥ कु
मरी वर पूछीयो ॥ म० ॥ नांख्यो मदन कुमार ॥ला०॥
॥ १२ ॥ योग मिले तेहनो किहां ॥ म० ॥ इणही वन
अभीराम ॥ ला० ॥ ते माटे तप ध्यानशुं ॥ म० ॥ ए
वंछे वर काम ॥ ला० ॥ १३ ॥ लक्षण गुण आकार
शु ॥ म० ॥ सो प्रभु तुही सकाज ॥ ला० ॥ कृपा
करी कन्या तणा ॥ म० ॥ पूरो मनोरथ आज ॥ ला० ॥
॥ १४ ॥ पाणी ग्रहण करावीयो ॥ म० ॥ पूग्या मन
ना कोड ॥ ला० ॥ कामदेव रती कामनी ॥ म० ॥ ए
दोई अविहड जोड ॥ ला० ॥ १५ ॥ लाभ सोलमो
तीणे वने ॥ म० ॥ सकटा सुरथी होय ॥ ला० ॥ का
मधेनु पामी भली ॥ म० ॥ पुष्प तणो रथ जोय ॥ला०॥
॥ १६ ॥ एवं सोलह लाभशुं ॥ म० ॥ मदन महा म
यमंत ॥ ला० ॥ पामी शोभा पुण्यथी ॥ म० ॥ पुण्य

वडो एकंत ॥ ला० ॥ १७ ॥ जोतरी रथ पुप्पा तणो ॥ म० ॥ काम अने रतीनार ॥ ला० ॥ बेशी आवे लिलशुं ॥ म० ॥ माथे छत्र सुधार ॥ ला० ॥ १८ ॥ चामर ढोले खेचरी ॥ म० ॥ आगे वहु परिवार ॥ ला० ॥ दीन सुखा भाइ सहु ॥ म० ॥ सेवक रूपी अपार ॥ ला० ॥ १९ ॥ सोले लाभे शोभतो ॥ म० ॥ आवे काम कुमार ॥ ला० ॥ नगरी तणी शोभा करी ॥म० ॥ मुख मुख जय जयकार ॥ ला० ॥ २० ॥ कामनी कौतकने मिली ॥ म० ॥ तरुणी बुढी वाल ॥ ला० ॥ रती रतीपतीने देखवा ॥ म० ॥ करे कुतुहल ख्याल ॥ ला० ॥ २१ ॥ खवर नही अंबर तणी ॥ म० ॥ थानवीपर्यय थाय ॥ ला० ॥ तुट्यो हार न जाणही ॥ ॥ म० ॥ मोती खीर खीर जाय ॥ ला० ॥ कंकण काने पहेरीयो ॥ म० ॥ गले कटी सूत्र उदार ॥ ला० ॥ माथे पहेरी मेखला ॥ म० ॥ कटी पेहेर्यो वरहार ॥ ला० ॥ २३ ॥ आंखे कुंकुम आंजीयो ॥ म० ॥ काजल लगायो गाल ॥ ला० ॥ आडंबरी अलते करी ॥ म० ॥ आई तमासे चाल ॥ ला० ॥ २४ ॥ एक भणे भल भामनी ॥ म० ॥ ए कर्मे तो कंत ॥ ला० ॥ पासी परतक्ष पद्मनी ॥ म० ॥ रती राणी गुणवंत ॥ ला० ॥ २५ ॥ एक वदे वनीतावली ॥ म० ॥ ए धन नारी उदार ॥ ला० ॥ सर्व सुलक्षण गुणनिलो ॥ म० ॥ पामी भल भरतार ॥ ला० ॥ २६ ॥ हयवर ग

यवर वाहनी ॥ म० ॥ लोक तणो नही पार ॥ ला०॥
दाने जलहल वरसतो ॥ म० ॥ आया राज दुवार ॥
ला० ॥ २७ ॥ राय तणे पाय प्रणमीयो ॥ म० ॥ रा
य दियो बहु मान ॥ ला० ॥ प्रभुता पेखी पुत्रनी ॥
म० ॥ जाण्यो जन्म प्रमाण ॥ ला० ॥ २८ ॥ मा मि
लवाने अलजीयो ॥ म० ॥ आवी लागो पाय ॥ ला० ॥
उठाइ उचो लीयो ॥ म० ॥ चुंब्यो कंठ लगाय ॥ ला०
॥ २९ ॥ विनय करी विधीशु तदा ॥ म० ॥ आगे
बेठो काम ॥ ला० ॥ वारंवार अवलोकही ॥ म० ॥
रूप अनोपम ताम ॥ ला० ॥ ३० ॥ कृष्ण श्वेतने रा
तडां ॥ म० ॥ लोचण निला धाम ॥ ला० ॥ कंबु कं
ठसुं कोमलुं ॥ म० ॥ चंद्र वदन अभीरामी ॥ ला०
दंत पंक्ति मुक्तामणि ॥ म० ॥ राति जिहां जास ॥ ला०
॥ नाक शिखा दिवा तणी ॥ म० ॥ अधर प्रवाला ता
स ॥ ला० ॥ ३२ ॥ कोमल कुंतल शामला ॥ म० ॥
जाडी जंघा जाण ॥ ला० ॥ भूजा ललित लांबि घणी
॥ म० ॥ पोहला पाय वखाण ॥ ला० ॥ ३३ ॥ वक्ष
स्थल बनतो महा ॥ म० ॥ मेरु भिंत आकार ॥ ला० ॥
मृगपतिनी कटि उपमा ॥ म० ॥ वर्णे सुवर्ण अपार
॥ ला० ॥ ३४ ॥ माता देखी मनोहरु ॥ म० ॥ सुत
नी सुंदर शोभ ॥ ला० ॥ रमण हसण संभोगनो ॥ म०
॥ लाग्यो मनमें लोभ ॥ ला० ॥ ३५ ॥ वेधी मनमथ
बाणसुं ॥ म० ॥ दीन मुखी ततकाल ॥ ला० ॥ पाले

मारी पोयणी ॥ म० ॥ तेहवी थइ सा बाल ॥ ला० ॥ ॥ ३६ ॥ हाथ कपोला थापियो ॥ म० ॥ आतुर अ धीक उदास ॥ ला० ॥ डसक डसक रोवे खरी ॥ म० ॥ लांबा लिये निसास ॥ ला० ॥ ३७ ॥ एह विधी देखी खेचरी ॥ म० ॥ उठि चल्यो मयण ॥ ला० ॥ आव्यो मंदिर आपणे ॥ म० ॥ मनमांहे सुख चयन ॥ ला० ॥ ३८ ॥ ए बोहोत्तरमी ढालमें ॥ म० ॥ रति सा थे घरवास ॥ ला० ॥ गुणसागर कही को शके ॥ म० ॥ कोड पवाडा तास ॥ ला० ॥ ३९ ॥

दुहा ॥ मदन गयो मंदीर चली, माननी मनहि म झार ॥ अरति हिलुर बाधी महा, सो जाणे किरतार ॥ १ ॥ रूप नहि ए पासगे, हिए विमासी जोय ॥ दिवे पडे पतंगीयो, शोच करे नहि कोय ॥ २ ॥

ढाल ७३ मी ॥ एकवार घर आवे हो मोहना ॥ ए देशी ॥ मोहन नावे जब लगे. तब लगे चयन न होय ॥ उन्हालाकी वेलुं ज्युं हो, सुकी जाये सोय ॥ मो० ॥ ॥ १ ॥ रात न आवे निंदडी, लेता सास उसास ॥ दि वस न लागे भूखडी हो, नाहीं पाणीकी प्यास ॥ मो० ॥ ॥ २ ॥ सुणि न जावे वातडी, आपणपे न कहाय ॥ उं चो नजरे आवलोकवो हो, माथे सोर न थाय ॥ मो० ॥ ॥ ३ ॥ ए असहणी वेदना, मुझ किम सहेणी जाय ॥ सर्व शरीरे साल ज्युं हो, आज घणो अकुलाय ॥ मो० ॥ ४ ॥ लाज गइ निर्लज थइ, विविध प्रकारे विकार ॥

॥ वर वक्षोज विलोकहि हो, नहि जंभाइ पार ॥ मो०
॥ ५ ॥ आभूषण उतारीया, उचाटे न सुहाय ॥ जाणे
अहरु काटणा हो, सो दुख मांहि गिणाय ॥ मो० ॥
॥ ६ ॥ कां सरजी हु कामनी, कां सरज्यो वर रूप ॥
रूप विरूप हमारडो हो, विण रति कंत अनूप ॥मो०
॥ ७ ॥ मदन ताप तपे खरी, कदली केरो वाय ॥ वा
वना चदन लेपणो हो, शितलता न लहाय ॥मो०॥८॥
चंद्र तणे कीरणे करी, हार अने घन सार ॥ तनकी
तपति मिटे नहि हो, विण श्री काम कुमार ॥ मो०॥९॥
वेद विचक्षण आवियो, देखे नाडी जास ॥ हाथ न
आवे रोगहि हो, नृप चिता तुर नाम ॥ मो० ॥ १० ॥
एक दिवस कुंवर भणि, बोले खेचर राय ॥ माय दुहे
लि ताहरी हो, रयणि छ मासी जाय ॥ मो० ॥ ११ ॥
तुं सुखमें रमतो फिरे, न लहे मानि सार ॥ गेरुं नीगेरू
होवे घणा हो, माने आश अपार ॥ मो० ॥१२॥ कुम
र कहे सुण तातजी, हु नवि जाणुं एह ॥ रोग दुसा
ध्य जे उपनो हो, माताजीने देह ॥ मो० ॥ १३ ॥ मा
ता तीरथ सारखी, माता मोटी होय ॥ गर्भ धरे वे पो
खवे हो, मा सरखी नहि कोय ॥ मो० ॥ १४ ॥ अडस
ठ तीरथ जे किया, तेतीसे सुर कोड ॥ सहस आठ्या
सी मानिया हो, मा मान्या करजोड ॥ मो० ॥ १५ ॥
आयो मदन उतावलो, माताजीनी पास ॥ देखी मा
जिम सांभली हो, आरती मांही उदास ॥ मो०॥१६॥

ऊपर पडीयो अडवडी, माय माय पोकार ॥ दे दैवां उ लंनरो हो, करे किशुं किरतार ॥ मो० ॥ १७ ॥ म्हा रे ए दो आंखडी, ह्मारे अवर न कोय ॥ एम जाणी विधिसो करे हो, माय समाधी होय ॥ मो० ॥ १८ ॥ डाह्यापणे नाडी ग्रहे, वैदक सहुनो जाण ॥ विविध प्र कारे विचारही हो, रोग तणो प्रमाण ॥ मो० ॥ १९ ॥ ताव नही सिस को नही, नही त्रिदोषो दोष ॥ काटीं नही नही कुरु करी हो, कवण रोगनो पोख ॥ मो० ॥ २० ॥ रोग न जाण्यो जाय ए, वेदन तो असरा ल ॥ माय दुखे दुखीयो महा हो, कामदेव भूपाल ॥ मो० ॥ २१ ॥ एतो तिहुंत्तरमी कही, ढाले सघन स नेह ॥ गुणसागर सूरी जोयज्यो हो, विषय विरूंवन एह ॥ मो० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ लोग सहु अलगां कियां गुलाम अलगा कीयां ॥ बंडी गोकरी गंडके, अलगां राख्यां ताम ॥१॥ लाज खोली लालच भणी, विकलाइनि वात ॥ करवा लागी कामनी, नाम धरावी मात ॥ २ ॥ फिट फिट फिटकार तुं, फिटकारो सो वार ॥ विषिया माथे ताहरे, ए तुज चरित्र अपार ॥ ३ ॥

ढाल ७४ मी ॥ नाथ तेरे साथ चलुंगीरे ॥ ए देशी ॥ लालन लिल करुंगीरे, आगे नेह धरुंगीरे ॥ तेरे संग रहुं गीरे ॥ ला० ॥१॥ पूर्व भवंतर केरो प्यारो, नयणे नेह जणायो ॥ यौवन मद मदिरा मतवाली, मन हाथी

विफरायो ॥ ला० ॥ २ ॥ न आले देवाले माले, लारे
चित्त लगायो ॥ रोम रोमथी झाली सिलगी, युहिमत
रु न रहायो ॥ ला० ॥ ३ ॥ कांइ सुद्धी न बुद्धि विबु
ऊ. आंधाहिथी आंधी ॥ भुह कमान गुमान घणेरे,
रहि नयणा सर सांधी ॥ ला० ॥ ४ ॥ वाप न भाइ
वेटो जाणे, विरह करालि बालि ॥ आप विगुति भु
डणी, चहुटे चम्री चंम्रालि ॥ ला० ॥ ५ ॥ न कंटोल
आले मूके, पासे पड्यो जे पावे ॥ वनिता वेलि विल
गी आवे, वेगे वार न लावे ॥ला० ॥६॥ निर तणी ग
ति नीची जेहवी, तेहवी ए जग नारी ॥ काम अका
म करंत न लाजे, आदि लगे अविच्यारी ॥ ला० ॥
॥ ७ ॥ पंकजणी नारी दो सरखी, अंतर नहिय लि
गार ॥ हंस भमरने सम करी जाणे, नाणे किमपि वि
च्यार ॥ ला० ॥ ८ ॥ अवर रमे अवरासुं भासे, अव
रा साहमुं जोवे ॥ चिंते अवर अवर शीर दूपण, दे
इ आप विगोवे ॥ ला० ॥ ९ ॥ दिने डर आणे दोरे
दिठे, राति अहि फण मोडे ॥ उंबर अडघडती अ
णीआले, डूगर चढवो लोडे ॥ ला० ॥ १० ॥ उंदर
थी डर माने अधीको, केसरी काने साहे ॥ नारी च
रीत्र लिखे ब्रह्माजो, भांखे घणेउमाहे ॥ ला० ॥ ११ ॥
चुलनि रुलनि कुविसन वाटे, सूरि कंता साची ॥ इतो
सुत इतो पति हणेवा, परतक्ष थइ पै साचि ॥ ला०
॥ १२ ॥ काम कटकमें नारी नायका, ए दल पुंठे ला

ग्या ॥ मारी लीया जे साहमा आया, छूट्या जे नर
नाग्या ॥ ला० ॥ १३ ॥ हुतो सुंदरी सामा साची, तुं
यौवन मदमातो ॥ वय विलसि जे लाहो लिजे, फिरी
नावे दीन जातो ॥ ला० ॥ १४ ॥ बुढो बयल ने बुढो
घोडो, बुढो हाथी हासो ॥ बुढो मानव मान न पावे,
तरुणी साथे तमासो ॥ ला० ॥ १५ ॥ माथो धूणे क
र कंपावे, मुंहडे लाल खरंति ॥ अति असुहावो नाह अ
नावो, नारी नेह धरंती ॥ ला० ॥ १६ ॥ विण सरद
हण वखाण करेवो, देवि हाथ गहेवि ॥ बुढापणे तरु
णी परणवी, ए पर काजे कहेवि ॥ ला० ॥ १७ ॥ मो
मन हाथी इछाचारि, फीरे महा मतवालो ॥ होइ म
हावत नोग अकुसे, वहतो पागे वालो ॥ ला० ॥
॥ १८ ॥ मुंदि कान मिचि युग लोचन, मुंहडे धीग
धीग नाषे ॥ रे पापणी शुं पाप प्रकाशे, तुझ पापे
जग नासे ॥ ला० ॥ १९ ॥ हुं तुझ नंदनतुं मुझ माता,
इम किम कहेता आवे ॥ यद्यपि मांस नखे नर लप
ट, हाड गले नरहावे ॥ ला० ॥ २० ॥ खेचरी नांखे,
तुं नहि नंदन, हुं नहि थारी माता ॥ पडीयो पाम्यो
लेइ उछेर्यो, हम तुम्ह विचे विधाता ॥ ला० ॥ २१ ॥
आपण वावियो व्रक्ष विशेषे, को फल तास न खाय
॥ राखी निवाण आपे जल पितां, कहो शुं दूषण
थाय ॥ ला० ॥ २२ ॥ गेडी विच्यार विच्यार शिरो
मणी, कथनी दीसे कोडी ॥ मान बोल मुझको तुझ

ाधे, जासु काया गेफी ॥ ला० ॥ २३ ॥ वात विरुध
ो सुद्ध विहुणी, एतो परवश नांखे ॥ पुरुप पनोता
ाज अकारज, जाणी आपुं राखे ॥ ला० ॥ २४ ॥ उ
तर आपे मात मयाकर, इम मुझथी किम बूझे, ।नं
ग्रथकी अति निंद्य काम ए, कुलवंता नवी सूझे ॥
ला० ॥ २५ ॥ हाथी बारो वाटे फिरतो, अंकुशथी फि
ी आवे ॥ पीहर सासरा केरी लाज, नारी आप रखा
े ॥ ला० ॥ २६ ॥ वारूंवार विच्यार विशेषे, माता
जी समझावी ॥ वात न माने मयणराय तव, वनमें
बेठो आवी ॥ ला० ॥ २७ ॥ ढाल चमोत्तरमांही खरी
र, खेचरणी खलखाती ॥ श्रीगुणसागर मदन उवारी,
वेण पाणी वही जाती ॥ ला० ॥ २८ ॥

दुहा ॥ उठी एकाकी आवीयो, साथे शील सुल
तान ॥ कुमर कदर्थन देखीने, मन धरतो शुभ ध्या
न ॥ १ ॥ बाग नगरने बाहीरे, सुतो धरी मन धीर॥
कनक माताए शुं कह्युं, चित चिंते वडवीर ॥ २ ॥

ढाल ७५ मी ॥ मुनिश्वर माहरे व्रतशुं काम ॥ ए
देशी ॥ एकाकी उदाशीयोजी, मदन नरेश्वर जाम ॥
दिठा मुनिवर पांखतीजी, जाइ करे परणाम ॥१॥ मुनि
वर नांखे एह विच्यार॥ ए आंकणी॥ माताने केम उप
जीजी ॥ सुतसुं काम विकार ॥ मु० ॥ २ ॥ चरित्र सु
णावी पाछलाजी, ज्ञान तणे बल जोय ॥ इंद्रप्रभानो
जीवडोजी, कनकमाला ए होय ॥ मु० ॥ ३ ॥ काम

रागनी व्यापनाजी, पोखाणीथी भूर ॥ तेही अभ्यासे उपनीजी, ए तुझ साथे चूर ॥ मु० ॥ ४ ॥ काम कहे करुणा करोजी, गुण मणीना संदोह ॥ जणणीए किम पामीयोजी, मुझशुं एह विछोह ॥ मु०॥५॥ जंबुदीपे जाणीएजी, खेत भरत गुण धाम ॥ मगधदेश मांहे भलोजी, लक्ष्मीपुर अभीराम ॥ मु० ॥ ६ ॥ सोमशर्मा नामे वसेजी, ब्राह्मण विद्या पात्र ॥ कमला कमला सारखी जी, नारी मनोहर गात्र ॥ मु० ॥ ७ ॥ पुत्री तो लक्ष्मीवतीजी, सा अहंकारणी सोइ ॥ एक दिवस ऋषी आवीयाजी, वोहोरण काजे जोय ॥ मु०॥८॥ रुप निहाले आपणोजी, आरीसामे ते जाम ॥ पाछो ऋषी उभो हुवोजी, किधी निंद्या ताम ॥ मु० ॥ ९ ॥ मुनी निंद्याना दोपथीजी, लही कोढनो रोग ॥ पामी सादीन सातमेजी, मरण तणो संजोग ॥ मु० ॥ १० ॥ खरोखरी दुखणी थइजी, मरी सुंकरी होय ॥ कोटवाले वाणे हणीजी, सभी कुंकरी जोय ॥ मु०॥११॥ अग्नी झालमांहे वलीजी, तव धीवरणी थाय ॥ पूर्व पाप प्रभावथीजी, देही घणुं गंधाय ॥ मु० ॥ १२ ॥ गंगा पासे कुटीकाजी, रहे स्वजनथी दूर ॥ वनफल भखी नीझर पिएजी, करे उदर भरपूर ॥ मु० ॥ १३ ॥ शित काले फिरतो थकोजी, सोइ ऋषीश्वर जाण ॥ ध्यान योग्यने ध्यावतोजी, दिठो पुण्य प्रमाण ॥ मु०॥१४॥ सा अतिशेवा साचवेजी; शुभ कर्मोने योग ॥ पूरव भ

व समझावीयोजी, ज्ञान तणे उपयोग ॥ मु०॥१५॥ प
आताप करे घणोजी, मुनी निंद्याना पाप ॥ आलोइ
शुभ भावशुंजी, शुद्व कियो घट आप ॥ मु० ॥ १६ ॥
समकीत धर्म समाचस्योजी, श्रावकना व्रतधार ॥ आ
वी नगरी कौसलाजी, आतमने हितकार॥ मु०॥१७॥
साधवीयां पासे रहेजी, तप नाना विध किध ॥ राज
ग्रही आव्या वहीजी, उत्तम संगति लीध ॥ मु० ॥१८॥
गुफा मांही साधवीजी, वार रही सा बाल ॥ विलुरी वा
घे घणुंनी, प्राण तज्या ततकाल ॥ मु० ॥ १९ ॥ पही
ले सुर लोके उपनीजी, भोगवे सुख अपार ॥ नगरी
कोसबीए थइजी, राय घरे पट नार ॥ मु० ॥ २० ॥
रमत मिसे हाथे लियांजी, मोरली इंडा जोय ॥ घमी
सोलने आंतरेजी, आदरीयां फिरी सोय ॥ मु०॥२१॥
विमलमती गुरुणी कन्हेजी, राणी संजम लीध ॥ अ
णसण उत्तम मासनोजी, विणआलोयण किध ॥ मु०॥
॥ २२ ॥ स्वर्ग बारमे सासतीजी, सुरपदना सुख पा
य ॥ हुइ राणी रुखमणीजी, कामदेव तुझ माय ॥ मु०
॥ २३ ॥ किधा कर्म न छुटीएजी, वरस सोल लगी दु
ख ॥ विरह तुझारो पामीयोजी, माताए सुविसेप ॥
मु० ॥ २४ ॥ माता पासे जाइनेजी, लहो विद्या दोय ॥
प्रज्ञापतीने रोहीणीजी, अती वरदाइ सोय॥ मु० ॥२५॥
सीख रूपी पंचयोत्तरमीजी,ढालभली कहेवाय॥ गुणसा
गर रुखमणी तणोजी, चरीत्र महा सुखदाय॥मु०॥२६॥

दुहा ॥ मदन कुमर फीरी आवीयो, खेचरणीने सं ग ॥ विण प्रणाम बेठो सही, साची ते मन रंग ॥१॥ रूपनाथने नाथीयो, ए आयो हम पास ॥ वचन वि शेषे मानशे, दिसेछे उल्हास ॥ २ ॥

ढाल ७६ मी ॥ मन भमरानी देशी ॥ तव बोले सा सुंदरी, सुण भोग पुरंदर ॥ मान वचन मुज आ ज, गुण सुण भोग पुरंदर ॥ विविध प्रकारे ताहरा ॥ सु० ॥ सारुं वंछित काज ॥ गु० ॥ १ ॥ प्रज्ञापतिने रो हिणी ॥ सु० ॥ मोटी विद्या एह ॥ गु० ॥ प्रित रीतशुं रिंझवी ॥ सु० ॥ आपुं आणी सनेह ॥ गु० ॥ २ ॥ धु तो धूतेवा भणी ॥ सु० ॥ बोले मीठा बोल ॥ गु० ॥ आज लगी लोप्या नहि ॥ सु० ॥ थारा बोल अमोल ॥ गु० ॥ ३ ॥ हुं छु किंकर ताहरो ॥ सु० ॥ आज्ञाका री जोय ॥ गु० ॥ घे विद्या परमेश्वरी ॥ सु० ॥जे ते भाखी दोय ॥ गु० ॥ ४ ॥ विषया वश आतुर थइ ॥ सु० ॥ धोलो जाण्यो दुध ॥ गु० ॥ दीधी विद्या बीभी क ही ॥ सु० ॥ होय गइ अति शुध ॥ गु० ॥ ५ ॥ मत वालीथी अती घणी ॥ सु० ॥ मतवाली ए जोय ॥गु० ॥ उतो धन नवि दाखवे ॥ सु० ॥ ए रही विद्या खोय ॥ गु० ॥ ६ ॥ विद्या साधी सज्ज करी ॥ सु० ॥ पायो वहु संतोष ॥ गु० ॥ खेचरणीशुं खरखरा ॥ सु० ॥ बोले वचन सरोष ॥ गु० ॥ ७ ॥ मे नवि दीठो ता तजी ॥ सु० ॥ नवि दिठि निज मात ॥ गु० ॥ तात

मात तुहि सहि ॥ सु० ॥ मत कहे बीजी वात ॥ शु० ॥
॥ ८ ॥ वाचा पाली विशेषथी ॥ सु० ॥ जगमें वाचा
सार ॥ शु० ॥ वाचा विचली जेहनी ॥ सु० ॥ वादी
गयो अवतार ॥ सु० ॥ ९ ॥ कहे रामजी नरतशुं
॥ सु० ॥ बोल न बोले आण ॥ शु० ॥ हिन प्रतिज्ञा
नो धणी ॥ सु० ॥ तजवो जेम मसाण ॥ शु०॥ १०॥
किवा को निंद्या करे ॥ सु० ॥ कोइ करे गुण ग्यान
॥ शु० ॥ लक्ष्मी जाउ फीरी आउ ॥ सु० ॥ न तज्यु
न्याय निधान ॥ शु० ॥ ११ ॥ पहिलि तो तुं साय
जी ॥ सु० ॥ पालवाने काज ॥ शु० ॥ विद्या दान त
णि दाता ॥ सु० ॥ गुरुणि हुइ आज ॥ शु० ॥ १२ ॥
वज्रपात समानडा ॥ सु० ॥ सांभलि वचन विचार ॥
शु० ॥ उठि बाघणी वलगवा ॥ सु० ॥ चाल्यो करीय
जुहार ॥ शु० ॥ १३ ॥ हाथ घसे कूटे हियो ॥ सु० ॥
शोच करत अपार ॥ शु० ॥ ठग न ठग्यो ठगे हुं ठ
गी ॥ सु० ॥ विद्या खोइ सार ॥ सु० ॥ १४ ॥ कोइ उ
पाय केलवी ॥ सु० ॥ लाउं शिख जे वार ॥ शु० ॥
दुख ज्वाला शिलि करुं ॥ सु० ॥ पामुं चयन ते वार
॥ शु० ॥ १५ ॥ आप विलुरि तन घणु ॥ सु० ॥ मां
मे अति तोफान ॥ शु० ॥ रोति न रहे राखता ॥ सु०
॥ पूछे तव राजान ॥ शु० ॥ १६ ॥ विलखिवा धणी
वलवले ॥ सु० ॥ ए तुम सुतना काम ॥ शु० ॥ हो
य वटाउ आपणा ॥ सु० ॥ तो घरनो स्यो नाम ॥ शु०

॥ १७ ॥ जे निज तें निज जाणीए ॥ सु० ॥ जे पर
ते पर होय ॥ शु० ॥ मंदिर वसे न प्राहुणो ॥ सु० ॥
इम नाखे सहु कोय ॥ शु० ॥१८॥ प्रनुजी तुम्ह प्रसा
दथी ॥ सु० ॥ गोत्रजदेव पसाय ॥ शु० ॥ शील न
नांग्यो मूलथी ॥ सु० ॥ पिण न रह्यो तनुमें कांई ॥
शु० ॥ १९ ॥ ढीठा लुड कुलंठने ॥ सु० ॥ जो परन
व पोचाडं ॥ शु० ॥ तो तो जिववो सहि ॥ सु० ॥
नहितर काठ धखाडं ॥ शु० ॥२०॥ आत तपे अति
आकरी ॥ सु० ॥ अति विना न तपाय ॥ शु० ॥
सोक्यांना झगडा विषे ॥ सु० ॥ माता कूठी थाय ॥
शु० ॥ २१ ॥ राजा रीसे परजल्यो ॥ सु० ॥ न
लह्यो मर्म लिगार ॥ सु० ॥ पुत्राने तेडी कहे ॥ सु०॥
मारो मदन कुमार ॥ सु० ॥२२॥ जन अपवाद निवा
रवा ॥ शु० ॥ गुपत पणे ए काज ॥ सु० ॥ करवो ए
उतावलो ॥ सु० ॥ दाव लह्यो हम आज ॥ सु० ॥
॥ २३ ॥ मदन कुमर आगे करी ॥ सु० ॥ स्नान क
रेवा जाय ॥ सु० ॥ विद्या नेद जणावियो ॥ सु० ॥
बीजो रूप धराय ॥ सु० ॥ २४ ॥ आपण अलगो ज
इ रह्यो ॥ सु० ॥ पोते करे सुकुमार ॥ सु० ॥ वृद्ध
चडि डाकी पडे ॥ सु० ॥ झूले वावि मझार ॥ सु० ॥२५॥
शिला विकुर्वी मोटकी ॥ सु० ॥ वावि तणे परीमाण ॥सु०॥
उर्द्ध पाव अधोमुखे ॥ सु० ॥ दाख्या तेहि अयाण ॥
॥ सु० ॥२६॥ एक न खिल्यो ते गयो ॥सु०॥ राजा पासे

पुकार॥सु०॥ साहण वाहण सामटे ॥सु०॥ राय चढ्यों तेहिवार ॥ शु० ॥ २७ ॥ चतुरंगी सेन्या सजी ॥ सु० ॥ साहमो काम कुमार ॥ सु० ॥ आयो आडंबर घणे ॥ सु० ॥ नांग्यो नरम अपार ॥ सु० ॥ २८ ॥ दुर्जय मदन विचारीयो ॥ सु० ॥ विद्या मांगे राय ॥ सु० ॥ नारी कहे लेइ गयो ॥ शु० ॥ राजा तव पिछताय ॥ शु० ॥ २९ ॥ ए नारी व्यभिचारिणी ॥ सु० ॥ चरित करे लख कोड ॥ शु०॥ फिरी आयो रणभूमीका ॥शु० ॥पुत्र नम्यो करजोड ॥ शु० ॥ ३० ॥ जनक जीति ज स वंछीए ॥ सु० ॥ सो अपजस अवधार ॥ शु० ॥ ति रथ मांहे मानीयो ॥ सु० ॥ जनक वड्यो संसार ॥ शु० ॥ ३१ ॥ वृक्ष विशेषे वाधीयो ॥ सु० ॥ गयो नेदि आकाश ॥ शु० ॥ यद्यपी ऊंची नाशीका ॥ सु० ॥ तो ही पिण शीर तले वास ॥ शु० ॥ ३२ ॥ एह विवेक विच्यारवे ॥ सु० ॥ कामे तज्यो अभीमान ॥ शु० ॥ तावेला कंचन तणो॥ सु० ॥ वेधे वधे घनवान ॥ शु० ॥ ३३ ॥ ज्वार साल ने तरु फल्यो ॥सु ० ॥ चउथो साजन देख ॥ शु० ॥ सहेजे हिनमणा हुवा ॥ सु० ॥ मदन तो जाण विशेष ॥ शु० ॥ ३४ ॥ बंधव बंधन छोडीया ॥ सु० ॥ मिलीयो बहु परीवार ॥ सु० ॥ घर घर रंग वधामणा ॥ सु० ॥ वरत्यो जय जयकार ॥ शु० ॥ ३५ ॥ विनय करीने विनवे सु० ॥ तात करो शुवि च्यार ॥ शु० ॥ तेग फिरे किम तेहनी ॥ शु० ॥ जेहनो

हिए आचार ॥ शु०॥ ३६ ॥ साठ अने वली सोलमी सु० ॥ ढाले शिल वखाण॥ शु० ॥ गुणसागर उपदे शीयो॥ सु० ॥ शिलसु धर्म प्रधान ॥ शु० ॥ ३७॥

दुहा ॥ नारदऋषी अवलोकियो, पुत्र पराक्रम कोड ॥चाली आयो आशनो, मदन नम्यो करजोड ॥ ॥ १ ॥ मदन कहे सुण बापजी, माहरे जग नही काय॥ माय बाप वयरी थया, कहो किशी गती होय ॥ २ ॥ तुझसम अवर सोभागीयो, को नही जगत मझार ॥ बाप कृष्ण मा रुखमणी, यादवनो परीवार ॥ ३ ॥ हुं आयो तुझ तेडवा, चाल मतलावीश वार, अवसरनो आगम भलो, जिम जगमें जलधार ॥ ४ ॥ अवसर आयो पवनसुत, सत्यवंती उछरंग ॥विसाला पिण अवसरे, फरसे लक्ष्मण अंग ॥ ५ ॥ अवसरथी सुग्रीवनां, रामे समारया काम ॥ रावण बंधव पासीयो, लंक पतीनो नाम ॥ ६ ॥ अवसर पांडु पधारीया, कुंतीका पिण फंद ॥ अवसर पांडव प्रगटीया, करवा कौरव मंद ॥ ७ ॥ अवसर यादव देखीए, भलो कियो उपगार ॥ अवसर चूक्या मानवी, सोच करे अपार ॥ ८ ॥ चूलनी पाणी पाइयो, जीवतडाने जोय ॥ घडा सो रेड्या उपरे, मुआ पछी शुं होय ॥ ९ ॥ भामा पुत्रना, व्याहमें तुझ माता शिर केस ॥ लियासा जीवे नही, तुझ मन थाय कलेश ॥ १० ॥

ढाल ७७ मी ॥ आछे लालनी देशी ॥ बोले मदन

कुमार, सुण नारद सुविच्यार ॥ आछे लाल ॥ माय बापने बूझो ए ॥ ते तो गमन कराय ॥ अणपूछ्यां न जवाय ॥ आछेलाल ॥ आगल पाछल शु झीए ॥१॥ मात पिताना पाय, प्रणमे बहुले जाय ॥ आ० ॥ कोमल वचन प्रकासतो ए ॥ तात खमो अपराध ॥ मे दिधो दुख दाह ॥ आ० ॥ दिनपणो अति जापतो ए ॥ ॥२॥ माता सुण अरदास, हुवुं थारो दास ॥ आ० ॥ आश हनारी पूरवी ए ॥ पडीयो पत्थर मांही ॥ उठायो उठाही ॥ आ० ॥ आरती चिंता चूरवी ए ॥ ३ ॥ वैरी केरे वास, तुझ पसाइ आश ॥ आ० ॥ पुगी माहरा मन तणी ए ॥ जाइ जाया आन ॥ करता हरता प्राण ॥ आ० ॥ पहुंची न शक्यो तुम्ह जणी ए ॥ ४ ॥ हुंतो दीन अनाथ, म्हारो कोइ न नाथ ॥ आ० ॥ गगन पड़तो झिलीयो ए ॥ थारा किधा काज ॥ ए सघला शुभ साज ॥ आ० ॥ पाप पराभव पिलीयो ए ॥ ५ ॥ जेहने पोढा पाप, प्रगटे आवीयो आप ॥ आ० ॥ साय विछोहो तेहमें ए ॥ जूडा मांही एह ॥ जलपण केरी रेह ॥ आ० ॥ तुम्हशी जणणी जेहने ए ॥ ६ ॥ विसारे मती मोय, माय विनवुं तोय ॥ आ० ॥ हियडा जींतर राखवो ए ॥ मुजने बालक जाण, चूंबी मुह शीर पाण ॥ आ० ॥ प्रेम अमीरस चाखवो ए ॥ ७ ॥ गाती फाटे माय, पितापिण इम थाय ॥ आ० ॥ चउधारा आंशु वहे ए ॥ विसारयो नवीजाय, राख्यो पिण न रहाय

॥ आ० ॥ जेह लेहणो सोइ लहे ए ॥ ८ ॥ अवर मा
ताने शीश, नामी लहे आशीश ॥ आ० ॥ कोडी वर
स चिरंजिवजे ए॥ न्नाइ तणो परीवार, स्वामि मदन
कुमार ॥ आ० ॥ न्नाइ नणे आनंद जे ए ॥ ९ ॥ सु
ण मोटा मत्रीश, खामु विशवा वीश ॥ आ० ॥ जे में रो
स धरावीयो ए ॥ सुन्नट सहु करजोम, आपनमे मन
मोड ॥ आ० ॥ खमज्यो जोर करावीयो ए॥ १० ॥ जे
ता वान गुलाम, तेहने पिण सलाम ॥ आ०॥ उरण हुइ
ने हालीयो ए ॥ नान्हा मोटा साथ, घाली गलामां
बाथ ॥ आ० ॥ चित्त चोरीने चालीयो ए ॥ ११ ॥
मस्तक विण जेम देह, नाक विना मुख एह ॥ आ०॥
तारा विण जिम लोयणा ए ॥ पान विना जिम वेल,
जल विण सरोवर मेल॥ आ० ॥ लुण विणा जिम न्नो
जणो ए ॥ १२ ॥ विद्या विण जिम देवि, हरी विण
दरिये कहेवी ॥ आ० ॥ देवा विण जिम देहरो ए ॥
विण श्री काम कुमार, सुना घर दरबार ॥ आ ०॥
लालन घर शिर सेहरो ए ॥ १३ ॥ बेसी विमाने ता
म, नारदशुं अन्नीराम ॥ आ० ॥ सूडो जिम उडी ग
यो ए ॥ हेज हिये न समाय, हिंसे जिम वछ गाय
॥ आ० ॥ मा मिलवाने अलजीयो ए ॥ १४ ॥ ना
रद कातिशुं विमान, तोमे लात प्रमाण ॥ आ० ॥
हास्य हिए न समावही ए ॥ बाबाजीशुं ताम, बो
ले कुमर काम ॥ आ० ॥ कामे शुं न सोहावइ ए॥

॥ १५ ॥ हुंतो बुढो देख, तुं तरुणो सुविशेष ॥ आ० ॥ किउं न करे मन भावतो ए ॥ रचे विमान रसाल, सबहि विधी सु विशाल ॥ आ० ॥ रविमंडल जिम आवतो ए ॥ १६ ॥ चाले थोडी चाल, कहे नारद त तकाल ॥ आ० ॥ किउं न चले वेगो वहि ए ॥ नारद वदन तुरत, तुटेखो परदंत ॥ आ० ॥ वेगे चलायो ति म सहिए ॥ १७ ॥ रुपाचल गिरि सोइ, उलंघीया ते दोइ ॥ आ० ॥ प्रथवी उपरे आवीया ए ॥ खदिरा अट वि जेह, तक्षक परवत तेह ॥ आ० ॥ शिला थान दे खाविया ए ॥ १८ ॥ भूमंडलना ख्याल, गिरी सरी ता सुविशाल ॥ आ० ॥ विविध प्रकारे देखतां ए ॥ म ध्य देशमें देव, आइ गया ततखेव ॥ आ० ॥ वारु वस्तु विशेषता ए ॥ १९ ॥ नारद लायो लाल, एतो ढाल रसाल ॥ आ० ॥ भाखी सत्योत्तरमी ए ॥ श्री गु णसागर एम, बोले बोल सप्रेम ॥ आ० ॥ मदन कथा मुज मन रमी ए ॥ २० ॥

दुहा ॥ सेना दिठि सामटी, हय गयनो नहि पार ॥ राज कुमार राजा घणा, वाजे बाजां सार ॥ १ ॥ मदन कहे ऋषि ए किहां, जाइ दल बल पूर ॥ खेच रमें नवि पुखीया, एहवा लोक सनूर ॥ २ ॥ ऋषी भां खे गजपुर धणी, दुर्योधन भूपाल ॥ चतुरंगी सेन्या भली, तेहनि ए सुविशाल ॥ ६ ॥ होड पडी जेही कारणे, रुखमणी भामा माहे ॥ उदधी नामे सा कुअ

री, परणवा चालि उगहे ॥ ४ ॥ जामा घरे दिन बा रमे, सुतनो थाप्यो नाम ॥ जानु विशेषे जानुने, ते हसुं व्याहण काम ॥ ५ ॥

ढाल ७८ मी ॥ नणदलनी देशी ॥ कुंमर कहे सु ण तातजी, नारद ए मुऊ वात ॥ कुंमर ॥ कौतुक क रतो नहि रहुं, राखे शुं अखियात ॥ कुं० ॥ कौ० ॥ १ ॥ रूप धरयो तव जिलनो, विरलो वदन विशाल ॥ कुं० ॥ मोटा दांत बिहामणा, प्रौढ बणायो जाल ॥ कुं० ॥ कौ० ॥२॥ उंडा कुआ सारिखा, गाल डरावण हार ॥ कुं० ॥ डिले वली अति लीलहरी, पिला केश अपार ॥ कुं० ॥ ३ ॥ लोचन दिसे रातमां, दिसे मोटी काय ॥ कु० ॥ गेटा कर अति दुबला, मोठो पेट कहाय ॥ कु० ॥ ॥ ४ ॥ जाडी जांघ सल घणा; रूपे रूप कुरूप ॥ कु० ॥ बेठि चिपटी नाशिका, कान विराजे सूप ॥ कु० ॥५॥ अंकुश अति आकरां, जांगी केरू देखाय ॥ कु० ॥ नृ कुटी जाले जऊजडे, जीलां केरो राय ॥ कु० ॥ ६ ॥ हाथे तीरने कामठो, थोथां वाण बेच्यार ॥ कु० ॥ गा ति वालि गरवसुं, वचन वदे अविचार ॥ कु० ॥ ७ ॥ मारग रोकीने रह्यो, कोइ न सके जाय ॥ कु० ॥ कौर व केलवणी करे, आगे उना आय ॥ कु० ॥ ८ ॥ रे जा इ तुं स्युं कहे, क्युं रोकीजे माग ॥ कु० ॥ सो जांखे तु ह्म सांजलो, दाण तणो मुऊ लाग ॥ कु० ॥ ९ ॥ कौर व बोले जीलडा, बोल विमासी बोल ॥ कु० ॥ स्युं ह

म मोला वाणीया, आपे दमका खोल ॥ कु० ॥ १० ॥
कृष्ण कह्यो छे मुझ जणी ॥ झारा देश मझार ॥ कु० ॥
वस्तु जलि ते ताहरी, हुं छु कृष्ण कुमार ॥ कु० ॥ ११ ॥
तुम्ह सरीखा छे केटला, कृष्ण तणे घर नंद ॥ कु० ॥
मुझ सरीखो तो हुंज छुं, कृष्ण तणे कुल चद ॥ कु० ॥
॥ १२ ॥ तु साचोरे तुं साचो. माता जायो रत्न ॥ कु० ॥
रत्न अछुं चिंतामणी, क्युं न करो तुम्ह यत्न ॥ कु० ॥
॥ १३ ॥ यत्न करे सा अति घणुं, पूजे स्या तुझ पाय
॥ कु० ॥ ए आवी हाथ विहथमें, जीज किया स्युं था
य ॥ कु० ॥ १४ ॥ तो हुं जायो कृष्णनो, मारुं थारो
मान ॥ कु० ॥ ठाकुर करडा चाहीए, ए गो एह मेदान
॥ कु० ॥ १५ ॥ तां लगे तेमनी व्यापना, ज्यां लगे
न उगे सूर ॥ कु० ॥ नाचे कूदे हरणलो, नाथो सिंघ
हजूर ॥ कु० ॥ १६ ॥ कौरव तुझ कपटी घणा, कपट
तणे बल जोय ॥ कु० ॥ जूमी छंडावी पांडवा. रीस घ
णी मुझ सोय ॥ कु० ॥ १७ ॥ उधीन पोधीन थाहरी,
कूठो करो गुमान ॥ कु० ॥ वडमाता व्यभिचारणी, था
रा एह वखाण ॥ कु० ॥ कौ० ॥ १८ ॥ आंधे जाया आध-
ला, होइ फिरो तुझ आप ॥ कु० ॥ कीडु दीठा छे
घणा, सिल्योन कालो साप ॥ कु० ॥ कौ० ॥ १९ ॥
यद्यपी वादल ढांकीयो, तेज जणावे जाण
॥ कु० ॥ दिपसी जाणी गोठमी, विच करे प्रधान ॥
॥ कु० ॥ २० ॥ ले घोमो ले हाथीयो, जे थारे मन जाय

॥कुं०॥ जेहनी जेहने सुंपतां, रोस किसो तुह्म राय ॥ ॥कुं०॥२१॥ घोडा हाथी शुं करुं, लेशुं आगी वस्तु ॥ कु० ॥ माहरा मनमें भावती, देखी वस्त समस्त ॥ कुं० ॥ २२ ॥ आगीमें आगी घणी, आगी कुमरी जोय॥ कुं० ॥ सोइ आपो मुझ भणी, हरी रली यायत होय ॥ कुं०॥२३॥ थारे तो ए हांसडे, पिण माहरे ए साच ॥कुं०॥ तो हुं जायो बापनो, पालुं बोली वाच ॥ कु० ॥ २४ ॥ जिम जिम हठ पोखीयो, पातसाहके पास॥कुं०॥ तिम हठ पोखु हु घणो, तो देज्यो शावास ॥ कुं०॥२५॥ ढाल भली अठोत्तरमी, कौरव सुं संवाद ॥ कुं० ॥ गुणसागर जस पामशे, पूरव पुण्य प्रसाद ॥ कुं० ॥ कौ० ॥ २६ ॥

दुहा ॥ रे रे निर्लज्ज दीठ तुं, भाखे किस्युं गिमार ॥ सोड देखी धूर आपणी, किजे पाउपसार ॥ १ ॥ नान्हे मुहंरू मोटाका, बोले बोल न कोय ॥ बोले तो पावे सही, गाल चपेटा सोय ॥ २ ॥ हुश करी जे ते तली, जे तो पुण्य प्रकाश ॥ आंबो अंबर जइ रह्यो, वामन शिफल आश ॥ ३ ॥

ढाल ७९ मी ॥ नेम आयो सावन मास हो ॥ ए देशी ॥ वामन शीफल आश हो, कौरव भांखे तास हो, तास नहो भांखे कौरव राजवी ए ॥ भैरव झंपापात हो, करी निज आतमघात हो, घात नहो पावे नारी अभीनवी ए ॥ १ ॥ एशुं स्यो झखवाद हो,

वाद सहु निस्वाद हो, स्वाद नहो स्वाद न लागे
को भलो ए ॥ साही नाखो दूर हो, चालो एहने चू
र हो, चूरनहो चूरी चल्यो का मति टलो ए ॥ २ ॥
एक थो दरवेस हो, मनोरथ सुविशेप हो, शेपनहो
लाते फूट्यो खापरो ए ॥ हुवे भांगो गेह हो, तेहवो
दिसे एह हो, एह नहो मारी किजे पाधरो ए ॥ ३ ॥
दल चाल्यां अजीराम हो, दल रोकायां ताम हो, ता
मनहो ताम रोक्यां ए दल सहु ए ॥ सुभट मारण
काज हो, धाया सजी साज हो, साजनहो साज
सजे ते बहु ए ॥ ४ ॥ कुकुउ सुणी कान हो, सबर
मिलीया आण हो, आणनहो सबर मिलीया अति घ
णां ए ॥ विविध आयुधवंत हो, युद्धमें बलवंत हो, वंत
नहो मान मोभे परतणा ए ॥ ५ ॥ भूमीने गिरी श्रृंग
हो, वृक्ष उपरी रंग हो, रंगनहो रंगी रमतां देखीए
ए ॥ कृष्ण अंगज कोडीहो, चड शीरोमणी जोभी हो,
जोडीनहो होड को न विशेखीए ए ॥ ६ ॥ सुभट ना
ठा जाय हो, को न साहमा थाय हो, थायनहो सिंघ
साहमां हर्णला ए ॥ उदधी कुमरी लिध हो, भीलनो
कारज सिध हो, सिधनहो काज अती वाधी कला ए
॥ ७ ॥ देखीयो ऋषी राय हो, ए न लीधो जाय हो,
जायनहो ए न लीधो सुरनरुं ए ॥ लावीयो ततकाल
हो, साधु पासे बाल हो, बाल नहो कियो रूप पुरंद
रुं ए ॥ ८ ॥ दूरथी देखंत हो, पूछी गुणवंत हो, वं

तनहो कवण ए सुख कारीका ए कहे नारद ताम हो, सुणही कुंवर काम हो, कामनहो ए ॥ वर नगरी द्वारीकां ए ॥ ९ ॥ स्वर्ग खंड समान हो, उपमानो थान हो,थाननहो एहवो बिजो को नहीं ए ॥ कृष्ण राय निवास हो, महा साल आवास हो, वासनहो वास रुडोछे सही ए ॥ १० ॥ हेममें पागार हो, तुंग न हाथ अठार हो, ठारनहो रत्न मणीमें कांगुरा ए॥ देव निर्मीत काम हो, स्वर्गपुरी सम ठाम हो, ठामन हो पूरीये वरुवमा नरा ए ॥ ११ ॥ वावीको विस्तार हो, नीर पूरीत सार हो, सारनहो नारी मंजन कारणे ए ॥ वमा श्री गजराज हो, मद झरंत सकाज हो, काजनहो मदजले रज वारणे ए ॥ १२ ॥ मेहेल तणी वरओली हो, वणाती वणाती पोली हो, पोलीनहो पोली तो उंची कही ए ॥ सकल कांती अपार हो. जगंतो दिनकार हो, कारनहो कांति किरणे मीली रही ए ॥ १३ ॥ हाट घर वर सोह हो, सोहनो संदोह हो, दोहनहो सोह गुणे धन जाणीयो ए॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल हो, तिन लोक रसाल हो, सालनहो सार शोधीने आणीयो ए ॥ १४ ॥ पूरी देखण जाय हो, साधु आडो थाय हो, थायनहो थाए आडो सादरो ए ॥ यादवनो अति जोर हो, थारो चित्त चकोर हो, कोरनहो सोर माचे सखरो ए ॥ १५ ॥ शहेर मांहि जाय हो, मिलसुं तुमने आय हो, आ

यनहो आवे शुं उतावलो ए ॥ पूरीसुं शंकेत हो, माय मिलवाने हेत हो, हेतनहो चित्तमें उमाहलो ए ॥ ॥१६ ॥ जाति कौरव काल हो, आवीयो सुकुमाल हो, मालनहो ढाल ए एकुणऐशीमी ए ॥ मदन महिमा माल हो, सुरन्नीने सुवीशालहो, सालनहो गुणसागर मन सारमी ए ॥ १७ ॥

दुहा ॥ मदन कुमर मन रंगशुं, थंन्नी गगन विमान ॥ आवे नगरी द्वारिकां, गुप्तपणे गुण जाण ॥ ॥१॥ धुर आयो चोउगानमें, बंधव नयणे दिठ ॥ सुंदरता अविलोकतां, लोयण अमीय पइठ ॥ २ ॥ पूछे विद्या सो कहे, न्नानु न्नानु सम देख ॥ न्नामा सुत आनंदमें, पुण्य प्रताप विशेष ॥ ३ ॥ घोमा खेलावे घणां, घोडासुं अति प्रेम ॥ आप जणावुं एहने, मा सुख पामे जेम ॥ ४ ॥

ढाल ८० मी ॥ विछियानी देशी ॥ कौतुक केलवे घणु, तव श्री काम कुमाररे ॥ न्नाइ ॥ चरित तणो नहिं पार ए, कोइ न जाणे साररे ॥ न्नाइ ॥ कौ० ॥ १ ॥ लंबोदर काया वनी, चंचल गति विस्ताररे न्नाइ ॥ सर्व अवेवा शोन्नतो, सर्व सुलक्षण धाररे ॥ न्ना० ॥ कौ० ॥ २ ॥ ते उंचे स्वर सारिखो, अश्व अनोपम वानरे ॥न्ना० ॥ विविध प्रकारे श्रृंगारीयो, सोना केरो पलाणरे ॥ न्ना० ॥ कौ० ॥ ३ ॥ एहवो घोडो कर धरी, सो सोदागर थायरे ॥न्ना०॥ पाणि पाव शिर कंपणी, ज्या

की बुद्धि कायरे॥ ना० ॥कौ०॥ ४ ॥ थल थल करतो आवीयो, आनुं कुमरनी पासरे॥ ना०॥ अश्व रत्न अविलोकतां, पायो अति उल्हासरे ॥ ना० ॥ कौ० ॥५॥ पूछे पंथी कुण तुं, हुं परदेशी स्वामीरे॥ ना० ॥ हयवर आण्यो हिंसतो ॥ देव तुमारे कामरे ॥ ॥ ना० ॥ कौ० ॥ ६ ॥ कहे मोल मतिवंत तुं, कंचन केरी कोमरे॥ ना० ॥ परखी आपे आपजो, को नवी जाणो खोमरे॥ ना० ॥ कौ० ॥ ७ ॥ आप कुदि घोमे चड्यो, चाबक लीधो हाथरे ॥ ना० ॥ वाहे घोडो वेगशुं, अचरिज सघले साथरे ॥ ना० कौ० ॥ ८ ॥ सूरज रथ थंभी रह्यो, करे विचारण प्रांहिरे॥ ना० ॥ के ए हनो के माहरो, भलो किस्यो दोय मांहिरे ॥ ना० ॥ कौ०॥ ९ ॥ वक्र अने सम भावशुं, नाचे कूदे सोयरे॥ ना० ॥ कुमर न संवाह्यो पडे, ताम विमासण होयरे ॥ ना० ॥ कौ०॥ १० ॥ उपरणी ने पागमी, छटकी पडी ए दोयरे॥ ना० ॥ पाछे पडियो आपहि, लोगा हांसो होयरे ॥ ना० ॥ कौ० ॥ ११ ॥ उठाइ उभो कियो, सोदागर आसंतरे ॥ ना० ॥ थारा जाया गेकरां, बावा किम भासंतरे ॥ ना० ॥ कौ० ॥ १२ ॥ कृष्ण तणे घर जाणीए, तुं पाटोधर पूतरे ॥ ना० ॥ आनु भारे एहि लक्षणे, किम रहेस्ये घरसूतरे ॥ ना० ॥ कौ० ॥ १३ ॥ घोडो राखी नवी शक्यो, तो किम राखीश राजरे ॥ ना० ॥ तुम्ह स्या पुत्रा कृष्णने, कुलनी न

रहि लाजरे ॥ भा० ॥ कौ० ॥ १४ ॥ बुढा बाबा बाउला, जोन करया स्यो काजरे ॥ भा० ॥ चढि घोडे देखुं सहि, चतुरपणुं तुझ आजरे ॥ भा० ॥ कौ० ॥ ॥१५॥ घोडे चढीयो जाय जो, वेचणनो स्यो कामरे ॥ भा० ॥ कोइ चढावे जोरसुं, देखाडं गति तामरे ॥ भा० ॥ कौ० ॥ १६ ॥ सात पांच नर आवीया, उपाड्यो आकाशरे ॥ भा० ॥ पड्यो अपूठो उपरे, खोपर दंत विणासरे ॥ भा० ॥ कौ० ॥ १७ ॥ बीजी वारे इम सही, दाब्या सुभट अपाररे ॥ भा० ॥ तीजीवार चढावतां, चांप्यो भानुं कुमाररे ॥ भा० ॥ कौ० ॥ १८ ॥ भानु हिये पग देइने, आपहि चढियो जामरे ॥ भा० ॥ लागो अश्व खेलाववा, तरुण तणी परे तामरे ॥ भा० ॥ कौ० ॥ १९ ॥ नाचण कूदण चालणे, राग वागु अनुमानरे ॥ भा० ॥ राजपुत्र अति रंजिया, रंज्यो कुंवर भानुरे ॥ भा० ॥ २० ॥ आकाशे उंचो जइ, सुगभाइनो संचरे ॥ भा० ॥ देखावि आघो गयो, कुमर लिख्यो परपंचरे ॥ भा० ॥ कौ० ॥ २१ ॥ एतो ऐगीमी कही, ढाल अनोपम नामरे ॥ भा० ॥ गुणसागर कामे कियो, भामा सुत गत मामरे ॥ भा० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ आगे जातां अति भलो, दिठो वन सुख ठाम ॥ पूठि कर्ण पिसाचिका, भामा वन अभीराम॥१॥ घोभा रूपे चारीया, घास अने तरुपान ॥ विध्वंसी घन

वेलडी, कीधो अधीको जान ॥ २ ॥ आगे अपर वि लोकियो, भामा केरो बाग ॥ जगमें तरुवर जेतला, तेतानो तिहां लाग ॥ ३ ॥ वानर रूप रतिपति, रिस विशेषे जोय ॥ पान फूल फल तोडीयां, तुंठ कियो व न सोय ॥ ४ ॥ नगरी मांही आवतां. दिठो रथ वर एक ॥ आवे चाल्यो सनमुखे. दिसे शोभा अनेक ॥५॥

ढाल ८१ मी ॥ रामचंद्रके बाग चंपो मोरी रह्यो री ए देशी ॥ दिसे शोभा अनेक, सोवन रत्न विराजे ॥ मंगल कुंभ विवेक, वारु बाजां वाजे ॥ १ ॥ आरी साकी सोह, सोहे ध्वज अभीराम ॥ नारीजण संदो ह, गावे गीत सकाम ॥ २ ॥ पूगी विद्या काम, भाखे शयल विच्यारो ॥ कुंभारा घरनुं नाम, परणे हरख अपारो ॥ ३ ॥ कुंभारा घर जाय, लावे कुंभ उदारुं ॥ तुझ माता दुखदाय, भामा शा अहंकारुं ॥ ४ ॥ कि धो रूप विकार, उंट अने खर केरो ॥ जोतरीया रथ भार, खेरू आप घणेरे ॥ ५ ॥ हांशी करे ते नार, हाको हाक मचावे ॥ भांजे रीसमझार, सो रथ आप घुमावे ॥ ६ ॥ खंडीत किधां कान, पाड्या दांत जी वारे ॥ आयो कोपर जान, फाट्या वस्त्र तेवारे ॥७॥ गीतथाने विलाप, करती नारी नाठी ॥ किम राखेवो आप, हरीथी हरणी त्राठी ॥ ८ ॥ शेरी शेरी सोइ, हिंडे आप सुहायो ॥ कामणगारो होइ, सवके मन भायो ॥ ९ ॥ किन्नर सुर अवतार, खेचर भूचर रा

जा ॥ लोक कहे सुविच्यार, एहना अधिक दीवाजा ॥ १० ॥ के कोइ असुर कुमार, के इंद्र जाल कहावे ॥ यादवनो परीवार, माहे नय नवि पावे ॥ ११ ॥ कोइ होज्यो एह, तुह्मने शिकणवार ॥ बुढा आणी सनेह, वरजे वारंवार ॥ १२ ॥ डोकरीने नृप सार, पूछी कांइ करेवो ॥ योगीनो व्यापार, काज न कान धरेवो ॥ १३ ॥ मदन करे ए काज, किधो रुप अनेरो ॥ मा मिलवाने आज, आणे हरख घणेरो ॥ १४ ॥ तिस एक अने पचास, ए ढाल कहाणी ॥ श्रीगुणसूरी जगीश, श्रीहरी नद वखाणी ॥ १५ ॥

दुहा ॥ रूप अनेरो धारीके, चाल्यो जाइ जाम ॥ दृष्टे आवी वावरी, सवही विधी अभिराम ॥ १ ॥ कंचन केरो कामळे, पथडीनो मंडाण ॥ पंच वरण रत्ना तणो, तेहनो किस्यो वखाण ॥ २ ॥ रखवाली नारी रहे, निर न लीधो जाय ॥ पण जाणी भामा तणो, मदन करे उपाय ॥ ३ ॥

ढाल ८२ मी ॥ साधु संगती नित किजीए ॥ ए देशी ॥ रुप कियो ब्राह्मण केरोरे, श्वेत जनोइ किधी साररे हो ॥ वंभणा ॥ धोळी धोती पहेरणेरे, फेटानो अति विस्तार हो ॥ वं० ॥ रु० ॥ १ ॥ मस्तके वांध्यो फालीयोरे, पवीत्री पावन पहेरायरे हो ॥ वं० ॥ पगे गुजराती खासडारे, दर्प गुरुनो बिरद धरायरे हो ॥ वं० ॥ रु० ॥ २॥ उपरणीने ओढवोरे, काने सोनानो भा

ररे हो ॥ बं० ॥ आंगुलीयां वर मुद्रडीरे, माथे किधो तिलक उदाररे हो ॥ वं० ॥ रु० ॥ ३ ॥ मातो ने अरु फांदशुंरे, पिली आंख्या जोति अपाररे हो ॥ बं० ॥ हाथे कमंडलु लाकडीरे, देव ध्वनीनो करे उचाररे हो ॥ बं० ॥ ॥ रु० ॥ ४ ॥ गपा दिसे द्वारकांरे, गंगा केरो माथे मंडरे हो ॥ वं० ॥ मथुरा माल विराजीतारे, किरीया कांडे करी प्रचंडरे हो ॥ वं० ॥ ॥ रु० ॥ ५ ॥ करमें रातो टिपणोरे, वांचे नक्षत्र वार विच्याररे हो ॥ वं० ॥ जोशी जोतिप पूरीयोरे, लग्न तणी लहेवला वाररे हो ॥ बं० ॥ रु० ॥ ६ ॥ आशीर्वाद प्रकाशी योरे, दाशी दोमी लागी पायरे हो ॥ वं० ॥ कमंडलु जल जाचीयोरे, पेट भराइ सुखमें थायरे हो ॥ वं० ॥ रु० ॥ ७ ॥ ए जल मंत्री आपीशुंरे, मन रलीयायत सोइरे हो ॥ वं० ॥ देसे शीधो सामटोरे, तुह्मने पुण्य घणेरो होइरे ॥ वं० ॥ रु० ॥ ८ ॥ चेमी चंचल जातनीरे, लाज नही निर्लज्ज अपार हो ॥ बं० ॥ वांभण भांभण आवीयोरे, खसो धोती मतलावो वाररे ॥ वं० ॥ रु० ॥ ९ ॥ आवी वलगी वानरिरे, सो पूछे ए कुण विच्याररे हो ॥ बं० ॥ गुन्हेगार हमारडोरे, किउन लही भामा की साररे हो ॥ बं० ॥ रु० ॥ १० ॥ भामाछे को भुतणीरे, के को देवीनो अवताररे हो ॥ वं० ॥ उरसथकी तुं उतरयोरे, भामा कृष्ण तणी पटनाररे हो ॥ वं० ॥ रु० ॥ ११ ॥ माता भानु कुमारनीरे, तेहनी वावी विशेपे धाररे

हो ॥ वं० ॥ हम रखवाली आकरीरे, लेण न पावे कोइ वाररे हो ॥ वं० ॥ १२ ॥ नामा साथे, नृपतीरे, ए ज लमांहे झीले सोइरे हो ॥ वं०॥ के नामा सुत भानुजी रे, अवरने जल न पावे कोइरे हो ॥ वं०॥ १३ ॥ तु झ सरिखानी स्युं चालीरे, राव न राणीनो पइसाररे हो ॥ वं० ॥ विप्र पधारो वेगसुंरे, नहीतर जाणसो तुमे साररे हो ॥ वं० ॥ १४ ॥ एह वचन सुणी खी जीयोरे, तुं दासी केलणि कोइरे हो ॥ वं० ॥ ब्राह्म ण पग रज खेरवेरे, सब जग पावन होइरे हो ॥ वं० ॥ १५ ॥ हलवे हलवे चालीयोरे, पोहतो वाव तणा ज ल पास हो ॥ वं० ॥ दासडीयां मिली साहीयोरे, कर फरस्यां गुण उपज्यो तासरे हो ॥ वं० ॥ रु० ॥ १६ ॥ गिरी हुइ सामलीरे, सोभा पामी सघली दासरे हो ॥ वं० ॥ करेहि प्रशंसा सादरीरे, पात्र वडो मुख दे शावा सरे हो ॥ वं० ॥ रु० ॥ १७ ॥ वाहिर आवी गोरडीरे, आपण मांहि निहाले रुपरे हो ॥ वं० ॥ ए मोटो उप गारीयोरे, एह पसाइ रुप अनूपरे हो ॥ वं०॥ रु०॥ १८॥ भरी कमंडलु नीरसुंरे, निसरीयो विप्र ते वाररे हो ॥ वं० ॥ खाली दीठी वावडीरे, दासी सघली लागी ला ररे हो ॥ वं०॥ रु०॥ १९ ॥ जल शोसन ऐसी दोयमी रे, ढाल वारु विशेष एहरे हो ॥ वं० ॥ श्री गुणसागर सूरजीरे, मदन चरीत्रनो नावे जेह हो ॥वं०॥रु०॥२०॥

दुहा ॥ रिस वसे ते दासमी, भाखे वचन सरोस ॥

अति अटूट अगाह जल, कां किधो तें सोस ॥ १ ॥ के झाकि के सोहरो, विप्र नहि चंडाल ॥ एहवो काम न को करे, जीव दया प्रतीपाल ॥ २ ॥

ढाल८३मी ॥ हुं वारी धन्ना ए देशी ॥ बंनणारे ॥ कां जल लिधो जाय, बंनणारे हम लागा तुझ पाय ॥ बंनणारे जंगम थावर जीव, बंनणारे जल विण कर शे रीव ॥ बंनणारे ॥ का० ॥ ए टेक ॥ जल राजा ज लदेवतारे, जल सम अवर न कोय ॥ जल जगने जी वाडणोरे, जल विण तृपति न होय ॥ बं० ॥ का० ॥ ॥ १ ॥ अन्न विनां आघुसरेरे, जल विण एक लिगार ॥ सरे नहि तिहा कारणेरे, जल मोटो संसार ॥ बं० ॥ का० ॥ २ ॥ अमृत पंच वखाणियारे, जल सब आदि सार ॥ घणुं किस्युं विस्तारवुंरे, जलथी जग व्यवहार ॥ ब० ॥ का० ॥ ३ ॥ इम बलिहारी ताहरीरे, बाबा सु ण अरदास ॥ पाप तणी ठे पाळलीरे, धरी स्वामीनी को त्रास ॥ बं० ॥ का० ॥ ४ ॥ नूस्यां करो नगीना रहिरे, जाय जिम गजराज ॥ शंक न माने कोइनिरे, गाजे जिम घन गाज ॥ बं० ॥ का० ॥ ५ ॥ विविध प्रकारे चेष्टारे, करतो जाय उदार ॥ एटले आगे आ वियोरे, नामानो बेजाररे ॥ बं० ॥ का० ॥ ६ ॥ हाटानि शोन्ना हरेरे, मणि मोतीने रयण ॥ हरे करे अति आ करोरे, लोका साथे कुचयनरे ॥ बं० ॥ का० ॥ ७ ॥ अन्न लुण कपुरसुंरे, सुधा विविध प्रकार ॥ शस्त्र व

स्त्र आदि करीरे, द्रव्यतणो अपहार ॥ वं० ॥ का० ॥ ॥ ८ ॥ घोमा हाथी वाहिणीरे, जामा जानु नाम ॥ जे देखे ते अपहरेरे,सोर मचायो स्वाम ॥व०॥ का०॥९॥ सात पांच मिलि सामटिरे, वेगे वेगे सोइ ॥ चोर ह मारो चोतरेरे, चोहडे वोए होइ ॥ वं० ॥ का० ॥१०॥ वाहारां साथे वोलिवोरे, पुरुपां जोर न कोइ ॥ कमंडलु फोडी दियोरे, जल वहि चाल्यो सोइ ॥ वं० ॥ का०॥ ॥ ११ ॥ कांइक जलतो वाविनोरे, कांइक विद्या जोर ॥ चोहटो वाह्यो वेगसुंरे, माचि रह्यो अति सोर ॥ वं० ॥ का० ॥ १२ ॥ कोडी कीराणा कापडारे, कोइ न लहे पार ॥ वस्तु अमोलीक वाहवेरे, पाम्यो हर्ष अपार ॥ वं० ॥ का० ॥ १३ ॥ पाणीपूर पंडुरथीरे, दासी गइ ते नास ॥ आपण दृष्टी अगोचररे, माने मन शाबास ॥ वं० ॥ का० ॥१४॥ एतो त्र्यायशीमी कहीरे, ढाल विशाल विशेप ॥ गुणसागर भवी सांभ लोरे, न करो कांइ अदेख ॥ वं० ॥ का० ॥ १५ ॥

दुहा ॥ तदनंतर किधो नलो, यौवन रुप रसाल ॥ ब्राह्मण गुणको आगलो, गले तुलसीकी माल ॥ १ ॥ चर्म शरीरी प्राणीयो, कांठे वेठो आय ॥ मोह वसे सदम स्तना, बिजानुं शुं जाय ॥ २ ॥

ढाल ८४ मी ॥ झुमखडानी देशी ॥ रंगे रमतो राजीयो राजीयो, पेखे पुष्प पडुर ॥ रामा सुत मोह ना ॥ पूछे विद्या सो कहे सो कहे, ए सब फूल सनूर ॥

दार ॥ ध्वज तोरण माला जली, पोखे शोभ अपार ॥ १ ॥ विद्या जाखे स्वामी सुणो, जो तुं दुर्यन साल ॥ करवुं ते करजे इहां, बिजो सहु जंजाल ॥ २ ॥ स्नान कियो सरोवर जले, अरु शिर छूटा केस ॥ माथे टिको चिरनो, विप्र तणो वर वेश ॥ ३ ॥ वरस चतुरदशनो सही, ब्राह्मण बाल कुमार ॥ नाम धरावे वेदीयो, गाढो बोलणहार ॥ ४ ॥

ढाल ८५ मी ॥ इम जिन पूजीए ॥ ए देशी ॥ श्री हरी राज कुमारजीरे, राचे केली मझार ॥ पेखी पगरा पर तणारे, अमरखवंत अपारोरे ॥ १ ॥ आगो वेदवो, दरसण मोहन वेलोरे ॥ सुरगुरु जेहवो ॥ ए आंकणी ॥ भोजन अर्थे आवियोरे, जामा जामनी पास ॥ स्वस्ती कही उभो रह्योरे, सा बोले उल्हासोहो ॥ आ० ॥ २ ॥ विप्र कहो चाहो किशुंरे, माता भोजन आप ॥ क्षुधा वेदनी व्यापथीरे, आज जीमवुं धापहो ॥ आ० ॥ ३ ॥ पहीला ब्राह्मण तेडीयारे, भोजन अर्थे उदार ॥ आवी मिल्याछे एकठारे, अगणीत केइ हजारहो ॥ आ० ॥ ४ ॥ भोजननुं शुं मांगवोरे, कृष्ण वळना संग ॥ हय गय धन कंचन मणीरे, मांग मांग मनरंगहो ॥ आ० ॥ ५ ॥ विप्र कहे विप्रो सुणोरे, वारु वचन विचार ॥ तुह्म तो विद्या वेचणारे, न लहे पुण्य प्रकारहो ॥ आ० ॥ ६ ॥ दान तणा फळछे घणारे, अन्न समो नही कोइ ॥ अवरां त्रपाति न उपजेरे, त्रपती अ

नथी होइहो ॥ आ० ॥ ७ ॥ अन्न याचना तेहथीरे, पहीली किधी एह ॥ मुज तुशी जग तुं सहिरे ॥ इहां नही संदेहहो ॥ आ० ॥ ८ ॥ नामा नाखे परीयणोरे, नल नोजनसु आज ॥ विप्र जिमावो वेगशुरे, नूख्या नोजन काजहो ॥ आ० ॥ ९ ॥ पुनरपी नाखे नाम नीरे, सघलामांही जाय ॥ मनगमतो नोजन करोरे, त्रपती घणेरी थाय हो ॥ आ० ॥ १० ॥ विप्र माहे नवी जिमुरे, एतो विधी वाता हीण ॥ ब्रह्म क्रिया पाले नहीरे, पापाचार प्रविणहो ॥ आ० ॥ ११ ॥ सर्व सुलक्षणवंत हुरे, विद्यानो नडार ॥ मुज नोजन दे सादरेरे, लचपच मतकर लिगारहो ॥ आ० ॥ १२ ॥ गौब्राह्मणने तिर्थजेरे, मुज तपते तपताय ॥ पात्र न मुज सो दुसरोरे, मात विमासे कांइ हो ॥ आ० ॥ १३ ॥ क्रिया हिण लक्ष कोडीनेरे, नोजन दिधो वादी ॥ क्रियावंत एकही नलोरे, सुणीजि आदी अनादीहो ॥ आ० ॥ १४ ॥ बैठो सघला आगलेरे, पग धोवाने काज ॥ विप्र कहे रोसे नरयोरे, आवेछे शिर खाजहो ॥ आ० ॥ १५ ॥ ज्ञान वृध वय वृधजेरे, समजावे परीवार ॥ कलह तणो अवसर नहीरे, मौन तणो आचारहो ॥ आ० ॥ १६ ॥ बइठो पहीले आशणेरे, ब्राम्हण आव्या वाजी ॥ चाल्या थानक दुसरेरे, जा रयो वृटा नाजीहो ॥ आ० ॥ १७ ॥ तिहां पिण अग्नीम आसणेरे, जाइ वेठो सोइ ॥ तवते ब्राम्हण कल

कल्यारे, अजब तमासो होइहो ॥ आ० ॥ १८ ॥ वेदशास्त्रनां जाण थेंरे, न लहो वेद विच्यार ॥ हिंस्यादिक पातीक करोरे, न तजो क्रोध लीगार हो ॥ आ०॥ १९॥ गर्व करो जाति तणोरे, जाति न तारथा कोइ ॥ तारे तो करणी करीरे, रीस कीया स्युं होइ हो ॥ आ० ॥ २० ॥ पंचायशीमी ढालमेरे, विप्रां कीधो क्रोध ॥ श्री गुणसागर सूरिजीरे, धन तजे अविरोध हो ॥ आ० ॥ २१ ॥

दुहा ॥ सुधी वात न सरदहे, सुधीसुं नहि राग ॥ मूरखने उपदेश ते, टाढि उषध लाग ॥ १ ॥ सहजन फीटे कोइनो, ब्राह्मण जाति विशेष ॥ उठ्या मारेवा भणी, विप्र कहे मा देख ॥ २ ॥ माय कहे हुं शुं करुं, विप्रा साथे न जोर ॥ तुं पिण निचलो नवि रहे, ए चंपाणी कोर ॥ ३ ॥ हलकारी विद्या घणुं, हल हल थइ अपार ॥ आपणा माहि आंधला, लागा करण प्रहार ॥ ४ ॥

ढाल ८६ मी ॥ वनमालानी देशी ॥ लाग्या ते करण प्रहार, नवि जाणे कोइ विच्यार ॥ आपणा मांहि अपार, वलगे ते गहेल गिमार ॥ १ ॥ पहिली तो जीभ लडाइ, बीजी तो ढिंग बजाइ ॥ तीजी तो लात लगाइ, चउथी तो दांता खाइ ॥ २ ॥ पंचमी वार सुभटाइ, लोटिनी मार मचाइ ॥ छठे लाकडी उठाइ, ते साहमां आवे लाइ ॥ ३ ॥ बाबाने बेटो भाइ,

लोपाणी सयल सगाइ ॥ आंधे आंधो पेलाइ, नवि जाणे आप पराइ ॥ ४ ॥ आचारज ऊना थाइ, हल कार करे आगे आइ ॥ उपाध्याय आप वधाइ, निरखाणी लघुता पाइ ॥ ५॥ जोशी जोतिष वरताइ, न सक्या ए जाणी बुराइ ॥ जांनि अभीमांनी जाइ, चडवे दुवे अधीकाइ ॥ ६ ॥ तिरवाडी आवे धाइ, पछीतावे केस गहाइ ॥ भट मिश्रा एह वताइ, महिमा तो आप गमाइ ॥ ७ ॥ महा बलनी एम वलाइ, कुट्या विण जाइ न कांइ ॥ मारंता भूत नमाइ, भटजीए कथा सुणाइ ॥ ८ ॥ करताने साथे कीजे, तो पुण्य न पाप गणिजे ॥ होथाका लाहो लिजे, उजागर होइ फिरीजे ॥९॥ नवलीनो सुंड कहावे, आपणहि आप वंधावे ॥ मंकोडो खीज्यो आवे, तो मांस आपणो चावे ॥१०॥ ते विप्र लथावथ होवे, तव लोक तमासो जोवे ॥ ते लाज निकामो खोवे, ते आपे आप विगोवे ॥११॥ ते धरति साथर सोवे, मारया लाता ना रोवे ॥ विण वेलण पोलि पोवे, विण लोटि मुहंडो धोवे ॥ १२ ॥ ते लभता माथा फूटे, ते छोडाव्या नवि छूटे ॥ ते आप आपमें कूटे, ते मांहोमांहि लूंटे ॥ १३ ॥ ते तभफडता अति त्राठा, भडभभता साहे भाठा ॥ ते थोथे घावे घाठा; लभथडिया जाइ नाठा ॥ १४ ॥ ते गाढा होइ लागा, जब लात धबुका वागा ॥ तेतो उघाडा नागा, गहेवरीया जाइ भागा ॥ १५॥ जे लुंद पणाथी लडी

यां, जे भूंडपणे भडभडियां ॥ ते पौरष पोखे पडीया, ते अलगाथी अफवमीयां ॥१६॥ जे था मुगाला माटी, ते पिता उपध वाटी ॥ बल हेते खाता काटी, थर ह रीयां लागा साटी ॥ १७ ॥ भोकरडानि कडी भागी, ते खिर न मिठि लागी ॥ जब चोट पराइ वागी, ला डुनि लालच तागी ॥ १८ ॥ भोजन तो बहुला दे ख्यां, ए भोजन आज विसेख्यां ॥ अवराने लाडु खाधां, भामाने गडधां लाधा ॥ १९ ॥ ए भारथ हुउ भारी, ते दिठो हरि पटनारी ॥ गेमावि अलगा किधां, लघु विप्र समिपे लीधां ॥ २० ॥ ए गाशीमी ढाल र साली, ए विप्र विनोद विसाली ॥ श्री गुणसागरजी भाखी, परजुन चरित्र छे साखी ॥ २१ ॥

दुहा ॥ परीयणशुं भामा कहे, बालिक ब्राह्मण एह ॥ जीमावो हम आगले, आणी घणेरो नेह ॥ ॥ १ ॥ मांडो उंचि मांडणि, उपर थाल विशाल ॥ विविध प्रकारे पीरसणा, पीरसावो ततकाल ॥ २ ॥

ढाल ८७ मी ॥ गौतमने मेल दियो महाविर ॥ ए देशी ॥ भामानो भाख्यो करे, आज्ञाकारी सोय ॥ भगति भलेरी साचवे, राचवे रागण होय ॥ १ ॥ ए विप्र हमारे मन वस्यो, ए टेक ए विप्र करामतगार ॥ ए विप्र तणा गुणसार ॥ ए गणे ढांक्यो रयन ए विप्र, देखत हम चयन ॥ ए० ॥ २ ॥ विप्र भणे सुण स्वा मनी, पूरो पमतो जाण ॥ बेसावे जिमवा भणी, नहिं

तर जाओ परधान ॥ ए० ॥ ३ ॥ भोजनने व्यवहा
रनो, घाटो नावे ठाम, पहिलो चोकसी किजीए, इम
कहे त्रिभुवन स्वाम ॥ ए० ॥ ४ ॥ भामा भापे
शु कहो, एहवि डोि वात ॥ ए घर दीपे हाथीया,
माणसनी शिमात ॥ ए० ॥ ५ ॥ पहेला मेवा पिर
शीया, पिस्ता द्राख बदाम ॥ चारोली चतुराइशुं,
खांडतली अभाराम ॥ ए० ॥ ६ ॥ खाजां गजां सा
रीखा, लाडुनी बहु भात ॥ घेवर फीणी लापसी. पिर
से मननी खांत ॥ ए० ॥ ७ ॥ खीर खांड घृत साम
टां, मांड्यो मोटे मान ॥ बडां विशेखे पिरशीया, विप्र
तणो हित जाण ॥ ए० ॥ ८ ॥ घोलवभाने घारवभी,
पूरी परीघल भाव ॥ सालदाल ने सालणां, पिरसे
चितने चाव ॥ ए० ॥ ९ ॥ घीनी धार न खेंचइ, दु
ध दहीने गोल ॥ दाखबुहारी रायता. ए अति वस्तु
अमोल ॥ ए० ॥ १० ॥ भामा भाखे सादरी, अमृ
त करे आहार ॥ कोइ काणी न राखवी. ए सहु तु
ज परीवार ॥ ए० ॥ ११ ॥ पिरसतां वेला थइ, जि
मता वार न कोइ ॥ वैश्वानर मुख मेल्हतां, घास
तणी परे जोइ ॥ ए० ॥ १२ ॥ लावोरे लावो ला
वो वली, एकज लागी तास ॥ ताम अनेरा पिरस
णो, पिरसे आपी उल्हास ॥ ए०॥१३॥ केइ हजारा
कारणे, अन्न अने पकवान ॥ किधुंधुं ते वावर्युं,
अचरिज ए असमान ॥ ए० ॥ १४ ॥ पाकाने काचा

करी. थाल भरीने ठेली ॥ पाछे कांइ न देखिए, आम घडे जल मेली ॥ ए० ॥ १५ ॥ मुग मोठ मक्का घ णी, चावलने जव जेह ॥ गिहु चणा आदी करी, खाइ गयो तव तेह ॥ ए० ॥ १६ ॥ हय गय ऊंट त णो सहु, दाणो पिण तेह खाध ॥ आणी ऊधारो पिर शीयो, तृपती तोहिन लाध ॥ ए० ॥ १७ ॥ अग्नी जा लमें बालीए, लाकरु गाडा लाख ॥ तोपिण ते धापे नही, तिम एहनी अग्नीलाख ॥ ए० ॥ १८ ॥ या दवनी नारी मेली, करे कुतुहल कोरु ॥ निज निज घरथी आणके, पिरसे होडाहोड ॥ ए० ॥ १९ ॥ कोलाहल माच्यो घणो, मिलीयां लोक तिवार ॥ तृपती न पावे खायवे, देव तणो अवतार ॥ ए० ॥ २० ॥ विप्र भणे सुण भामनी, आपणो बोल्यो पाल ॥ कां थाइ अति सुंवडी, अवर किशी दिउ गाल ॥ ए० ॥ २१ ॥ भानु तणी माता भली, ना रायणनी नार ॥ ऊग्रसेन कुवरी कही, अवसर सहु तुऊलार ॥ ए० ॥२२॥ कृपणपणो नवी बूझीए, तुरु सरखीने देख ॥ लघुभोजी हुं बालुमो, भूख्यो राख्यो विशेष ॥ ए० ॥२३॥ ना हुवो आहारजी. ना हुवो उ पवास ॥ अधवीचो होइ रह्यो. कांरे कियो विश्वास ॥ ए० ॥ २४ ॥ निका मंदीर नान्हडा. पावे सघली लाज ॥ मोटा घरडर मूखनां. साच मिलीए आज ॥ ए० ॥ २५ ॥ पाय पसारण तेतलो. जे तो सोड

पसार ॥ ओटी सोमे सोवतां, लागे थंडी अपार ॥
॥ ए० ॥ २६ ॥ पूरो न पडे एकको, तो ए स्यो वि
स्तार ॥ पेट न दुखे थो खरो, घर सारु व्यवहार ॥
॥ ए० ॥ २७ ॥ आडंबर मांहे घणो, न लहे घरनी
सार ॥ ते तो माणस बावलां, लोक हंसावण हार ॥
॥ ए० ॥ २८ ॥ ब्राह्मण सायर अन्नीनो, पूरो परूवो
दूर ॥ अन्न अने जल इंधणां, जो दिजे नरपूर ॥
॥ ए० ॥ २९ ॥ यद्यपि में किधो घणो, आगे नायो
सोय ॥ नुख्यो तो अति नडनडे, दोपण एह न को
इ ॥ ए०॥३०॥ सत्याशीमी ढालमें, आयो नामा गेह ॥
श्रीगुणसागर सूरिजी, सा अती आणे नेह ॥ ए०॥३१॥

दुहा ॥ कुबजा दाशी ए वली, सरली किधी जा
म ॥ रूप सोहागण सुंदरी, नामा दिठी ताम ॥ १ ॥
विस्मय पामी नामनी, जाणी जाय न दास ॥ पूछी
री तुं कुण ए, सा बोले उल्हास ॥ २ ॥ देव तुम्हारी
दासडी, कुबज्या हमारो नाम ॥ लघु ब्राम्हण परसा
दथी, रूप थयो अनीराम ॥ ३ ॥ लालच लागी ना
मनी, ए अति विद्यावंत ॥ हाथ ग्रही आघो लीयो,
जइ बेठा एकंत ॥ ४ ॥

ढाल ८८ मी ॥ संजम लेवा संचरयोरे, साथे स
हु परीवार ॥ ए देशी ॥ रहस्यपणे पूछे खरीरे, ज्ञान
तणो अनुमान ॥ नामा नूलिरे ॥ देव प्रकासो आप
णोरे, नण्ण तणो वे थान ॥ नामा नूलिरे० ॥ १ ॥

भूलि भरमें भामनीरे ॥ ए आंकणी ॥ जोसीडो जग में वडोरे ॥ भाखे वचन विच्यार ॥ भा० ॥ तत्र मंत्र जाणुं घणांरे, वस आणुं भरतार ॥ भा० ॥ २ ॥ चंद्र सूर्य वरू देवतारे, वश वरतावुं दोइ ॥ भा० ॥ इंद्र करु घरे प्राहुणोरे, शेपनाग शुं सोइ ॥ भा० ॥ ३ ॥ पायाले पेसुं सहिरे, आकाशे पिण जाउं ॥ भा० ॥ भगत तणा नोवाहरुरे, वेगे करीने थाउं ॥ भा० ॥ ४ ॥ अणभावंतानो कालछुंरे, भावंतानो लाल ॥ भा० ॥ पुछेवुं पूछे सहिरे, काज करुं ततकाल ॥ भा० ॥ ५ ॥ हम तुम्ह विच न आंतरोरे, भ्रांतप नाठि दूर ॥ भा० ॥ तुझ गुणभोरे बांधीयोरे, बैठो आणी हजूर ॥ भा० ॥ ६ ॥ पगे लागी हाहा करेरे, आंसु नांखे नयण ॥ भा० ॥ हियो भरयो आवे घणुंरे, मनमें अधीक कुचयन ॥ भा० ॥ ७ ॥ तुं म्हारो वालेसरुरे, तुझ सम अवर न कोइ ॥ भा० ॥ पिता पुत्र भाइ भलोरे, करी दे कांइक सोइ ॥ भा० ॥ ८ ॥ साल समाणी साललिरे, सो कहिए निश दिश ॥ भा० ॥ दिन दिन आवे शिर चडिरे, ए दुःख विश्वाविस ॥ भा० ॥ ९ ॥ साधी त्रिकोटि रोमछेरे, एक एकने एह ॥ भा० ॥ अमरख आणी अती घणोरे, पापणी पापे वेह ॥ भा० ॥ १० ॥ आवटणुं अती आकरुंरे, लोही चढे नहि मंस ॥ भा० ॥ निशदिन लागुं झुरणुंरे, शातानो नहि अंस ॥ भा० ॥ ११ ॥ हरी वश आ

वे माहेरे, नवि ले रुखमणी नाम ॥ भा० ॥ दोरो डां
डो दाखवोरे, देउ मनगमता दाम ॥ भा० ॥ १ ॥ दूध
भलावणी भतनेरे, वानरने फल जेम ॥ भा० ॥ सिल
भलावण लंपटारे, एह भलावण तेम ॥ भा० ॥ १२ ॥
ठगां ठगोरी भामिकांरे, आरती मांही एम ॥ भा० ॥
आप ठगावे ठग कनेरे, अवर न ठगइ केम ॥ भा०
॥१४॥ विप्र भणे भामा सुणोरे, जो वीधी कीधी जाय
॥ भा० ॥ सहस गुणो आदर लहेरे, रुखमणी पगे ठे
लाय ॥ भा० ॥ १५ ॥ जेहि कहो सोइ करुरे, न करुं
शोच लिगार ॥ भा० ॥ लाज हमारी तुह्म भणिरे, तुं
गति मति दातार ॥ भा० ॥ १६ ॥ मुड मुंडाइ मुहं
भोरे, कालो करिय अपार ॥ भा० ॥ फाटा चुंथा पहे
रीनेरे, मौन तणो आचार ॥ भा० ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं
श्ररू वरू रुंढ मुंरूशुंरे, अठ्योत्तरसो वार ॥ भा० ॥
जाप जपंता पामसोरे, रुप अनोपम सार ॥ भा० ॥
॥ १८ ॥ इंद्राणी अलगी थकीरे, थाशे सहिय उदाश
॥ भा० ॥ एवो रूप न माहरोरे, जेहवो भामा पास ॥
भा० ॥ १९ ॥ देव दुर्लभा थायसोरे, कृष्ण तणी शी
वात ॥ भा० ॥ रुखमणी तो पासंगमेंरे, नहि आवे सु
ण मात ॥ भा० ॥ २० ॥ जो दुख तो सुख जगतरेरे,
दुख विण सुख नवि होय ॥ भा० ॥ कान सहे विधाव
णोरे, कुंडल पेरे सोय ॥ भा० ॥ २१ ॥ जो तरुवर धु
री झडी पडेरे, तो नव कुंपलि लाल ॥ भा० ॥ दिन

थोडामें थायस्येरे, शोजनिक सुविशाल ॥ ना०॥ ॥ २२ ॥ डरु डरु डरतां रहेरे, उद्यम नहिय लिगार ॥ ना०॥ आंखी सरीया मानवीरे, काजलनो शिनगार॥ ना० ॥ २३ ॥ इम नीसुंणी शा नामनीरे, आतुर थइ अपार ॥ ना० ॥ विप्र वचन वाल्हां करिरे, हुइ विप रीत ते वार ॥ ना० ॥ २४ ॥ परने चिंते जेहवुंरे, तेह वुं पावे आप ॥ ना० ॥ एतो परतक्ष देखजोरे, नामा लाग्युं पाप ॥ ना० ॥ २५ ॥ वले आपणी आंगशुंरे, परशु द्वेपीणी होइ ॥ना०॥ शिर मुंडावे आपणोरे, ना मनि परे जोइ ॥ ना० ॥ २६ ॥ कीधीथी ठाकुर नणि रे, अवर परे अरदास ॥ ना० ॥ घोमो फिरी ऊपर च ड्योरे, ते परे हुइ तास ॥ ना० ॥ २७ ॥ फीरी आवुं आगे जइरे, जापजपे मन सुध ॥ ना० ॥ इम कही आ गे चल्योरे, कारज करीय विरुध ॥ ना० ॥ २८ ॥ अ व्यायसीमी ढालमेंरे, नामानें नरमाय ॥ ना० ॥ श्री गु णसागर गुरु कहेरे, मा मिलवाने जाय ॥ना०॥२९॥

दुहा ॥ माता सुखनो आसनो, काम कुमर मन र ग ॥ चाल्यो अति ऊछरंगसुं, आणी हेत अनंग ॥ १॥ काम कुमर आव्यातणी, वेलाने अधिकार ॥ माय मने रथ मालनी, ढाल रसाल अपार ॥ २ ॥

ढाल ८९ मी ॥ मेरी सहियां गीरधर आवेगो । ए देशी ॥ मेरी सहियां लालन आवेगो, प्यारो प्राण आधार ॥ मेरो मदन कुमार ॥ यादव कुल शिणगार ।

मे०॥ए आंकणी ॥ एह वासर जे गया, माहरे नावे वा
दी ॥ पेट नरती दिन प्रति,न जिम्यो अन्न सवादी ॥ ज
न मन जीवी तणीरे, आजहीथी आदी ॥ मे०
॥ १ ॥ चामरुपी होइ रहीयां, मिडका जग जोइ ॥ मे
ह वुठे दैव त्रुठे, मूवा जीवे सोइ ॥ जीव जीवन आ
वीयाए, एह परे हम होइ ॥ मे० ॥ २ ॥ सुनचीती स
दा रहती, चेतना सुतनी पास ॥ गाय वनमें जाय हां
की, चरती फिरत उदास ॥ हिंसंति आवे घणुं, वाछु
रीया घर जास ॥ मे० ॥ ३ ॥ चक्रवाकी जीम चाहे,
जगंतो दिनकार ॥ चंदने चाहे चकोरी, बपैयो जलधा
र ॥ आंबनो वन कोकिला, विरहणी नरतार ॥ मे० ॥
॥ ४ ॥ क्षुधावंतो अन्न चाहे, तृषावंतो वारी ॥ स्यैर
णी स्वबारमेरे, रोगीया उपचारी ॥ तेम ए मन माहरो,
पुत्रने अधीकारी ॥मे०॥ ५ ॥स्वामी श्रीसंधर वतावी,
सोइ घेला आज ॥ जलदनीपरी वाट जोतां, मिल्यो ए
सुन साज ॥ देवगुरु प्रसादथी, सरच्या वंछीत काज
॥ मे० ॥ ६ ॥ द्यो वुहारो वाट झाफो, जली रज बे
सावी ॥ पंचवर्णां कुसुमकेरो, फूल पगर रचावी ॥ ठा
म ठामे धूपणा, करो चितने चावी ॥ मे० ॥ ७ ॥ गे
ह धोलो आज सोलो, दैवनो विवहार ॥ भांती फेरो
पात्र तेड्यो, पेखवा परीवार ॥ वाजां विविध प्रकार
नां, बजावो इणीवार ॥ मे० ॥ ८ ॥ नारी आवो
गित गावो, करो मंगल च्यार ॥ करी वधावो कलस

लावो, सात पांच उदार ॥ दोव अक्षतने दहीं, सउ
ण मेल्यो सार ॥ मे० ॥ ९ ॥ चोक पूरो मती अधु
रो, रहे एक लिगार ॥ अलग चूरो असुभ सघला,
सजो सुभ आचार॥ वेगे हुवो उतावला, कांइ लगावो
वार ॥ मे० ॥ १० ॥ थाल रोलां भरी कचोलां, कुंकु
मा घन सार ॥ रत्न रुडा नही कूमां, हेम रजत अ
पार ॥ वधावाने कारणे, घणा मोतीना हार ॥ मे०
॥ ११ ॥ यत्न करणा असुभ हरणा, वाटमे न रहा
य ॥ रांड भेसो अंध तेसो, कुंकुउ न कराय ॥ नाक
चिबो चिपडो, बुर मुहोटली जाय ॥ मे० ॥ १२ ॥
नारी परणी अने उपरणी, साजी उज्वल वेस ॥ गो
सवछि कलस संपूर्ण, दधी मधु सुवीशेस॥ अग्नी ज्वा
ला दिपती, अपरस उण अशेप ॥ मे० ॥ १३ ॥ र
थ सजोडो पाट घोडो, हाथीयो सिणगार ॥ पथे रा
खो सरस भांखो, पित्त वरणी गार ॥ मांउलां मिली
यां भलां, साधुरोजी धार ॥ मे० ॥ १४ ॥ हंसनी
परे हालतोरे, चालतो सुंदर इंद ॥ नयणे नीरखी हि
ए हरखी, जाणी तेज जिणंद ॥ साहमो जोशुं घणुं,
जेम दुतीया चंद ॥ मे० ॥ १५ ॥ गोदी करीशुं हीं
ये धरीशुं, चुंवीशुं सोवार ॥ मुह माथो दिन सनाथो,
जाणीशुं सुविच्यार ॥ विलसशुं मन मोकले, अरथना
भंडार ॥मे० ॥१६॥ हाथे फरशी हिए उरशी, राखीशुं
भाखी ताम ॥ देइ मुखमें कवो सुखमे. जिमो कुंवर का

म ॥ पाननी वीमी कारिने, आपीश आजिराम ॥ मे० ॥
॥ १७ ॥ वात सुणशुं कुवर केरी, ठेह धरी लगी
जेह ॥ आपणा वितक विच्यारी, जांखीशं धरी ने
ह ॥ मनोरथनी माला जली, गुंथी राखी एह ॥
मे० ॥ १८ ॥ ए नव्यायशीमी जली, ढाल तो सुखकार
॥ कहे श्रीगुणसूरि सघली, ढालमें शिरदार ॥ सांजल्यां
आवी मिले, सकल वंछीत फल सार ॥ मे० ॥ १९ ॥

दुहा ॥ आगे जातां आवीयो, सुंदर मंदिर ए
क ॥ हयथट गयथट नरथटां, पूरीत शोज अनेक
॥ १ ॥ वली विशेषे पूछतां, विद्या जाखे इश ॥
ए घर तुह्म माता तणो, जणनी पूरी जगीश ॥ २ ॥
नित्य महोत्सव नवनवा, दिजे पोली प्रवाय ॥ याचक ज
य जय उच्चरे, जूरी जणे गुणगाय ॥ ३ ॥

ढाल ९० मी ॥ परम सलुणो साधुजी ॥ ए दे
शी ॥ मोहन प्यारे चेलणा, चतुराइ दिसेरे ॥ रागे
राची रुखमणी, मिलवाने मन हिसेरे ॥ मो० ॥ १ ॥
रूप धरयो रलीयामणो, ऋषी बालीक रुमोरे ॥ मि
ठो नीमीत जाखणो, बोले जीम सुमोरे ॥ मो० ॥
॥ २ ॥ वेस विराजे साधुनो, महीमा ए अति मोटो
रे ॥ पूज्य पछे वडी पांगुरी, चलोटो पिण छोटोरे ॥
मो० ॥ ३ ॥ खांधे लटके लोवडी, लटकतो चालेरे ॥
जयणनो गुण राखतो, हलुए हलुए हालेरे ॥ मो० ॥
॥ ४ ॥ देह प्रमाणे दिपतो, करमे दंड धरावेरे ॥ म

नमथ नावे दूकडो, दरसणने दावेरे ॥ मो० ॥ ५ ॥
मुहंफ्रे दिधी मुहपति, मुनी मयले गात्रीरे ॥ गुण आ
चारे उजलो, अति चारीत्र पात्रिरे ॥ मो० ॥ ६ ॥ आ
गे उघो बांहमे, पुंजवाने काजेरे ॥ यत्न करेवे जीव
नी, संजम गुण गाजेरे ॥ मो० ॥ ७ ॥ रंग रंगीला पा
तरा, पडीलेहि लिजेरे ॥ एखणा सुधी आहारनी, ग
वेखणा कीजेरे ॥ मो० ॥ ८ ॥ सुमते सुमतो वे
खरो, गुपतिए करी गाढोरे ॥ दर्शण दिठे जेहने,
चित्त होवे थांढोरे ॥ मो० ॥ ९ ॥ पीहरीयो ब का
यनो, व्रत तो चोखा पालेरे ॥ निग्रह इंद्रि पांच
नो, दुपण सहु टालेरे ॥ मो० ॥ १० ॥ शिल
धरे नव वाफ्सुं, तस क्रोध न कोइरे, समता रसनो
सागरु, निरलोभी अति होइरे ॥ मो० ॥ ११ ॥ स
नमुख दीठो आवतो, शा साहमी आवेरे ॥ देइ प्रद
क्षणा वंदनां, करती मन सुख पावेरे ॥ मो० ॥१२॥
लेवा चाली पाटलो, हरी आसणे वेठोरे ॥ रुखमणी
ना मन भीतरे, अति अचरिज पेठोरे ॥ मो०॥ १३॥
विनय करीने विनवे, ऋषी उरहा आवोरे ॥ वेसो वी
जे आसणे, जिम साता पावोरे ॥ मो० ॥ १४ ॥ ते
धन थानक जाणीए, जिहां ऋषी ले विश्रामोरे ॥ उ
ठावुंहु कारणे, तुह्म मति दुःख पामोरे ॥ मो० ॥ १५॥
देवाधीप्रीत एह अछे, हरीके हरीको जायोरे ॥ वेठो
सुख पावे साहि, अवराने असोहायोरे ॥ मो० ॥१६॥

ऋपि भांखे सुण श्राविका, ए केहि चित्यारे ॥ सपा खेलावे मानवी, जाणी अहिमंतारे ॥ मो० ॥ १७ ॥ लब्धि प्रसादे देवता, हमसुं नवि बोलेरे ॥ ताजु घाली डुगरा, कर साथे तोलेरे ॥ मो० ॥ १८ ॥ मेरु तणो दाडो करे, धरती छत्राकारोरे ॥ राखे हाथा ज परे, सायर जलनी धारोरे ॥ मो० ॥ १९ ॥ तो तुम्ह साचा स्वामीजी, खमवो ए अपराधोरे ॥ दिसोगे तो नान्हडा, संजम किम लाधोरे ॥ मो० ॥ २० ॥ नृपमं डल पर जनमीया, प्रथवीपति तातोरे, माता तो म हि गडणी, वेरागे वातोरे ॥ मो० ॥ २१ ॥ आज ल गी गुरु भेटणा, हमने नवि हुइरे ॥ आपाहि आपे जा गीया, गति मति जुइरे ॥ मो० ॥ २२ ॥ तिरथवा शी हुं सहि, इहां आयो आजोरे ॥ वरस सोलनो पारणो, करवाने काजोरे ॥ मो० ॥ २३ ॥ भाखे रा णी रुखमणी, ए अधीको केहवायोरे ॥ उत्कृष्टी अव गाहना, वरसो तणो तप थायोरे ॥ मो० ॥ २४ ॥ अबलाई उपवासीयो, माता थान हरामोरे ॥ वात व डासुं कीजीए, वोहरावणनो कामोरे ॥ मो० ॥ २५ ॥ षट चौरयासीमी भली, ए ढाल कहावीरे ॥ श्री गुणसाग र सब लह्यो, माता दरशण पावीरे ॥ मो० ॥ २६ ॥

दुहा ॥ दरशण पामी माता तणो, मान्यो सुख मननाहि ॥ तेतो जाणे केवलि, के जाणे चित मांहि ॥ १ ॥ मनहि मील्यो नयणा मील्या, अने मिलियो

वयणां काय ॥ च्यार मिलणमां एकहि, मिलण सिलि नहि माय ॥ २ ॥

ढाल ९१ मी ॥ साहिब बाहु जिणे सर विनवुं ॥ ए देशी ॥ रुखमणी तुंतो साची श्राविका, थारो अति सोभाग हो ॥ परदेसामें सांभल्यो, देव गुरुसु राग हो ॥ रु० ॥ १ ॥ क्षुद्र नहि रुपे भलि, सो महा सुखदाय हो ॥ सत्य वदे डर पापनो, सरलपणे सुचि काय हो ॥ रु० ॥ २ ॥ स्नेह घणो लज्या घणी, दया घणी दिल मांहि हो ॥ सम भावी शुभ दृष्टणी. गुणानि रागणी भांहि हो ॥रु०॥३॥ धर्म कथक धर्मातमा, कुल तो उभय विसुध हो ॥ दिर्घ दृष्टीए देखणी. अर्थ लहे अविरुध हो ॥ रु० ॥ ४ ॥ विनयवंति गुण जाणती. पर हित करत जगीस हो ॥ लब्धि लिखी गुण धारणी. एवं ए एकविस हो ॥ रु० ॥५॥ समकीत गुणने पालवे, थारो निश्चल नाम हो ॥ देवने देवी चालवे, धर्मिसुं धर्म प्रमाण हो ॥ रु० ॥ ६ ॥ पर्व तणी आराधना, करती मन उजमाल हो ॥ पोसा पडिकमणा करे, सब वीधी वात रसाल हो ॥ रु० ॥ ७ ॥ शिलवंति सीता जिसी, भाग्यवंति संसार हो ॥ पंचालिनी उपमा, सत्यवंति वरनार हो ॥ रु० ॥ ८ ॥ साह्मी साह्मणी साचवे, धर्म थानक पोसाल हो ॥ साधु साधवियां तणी, गोरां जिम संभाल हो ॥ रु० ॥ ९ ॥ दिन प्रत्ये चारी प्रकारनो, दान तणो अधी

कार हो ॥ अण वोहोराव्या आखफी, जीमवा नेम अपार हो ॥ रु० ॥ १० ॥ इम सुणी गुण दूरथी, ठोफतो गुण गेह हो ॥ हुं आयो तुझ आंगणे, आणी धर्म सनेह हो ॥ रु० ॥ ११ ॥ सार न पूगी एतली, वोहोरो स्वामी आहार हो ॥ अंतराइ कोइ माहरे, के थइ चित विसार हो ॥ रु० ॥ १२ ॥ कहे रुखमणी ऋषीजी सुणो, आरती वति आज हो ॥ रांधण सींधण वीसरी, वीसरीयो सब काज हो ॥ रु० ॥ १३ ॥ एवडीसी आरती अछे, नांखे सयल विचार हो ॥ पुत्र आगम वेला हिवे, ए जिन नाखीत सार हो ॥ रु० ॥ १४ ॥ सही नाणी सघली मिली, सुके वृक्ष अशोक हो ॥ फूल फले करी गह गह्यो, देखे सघला लोक हो ॥ रु० ॥ ॥ १५ ॥ मुंगा लाग्या वोलवा, विरुपा अति रुप हो ॥ कुबज फिरी सरला थयां, आंधा नयण अनूप हो ॥ रु० ॥ १६ ॥ नीर नराणी वावडी, कमले शोभ उदार हो ॥ कोयल वोले सुहामणा, मोर करे किंगार हो ॥ रु० ॥ १७ ॥ विण ऋतु ऋतुराजीयो, आणी विराज्यो आज हो ॥ नमरा गुंजारव करे, फूल फल्यां तरु साज हो ॥ रु०॥१८॥ माहरो मन पिण उलस्यो, पान्हो चढीयो पूर हो ॥ पिण नायो मुऊ नान्हमो, ए मन चिंत्या नूर हो ॥ रु० ॥ १९ ॥ उतावली एति कीशी, जे नांख्यो जिनराय हो ॥ पहोर घमीने आंतरे, सो तो रहस्ये आय हो ॥ रु० ॥ २० ॥ सा नांखे ऋषी

शिर धूणवे, फीरी फीरी पिछताय ॥ ५ ॥

ढाल ९२ मी ॥ पुण्य तणारे फल सिठारे जाणो ॥ ए देशी ॥ फिरी फिरी पिछतावा करति, वरते भामा जामरे माइ ॥ सात प्रकार अनार्वा आवी, सा दुख पावि तांमरे माइ ॥ फि० ॥ १ ॥ तन सं भाली पहिरे फाली, बाली झाक झमालीरे माइ ॥ छवारी मेरे भानु कुमरपर, पूछे कुमर रसालीरे मा इ ॥ फि० ॥ २ ॥ तन मन प्यारो नंद हमारो, सारो राखे इसरे माइ ॥ उर न चाहुं तुझ आरा हुं, ए मूको जगीशरे माइ ॥ फि० ॥ ३ ॥ अवर सहु वातानो सुधो. पिण फिरी नावे केसरे माइ ॥ धु रती धूति खरी विगुती, होशे हास्य विशेषरे माइ ॥ ॥ फि० ॥ ४ ॥ अमरख आणी भामाराणी, ठाणी ए अभीमानरे माइ ॥ रुखमणी भुंभीने अति भुंभी, करशु आपसमानरे माइ ॥ फि० ॥ ५ ॥ एमविमाशी बहुली दासी, नावी लीधी लाररे माइ ॥ माथे मुंडण करवा भुंडण, पोखी द्वेप अपाररे माइ ॥ फि० ॥ ६ ॥ मणी नो भाजन साथे साजन, वाजानो विस्ताररे माइ ॥ गावत गीत विशेषे आव्या, रुखमणीने दरवाररे मा इ ॥ फि० ॥ ७ ॥ आवत निरख्यो मनसुं पर ख्यो, ए भामा परीवाररे माइ ॥ आंसु ढलियां रु पी अटकलियां, पूछे ताम विच्याररे माइ ॥ फि० ॥ ८ ॥ धुरछे हांसुं अति नेहासुं, भांख्यो सहु वि१

तंतरे माइ ॥ आयो जायो लोक सुहायो, गीरुवोने गु णवंतरे माइ ॥ फि० ॥ ९ ॥ नामा केरां लोक घणेरां, केसांकेरे काजरे माइ ॥ आवी मीलियां अति उगलि यां, बोले गेडी लाजरे माइ ॥ फि० ॥ १० ॥ ए दुख तो जाण्योथो आगे, नारद वचन विच्यारर माइ ॥ ए दिन लीधां काज न सिधां, दिन वदे हरि नाररे माइ ॥ फि० ॥ ११ ॥ बोले चेलो पाभी हेलो, माता म करे अदेहरे माइ ॥ वेटो करतो सोमे करवो, माणिश मन संदेहरे माइ ॥ फि० ॥ १२ ॥ रुखमणी गांनी रा खी कानी, माया रुखमणी कीधरे माइ ॥ आपण खो जो वदन सरोजो, हाथां आरीसो लीधरे माइ ॥ फि० ॥ १३ ॥ नारी सुरंगी नूपीत अंगी, हस्त मुखी हुशी याररे माइ ॥ आदर देती लोका सेति, वचन वदे सु विच्याररे माइ ॥फि०॥१४॥ लोक प्रवीणा नांखे दीणा, माता हमनहि दोषरे माइ ॥ तुह्म हम ठाकुर हमतुम चाकर, उसन नरीय कोसरे माइ ॥फि०॥१५॥ स्वामनि कारज करवो आरज, हम आव्या तुम वाररे माइ ॥ जीन गले एह वचन कहेतां, साचो देवी विचाररे मा इ ॥ फि० ॥ १६ ॥ रुखमणी नाखे रोसन राखे, स्वा मीनी केरो कामरे माइ ॥ वेगे किजे जग जस लिजे, ए सीर बोल्यो रामरे माइ ॥ फि० ॥ १७ ॥ वचन वि चारी हरखी नारी, सारी नारी नावरे माइ ॥ नाजन आगे धरती रांगे, चितनो चोखो चावरे माइ ॥ फि०

॥१८॥अक्षत धूप दहिसु मंगल, किजे विविध प्रकाररे माइ॥ अधम तणी अहि नाणी जाणी, ए खांता उपर खाररे माइ ॥ फि० ॥ १९ ॥ नावि आवी आप जणावी, कापे केस जे वाररे माइ॥ कान नाक वेणी आंगुलिया, छेदाइ तेहि वाररे माइ॥ फि० ॥ २० ॥ नावीने नारी जन केरी, एह अवस्था होइरे माइ॥ आप न देखे हरख विशेषे, चाली जाइ सोइरे माइ ॥ फि० ॥ २१ ॥ रुखमणी केरी घणुं घणेरी, करती जाइ प्रशंसरे माइ॥ एहवी मीठी अवर न दीठी, ध न एहनो कुल वंसरे माइ ॥ फि० ॥ २२ ॥ देह विपर्यय जाणी हसंता, दिठा लोक ते वाररे माइ ॥ इण सुंदरता छे मन हरता, तेहथी हाग प्रकाररे माइ ॥ फि० ॥ २३ ॥ नाचत गावत अति सुख पावत, आवत भामा पासरे माइ ॥ एक सुखीए दुखी रुखमणी, गुण केरो करे प्रकाशरे माइ ॥ फि० ॥ ॥ २४ ॥ भडके तडके भामा भामनी, केश न देखे एकरे माइ ॥ रे रे द्रोहणी दासडीयो तुझे, खाधी लांच अनेकरे माइ ॥ फि० ॥ २५ ॥ लांच तणुं पुछेवुं पाछे, वेणि नाकने कानरे माइ ॥ आंगुलिया उतरीयां दिसे, देह घटायो वानरे माइ ॥ फि० ॥ २६ ॥ चमकी चित भींतर अती चतुरा, व्यापि वेदना जामरे माइ ॥ ढाकी काया चोर ताणि परे, निज निज घर गइ तामरे माइ ॥ फि० ॥ २७ ॥ सुसाति करीने स्वा

मनी पूछे, किधो किणे ए कामरे माइ ॥ रुखमणी रंच न दोप न दिसे, ए विलसे नृप स्वामरे माइ ॥ ॥ फि० ॥ २८॥ सेवक दुखीए स्वामी लहे दुख, सुखी ए सुखीयो होइरे माइ ॥ तेमी प्रधाना आगे भाखे, जोर वहे जग जोइरे माइ ॥ फि० ॥ २९ ॥ वेणी दंडज नाप्यो आप्यो, ए न वद्यो विपरीतरे माइ ॥ फिर फिरस्ता रुप अनेका, मुझने वितक वितरे माइ ॥ फि० ॥ ३० ॥ होडे हाम न पुगी कोइ, होरे आया हेठरे माइ ॥ हाणी घणीने लोका हांसो, होडे हारी नेठरे माइ ॥ फि० ॥ ३१ ॥ परखदा मांहे पधारो प्रभु जी, देखावो ए कामरे माइ ॥ शिरे छाणा नवि जाय थाप्या, स्याणि तुमो नामरे माइ ॥ फि० ॥३२॥ हरी हांसो न मावे हियडे, आप वनावे हाथरे माइ ॥ कोइ पलखो करण न पावे, स्वामीनि सरिखो साथरे माइ ॥ फि० ॥ ३३ ॥ कृष्ण कुतुहल करतो जाणी, आवी भामा आपरे माइ ॥ केश अपावो कपटी कंता, के थाशे संतापरे माइ ॥ फि० ॥ ३४ ॥ थारेही आपे न विसरीयुं, वलदेवाशुं वातरे माइ ॥ तुम पुरुपोत्तम साखी राखी, इम करे कुण मातरे माइ ॥ फि०॥३५॥ हरीसुं हलधर देइ उलंभो, माथे चहोडी नाररे माइ ॥ सुधी वाते रुकटि करतां, लहिशे नाम गीमाररे माइ ॥ फि०॥३६॥ कृष्ण कहे सा आप एकेली, ए वहुलो परीवाररे माइ ॥ ॥ किम मुंडाइ दादा देखो, ए

स्यो कां व्यवहाररे माइ ॥ फि० ॥३७॥ श्री बलदेव दिलासा कीधा, भामाने भरपूररे माइ ॥ रुखमणी घर लुंटेवा कारण, मोकलिया भड नूररे माइ ॥ फि० ॥ ३८ ॥ ए व्याणुमी ढाल भलेरी, मुंडणको अधीकाररे माइ ॥ श्री गुणसागर सूरि वखाणे, हरी सुत चरीत उदाररे माइ ॥ फि० ॥ ३९ ॥

दुहा ॥ तेहज रुप तजी फीर थयो, चेलो पेहेल प्रमाण ॥ चमकी राणी रुखमणी, ए वड गुणनो जाण ॥१॥ विद्याधर मांहे वस्यो, विद्या तेह विशेष ॥ रुप करेछे नव नवा, पिण ए काम नरेश ॥ २ ॥ एहवो अवर न जगतमें, एहवो अवर न राय ॥ एहवो अवर न जाइयो, एहवो अवर न थाय ॥ ३ ॥ ए जायो माहरो सहि, ए सम अवर न कोय ॥ तारा दिश सघली जणे, रवि पूरव दिश होय ॥ ४ ॥ केलवतो अतिहि कला, खिसीन जाये खाप ॥ माय मनोरथ पूरवा, पुत्र प्रगट कर आप ॥ ५ ॥ कामदेवनी उपमा, रुप अनोपम सार ॥ अभ्र मंडलथी निकल्यो, सहेस किरण दिनकार ॥ ६ ॥ सर्व अवेवां शोभतो, सर्व अभूषण धार ॥ सर्व कला गुण आगलो, दिठो काम कुमार ॥७॥

ढाल ९३ मी ॥ क्युं जाणुं क्युं बनी आवसि ॥ ए देशी ॥ पगे लाग्यो माता तणे, माता लियो उठाय हो लाल ॥ आलिंग्यो अलजे घणुं, हेज हिए न समाय हो ॥ १ ॥ आज भलो दिन माहरो, दूधे वुठा मे

ह हो ॥ ला० ॥ दर्शण दिठो ताहरो, जाग्यो तनमें नेह हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ २ ॥ छाती आवी गाहिवरी, आंसु वरसे नयणहो ॥ ला०॥ माता पुत्र मिली रह्यां, उपज्यो अधीको चयन हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ ३ ॥ मुह अने माथो घणुं, चुवे वारंवार हो ॥ ला० ॥ हुं वारी तुझ उपरे, तुं मेरो प्राण आधार हो ॥ ला० ॥ ॥ आ० ॥ ४ ॥ बलहारी सुरति तणी, मुरती मोटी सोह हो ॥ ला० ॥ अणियाले लोयणे, माता पनोति मोह हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ ५ ॥ आवो मिलो साहेलडी, देखो मेरो लाल हो ॥ ला० ॥ इंद्र चली घर आवियो, सब विध रुप रसाल हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ ६ ॥ प्रेम गहेली गोरडी, चिगन करे लखकोड हो ला० ॥ घन वुठा जिम मोरडी, नृत्य करे नर जोड हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ ७ ॥ दाखा पाहे देवकी, मीठी अति कहाइ हो ॥ ला० ॥ पाणी पांपण हेठलो, निरखत लिठे नांहि हो ॥ला० ॥ आ०॥ ८ ॥ लहेरी खारा जल तणी, वरस्यां पाछे वाय हो ॥ ला०॥ परदेशी प्यारो मिले, शितल कहि न जाय हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ ९ ॥ चंदन तो शितल कह्यो, तेहथी चंद सुलग हो ॥ ला० ॥ चंदन चंद विचारता, शितल नंदन संग हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ १० ॥ मिश्री तो मीठी सहि, तेहथी अमृत जोइ हो ॥ ला०॥ मिश्री अमृत दोयसे, मीठो नंदन होइ हो ॥ ला० ॥ आ० ॥

॥११॥ सोवनो तो सुखदायकुं, सोवनाहिथी रयण हो
ला० ॥ रयण अने सोना थकी, नंदन तो सुख दय
न हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ १२ ॥ न्याराथी न्यारो ख-
रो, सरसाथी अति सर्स हो ॥ ला० ॥ निकाथी नीको
घणुं, निको नंदन हर्श हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ १३॥
हियो सरोवर सांकडो, उलट जलनो जोर हो ॥ ला०॥
लहेर न जाइ जालवी, रहीयो होइ सोर हो ॥ ला०
॥ आ० ॥ १४ ॥ सुख मांहि दुख उपनो, माजीना
मनमांही हो ला०॥ बालपणो नवी देखीयो, ए दुख
साले प्रांही हो ॥ ला०॥ आ०॥१५॥ गर्भ तणी विधी
साचवी, उदर वह्यो नव मास हो ॥ ला०॥ कष्टी मह्य
दुखे जनमीयो, किधो परघर वास हो ॥ ला० ॥
॥ आ० ॥ १६ ॥ दोप न देणो कोइने, कर्मांकेरो दो
प हो ॥ ला० ॥ भाग्य लिख्यो फल पाइए, मति करवो
रागने रोसहो ॥ ला० ॥ आ० ॥१७॥ मदन कहे मा
जी सुणो, ए दुख माणे कोइ हो ॥ ला० ॥ बालकरुप
सुहामणुं, करी देखाडुं सोइ हो ॥ ला० ॥ आ० ॥
॥ १८ ॥ उंधो सुतो आगले, चिंतवे सा मुह मांहि
हो ला० ॥ चपल पणे पाउ धारतो, उठावे धरी बां
ही हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ १९ ॥ मुठी बांधी सोह
तो, मोहतो परीवार हो ॥ ला० ॥ हांशी करे अति
कलकली, माताने हर्ष अपार हो ॥ ला० ॥ आ० ॥
॥ २० ॥ खोळे लिधो खांतशुं, धवरावे पयपान हो

ला० ॥ आंखे काजल आंजतां, विच विच मेलेतान हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ २१ ॥ आपेही लाग्यो उठवा, जानुनी गति कारहो ॥ ला० ॥ पाव भरे गिर गिर प डे, माता मोले लार हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ २२ ॥ मा ताको कर साहीयो, हंस बचाकी चाल हो ॥ ला० ॥ बोले भापा तोतली, माता पूछे वाल हो ॥ ला० ॥ ॥ आ० ॥ २३ ॥ जाइ लोटे आंगणे, धूले धूसर गा त हो ॥ ला० ॥ मुठी बांधी धूलशुं, कंठे लगावे मात हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ २४ ॥ माता आपे सुखडी, आपी नाखे दूर हो ॥ ला० ॥ ए नही नही ए नही, ए उतुं लाव्य हजूर हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ २५ ॥ आ खो मांभी आकरो, रोवा लाग्यो जाम हो ॥ ला० ॥ बोले माता रुखमणी, ए रहेवादे काम हो ॥ ॥ ला० ॥ आ० ॥ २६ ॥ तव वय लिधो मूलगो, माय नमावे शीस हो ॥ ला० ॥ चिरंजीवे चिर नंद जे, माता दिए आशीस हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ ॥ २७ ॥ वारू वात विनोदशु, करती वरते माय हो ॥ ला० ॥ वरस सोलनो संचियो, दुख देशांतर जाय हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ २८ ॥ माय मनोरथ गुंथती, सफल थइ ते आज हो ॥ ला० ॥ पूरव पु एय प्रसादथी, मिलीया ए सुभ साज हो ॥ ला० ॥ ॥ आ० ॥ २९ ॥ एतो त्र्याणमी कही, ढाल महा अभीराम हो ॥ ला० ॥ श्रीगुणसागर सुरिजी, सरियां

वंगीत काम हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ ३० ॥

दुहा ॥ श्रीबलनद्र तणा वली, सुनट महा झुं-
झार ॥ आवी हुआ एकठा, रुखमणीने दरवार ॥१॥
मदन कहे माता कहो, एहे कवण विच्यार ॥ जे तें त
रुवर वावीया, ते ए फल विस्तार ॥ २ ॥

ढाल १४ मी ॥ वनमालानी देशी ॥ ते फल ए
विस्तरीयांरे, ए नरू आवी परवरीयां ॥ दाशीनी वे
णी वाढीरे, ते नकटी किधी काढी ॥ १ ॥ ते होडे
नामा नाखीरे, हरी हलधर दिधा साखी ॥ सतनामा
जाइ पुकारीरे, तिहांथी नरू आया नारी ॥ २ ॥ मा
चिंता नवी धरणीरे, तुं देखे हमारी करणी ॥ विद्या ब्रा
ह्मण किजेरे, लाकलडी हाथ ग्रहीजे ॥ ३ ॥ पेट ब
मो तसु हालेरे, ते हलुंए हलुए चाले ॥ ते खीली रा
ख्यां सघलारे, ते सुनट हुआ अति निबलां ॥ ४ ॥
तव एक मोकलो किधोरे, प्रनु पासे गयो ते शिधो ॥
सुणी वोले श्रीबलदेवारे, ए मंत्र तणा वल लेवा ॥
॥ ५ ॥ ए वहुतो मोहन गारीरे, ए वहुलो आप ठगा
री ॥ ए वहु तो कामण जाणेरे, ए नाचे पियु वश
आणे ॥ ६ ॥ शिलो दहिं दांतज्युं तोडेरे. शिलो जल
पर्वत फोडे ॥ ए मोर चवे मुखे मीठोरे, पिण साप गळंतो
दिठो ॥ ७ ॥ वाणी एह वडाकीरे, सापीणथी पिण ए वांकी
॥ आखरनो अधीको आघोरे, उरहो नवी आवे
घाघो ॥ ८ ॥ जे काम करे नही पांखेरे, ते काम समा

रे आंखे ॥ जे कालो क्रोधी विशेपेरे, ते मंत्र वळे नि चु ढंखे ॥ ९ ॥ नर खोडे दिया खटेरे, नर वधन बा ध्या छुटे ॥ मंत्र बले बांधी आरथेरे, नवी छुटे ते न र नारथो ॥ १० ॥ ए मर्म हमाने लाधोरे, मंत्र वले माणस गाधो ॥ ते साहमो होइने चूकेरे, ते मोर न लाइ मूके ॥ ११ ॥ एतो हु जाइने देखुरे, ए मंत्र त णो फल पेखु ॥ ए सुतने किरती देवारे, चली आया प्रभु ततखेवा ॥ १२ ॥ तव ते ब्राह्मण सोवेरे, दरवाजे आडो होवे ॥ उठ कहे हलधारीरे, दिए वाट विशेषे विच्यारी ॥ १३ ॥ विप्र कहे सुण स्वामीरे, तुठेए अतर जामी ॥ मामानो भोजन खाधोरे, अति होडे ते फल लाधो ॥ १४ ॥ प्रभुजी पाग वलीएरे, गुरु बुद्दी वि च्यारी टलीए ॥ रिस वसे सो भांखेरे, मर्जादा न तेहनी राखे ॥ १५ ॥ अलगो था घणां खाणारे, मुझ मंदिर मांहि जाणां ॥ विप्र वाणी एम दाखीरे, न खवाइ जी वतो माखी ॥ १६ ॥ एह वचने हलधर रिसेरे, पग साहीने तस घीसे ॥ पहुंता पोले जाइरे, त काया अधी की थाइ ॥ १७ ॥ फिरी पूठे जव दिठोरे, ते ब्राम्हण थानक वेठो ॥ मर्म न लिधो कोइरे, अति कालो पि लो होइ ॥ १८ ॥ मुझसु इणीपरे मंडेरे, अवरांने ए किम छंडे ॥ ए डाकणी साकणी साचीरे, लही मान म हा मद माची ॥ १९ ॥ पुनरपी चाली आवेरे, ते धस मस करतो धावे ॥ दिसे रिस अपाररे, तव पूगी मा

य कुमार ॥ २० ॥ मायकहे सुण लालनरे, ए मोटा नां मद गालण ॥ ए यादव केरो नायकरे, एह तुम्ह पिता सुखदायक ॥ २१ ॥ श्रीहरीवंशे एहवोरे, को हुउ न एछे जेहवो ॥ श्रीवलदेव मुहायोरे, ए तुज उपर अब आयो ॥ २२ ॥ तुम्ह जइने पगे लागोरे, तुम्ह पाछाही मती जागो ॥ जाणी दीठुं साथेरे, मति घालो मुहंडे हाथे ॥ २३ ॥ मदन कहे मा सुणिएरे, तेतो परमार्थ ए गुणीए, कालो नाग खेलावेरे, तेतो वादी राय कहावे ॥ २४ ॥ युद्ध किस्युं प्रभुने जावेरे, मृगपतिनो अधीके दावे ॥ रण चढीयो रोलावेरे, हल मुसल मार मचावे ॥ २५ ॥ विप्र वेश न छंडेरे, ते सिंह थइ अति मंडे ॥ बाल शसी सम दाढोरे, गिरि मेरु सरिखो गाढो ॥ २६ ॥ कुंकुम केसर छाजेरे, तव मस्तक पुंछ बिराजे ॥ सिंह नादने करतोरे, ते मंदिरथी निसरतो ॥ २७ ॥ हलधर देखी वीमासेरे, जाजी मरीए इणे हासे ॥ ए नागी नहि घर सरखीरे, में धूर छेहां लगे परखी ॥ २८ ॥ उपरणीसुं हाथोरे, वामो विटे नर नाथो ॥ आगे धरीने ढूंक्योरे, ते चोट करंत न चूक्यो ॥ २९ ॥ ते सांहोमांहि वलगारे, जण जोवे उभा अलगा ॥ तारूण ताजण करवेरे, उल्हास घणे अनुसरवे ॥ ३० ॥ ते हारयो हरीने आगेरे, हलधरजी धरति लागे ॥ मदन गयो मा पासेरे, आलिंग्यो अति उल्हासे ॥ ३१ ॥ पुत्र परा

क्रम दिठारे, माता लोचन अमीय पइठा, हलधर निज घर आयोरे, सुतने जस कलस चढायो ॥ ३२ ॥ ढाल चोराणुंमी वारुरे, मकरध्वज बल विस्तारु ॥ श्री गुणसागर जापेरे, एतो पूरव पुण्य प्रकाशे ॥ ३३ ॥

दुहा ॥ माता पूछे कुमरने, किहां अछे ऋषी राय ॥ उदधी कुमरीनि पाखाति, कुमरी कवण कहाय ॥१॥ कुमरी हरण आदे करी, जामा मुंडण अंत ॥ दसहि बोल सुणाविया, अचरिजकारी संत ॥२॥ कहण सुणन सरीखा नहि, सुतना चरीत्र अनेक ॥ सुरगुरु तो न ल वरणवे, में मुख रसना एक ॥ ३ ॥ अवर सकल विधी साचवी, सुख दुखदाइ दोय ॥ अब मिलो जइ तातने, तात परम सुख होय ॥ ४ ॥

ढाल ९५ मी ॥ हो नणदल थांको विरो चारित्र लेइ ॥ ए देशी ॥ हो कुमर, जाई मिलो तुम तातने, तात वडो संसार हो ॥ कु० ॥ बोले माता रुखमणी, आणी हेत अपार हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ १ ॥ जिम सुख दिधो मा जणी, तिम सुख द्यो नीज तात हो ॥ कु० ॥ तात तुमारा दर्शणे, तिरस्योथो दिन रात हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ २ ॥ स्वर्ग थकी सुख स्वर्गिना, जेह नो स्वामी तात हो ॥ कु० ॥ पंडीत जननी गोठमी, तिजो दक्षिण वात हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ ३ ॥ कुमर कहे किहां मिलुं, परखदा मांहि जाय हो ॥ कु० ॥ तात तुमारो पुत्र छुं, इम तो में न कहाय हो ॥ कु० ॥ जा०

॥ ४ ॥ राजा राणा पूछशे, ए कुण ए कुण एह हो ॥ कु
॥ रुखमणी सुत आइयो, थो परदेशां जेह हो ॥ कु
॥ जा० ॥ ५ ॥ भले पधार्यो बापडो, मावित्रां सु
काम हो ॥ कु० ॥ रडवडतोथो पर घरा, जिम ति
आयो ठाम हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ ६ ॥ नान्हा मोटा
कयां, में न खमाइ बोल हो ॥ कु० ॥ हुं निशाण
जावते, मिलसुं घुडाइ ढोल हो ॥ कु०॥ जा० ॥ ७ ॥
रु बाबा वड बंधवा, हरी हलधरसुं सोर हो ॥ कु०
मचाउ अति आकरो, जोउं जादव जोर हो ॥ कु०
॥ जा० ॥ ८ ॥ नेमीनाथ गंडी करी, छेमीस सहु प
वार हो ॥ कु० ॥ आप जणावी तातने, करशुं आ
जुहार हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ ९ ॥ वाचा मांगु तुज
ने, चाल हमारी लार हो ॥ कु० ॥ अण पूछयां आ
नहि, पतिव्रता आचार हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ १०
जाण्युं मति पाछे वले, मति समरे उद्देश हो ॥ कु
॥ कृष्ण तणी छे पाधरी, मानी वात अशेष हो ॥ कु
॥ जा० ॥ ११ ॥ बाहे साहि रुखमणी. परखदा जप
आय हो ॥ कु० ॥ कीधी पुरुषा पचारणी. सांभळ य
दव राय हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ १२ ॥ भो भो भो
पांभवो, अवरजांको झूझार हो ॥ कु० ॥ आवी मि
ल्यो उतावला, लागो हमारी लार हो ॥ कु० ॥ जा
॥ १३ ॥ चंदेरी पती मारीयो, कीधो अती संग्राम हो
॥ कु० ॥ आणी राणी रुखमणी सो अब जाइ नि

काम हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ १४ ॥ विद्याधरपति नं
दन, हुं एकाकी बाल हो ॥ कु० ॥ लीधा जावे रुखम
णी, जेहनो हरी रखवाल हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ १५॥
चोर नाहे लपट नहि, नहि नट वीटमें नाम हो॥ कु०॥ सा
हिं रह्योउ सुंदरी, किउं न घसे नृप शाम हो ॥ कु०
॥ जा० ॥१६॥ स्या तुझ राणा राजीया, स्यो जीव्यो
जगते माम हो॥ कु० ॥ जेहनी लीजे नामनी, अवर
किस्यु करे काम हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ १७ ॥ युद्ध
विना जाउ नहि, सांनलज्यो जे सूर हो ॥ कु० ॥ पा
गेहिं जव दोडस्ये, तेका कीजे असूर हो ॥ कु० ॥
॥ जा० ॥ १८ ॥ एम सुणी यादव सना, हल हल
हुइ अपार हो ॥ कु० ॥ संवाह्या नट सामठा, गाढा
जूझाण हार हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ १९ ॥ मूरछाणो
हलधर महा, सुणी रुखमणी अपहार हो ॥ कु० ॥ उ
ठाइ उनो कियो, रातो थयो अपार हो ॥ कु० ॥
॥ जा० ॥ २० ॥ भ्रकुटी नाली नमाडलो, करतो कं
प शरीर हो ॥ कु० ॥ उठ्यो अच्युत उतावलो, मेरु त
णी परे धीर हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ २१ ॥ पांडु नंदन
परवडा, अर्जुन निम कुमार हो ॥ कु० ॥ कवण कवण
करी कलकले, न लहे निज परिवार हो ॥ कु० ॥
॥ जा० ॥ २२ ॥ आप आपणे पारखे, गाजंता नू
पाल हो ॥ कु० ॥ उग्रसेन आदे करी, अरि कुल केरा
काल हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ २३ ॥.॥ ए पंचाणुमी ढा

गे धथारीरे, पायाहो धरणीने खोतरेरे ॥१४॥ नर पाय
क पालारे, हुशीयार हठालारे, आगेहो होइने हालणा
रे ॥ दिसे झलहलतारे, रीसे कल कल तारे, वलता
हो पूठे नवालणारे ॥ १५ ॥ रणभूमी आयारे, यदु
पती रायारे, मांड्याहो लोग लडावणीरे ॥ नाता सु
नी सगेरे, मेली मनरंगेरे, रंगेहो जग [illegible]॥
॥ १६ ॥ हरी साथ सरीखोरे, ए सयल परीखोरे, कि
धाहो विविध प्रकारशुंरे ॥ नर हयवर हाथीरे, सा
थाशुं साथीरे, झुझेहो धर्म विच्यारशुरे ॥ १७ ॥ भल
ढोल ददामारे, काहला अभीरामारे, नाद नीरुपन जु
जुवरे ॥ झुंझाउ वाजेरे, सरणाइ साजेरे, रागहो जमी
रो सिंधुउरे ॥१८॥ गोखे चढीयां गोरीरे, देखे चित चो
रीरे, आगे हो सोहे मारो नाहलोरे ॥ कुलदेवी मनावेरे,
प्रीउडो जस पावेरे, आज हो एह उमाहलोरे ॥१९॥ सूरा
अति झूझेरे, नर कायर धूजेरे, दीन वचन मुखे जपतारे
॥ जोवे देव तमासोरे, आकाशे वासोरे, वासंगीहो थर
हर कंपतारे ॥२०॥ अतिशे हा आडंबरेरे, आच्छाद्यो
अंबरेरे, हाथहो हाथ सुझे नहिरे ॥ नहि वैरविरोधारे,
हासा क्रत क्रोधारे, मदन विनोदाहो जाणे सहिरे ॥२१॥
जरू सहु भागेरे, हरी दलने आगेरे, काम करे उठा
वणीरे ॥ दल देखी खीसंतारे, धाया धसमस्तारे, हल
धर पांडवपर भणीरे ॥ २२ ॥ ते चोपें चडीयारे, अति
गाढा लढीयारे, नमीया हो मदन माया करीरे ॥ हरी

आपण आयोरे, सब जोर दिखायोरे, कांइ न चाले
चिंता खरीरे ॥ २३ ॥ पग आघा ठावेरे, हरी साहमो
आवेरे, पावे हो मुख हरी देखवेरे ॥ हरी लोयण
क्षणरे, वर वाह सुलक्षणरे, फूरके हो ते नर पेखवेरे
॥ २४ ॥ हरी नाखे नाइरे, ते रीस लगाइरे, तोहि तु
झ साथे नेहलोरे ॥ हसी बोले नीकोरे, जायो हरी जी
कोरे, कुण समो नेहनो भलोरे ॥ २५ ॥ को जोर न
वालेरे, कां नाख न घालेरे, आपी हो त्रियारुपी नी
वडीरे ॥ एह वचने कोप्योरे, अति गाढो रोप्योरे, ना
खु हो त्रोडी जिम चिचमीरे ॥ २६ ॥ जेहनो बल आ
पोरे, ते ठेयो चापोरे, ए बलि नाम महा बालिरे ॥ घर
गा जाउरे. हरी सुखीया थाउरे. नारी हुइ न हुइ
आलिरे ॥ २७ ॥ अंगुठाथी लागीरे. जाइ माथे जा
गीरे. रोमे हो रोम साली घणीरे ॥ तव कोडी उपा
यारे. किधा हरी रायारे. एक न लागो नंदन भणीरे
॥ २८॥ शस्त्रास्त्र वळ भांगोरे. हरी बाथा लागोरे. काल
रुपी हो थयो कान्हमोरे ॥ माताजी देखेरे. चिंत्या सु
विशेषेरे. मतरे दमे माहारो नान्हडोरे ॥ २९ ॥ बेसें
झ आडारे. ए दोइ पवाभारे. हाणी होवे घर मा
हेरे ॥ ऋपिरोप विचालेरे, जइ किजे टालोरे, हाथे
वात छे ताहेरेरे ॥३०॥ ऋपि विच करावेरे, ऋषी
ग हरावेरे, कृष्ण करो किस्युं नंदसुरे ॥ नंदन स
गायोरे, धसी सामो आयोरे, लाग्यो हो पाय आ

अंबर गाजीयोरे, नाचे पात्र सुजाण ॥ पु० ॥ १३ ॥ घर घर गुडी उबलीरे, घर घर मंगल च्यार ॥ घर घर होवे वधामणारे, घर घर उच्छव सार ॥ पु० ॥ ॥१४॥ पुत्र पिता हत्ती चढीरे, रुखमणी डोले लार ॥ दस दसारने हलधररे, लोकाको नही पार ॥ पु० ॥ ॥ १५ ॥ गोखे बैठी गोरडीरे, वहुली दे आशीस ॥ मात पितानी पूरज्योरे, आशा अधीक जगीस ॥ ॥ पु० ॥ १६ ॥ धन तुं माता रुखमणींरे, थारे एवो पुत्त ॥ घणा किस्युं करे जाइयारे, कारण कोमीक सुत ॥ पु० ॥ १७ ॥ सांजलतां सारग विषेरे, विविध प्रकारे बोल ॥ आया रुखमणी मंदिरेरे, वाग्या जंगी ढोल ॥ पु० ॥ १८ ॥ मदन महोछव किजतारे, हरखे सघला लोक ॥ नामाने जानु तणोरे, चितडो थाय सशोक ॥ पु० ॥ १९ ॥ हरी हलधर निज नंदगुरे, अवर अनेरा राय ॥ रुखमणी घरे आरोगीयारे, दिन केता इम थाय ॥ पु० ॥ २० ॥ दुर्योधन नृप आवीयोरे, हरीसुं करे पुकार ॥ मुऊ पुत्री वहु तुह्म तणीरे, किउं न करो प्रभु सार ॥ पु० ॥२१ ॥ हरी चित चिंता आकरीरे, जाणी मदन जेवार ॥ कुमरी आणी आपतांरे, हरी हरपत तेवार ॥ पु० ॥ २२ ॥ दुर्योधनने हरी कहेरे, परणो एही कुमार ॥ पुत्री सरखी माहरेरे, लघु भ्रातानी नार ॥ पु० ॥ २३ ॥ साजन मेळानी मलीरे, सत्याणुमीरे ढाल ॥ श्री

गुणसागरजी कहेरे, नमीए पुण्य त्रिकाल ॥ पु० ॥ २४॥
चोपइ ॥ खंम खंड वाणीठे नवनवी. सुणतां मि
ठी साकर जेवी ॥ श्रीहरीवंश चरित्र जयजयो, चो
थो खंड ए पूरण थयो ॥ १ ॥ इति ढालसागर प्र
बंधे हरीवंश विस्तारनामा चतुर्थोऽधिकार समाप्तः॥

॥श्री हरीवंश वर्णन ढालसागर पंचमो खंड प्रारंभः॥

दुहा ॥ आचारज इंद्रि दमे, आचारज ब्रह्मचारि
॥आचारज आपे करे, क्रोधादीक परीहार ॥ १ ॥ आ
चार्य व्रत आचरे, आचार्य आचार ॥ सुमती गुप्ती
व्रत पालतां, आचार्य गुणसार ॥ २ ॥ आचार्य आ
राधतां, आपे वाणी विलास ॥ अब पंचम अधीका
रनो, पभणु पुण्य प्रकाश ॥ ३ ॥ कृष्ण कहे सची
वा प्रत्ये, मदन कुमरको व्याह ॥ मांड्यो आडंबर घ
णे, करी घणो उछाह ॥ ४ ॥ खेचरपतीने खेचरी,
बोलाव्यो तेहीवार ॥ साथ घणी कन्या तणे, रतीने
लीधी लार ॥ ५ ॥ आया नगरी द्वारीकां, हरी बल अ
ने कुमार ॥ साहमा जाइ साचवे, विनय तणो आ
चार ॥ ६ ॥ रुखमणी खेचरणी मिली, मांहोमांही आ
नंद ॥ बहीनी प्रसाद तुमारके, ए मुझ घर आणंद
॥ ७ ॥ भूचरणीने खेचरी, देव कुमरी अवतार ॥ स
रखी वए पचासवर, कंन्या मेली उदार ॥ ८ ॥ सग

माने मारा लाल, बारमे स्वर्गे हो, देव विमाने ॥ मा० ॥ एकदिन आवे हो, सीमंधर पासे ॥ मा० ॥ विधी युत्त वंदे हो, मन उल्लासे ॥ मा० ॥ १ ॥ पूर्व भवनो हो सयल विचारो ॥ मा० ॥ पूछ्या भांखे हो जिनवर सारो ॥ मा० ॥ पुनरपि पूछे हो बंधव माहरो ॥ मा० ॥ तेहनो किहाछे हो शुभ अवतारो ॥ मा० ॥२॥ तव जिन भांखे हो हरी घर सोहे ॥ मा० ॥ सुखमे होसे हो जन मन मोहे ॥ मा० ॥ मुझने मेलो हो भाइशुं होशे ॥ मा० ॥ के नही भांखे हो जिनवर जोशे ॥ मा० ॥३॥ सुण तुं सुरवर हो तुही पिण त्यांही ॥ मा० ॥ हरी घर नंदन हो थाशे उमाही ॥ मा० ॥ तव प्रणमीने हो जिनपद भावे ॥ मा० ॥ हरी समीपे हो सुरवर आवे ॥ मा० ॥ ४ ॥ वात जणावी हो सघली हरीने ॥ मा० ॥ हरीए सांभली हो हरख धरीने ॥ मा० ॥ हार सलुणो हो हरीने दीधो ॥ मा० ॥ तेम पीभासुर हो नासे प्रसीधो ॥ मा० ॥ ॥ ५ ॥ विधीतव दाखी हो सुरवर जावे ॥ मा० ॥ हरी मन एहेवो हो वितक थावे ॥ मा० ॥ जो भामाने हो ए सुत आवे ॥ मा० ॥ मदन संघाते हो द्वेप मिटावे ॥ ६ ॥ ए मर्म हरीनो हो मदने लहीयो ॥ मा० ॥ हारनो कारण हो माणुं कहीयो ॥ मा० ॥ अवर न चाहु हो नंद अनेरो ॥ मा० ॥ क्रोड सरीखो हो तुही भलेरो ॥ मा० ॥७॥ बाहुबलने हो राम सरीखो ॥ मा० ॥ लक्ष्मण भोपम हो एह परीखो ॥ मा० ॥ एही माता

एहो एकज जाया ॥ मा० ॥ सिंह सरीखा हो तेज सवाया ॥ मा० ॥ ८ ॥ जंबुवती गेहे हो काम कुमारो ॥ मा० ॥ जइने दाखे हो हार विचारो ॥ मा० ॥ हरी जो आपेहो हार सनूरो ॥ मा० ॥ तो तुम पामो हो कुमर सूरो ॥ मा० ॥ ९ ॥ सत्यभामानो हो रुप करीने ॥ मा० ॥ आवी जंबुवती हो पास हरीने ॥ मा० ॥ वसत रमवा हो वनमे आया ॥ मा० ॥ हार देइनेहो बहु सुख पाया ॥ मा० ॥ १० ॥ शिख लेइ राणी हो निज घर आइ ॥ मा० ॥ वेरी केरोहो वास दुखदाइ ॥ मा० ॥ गाफील खावे हो मार ए भावो ॥ मा० ॥ भामानी परे हो लहे पछतावो ॥ मा० ॥ ११ ॥ पक्ष प्रताने हो इम सुख थावे ॥ मा० ॥ सपख्यो वायस हो फल उंच पावे ॥ मा० ॥ निपखो माणस हो घणुं शीदाय ॥ मा० ॥ सिंह सरीखो हो फल नहीं पाय ॥ मा० ॥१२॥ आश धरीने हो हिवे सतभामा ॥ मा० ॥ हरी समीपे हो आवी शामा ॥ मा० ॥ पिण अण सरज्यो हो पामे किहांशुं ॥ मा० ॥ जलफल किजे हो पुण्य विनाशुं ॥ मा० ॥१३॥ लुणी लेइ गइ हो प्रथम नारी ॥ मा० ॥ पेटभर पिवो हो तक्रज खारी ॥ मा० ॥ दैव संघाते हो जोर न चाले ॥ मा० ॥ एहवी वातज हो हरी मन साले ॥ मा० ॥ १४ ॥ हार अनेरो हो हरीए आणी ॥ मा० ॥ दिए भामाने हो हरखी राणी ॥ मा० ॥ जबुवती उरे हो सो देव आयो ॥ मा० ॥

भामाराणी हो अन्य ते पायो ॥ मा० ॥ १५ ॥ शुभ तीथी वारे हो कुमर जायो ॥ मा० ॥ जंबुवतीने हो हरख सवायो ॥ मा० ॥ रुपे दिपे हो भोगपुरंदर ॥ ॥ मा० ॥ लक्षणे शोभे हो सर्व सुहंकर ॥ मा० ॥ ॥ १६ ॥ तिणही वेला हो तिणही गामे ॥ मा० ॥ सारथीने घरे हो पदम नामे ॥ मा० ॥ मंत्रिनी नारी हो तेणे पिण जायो ॥ मा० ॥ बुद्धिसेन नामे हो सुत सुहायो ॥ मा० ॥ १७ ॥ सेनापती हरीनो हो तसघर पुतर ॥ मा० ॥ जनम्यो जयसेन हो नामे उतर ॥ मा० ॥ ए च्यारे कुमर हो निका कहीए ॥ मा० ॥ एक समाना हो जनम्या लहीए ॥ मा० ॥ १८ ॥ वधाउ आवे हो हरीने आगे ॥ मा० ॥ दानज आपे हो तेहने रागे ॥ मा० ॥ घर घर मंगल हो सोहव गावे ॥ मा० ॥ सांब कुमरजी हो नाम सुहावे ॥ ॥ मा० ॥ १९ ॥ भामा जायो हो कुमर भीरु ॥ मा० ॥ नामे सुभानु हो अधिक अधीरु ॥ मा० ॥ दोइ घर थावे हो महोछव हेजे ॥ मा० ॥ दिन दिन चंद ज्युं हो चडता तेजे ॥ मा० ॥ २० ॥ सांब सुभानु हो जनम वखाण्यां ॥ मा० ॥ भाइ भाइसुं हो प्रेम प्रमाण्या ॥ मा० ॥ कहे गुणसागर हो श्रोता सुणजो ॥ मा० ॥ ढाल नवाणुमी हो वचने थुणजो ॥ मा० ॥ २१ ॥

दुहा ॥ रुप कला गुण आगला, चंद वर्ण शुभ नयन ॥ कुमर दोइ देखता, लोक लहे अति चयन ॥

॥ १ ॥ यादव नारी कर कमल, कुंवर भ्रमर सुजाण ॥ केलि करे मन भावती, प्यारा प्राण समान ॥ २ ॥ वारु वसन विराजता, वारु भूषण धार ॥ वारु चाल मरालनी, वारु सुख दातार ॥३॥ सांब पढायो रतिपति, तिमहि भानु सुभानु ॥ परम मनोहर गुण नीला, लाल न लीला थानुं ॥ ४ ॥

ढाल १०० मी ॥ पांचमी वाडे परमेसरु, वखाणी वारु ॥ ए देशी ॥ लालन लीला थान. बोले श्राठे व चन ॥ माननी मन मोहवा, मोहनी तो श्रयन ॥ १ ॥ हमारे लालनां, लिलावंत कुमार ॥ जांबुवति भामा भणे, प्यारे प्राण श्राधार ॥ २ ॥ खेलंता श्रती खांत सुं, मित्राके परीवार ॥ परखदा मांहि श्राविया, करण तात जुहार ॥३॥ सांब बेठो काम पे, भानु पे सुभानु ॥ रुपे रंजे राजवी, सोहाके निधानुं ॥ ४ ॥ जूवे ख्याल हो वही, पांडवा बलदेव ॥ कुंवर दोय खेलाववा, मां डीया ततखेव ॥ ५ ॥ कोडी कंचन हारीयो, ताम सु भानु कुमार ॥ पहीली जीत सांबकी, मदन केरे उप कार ॥ ६ ॥ कुकड युद्धे जितीयो, कंचन कोडी दोय ॥ ज्याकी पुंठे कामदे, जाती क्युं नवी होय ॥ ७ ॥ सु वर्ण सर्व तासही, काम दियो वाटी ॥ जूवा मीठी हा रहे, श्रापे लुटे श्राठी ॥ ८ ॥ च्यार कोडी हेमनी, जी तीयो फरु हीड ॥ वार नाही देतही, काम दोय को डी ॥ ९ ॥ श्राठ कोडी वरतुरे, हारे हारी सोल ॥ ति

जानुथी कटी जइ अडेरे, नाणे कोइ गुमानरे ॥ सा०
॥ २ ॥ केरि थकी हियडे चढिरे, हियडाथी गले जामरे॥
परम महा दुख आवहीरे, अकुलाइ जन तामरे ॥सा०
॥ ३ ॥ मुलाजा मोटा तणारे, तोहि न लोक्या जातरे
॥ नाके चल्यो दुख दुःसमोरे, लोक तदा विल लातरे॥
॥ सा० ॥ ४ ॥ वाफ नखे जो काकडीरे, वोलावा लुटंत
रे ॥ कुण आगे पूकारीएरे. माता गेरु कुटंतरे ॥सा०
॥ ५ ॥ पीहरीयो परजा तणोरे, राजाजीनो नामोरे ॥
आप अन्याय जो आचरेरे, केम वसे ते गामोरे ॥
सा० ॥ ६ ॥ प्रभुजी तो नाखी घणीरे, सा ने पति जे
एकरे ॥ बालिक बाला बाउलारे, एक सरीखी टेकरे ॥
सा० ॥ ७ ॥ सुंदरीने समजाववारे, साम करे उपायरे
॥ पूरवलि मन सांभलिरे, घावक जाणे घायरे ॥ सा०
॥ ८ ॥ जांबुवति आहिरणीरे, आपण हरी आहिररे ॥
दहि वेचणने आवीयारे, खेले जिहां कुंवर धीररे ॥सा०
॥ ९ ॥ सामा वरसां सोलनिरे, सामी वरस सो दाखरे
॥ सामा रुपे रुअडीरे, देखी करे अभीलाषरे ॥ सा०
॥१०॥ मांस अहारा लंपटारे, सरीखो होइ सभावरे ॥
उमासे उ रुपसुरे, राखे चितनो चावरे ॥ सा० ॥ ११ ॥
सांब कहे आहिरणीरे, आपण उरहि आवरे ॥ वेचाउ
महि ताहरोरे, अधीको लाभ अपाररे ॥ सा० ॥१२॥
कंत कहे कुंवर सुणोरे आगे कोइ न कामरे ॥ लाभे
धाया वापजीरे, आज रहे जो मामरे ॥ सा० ॥ १३ ॥

लाते मार्यो तव डोकरोरे, साहि बाला हाथरे ॥ खा चि चाल्यो भितरेरे, प्रगट थयो जग नाथरे ॥ सा० ॥ ॥ १४ ॥ पापी टल्य माता थकिरे, एम कही हरी रा यरे ॥ जांबुवति प्रगट करीरे, भांजी गयो धरी लाजरे ॥ सा० ॥ १५ ॥ हरीणाक्षीसुं हरी कहेरे, दिठा सुतना कामरे ॥ माता मयंगल मारणोरे, हरी सामीनी अभी रामरे ॥ सा० ॥ १६ ॥ जे न टले संबंधथीरे, अवरां केम टलंतरे ॥ अनख भखे जे मानविरे, ते क्युं भख न भखंतरे ॥ सा० ॥ १७ ॥ हाथ ग्रहीने लाकडीरे, बु टी घस्तो आपरे ॥ आयो परखदामे चलिरे, पुछे श्रीह री बापरे ॥ सा० ॥ १८ ॥ कुंवर एशुं किजीएरे, प्रभु ए खुटी थायरे ॥ वात कहेजे कालनीरे, ए तस मुहमें देवायरे ॥ सा० ॥ १९ ॥ रे रे धीठ शिरोमणीरे, रे रे कर्म कुपातरे ॥ करणी कहेणी ताहरीरे, सारखी देखां तरे ॥ सा० ॥ २० ॥ देश निकालो कियोरे, जाजे अ लगो अपाररे ॥ क्रोधे पूरयो कान्हजी, न करे सोच लिगाररे ॥ सा० ॥ २१ ॥ राजा एहवा चाहीएरे, न्या य धर्म प्रतिपालरे ॥ बेटा उपर वाहणीरे, खमावे भू पालरे ॥ सा० ॥ २२ ॥ काम कहे सुण तातजीरे, ए मुज वाहलो विररे ॥ कादिए आवे पगे लागवारे, सा हसवंत सधीररे ॥ सा० ॥ २३ ॥ केशव कोप वशे क हेरे, भानु कुमरनी मायरे ॥ बेसाडी भल हाथणीरे, लावे तवही अवायरे ॥ सा० ॥ २४ ॥ चम्हते पाणी पे

सवारे, ताम सभे अरदासरे ॥ उखध आदी तावनरे, ए तिनु विपनाशरे ॥ सा० ॥ २५ ॥ बिडोही तव पाननोरे, लेइ चाल्यो सोइरे ॥ अति ताएयो त्रुटे सहीरे, अति मथ्यो विख होइरे ॥ सा० ॥ २६ ॥ पग प्रणमी जणणी तणारे, नामा वनमां जायरे ॥ विद्याने बले वाहलोरे, कन्या रुप करायरे ॥ सा० ॥ २७ ॥ बारु वेश विराजतिरे, जोबनवंति नाररे ॥ रुप कला गुण आगलिरे, दिसंती ऊाक ऊमालरे ॥ सा० ॥ २८ ॥ एकोतर सोमी ढालमेरे, सांब कुंवरशुं रोसरे ॥ श्री गुणसागर सूरिजीरे, उसन नरि ए कासरे ॥ सा० ॥ २९ ॥

दुहा ॥ नामा आवी बागमें, देखी कन्या रुप ॥ मोह्यो मनमें माननी, पूछे सकल सरुप ॥ १ ॥ ए वन मांहे एकली, कांइ फिरे सुकुमाल ॥ देखाती सुंदर महा, वलतो उत्तर वाल ॥ २ ॥

ढाल १०२ मी ॥ हरीयामन लागो ॥ ए देशी ॥ नामा ठग लागो, ठग लागो ठगवा नणी ॥ तोहि नरम न नांगोहो ॥ ना० ॥ १ ॥ साधु केवल वाटडी, ठगने वाट पचास हो ॥ ना० ॥ उ रोकावे शेरडी, उफाडे आकाश हो ॥ ना० ॥ २ ॥ उघाडो तनु साधुनो, ०० मुलतानी तीर हो ॥ ना० ॥ जालवी सवीए वेढलां, नांखे विंधी शरीर हो ॥ ना० ॥ ३ ॥ ठगडे हि आकरी, साधु कहावे काठ हो ॥ ना० ॥ मांही नही फोले घणुं, ए जग प्रगट्यो पाठ हो ॥ ना० ॥४॥

विछुनो विप पुंछडे, अहि विप दाढे जोय हो ॥ ना०
॥ ठगनो विप हियडे वसे, चतुर विचारो कोइहो ॥ना०
॥ ५ ॥ ठग मुखे मीठा सही, मांहि अधीक कठोर हो
॥ ना० ॥ पंम्रितजननो पारीखो, जेहवो पाको वोर हो
॥ना० ॥ ६ ॥ कोटी प्रकारे ठग तणी, न मीटे सहज
सनाव हो ॥ना०॥ आंवा जांवु उपरे, राता मांहि क
साव हो ॥ना०॥७॥ कुमरी नणे नामा नणी, वारु व
चन विशाल हो ॥ना०॥ हुं पुत्री राजा तणी, वाधी ज
इ मोसाल हो ॥ ना० ॥ ८ ॥ व्याह जोग जाणी करी,
वाप हमारो आय हो ॥ ना० ॥ वेसारी सुखपालमें,
लेइ चाल्या माय हो ॥ ना० ॥ ९ ॥ आवी वस्यो ए
वागमे, सुता सघला लोक हो ॥ ना० ॥ मुझने नावे
निंदमी, मामी तणो वियोग हो ॥ ना० ॥ १० ॥ हुं
तव हेठी उतरी, दूर रह्यो सुखपाल हो ॥ ना० ॥ प्रो
हर पाछे सोवती, छोडी गयो नृपाल हो ॥ ना० ॥ ११ ॥
जागी जोयुं दहदिसे, चाली गयो ते साथ हो ॥ ना०
॥ युथ भ्रष्ट जिम हरणली, फिरती फिरुं अनाथ हो
॥ ना० ॥ १२ ॥ जो तुं पुत्र सुनानुसुं, पुत्री वंछे
व्याह हो ॥ ना० ॥ घर पधरावजे माहरे, आणी अ
ति उछाह हो ॥ ना० ॥ १३ ॥ सा नांखे सुण स्वामी
नी, उखाणो जगमांहिहो ॥ ना० ॥ मुरांझां मिठा नही,
लापशीयांथी प्रांही हो ॥ ना० ॥ १४ ॥ हरी सुत
जायो ताहरो, थाए मुझ नरथार हो ॥ ना० ॥ तो तो

तुठो जाणीए, आपणपे किरतार हो ॥ ना० ॥ १५ ॥ वरण विचारयो दूधनो, सघलो धोळो होय हो ॥ ना० ॥ आक अने सुरभी तणो, अंतर न कियो कोयहो ॥ ना० ॥ १६ ॥ न करी एह विच्यारणा, नही घरें जोगी जात हो ॥ ना०॥ मुसो घाल्या पाखमें, हंस नी पखो थात हो ॥ ना० ॥ १७ ॥ सिंह प्रते जंवुक कहे, कानहयो होइ हो ॥ ना० ॥ केम फिरी खर आवही, ते म ए नामा जोइ हो ॥ ना० ॥ १८ ॥ आप चढी वर हाथणी, आगे साब बेसार हो ना० ॥ लेइ आवी निज घेर, माटीपणो अवधार हो ॥ ना० ॥ १९ ॥ न्हावण धोवण नोजने, आसन शयन विचार हो ॥ ना० ॥ ससुखा अति साचवे, स्वार्थीयो संसार हो ॥ ना० ॥ २० ॥ समय विच्यारे आपणो, सयण स याणा जेह हो ॥ ना० ॥ श्री हरीचंद्र नरिंद्र ज्युं, मर द कहावे तेह हो ॥ ना० ॥ २१ ॥ विमो तेरसोमी ढालमें, नामा सांव कुमार हो ॥ ना० ॥ श्री गुणसा गर सूरिजी, करे विनोद अपार हो ॥ ना० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ श्रीवसंत ऋतु राजीयो, आयो करीय मंडाण ॥ कामदेवनो मीत्र ए, वरतावे जग आण ॥ १ ॥ मो रा आंबा अति नला, केसु कुसम सम वान ॥ मधु कर गुंजारव करे, कोइल शब्द प्रधान ॥ २ ॥ मलि याचलना वायरा, वाजे अति सुखकार ॥ दुखियाने दुखदायकु, सुखिया सुख दातार ॥ ३ ॥

ढाल १०३ मी ॥ कंत तमाकु परिहरो, ए देशी ॥ कुमर सुभानु जाणीए, खेलण काज वसंत ॥ मोरा ला ल ॥ साथे मित्र मनोहरु, वनमें जाइ रमंत ॥ मो० ॥ ॥ १ ॥ कुमर सुभानु जाणीए ॥ ए आंकणी ॥ हिंसो ले अति हिंचती, गाती गीत सुघग ॥ मो० ॥ नारी नीरोपम निरखतां, उपज्यो अंग अनंग ॥ मो० ॥ ॥ कु० ॥ २ ॥ भुह कमाने संधीया, तिखां लोचन बाण ॥ मो० ॥ नारी आहिडे नीकली, नाखे विंधी प्रा ण ॥ मो० ॥ कु० ॥ ३ ॥ सहियलरुपे मांडीयो, मोहनी मोटो फंद ॥ मो० ॥ कामी मृग आवी पडे, थाइ गति मतिमंद ॥ मो० ॥ कु० ॥ ४ ॥ दाढ गलावे आंवली, ला ख गलावे आग ॥ मो० ॥ शिल गलावे सुंदरी, रागी राचे राग ॥ मो० ॥ कु० ॥ ५ ॥ मुरछाणो धरणी प ड्यो, मंत्री करी उपचार ॥ मो० ॥ उठाइ घर आणी यो, माता ते जाणी विच्यार ॥ मो० ॥ कु० ॥ ६ ॥ कन्या मेली निनाणु ए, सामी ए धुर आण ॥ मो० ॥ भामा कुमर सुभानुनो, व्याह तणी विधी ठाण ॥ ॥ मो० ॥ कु० ॥ ७ ॥ भाखे कुमरी मूलगी, भामासुं आणं द ॥ मो० ॥ करशुं कर कर उपरे, तो वरशुं तुज नंद ॥ मो० ॥ कु० ॥ ८ ॥ बाला वात विशेषथी, भाखे भामा सा थ ॥ मो० ॥ मूळ परराये परणी सहु, परणेवि नहीना थ ॥ मो० ॥ कु० ॥ ९ ॥ भामा मान्या बोलडा, स्यो वहुलो विस्तार ॥ मो० ॥ नारी कही पग पानही, पुरुष

कह्या शिरदार ॥ मो० ॥ कु० ॥ १० ॥ चोरी मांही साहीयो, वरनो दक्षण हाथ ॥ मो० ॥ वासां करशुं दा बीयो, देखे सघलो साथ ॥ मो० ॥ कु० ॥ ११ ॥ कन्या निनाणुं तणी, दक्षण करशुं खाण ॥ मो० ॥ साहीने विधी साचवी, ते सघली वश आण ॥ मो० ॥ ॥ कु० ॥ १२ ॥ शयन घरे श्री सांबजी, भृकुटी चोहडी कपाल ॥ मो० ॥ विहाव्यो कुंवर खरो, नाशी गयो ततकाल ॥ मो० ॥ कु० ॥ १३ ॥ सांसनरयो आयो सहि, नामा जननी पास ॥ मो० ॥ कंठ लगाई पूछीयो, जाणी अधीको त्रास ॥ मो० ॥ कु० ॥ १४ ॥ मुजने मारे मायजी, नाइ सांब सनूर ॥ मो० ॥ सांब कीहारे डरपणो, आवी चाली हजूर ॥ मो० ॥ कु० ॥ १५ ॥ पगे लागी जनो रह्यो, कडुआणा अति नयण ॥ मो० ॥ अकुलाणी आतुर थइ, बोले काठा वयण ॥ मो० ॥ ॥ कु० ॥ १६ ॥ धूरत धीठ शिरोमणी, जिहां तिहां दुखदाय ॥ मो० ॥ क्यु आयो अण तेडीयो, नामा नूरक खाय ॥ मो० ॥ कु० ॥ १७ ॥ सांब कहे तें आणीयो, सकल लोकनी साख ॥ मो० ॥ बेसारी वड हाथणी, मा ता कूट मत नाख ॥ मो० ॥ कु० ॥ १८ ॥ नणे सुनामा नामनो, होइ खीसाणी आप ॥ मो० ॥ हाथ कमाया कामनो, सोचनको संताप ॥ मो० ॥ कु० ॥ १९ ॥ ठग माता ठग तातजी, नाइपिण ठग जास ॥ मो० ॥ आप ठगारो, जगतनो हुं कीम पहुंचु तास ॥ मो० ॥ कु० ॥ २० ॥

हेमांगद पुत्री भली. सूहीरणी तस नाम ॥ मो० ॥ एवं सांब कुमर घरे. रमणी शत अभिराम ॥ मो० कु० ॥ २१ ॥ चरणकमल निजताततनां, प्रणमी भाखे वात ॥ मो०॥ कामकला सुविचारतां, हरी हांसो न समात ॥ मो० ॥ कु० ॥ २२ ॥ कन्या सोहि सुभानुने, परणावी सुखकार ॥ मो०॥ मनमान्या सुख भोगवे, सांब सुभानु कुमार ॥ मो० ॥ कु० ॥ २३ ॥ सांब कहे वसुदेवसुं, बाबाजी अवधार ॥ मो० ॥ थें परदेशां आथमी, पामी नारसु नार ॥ मो० ॥ कु० ॥ २४ ॥ सब विध सुंदर सुंदरी, घर बेठाही देख ॥ मो०॥ तात प्रसाद तुह्मारडे, में पामी सुविशेष ॥ मो० ॥ कु०॥ २५ ॥ बेटाजी तुह्म तो बडा, जोता सब परिवार ॥ मो० ॥ तुम सम अवर न उपनो, ह्मारा वंश मझार ॥ मो० ॥ कु० ॥२६॥ तिमोत्तर सोमी ढालमें, जावुवंति उछाह ॥ मो० ॥ श्री गुणसागरजी कहे, होवे मदन विदरभी व्याह ॥ मो० ॥ कु० ॥ २७ ॥

दुहा ॥ एक दिवस चिंता वसी, रुखमणीने मन एह ॥ विदरभी कुमरी भली, रुप कला गुण रेह ॥ ॥ १ ॥ जो घर आवे कामने, तो पूगे मन आश ॥ सहि करी जाणुं सखी, पूरो पुण्य प्रकाश ॥ २ ॥

ढाल १०४ मी ॥ आज भलो दिन माहरो ॥ ए देशी ॥ विदरभीसुं मन वरयो, हूया भलेरो भाव हो लाल ॥ वहु करवाने कारणे, चित्तने लाग्यो चाव हो ॥

ला० ॥ वि० ॥ १ ॥ दूत अनोपम मोकल्यो, रुक्मीया राजा पास हो ॥ ला० ॥ पुत्री दे मुझ पुत्रने, धुर आशीष प्रकाश हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ २ ॥ रुक्मीयो रीसे रातडो, बोले अति अविचार हो ॥ ला० ॥ आगे अमरख अति घणो, मारो ठे हरी ठार हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ३ ॥ ए कुमरी उत्तम खरी, वहिन कुमर घटि वंस हो ॥ ला० ॥ जो वर वर लहेशे नहीं, अण परण्या परसंस हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ४ ॥ हरी घरथी चंडालने, घरे दिधां अति सोह हो ॥ ला० ॥ नाते घाठां जेहने, उपावे अंदोह हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ५ ॥ दूत तणे मुख सांजली, ए अविचारी वात हो ॥ला० पिठतावो करती घणो, दुचिंती रुखमणी मात हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ६ ॥ मर्म लहि माता तणो, कामने सांब कुमार हो ॥ ला० ॥ रुप करी चंडालनो, कुंजनपुर आवत हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ७ ॥ रुप कला करी सोहतो, गावे गीत रसाल हो ॥ ला० ॥ विण रखाब उपांगसुं, वाजे मांदल ताल हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ८ ॥ सुर गायननी उपमा, भेद संगीतनो जाण हो ॥ ला० ॥ स्वर मंडलसुं साचवे, राग तणा मंडाण हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ९ ॥ ग्राम तिन स्वर सातसुं, मुर्छना एकविस हो ॥ ला० ॥ गुणपचासा तानसुं, जाणपणाना इश हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ १० ॥ रुप तिहां गुण नवि हुवे, सुगुण तिहां नहि रुप हो ॥ ला० ॥ रुप अने

ण एकठां, पूरव पुण्य अनुप हो ॥ ला० ॥ वि० ॥
११ ॥ मोह्यां राणा राजीयां, मोह्या बाल गोपाळ
। ॥ला०॥ मोहि रमणि अती घणी, खग मृग अति सु
ल्लास हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ १२ ॥ गगन गति सुर
ानवी, थंभी आप विमान हो ॥ ला० ॥ नाद सुणेवा
ारणे, मोहि रह्यां धरी ध्यान हो ॥ ला० ॥ वि० ॥
१३ ॥ नादे मोह्या हरणला, प्राण तजे ततकाल हो
ला० ॥ साप ढिढर माहि पडे, सहिरो लघु लाल हो
ला० ॥ वि० ॥१४॥ नादे स्वर गाइयो, स्वांग विरुप
रंत हो ॥ ला० ॥ नारी आगे नाचियो, थेइ थेइ थेइ
रंत हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ १५ ॥ राधावलभ राचियो,
ए जग मांहि अचभ हो ॥ ला० ॥ राणी रुखमणी
आगले, कीधो नाटारंभ हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ १६ ॥
ादे ब्रह्मा चउमुखो, रस मोखरनो मुहहो ॥ ला० ॥
ेदि नास्यो नारदे ॥ देइ तिखा नुह हो ॥ ला०॥वि०
। १७ ॥ वेद थकी ए पंचमो, नाद कह्यो उपवेद हो
॥ ला० ॥ प्रिती उपावण सादरो, नाद रहे सर्व देख हो
॥ ला० ॥ वि० ॥ १८ ॥ दुखीयाना दुख अपहरे, सु
खीयाने सुखकार हो ॥ ला० ॥ श्रवण हृदय हारी ख
रो, मनमथ दूत उदार हो ॥ ला० ॥वि० ॥ १९ ॥ ना
री जननो वाल हो, नाद निरोपम नाम हो ॥ ला० ॥
चतुरा चितनो पारीखो, नाद महा अभिराम हो ॥
ला० ॥ वि० ॥ २० ॥ विदरभी नृप कुवरी, बेठी राजा

सारया माय रीसाय हो ॥ला०वि०॥ ४० ॥ चत्रोतर सोमी ढालमें, वैदरजीनो प्रेम हो ॥ला० ॥ गुणसागर परजुनसुं, नंग जडाणो हेम हो ॥ ला० ॥वि० ॥ ४१ ॥

दुहा ॥ मदन गयो मंदिर चली, निशनर सोवे सोय ॥ निंद गइ प्रनु निरखतां, मन रलीयायत होय ॥ १ ॥ लेख लेखी सुविशेपथी, दिधो कुमरे जाम ॥ रुखमणी नामे वांचतां, पामी अचरिज ताम ॥ २ ॥ पूछे पदमनी प्रेमशुं, देव प्रकाशो नाम ॥ थारा मननो नावतो, हुंतुं कुमर काम ॥ ३ ॥

ढाल १०५ मी ॥ हंसलानी देशी ॥- नाग्य वडो प्रनु पाइयो ॥ एटेर ॥ ए वरहे श्री काम कुमारके, पुरंदरहे केरो अवतारके ॥ हुंतुं हे वरुवखती नारके, प्रसंशाहे लेशुं संसारके ॥ ना० ॥ १ ॥ जे मन माने आपणो, करवोहे सोइ नरतारके ॥ नारी जमारो नाहशुं, नरवोहे ए जग व्यवहारके ॥ ना० ॥ २ ॥ पितांबर पहिरयो नलो, कंकणहे बांध्यो वर हाथके ॥ वेळा साधी वेगशुं, कुंवर रहे कुंवरीने साथके ॥ ना० ॥ ३ ॥ आरण कारण साचवी, तव किधो हे विवाह उल्हासके ॥ रात वशी उठी गयो, आयो हे वंधवनी पासके ॥ ना० ॥ ४ ॥ पाश्चिम राते सोवती, कुमरी हे निंद्रावश थायके ॥ दिन उग्यां आवे सही, दातप हे लेइने धायके ॥ ना० ॥ ५ ॥ दिठी कुमरी निदमें, कंकण हे बांध्यो सुवीशेपके ॥ कोरी सारी पहे

रणे, ए नीको हे परणेतर वेसके ॥ जा० ॥ ६ ॥ सा स जरी पाछी वली, लावी हे राणीने रायके ॥ परत क्ष चरीत्र देखावतां, आपणपेहे उशींगण थायके ॥ जा० ॥ ७ ॥ रायजणे राणी सुणो, ए कारीज हे विपरीत जोयके ॥ कुलने लंछन लावीयो, ए बेटी हे नही वेरण होयके ॥ जा० ॥ ८ ॥ जलहर जग जीवाडणो, जाइ हे विद्युत गुण खाणके ॥ वंसदेव तस मांही ए, उपजी हे विषवेली आणके ॥ जा० ॥ ९ ॥ हुं चूक्यो वाचा सही, पापणी हे पुत्रीने हेतके ॥ हिवे उरण थाय सुं, एहने हो डुंबजाने देतके ॥ जा० ॥ १० ॥ फाटो दुध न राखणो, विणठो हे माणसनो त्यागके ॥ करवो छे सुण सुंदरी, सगपण हे करवो नहि लागके ॥ जा० ॥ ११ ॥ अंगुठो सापे डस्यो, छेदे हे शाणा नर जेहके ॥ राख्यो खोवे देहने, तेहवी हे कुमरी छेहके ॥ जा० ॥ १२ ॥ राजा तेसी मांगणे, दिधी हे कुमरी तेहि वारके ॥ पाले वाचा आपणी, न कीयो हे नृप सोच लीगार के ॥ जा० ॥ १३ ॥ खरी ए आपी रीस वसे, जशीर हे आवंत कलंकके ॥ सतवति सीता सती, रघुपती हे सा तजीय निशंकके ॥ जा० ॥ १४ ॥ डुंब कहे हुं स्युं करु, जरवि हे हमहिने नेठके ॥ राजसुता सुकमालिका, करवी हे एहनी अती वेठके ॥ जा० ॥ ॥१५॥ लोकोमें अवहेलणा, मनमे हे तस हरख अपारके ॥ मन मान्यो पति पाइयो, लोटे हो लाने संसारके

॥ ना० ॥ १६ ॥ सांब कहे सुण नाइजी, आपणपेहे ते खावा आजके ॥ देव नुवन समरावियो, निया हे सारे सव काजके ॥ ना० ॥ १७ ॥ धौं धौं मांदल वाजहि, नाचे हे तिहां पात्र अनेकके ॥ मंगल गावे गोरडी, वरते हे विवाह तरा अनेकके ॥ ना० ॥१८॥ रोस गयो राजा तणो, किजे हे पवलावो एम के ॥ ढाढीने गाढी करी, दिजे हे विदरनी केमके ॥ ना० ॥ १९ ॥ आंत तप अती आकरी, गाढो हे मनमांही कुचयनके ॥ अग्नी तणा संजोगथी, नाठी हे जीम चुवे नयनके ॥ ना० ॥ २० ॥ मावीता गेरु तणा, अवगुण हे सासेवा प्रां हिके ॥ कुमारीका सुत जाइयो, कुंति हे नृप काढी नांहि के ॥ ना० ॥ २१ ॥ काठ जल बोले नहि, आपण हे उपायो जाणके ॥ वरूवानल जल बालणो, सायर हो न उलहावे प्राणके ॥ ना० ॥ २२ ॥ क्रोध वसे मुक आं धलो, कीधो हे कार्य विपरीतके ॥ न कुच वातने कारणे, तोभी हे पुत्रि स्युं प्रीतके ॥ ना० ॥ २३ ॥ सोइ दान श्रवणे सुणी, चमकियो हे रुकमीयो रायके ॥ खबर करी जणाविया, एतो कोइ हे हरी सुत कहिवाय के ॥ ना० ॥ २४ ॥ बुटी चाले आवियो, मिलिया हे नाणे जां धायके ॥ हेज हिए न समावहिं, लीधो हे कंठ लगायके ॥ ना० ॥ २५ ॥ काम सांब कुमर नला, आ सया हे निज घर उछाह के ॥ आनंद रंग वधामणां, सासु हे मन उपन्यो उगहके ॥ ना० ॥ २६ ॥ दिधो

अधीको दायजो, दिधां हो साथे परीवारके ॥ देइ द दामां जीतनां, चाल्यो हे श्री काम तिणवारके ॥ ना० ॥ २७ ॥ आव्यां नगरी द्वारिकां, हरख्यो हे श्री कृष्ण नरेशके ॥ हरखी माता रुखमणी, हरख्यो हे परीवार अशेषके ॥ ना० ॥ २८॥ जे जे चिंत्या बोलमा, ते तेह चडीया परीमाणके ॥ वहुअर सासुप्रीतडी, माने हे सुख मेरु समानके ॥ ना० ॥ २९॥ सांवअने परजुनजी, तनसु हे जुदा मन एकके ॥ जोडी नल कुवेर तणी, राखे हे हठ न तजे टेकके ॥ ना०॥३०॥ अनिरुद्धादिक कामने, नंदन हे गुणवंता सोइके ॥ तस संख्या सुत सवने, साखा हे विस्तरती जायके ॥ ना०॥३१॥ पच मोत्तर सोमी ढालमे, वैदरभी हे केरो विवाहके ॥ श्री गुण सागर सूरिजी, लिजे हे शुभ कर्मा लाहके ॥ ना०॥३२॥

चौपइ ॥ खंड खंड रसठे नव नवा, सुणतां मीठा से लडीरस जेवा ॥ श्री हरीवंश चरित्र जय जयो, पंचम खंड ए पूरण थयो ॥ १ ॥ इति ढालसागर प्रबंधे हरीवंश विरतार नामा पांचमो खंड समाप्तः ॥

॥ अथश्री ढालसागर प्रबंध हरीवंस वर्णन ॥

॥ छठो खंड प्रारंभ ॥

दुहा ॥ गुण पणविसे पूरीया, सुंदरने सुकुमाल ॥ एहवा उपाध्याय तणां, प्रणमी चरण त्रिकाल ॥ १ ॥ वर छठा अधीकारनो, विस्तरिये विस्तार ॥ पंचालि

प्रगटि खरी, सती शिरोमणी सार ॥ २ ॥ छठो ज्ञाता अंग छे, तिहां छे बहु विस्तार ॥ भाख्यो वीर जिणंदजी, गणधर सभा मझार ॥ ३ ॥ नागसीरी हुति ब्राह्मणी, कडवो तुंबो दिध ॥ मास खमणने पारणे, मुनिवर हत्या लीध ॥ ४ ॥ करतां करमज सोहिलां, भोगवतां जंजाल ॥ नागसीरी जीम मति करो, फोगट पातिक जाल ॥ ५ ॥ भमती भूर भवंतरे, चंपा नगरी तेह ॥ भद्रा उरे उपनी, सागरदत्तने गेह ॥ ६ ॥

ढाल १०६ मी ॥ जीहो मथुरा नगरीनो राजीयो ॥ ए देशी ॥ जीहो नरकादिक दुख भोगवि ॥ लाला० ॥ परवश कर कर रीव ॥ जीहो भद्रा घर आवी अवतर्यो ॥ ला० ॥ नागसीरीनो जीव ॥ १ ॥ चतुर नर जो जो कर्म विपाक ॥ ए आंकणी ॥ जीहो करम करे सो राक ॥ च० ॥ १ ॥ जीहो अनुक्रमे जाइ दारीका ॥ ला० ॥ सुंदर रुप रसाल ॥ जीहो भणी गुणी चोसट कला ॥ ला० ॥ चाले राज मराल ॥ च० ॥ जो० ॥ २ ॥ जीहो वेपारी विजो वसे ॥ ला० ॥ तिहां वली जिणदत्त शेठ, जिहो धनपती सघलाछे घणां ॥ ला० ॥ सघला जेहने हेठ ॥ च० ॥ जो० ॥ ३ ॥ जीहो तस घर घरणी भली ॥ ला० ॥ सागर नामे पुत्त, जीहो रुपवंत सहुने गमे ॥ ला० ॥ राखे घरनो सुत ॥ च० ॥ जो० ॥ ॥ ४ ॥ जीहो एक दिवस सागर फिरे ॥ ला० ॥ नगर कुतुहल काज, जीहो रमलीकरे सुकमालीका ॥ ला० ॥

घर उंबर कुल लाज ॥ च० ॥ जो० ॥ ५ ॥ जीहो सा
गर रुपे मोहीयो ॥ ला० ॥ घर आव्यो दिलगीर, जी
हो मातपिता पूछे तिहां ॥ ला० ॥ नंदन कोइ अधि
र ॥ च० ॥ जो० ॥ ६ ॥ जीहो पुत्र कहे तुमे सांभलो
॥ ला० ॥ जो मुझ वांछो खेम, जीहो सागरदत्तनी नं
दनी ॥ ला० ॥ परणावो मुझ प्रेम ॥ च० ॥ जो० ॥ ७ ॥
जीहो वात सुणी शेठ हरखीयो ॥ ला० ॥ साजन ली
धा साथ, जीहो सागरदत्त घरे आवीयो ॥ ला० ॥ बे
उ मिल्या देइ हाथ ॥ च० ॥ जो० ॥ ८ ॥ जीहो शेठ
कहे किण कारणे ॥ ला० ॥ आया मुझ घरबार, जीहो
तुझ पुत्री मुझ पुत्रने ॥ ला० ॥ दिजे एह विचार ॥
च० ॥ जो० ॥ ९ ॥ जीहो शेठ कहे मुझ अंगजा ॥ ला० ॥
जिवन प्राण समान, जिहो गेह जमाइ जो रहे ॥ ला०
॥ तो आवो करी जांन ॥ च० ॥ जो० ॥ १० ॥ जीहो
इम सांभली विलखो थयो ॥ ला० ॥ शेठ गयो निज
ठाम, जीहो सागर पूछे बापने ॥ ला० ॥ वात कही ति
णे ताम ॥ च० ॥ जो० ॥ ११ ॥ जीहो सागर आदर
करी कहे ॥ ला० ॥ जीवन प्राण समान, जीहो गेह
जमाइ जो रहु ॥ ला० ॥ वंछित भोग रसाल ॥ च० ॥
जो० ॥ १२ ॥ जीहो जिनदत्त सागरने कहे ॥ ला० ॥
चिंता मत करो चित्त, जीहो जान सजी तिहां आवीया
॥ ला० ॥ जिम तिम राखे प्रित ॥ च० ॥ जो० ॥ १३ ॥
जीहो हथमेलो सागर ग्रहे ॥ ला० ॥ शेठ सुतानो हा

थ, जीहो भोगर सरीखो आकरो ॥ ला० ॥ चिंते त जुड्यो साथ ॥ च० ॥ जो० ॥ १४ ॥ जीहो अनुक्रमे परण्यो प्रेमशुं ॥ ला० ॥ सागर करत विचार, जीहो नामे ए सुकुमालीका ॥ ला० ॥ परणामे अशीधार॥ च० ॥ जो० ॥ १५ ॥ जीहो सांझ समे एक मेहेलमा॥ ला० ॥ सुता स्त्री भरतार, जीहो अंग लगावे अंगसुं ॥ ला० ॥ जेह विषय अंगार ॥ च० ॥ जो० ॥ १६ ॥ जीहो कर्मनीकांचीत जेहने ॥ ला० ॥ ते केम पामे भो ग, जीहो उष्ठोत्तरसोढाले गुणसागर कहे ॥ ला० ॥ तोही न समझे लोग ॥ च० ॥ जो० ॥ १७ ॥

दुहा ॥ जिमतिम करम न किजीए, किजीए चित्त वि च्यार ॥ धर्म करो निज हितभणी, जिम पामो भवपार॥ ॥१॥ मन भंग देखी वालम तणो, चमकी नारी तेवार ॥ असमंजस ए स्युं करे, कोइक खरो विचार ॥ २ ॥

ढाल १०७ मी ॥ हींडोला खाटे भ्रण कडा ॥ ए दे शी ॥ रथ असवारी सभारथी ॥ साहीब मोरा ॥ कि धां दिधां दान हो ॥ सागरदत्त ग्रह उतर्‍या ॥ सा० ॥ हरख्या सहु साजन हो ॥ १ ॥ कर्म अजब गति, बां धो विविध मति ॥ उदय आवे अति आकरां ॥ सा० ॥ कर्म करे सो होय हो ॥ ए आकणी ॥ सागर वली सुकमालिका ॥ सा० ॥ बेठा जइ एकांतहो ॥ पिण च तुराइ नीज नाहनी ॥ सा० ॥ चंचल चित नीरखंत हो ॥ क० ॥ २ ॥ रंग हतो जे परणता ॥ सा० ॥ ते

रंग नहि खेलत हो ॥ ए रंगमे ते रंगमे ॥ सा० ॥ अं
तर अनत अनंत हो ॥ क० ॥ ३ ॥ प्रतिवंता गुण
राखवा ॥ सा०॥ आवी करे मनोहार हो ॥ अग फर
स अति आकरो ॥ सा० ॥ केम सहे भरथार हो ॥
॥ क० ॥ ४ ॥ जीम अहिं छंडे कांचली ॥ सा० ॥
छव्यो नारी उवेख हो, रे प्रिउ पूछे प्रेमदा ॥ सा० ॥
छठोगे कुण विशेष हो ॥ क० ॥ ५ ॥ कहे पिउ देह
चिंता भणी ॥ सा० ॥ जाइसंग्रह अनुखंग हो, नारी
पिण झारी भरी ॥ सा०॥ जाणी कपट थइ संग हो ॥
॥ क० ॥ ६ ॥ प्रिउ वारे पिण नवी रहे ॥ सा०॥ नव
लिगत कोइ नेह हो, सागरनो दाव फाव्यो नही
॥ सा०॥ आव्यो करी सुची देह हो ॥ क० ॥७॥ व
यल शक्यो नही छेतरी ॥ सा०॥ नेह गहेली नार हो,
जोरे कर ग्रही कंतनो ॥ सा० ॥ आण्यो गेह मझार
हो ॥ क० ॥ ८ ॥ सेजे बेसारयो हेजथी ॥ सा०॥ मां
भी घणी मनुहार हो, खिण खिणमे इम किम करो
॥ सा०॥ कहोने प्राण आधार हो ॥ क० ॥ ९ ॥ मां
न्यो प्रथम समागमे ॥ सा०॥ कपट नीहेजा कंत हो,
किम रहशे इणे लक्षणे ॥ सा०॥ प्रिती रिती मतीवंत
हो ॥ क० ॥१०॥ प्रथमज कलवमें मक्षिका ॥ सा०॥
स्यो तेह मांही स्वाद हो, स्वांमी अबला उपरे
॥ सा० ॥ एवडो स्यो उनमाद हो ॥ क० ॥ ११ ॥
पहेली रामतमें प्रभु ॥ सा० ॥ काढी बेठा वेर हो,

आगल कीम निरवाहस्यो ॥ सा०॥ मुझथी एह विशेष हो ॥ क० ॥ १२ ॥ महील कहील कारी इसा ॥ सा० ॥ टहीलनि करण हार हो, तोपिण मन माने नही ॥ सा० ॥ अहो यौवन शिणगार हो ॥ क० ॥ ॥१३॥ हुं तुम पगनी पानही ॥ सा० ॥ तुमे मुझ शीरना मोरु हो, गोद बिगाइ पाए पडुं ॥सा० ॥ किम रह्या मुह मचकोड हो ॥ क० ॥ १४ ॥ तुम सुसरे नवी दुहव्या ॥ सा०॥ लहेणे देणे लिगार हो, लालच हुवे कोइ वातनी ॥ सा० ॥ कहो सुखे न करो विच्यार हो ॥ ॥ क० ॥ १५ ॥ होवे जमाइ लाडको ॥ सा० ॥ जिमरुशे तिम रंग हो, पिण विण स्वार्थ रुसणुं ॥ सा० ॥ ते तो बालीक ढंग हो ॥ क० ॥ १६ ॥ इम कही खीण विसमी ॥ सा० ॥ चतुरानन चीत चाव हो, निंद्रावश हुइजीके ॥ सा० ॥ सागर लीधो दाव हो ॥ क० ॥ ॥ १७ ॥ बार उघाडी नाशीगयो ॥ सा०॥ सुती मुकी नार हो, एहवी में जाणी नही ॥ सा०॥ धीग एहनो अवतार हो ॥ क०॥१८॥ सतोत्तर सोमी ढालमें ॥ सा० ॥ कीजे क्रोड विशेष हो, गुणसागर ए नवी मीटे ॥ सा० ॥ जे विधी लिखीया लेख हो ॥ क० ॥ १९॥

दुहा ॥ जागी तव सुकमालीका, पती नवि देखे पास ॥ गद गद कंठ रुदन करे, नाह कीहां गयो नाश ॥ १ ॥ झारी लेइ दाशी तिहां, आवे मनने रंग ॥ विलखी शेठ सुता घणी, दाशी देखी विरंग ॥ २ ॥

दाशी भाखे स्वामिनी, आमण दुमणी कांइ ॥ पहीले दिन खटपट किशी, गुण अवगुण न जणाइ ॥ ३ ॥ सुती गोडीने गयो, सागरदत्त घर आप ॥ दाशी शेठाणीने कहे, एह जमाइ पाप ॥ ४ ॥ सागरदत्त रीसे भरयो, जीनदत्तने घर जाय ॥ उलंभा दे शेठने, निज अंगज तुम नाय ॥ ५ ॥ तेडी सुतने हडकीयो, तें कीयो ए अकाज ॥ शेठ सुता परणी करी, गोडी कीम निजलाज ॥ ६ ॥ पुत्र कहे सुण तातजी, जाउ नही तस पास ॥ जोगी जंगम व्रत ग्रहु, मत कर अवर विखास ॥ ७ ॥ शेठ सुणी ए वातडी, गोडी आपण कान ॥ आवी बेटीने कहे, पूर्व करम नीदान ॥८॥

ढाल १०८ मी ॥ मुनिवर ढूंढणा ॥ ए देशी ॥ अन्य दिवस घरनो धणीरे हां, सागरदत्त सुजाण ॥ कर्म विटंबणा ॥ उंचो बइठो महीलमांरे हां, देखे नगर मंडाण ॥ क० ॥ १ ॥ भूखे भागो दुबलांरे हां, शेठे दीठो रंक ॥ क० ॥हाथे भांगो ठिकरोरे हां, मांगे भीक नीशंक ॥ क० ॥ २ ॥ भिण भिणाट माखी करेरे हां, जे लाभे ते खाय ॥ क० ॥ फाटां त्रुटां लुगडांरे हां, केने नावे दाय ॥ क० ॥ ३ ॥ शेठे तेडावी तेहनेरे हां, दीधुं आदरमान ॥ क० ॥ मोदक दीधां मोकलारे हां, उपर वनु धांन ॥ क० ॥ ४ ॥ नाइ तेडी मरदन कीयांरे हां, स्नानकराव्यो तास ॥ क० ॥ आभरण पहीराव्यां भलांरे हां, तन हुवो तेज प्रकाश

॥ क० ॥ ५ ॥ शेठे आडंबर करीरे हां परणावी नि
ज धीय ॥ क० ॥ सखरा वाघा घर दियारे हां, सुख
भोगवे चिरंजीय ॥ क० ॥ ६ ॥ हरख्यो भीखारी घ
णुरे हां, जाग्यो भाग अभंग ॥ क० ॥ कीहां शेठघ
र पामीयोरे हां, जीहां सुख नवरंग ॥ क० ॥ ७ ॥
मीठा भोजन जिमवारे हां, सासु सुसरा मान ॥ क० ॥
शेठ सुता सुकमालीकारे हां, लावुं रुप निधान ॥ क०
॥ ८ ॥ रात समे बेहु जणारे हां, सुवा मंदीर जाय ॥
क० ॥ जिण वेला कर फरशीउरे हां, अगन समो दु
खदाय ॥ क० ॥ ९ ॥ नाठो द्रुमक तिहां थकीरे हां,
लेइ निज समुदाय ॥ क० ॥ साप कांचली जीम त
जीरे हां, टलीय अलाय बलाय ॥ क० ॥ १० ॥ शे
ठाणी नीज नंदनीरे हां, दिठी वदन विलाय ॥ क० ॥
माता पूछे शुं थयोरे हां, रुदन करे मसकाय ॥ क० ॥
॥ ११ ॥ जननी भाखे सुण सुतारे हां, मत मन आ
णे शोक ॥ क० ॥ सुखदुख लिखीया नवी टलेरे हां,
हससे दुर्जन लोक ॥ क० ॥ १२ ॥ चिंता तजी भजी
धीरमारे हां, घरबेठी दे दान ॥ क० ॥ अंतराय मीट
शेसही रेहां, सुख पामीश असमान ॥ क० ॥ १३ ॥
शेठ सुणी आवी कहेरे हां, बेटी मतकर अंदोह ॥ क० ॥
पूर्व कर्म उदय थकीरे हां, पतीसुं थाए वीछोह ॥
क० ॥ १४ ॥ जे घर आवे ते वहीरे हां, जाचक
आश करेह ॥ क० ॥ तेहने मुहमांग्यो दीएरे हां, ना

कारो न करेह ॥ क० ॥ १५ ॥ वोहोरण आवे साध
वीरे हां, गइ गुराणी पास ॥ क० ॥ वशीकरण विधी
पूछतारे हां, बोले सा उल्हास ॥ क० ॥ १६ ॥ मंत्र
तन्त्रने जंत्रडारे हां, औपध मूली तेम ॥ क० ॥ कामण
मोहण जिनमतिरे हां, करण करावण नेम ॥ क० ॥
॥ १७ ॥ लीधो चारित्र सादरोरे हां, करती तप उ
पवास ॥ क० ॥ मारगथी बाहिर पडीरे हां, सेवंति व
नवास ॥ क० ॥ १८ ॥ कांइकरे व्रत आदरयोरे हां,
जो न तजे सकल्प ॥ क० ॥ पग पग सिदाये घणुंरे
हां, वदे दुःख अनल्प ॥ क० ॥ १९ ॥ आलो गोलो
नीतसुंरे हां, लागे अपर खीरंत ॥ क० ॥ रागीनो म
न राचणोरे हां, वैरागी वीरचंत ॥ क० ॥ २० ॥
वनवासे दूपण घणारे हां, रागी नरने होय ॥ क० ॥
घरवासे वैरागीयांरे हां, दोप न लागे कोय ॥ क० ॥
॥ २१ ॥ वस्तु अपूरव छे घणीरे हां, आंबा दाडम
द्राख ॥ क० ॥ खाता मन पाछो पडेरे हां, अणखाया
अभीलाख ॥ क० ॥ २२ ॥ मोहपै साची मोटकीरे
हां, वसुधामें विख्यात ॥ क० ॥ हाथी उडे वायरेरे
हां, सांस मांस कुण मात ॥ क०॥२३॥ अठोत्तर सो
मी ढालमेंरे हां, किउं किउं न करे कर्म ॥ क० ॥ छुट
वो नहि जीवनेरे हां, एक विना जिन धर्म ॥ क०॥२४॥

दुहा ॥ ललितादिक गोठिल नसे, पांच पुरुप ध
नवंत ॥ राजा माने अती घणु, भोगी भमर रमंत ॥

॥ १ ॥ रथ वेशी वेशा सहित, आया वन पंडूर ॥ वेश्या रथथी उतरी, वेठी आसन पूर ॥ २ ॥ पाचे गोठिल सेवका, मिल दिधो आदेश ॥ भोजन करज्यो भातिशुं, जीम खुशी हुवे वेश ॥ ३ ॥

ढाल १०९ मी ॥ मोरा साहिब हो श्री सितलना थके ॥ ए देशी ॥ एक गोठील हो घणुं चतुरसुजाणके, वेश्या आगल आइउ ॥ रंगे राती हो मेन्दी लेइ हाथके, पग मंरूण मन भाइयो ॥ १ ॥ धन्य वेश्या हो सुहागण नारके, स्युं कीधे इण नातरे ॥ पांच गोठिल हो सेवे चित लायके, पग एक कोइ न चातरे ॥ २ ॥ तिणे मांरूयो हो पग रुमी भातके, वेल फूल मन लाइने ॥ कर कोमल हो रंग्या वेउ रंगके, मधुर स्वर गुण गाइने ॥३॥ एक लायक हो सुंदर नर आयके, माथे छत्र धरे तिसे ॥ आपे उभो हो करी सेवा सारके, वेश्या मुख देखी हसे ॥४॥ जोवन भर हो एक मोहन वेलके, तेल सुगंध शीशी लिए ॥ वेश्या शिर हो घाले तेल फूलेलके, चोटो गुंथे द्रढ हिए ॥ ५ ॥ नवरंगी हो सारंगी पागके, एक गणिका खोले लिए ॥ एक विंझे हो चामर चित लायके, कर सेती बीडा दीए ॥ ६ ॥ जो भडके हो तडके दे गालके, फिर जबाब नको करे ॥ जे मांगे हो हासे करी लाखके, ते हाजर आणी धरे ॥ ७ ॥ ए पाचे हो नर मिठा बोलके, गणिकासुं मुसके हसे ॥ घर घरणी हो छोमी ते

सूढके, निश वेश्या मंदिर बसे ॥ ८ ॥ हिवे साधवी हो देखी ते इमके, चिंते चित धन्य ए सहि ॥ हुंतो प रणी हो कोइ पाप संजोग के, मुने पतिये मानी न हीं ॥ ९ ॥ एक ए पिण हो अभीमानणी नारके, सि हासन उपर चढी ॥ पांचे नर हो करे जीजीकारके, देइ जवाप न हठ चढी ॥ १० ॥ जीम लींबु हो देखी गले दाढके, तिम अजा मन टलवले ॥ भोगवता हो मिठा नर पाचके, संजम व्रतथी खलभले ॥ ११ ॥ जो तपनो हो कोइ फलछे साचके, तो पिण हुं पूरव भवे ॥ एहणी परे होजो भरतारके, तप संजम भ ला हुवे ॥ १२ ॥ आतापना हो कीधी बहु भांतिके, आइ गुराणी पाये नमे ॥ व्रत पाली हो सुधो आचार के, जिम तिम दिन दिन निगमे ॥ १३ ॥ हिवे चेली हो गुरुणी सुं रीसके, गुरुणीसु नवि मीले ॥ मन माने हो जी हा तिहां जाइके, भोली जीण तीणसु मिले ॥ १४ ॥ हाथ धोवे हो मुख धोवे पायके, माथो धोवे मन र ली ॥ अंग धोवे हो दिनमें दस वारके, धोवे साडी निरमली ॥ १५ ॥ निसवासरहो गुरुणी स्युं धेखके, खटपट निपट निर्लज वली, शेठ वेटी हो जाएयो रवाद न कोइके, गुरणीथी अलगी टली ॥ १६ ॥ पाडी हारक हो मोटी धर्म सालके, वेठी तिहां सुक मालिका ॥ आप छंदे हो रहि अटक न कांइके, जा प जपे जप मालिका ॥ १७ ॥ पाभोशाण हो आवे को

इ नारके, तिण आगल सुख दुख कहे ॥ बिजो कोइ नही हो आल जंजालके, आप वसे सुखणी रहे ॥ १८ ॥ पडीकमणो हो जो आवे दायके, तो किण वेला आदरे ॥ किण वेला हो विकथा करे च्यारके, हारे वस परमादमे ॥ १९ ॥ व्रत पाल्या हो तिणे वरस अनेकके, छेहडे आलोया नही ॥ कर्म बांध्या हो छुटे नही जीवके, कोड जतन करे कोसही ॥ २० ॥ हिवे साधवी हो आउखो पालके, बिजे सुर लोके अवतरी ॥ पल्योपम हो नव आउ प्रमाणके, सुरगणीका थइ सुख वरी ॥ २१ ॥ हिवे तिहां थी हो चवी साधवी जीवके, सुन्न करसें किहां अवतरी ॥ ते सुणजो हो संबंध विचारके, सुणतां मन आणंद धरी ॥ २२ ॥ ढाल नव सोमी हो तप कीधां जीणके, ते तो निश्चे सुख लहे ॥ जिनशासन हो माहे धर्म अमुलके, गुणसागर साचो कहे ॥ २३ ॥

दुहा ॥ देश मांहि छे दिपतो, सजल देश पचाल ॥ कंपीलपुर नामे नगर, न पडे कदिय दुकाल ॥ ॥ १ ॥ उंचो कोट त्रिकोट जीम, परदल भंजणहार ॥ दरवाजा च्यारे भला, लाग्या माल अपार ॥ २ ॥ लिखमीधर व्यवहारीयां, वसे सदा सुख वास ॥ शेठ सेनापती मंत्रवि, घर घर लील विलास ॥ ३ ॥

ढाल ११०-मी ॥ नमो नमो अरणक महा मुनि ॥ ए देशी ॥ राजा राज्य करे तिहां, द्रुपद नामे रा

जानरे ॥ तेज प्रताप दिवस मणी, साचा जेहने सा
जनरे ॥ १ ॥ पुण्य थकी सुख संपजे, पुण्य वका
ससारोरे ॥ पुण्य करो तुमे प्राणीया, जीम पामो भ
व पारोरे ॥ पु० ॥ २ ॥ सीयल गुणे सीता सति, चु
लणी तस पटराणीरे ॥ रुपे रंभा सारखी, बोले को
कील वाणीरे ॥ पु० ॥ ३ ॥ तस कुखे आवी अवत
री, सुभ वेला अध रातोरे ॥ जोग सखर भलो चद्र
मा, माता हरख न मातोरे ॥ पु० ॥ ४ ॥ पुरे मासे दि
न भले. राणीए जाइ बेटिरे ॥ रुप अनोपम मनो
हरु, गुणमणी माणीक पेटीरे ॥ पु० ॥ ५ ॥ मा
त पीता हरखीत थया, द्रोपदी दीधुं नामरे ॥ दिन
दिन वाधे नृप सुता, चपक जिम गीरी ठामरे ॥
॥ पु० ॥ ६ ॥ चंपक वरणी सुंदरी, दिपे अधीके वा
नरे ॥ गंगा गोरी अवतरी, रंभाने अनुमानरे ॥
॥ पु० ॥ ७ ॥ चंद्रमुखी, मृगलोचनी, राज हंस ग
ति चालेरे ॥ राजकुमर ढुलती रमे, मातपिता जन
पालेरे ॥ पु० ॥ ८ ॥ चोसठ महिलानी कला, भणी
गुणी चतुराइरे ॥ तप किधा जनमंतरे, तिण नख शी
ख अधीकाइरे ॥ पु० ॥ ९ ॥ एक दिन राणी मनर
ली, कुमरीने शिणगारीरे ॥ भूपण पहीराव्यां भला, ज
नमन मोहन गारीरे ॥ पु ॥ १० ॥ सखीय साहेली
परवरी, रमझम करती रंगेरे ॥ करी जुहार पिता भ
णी, बेठी उछरंगरे ॥ पु० ॥ ११ ॥ नृप दिठी नीज

अंगना, रुपे रती गुणखाणीरे ॥ नणे ते जाणी ना रती. अमृत वाणी सुहाणीरे ॥ पु० ॥ १२ ॥ राजा मनमांही चिंतवे, केहने ए परणावुंरे ॥ सरीखे सरीखो जो मीले, तो चिहुंमे जस पावुरे ॥ पु० ॥ १३ ॥ कुल आचार सुघर नलो, सासु सुसरो साररे ॥ घर लख मी किर्ती घणी, सुलक्षण वर शीरदाररे ॥ पु० ॥ १४॥ एतला गुण जोइ करी, बेटि दिजे बापरे ॥ पाछल नाग्य लिख्यो लहे, लोकनको सतापरे ॥ पु०॥१५॥ जाउ पुत्री सुखमां रहो, चिंता को मति करीशरे ॥ परणावीश मन मानीयो, जे जग मोटो इशरे ॥ पु० ॥ १६ ॥ एकसो दसमी ढालमें, पूछ्या जाण सुजाणरे ॥ गुणसागर कहे पुण्यथी, चढशे वात.प्रमाणरे ॥ पु० ॥ १७ ॥

दुहा ॥ वलि पूछ्या वरू नागीया, गढ गंजणहि चा ल ॥ एहवा जसु पासे रहे, कोइ न करे टंकाल ॥१॥ सयंवरा मंडप रंगसुं, मांड्यो अधिक मंडाण ॥ कुमरी लाडकी द्रोपदी, वांछा चढे प्रमाण ॥२॥ चोकस वात वणाइने, जोशी तुरत तेडाय ॥ मास लगन शुन दिन घडी, जोवो जोतिप राय ॥ ३ ॥ जोशी जोयो जुग तिसुं, पोष मास शुदि त्रीज ॥ गोधुलिक चोखो अ छे, वरस मांहि एहिज ॥ ४ ॥ सुणी राजा मन रंजी यो, जोशीने दे दान ॥ कुसम माला घाली गले, दि धो आदरमाम ॥ ५ ॥ आप नूप परधान शुं, बेठा करे विचार ॥ सना विच सिंहासने, पासे सहु परिवार ॥६॥

ढाल १११ मी ॥ विनीपण वात विच्यारो एह ॥ ए देशी ॥ सोनांनी गीडका नलिरे, कागल रंग रंगे ल ॥ मन्त्रिसर लिखजो नलोरे, रखे करो कांइ ढिलरे॥ ॥१॥ मानय मानो नृपति आण॥ स्वामि जगती सुख पामशोरे, लहस्यो कोड कल्याणरे ॥ मा० ॥ ए आंक णी ॥ मंत्रिसर कागल लिस्योरे, बहु घम नंज उप मान ॥ अक्षर लिखिया परवमारे, वांचत हुइ आसा नेरे ॥ मा० ॥२॥ दूत तेडावी राजवीरे, कागद दिधो हाथ ॥ प्रथम तुं जाजे द्वारकारे, जिहां राजा हरी ना थेरे ॥ मा० ॥ ३ ॥ पग ऊटकी पगे लागजेरे, श्रीप तिने कहेजे जुहार ॥ कागल देइ विनवेरे, हरखीत हो य मुरारेरे ॥ मा० ॥ ४ ॥ समुद्रविजे नृप सारीखारे, नमीजे दसे दसार ॥ अतुलिबल बलन्नद्रजीरे, केहे जे तास जुहाररे ॥ मा० ॥६॥ राज पधारो हित धरी रे, मतकरो ढिल लिगार ॥ द्रुपद सुता वे द्रोपदिरे, वि वाहनो अधीकाररे ॥ मा० ॥ ६ ॥ इम कही दूत चा लियोरे, हय गय रथ नर वृंद ॥ अनुक्रमें आयो द्वा रीकांरे, जिहां वे नृप मुकुंदरे॥ मा० ॥७॥ बाग विचे ऊरो दियोरे, नोजन करी बहु न्नात ॥ वागो सखर वणाइयोरे, सुदर तनु शोनंतरे ॥ मा० ॥८॥ लायक पायक परीवर्योरे, आडंबर करी दूत, राजसन्ना ते आवियोरे. वेठा नर रजपूतरे ॥ मा० ॥९॥ पगे ला गी कागद दियोरे, मुख वचन गुन्न वाण ॥ कुशल

खेम पूगी वलिरे, राजेसर कल्याणरे ॥ मा० ॥ १० ॥ मधुसुदन मन हरखियोरे, वांची कागल तेह ॥ कंपिलपुर जावा नणीरे, जाग्यो अधीक सनेह ॥ मा० ॥११॥ सुणजो सहुको यादवारे, सुणजो दसे दसार ॥ सोल सहस नूपति सुणोरे, करज्यो एक विच्यारेरे ॥ मा० ॥ १२ ॥ मान्यो वचन सहु मिलिरे, श्रीपति नो हितकार ॥ आदरशुं नोजन दियोरे, दूतने कृष्ण मुरारेरे ॥ मा० ॥ १३ ॥ कृष्ण सीख ले चालियोरे, दूत प्रमोद अपार ॥ बाग मांहि जिहां उतरयोरे, करी सजाइ साररे ॥ मा० ॥ १४ ॥ कटक शुनट साथे घणारे, चाल्यो तिहांथी दूत ॥ मारग आवे जो वतोरे, जिहां अचरिज अदनूतरे ॥ मा० ॥ १५ ॥ गाम नगरपुर लांघतोरे, करतो विचे मुकाम ॥ आनंद सेति आवियोरे, जीहां कंपिलपुर गामरे ॥ मा० ॥ ॥ १६ ॥ सूरज उगे आवियोरे, दूत ते राजदुवार ॥ सना मिलि सहुको जुडयारे, किधो जुगति जुहाररे ॥ मा० ॥ १७ ॥ दूत कहे करजोडनेरे, मानी वात मुरार ॥ नाग्य वडो ठे राउलोरे, होसे जय जय काररे ॥ मा० ॥ १८ ॥ सहुको रलियायत थयारे, चढशे वात प्रमाण ॥ इग्यार सोमी ढालमेरे, होसे कोड कल्याणरे ॥ मा० ॥ १९ ॥

दुहा ॥ निसुणी दूत वचनथी, अति हरख्यो राजान ॥ इण कारजथी माहरोरे, होशे जस परधान ॥

॥ १ ॥ सनमान्यो ते दूतने, राजा अधिक सनेह ॥ आपी पाछी आगन्या, दूत गयो निज गेह ॥ २ ॥

ढाल ११२ मी ॥ लाछल दे मात मलार ॥ ए देशी ॥ हिवे द्रुपद नामे राय, दूजो दूत बोलाय ॥ आज हो वात प्रकाशे निज निज मन तणी ए ॥ हथीणापुर तुं जाय, जिहां वसे पंडुराय ॥ आज हो पांच पुत्रशुं सुख लीला घणीजी ॥ १ ॥ युद्धिष्ठर जेष्ठी जाण, भीमसेन बीजो वखाण ॥ आज हो अरजुन त्रीजो नंदन तेहनेजी ॥ नकुल चोथो सोय, सहदेव पांचमो जोय, आज हो माहोमांहे प्रीती अधिकी जेहनेजी ॥ २ ॥ वली तस राजमझार, दुर्योधन हितकार ॥ आज हो गांगेय विदुर आदी ते सवेजी ॥ सकल वडा वड वीर, तेहने कहे जे धीर, आज हो कृष्ण परे जइ सहुने विनवेजी ॥ ३ ॥ दूत हथीणापुर आय, मिलि विनवीया राय ॥ आज हो वेगे पधारो तेडो तुम भणीजी ॥ दूत प्रत्ये देइ मान, वश्य सरव राजान ॥ आ० ॥ केसरीये वाधे करी शोभा घणीजी ॥ ४ ॥ तदनंतर वलि राय, त्रीजो दूत बोलाय ॥ आज हो चपापुर नगरी जाजे तुं सहीजी ॥ करण तिहां राजान, दिपे करण समान ॥ आ० ॥ अंग नराधीप भणी केहेजे वहीजी ॥ ५ ॥ शल्य अने नंदी राय, आदे सहु समुदाय ॥ आ० ॥ वेगेरे पधारो राय मया करीजी ॥ ते पिण सांभलि वाय, देइ निशाणे घाय ॥ आ० ॥

कंपीलपुर जावा उछरंग मन धरीजी ॥ ६ ॥ हिवे चो थो दूत चलाय, हियडे हरख न माय ॥ आ० ॥ वेगे मनावो सोयंपुर पतिजी, दमगोष सुत शीसुपाल ॥ पांचसें भाइ रसाल, आज हो शिस नमावी कीधी विनतीजी ॥ ७ ॥ पांचमो दूत पठाय, हथीशिस न गरे आय ॥ आज हो दमदत्त राजा राज करे जी हांजी ॥ विनवीयो जइ राय, द्रुपद वचन सुणाय ॥ आ० ॥ वेगे पधारो मन हरखे तिहांजी ॥ ८ ॥ हिवे छठो दूत तेडाय, द्रुपदराय बोलाय, आज हो मथुरा नगरी भणी मोतो मोकलेजी ॥ श्रीधर नामे राय, वे ठोडे सुखदाय, आज हो लेख वांचीने कहे आव्या भलेजी ॥ ९ ॥ सातमो दूत सुण वाण, करे हुकम प्रमाण ॥ आ० ॥ आणंदे राजग्रहपुर आवीयोजी ॥ सहदेव नामे राय ॥ प्रणमी तेहना पाय ॥ आ० ॥ स्वामी वचन सहु संभलावीयोजी ॥ १० ॥ तोते रा य बोलाय, आठमो दूत चलाय ॥ आ० ॥ कुंभणपुर नगरी रायरुपी प्रतेजी ॥ बोले मधुरी वाण, करजे जइने जाण ॥ आ० ॥ वेलो तुं वलजे करजे मुझ फ त्तेजी ॥ ११ ॥ नवमा दूत शुं वात, जातुं नगर वैरा ट ॥ आ० ॥ राय वैराटने जइ एम भांखजेजी ॥ सत भाइशुं आज ॥ विनती करी महाराज ॥ आ० ॥ रा य कीचकने हेत बहु दाखजेजी ॥ १२ ॥ राय पुत्री गुण गेह, परणे अधिक सनेह ॥ आ० ॥ वेगे पधारो

नृपती एम कह्योजी ॥ तेणे तिमज किध, आगन्या पाळी दिध ॥ आ० ॥ सांभली राय सुख अधिको ल ह्योजी ॥ १३ ॥ नव देश नोतरया राय, दसमो दूत चलाय ॥ आ० ॥ द्रुपद राजानी निज खांते करीजी ॥ जाजे देसादेश, लघु वडा नरेश ॥ आ० ॥ वात प्र कासे शिघ्र हेत धरीजी ॥ १४ ॥ हिवे सकल राजान सांभली द्रुपद वाण ॥ आ०॥ कंपीलपुर आवण अति उमह्याजी ॥ ढाल वारोत्तरसोमि एह, सुणता पामे नेह ॥ आ०॥ सूरी गुणसागर साजन सुख लह्याजी ॥१५॥

दुहा ॥ सभा सुधरमी कृष्णजी, बेठा बलभद्र पा स ॥ कोष्टिक जोशी तेडीने, पूछे मुहुरत तास ॥ १ ॥ तिणे दान तिथी अटकली, जोग जुगती गुण जाण ॥ सनमुख सारो चंद्रमा, राजन शास्त्र प्रमाण ॥ २ ॥ यादव भाद्रव मेह जिम, जूडीया छपनही कोड ॥ वा त सुणी विवाहनी, हरख्या होडा होड ॥ ३ ॥ कृष्ण कहे सहु सांभलो, मतकरो कोइ विलंब ॥ करी सजाइ आवज्यो, पर्जुन कुमर अरु संब ॥ ४ ॥ वात थापी ते उठिया, पोहता निज निज गेह ॥ घर जाइ मंजन करे, जिणथी दिपे देह ॥ ५ ॥

ढाल ११३ मी ॥ उठी वाडे छेल छबीलो ॥ ए देशी ॥ कीधा सोल श्रृंगार ॥ राजंदा ॥ द्वारावती नगरी धणीए ॥ आया रुखमणी पास ॥ रा० ॥ जिणसुं प्रित अछे घणी ए ॥ १ ॥ रुखमणी अधिक सनेह रा० ॥

राज मया करो मोभणी ए, बेसो आसन एह रा० हुं दाशी प्रभु तुम तणी ए ॥ २ ॥ रुखमणी कृष्ण न रिंद रा० ॥ आसन बेठां एकठां ए, रामत करवां रं ग रा० ॥ रतन जडीत भलां सोगठां ए ॥ ३ ॥ ले इ आरीसो हाथ रा० ॥ मुख द्युति देखे कानजी ए, रुखमणी राणी हेज रा० ॥ दिपे द्युति अभीरामजी ए ॥ ४ ॥ श्रीपती सामल मेह रा० ॥ रुखमणी वनी चुभामणी ए, आभरण रतण जडाव रा० ॥ इंद्र ध नुप दुती निरजणी ए ॥ ५ ॥ रुखमणी पूछे वात रा० ॥ राज चढाउ सांभल्या ए, भूपती मिलीया जो र रा० ॥ हय गय पायक खलभल्या ए ॥ ६ ॥ कृ ष्ण कहे सुण नार रा० ॥ कंपीलपुर अमे जाइसां ए, द्रुपद सुता विवाह रा० ॥ देखी तमासो आइसां ए ॥ ७ ॥ रुखमणी बोले बोल रा० ॥ प्रीतम गमन म ति करो ए, तुम विण घडीय छमास रा० ॥ वाले सर कुरुणा करो ए ॥ ८ ॥ वासर वरस विहाय रा० ॥ तुम विण साहीब किम रहुं ए, शोक तणो जंजा ल रा० ॥ सुख दुख किण आगल कहुं ए ॥ ९ ॥ कृष्ण कहे मे बोल रा० ॥ बोल्यो ते सही पालवो ए, उत्तम अविचल वाच रा० ॥ अपजस दूरे टाल वो ए ॥ १० ॥ रुखमणी भाखे एम ॥ रा० ॥ वालम वेला पधारजो ए, मत मूको विसार रा० ॥ मुने नाह संभारजो ए ॥ ११ ॥ रुखमणी दिधी शिख रा० ॥

कृष्ण सभामांहि आवीया ए, जुडीया यदु राजान रा० ॥ वंदीजन जस गाइया ए ॥ १२ ॥ शीणगारचा गजराज रा० ॥ मखमल झुल सुहामणी ए, घटा घुघरमाल रा० ॥ गळे कंचन मणी मेखला ए ॥ १३ ॥ शिस शिंदुर बणाय रा० ॥ काने बेउ चामर ढले ए, ऐरावण अवतार रा० ॥ ढलकति ढाल भली बनी ए ॥ १४ ॥ कृष्ण चढ्या गजराज रा० ॥ मस्तक छत्र रतने जरूयां ए, चामर विंजे च्यार रा० ॥ नगर लोक जोवा चरूया ए ॥ १५ ॥ चंचल चपल तुरंग रा० ॥ निला पिला हंसला ए, शिणगारच्या बहु मूल रा० ॥ आपरी न सके वांसलां ए ॥ १६ ॥ शतारथ चोसाल रा० ॥ नवल तुरंगम जोतरचा ए, चिहुं दिश घटा चार रा० ॥ जाणे गगनथी उतरथा ए ॥ १७ ॥ लायक पायक कोड रा० ॥ हरखित साथ उंचा घणा ए, सुंदर वेश बणाव रा० ॥ चाकर चतुर सुहामणा ए ॥ १८ ॥ चतुरंगी सेन्या साथ रा० ॥ द्वारामतिथी चालिया ए, वाग्या नवल नीशाण रा० ॥ असवारे असी झालीया ए ॥ १९ ॥ बलभद्र कृष्णजी जोड रा० ॥ दसे दसार पासे रह्या ए, सोल सहस राजान रा० ॥ सहुको आव्या गहगह्या ए ॥ २० ॥ संब परजून कुमार ॥ रा० ॥ केसरीए वाघे भला ए, मोटा मोती कांति ॥ रा० ॥ रुप कला गुण आगला ए ॥ २१ ॥ गणिका रुप रसाल ॥ रा० ॥ अनंगसेना

नामे वडी ए, लाखा गमे साथ ॥ रा० ॥ नारी चतुर रुपे वनी ए ॥ २२ ॥ दल वादल मंमाण ॥ रा० ॥ तंबु ताएया वागमे ए॥ डेरा हुवा नजीक ॥ रा० ॥ कृष्ण पधारया रंगमे ए॥२३॥ ऋद्धीवंत जसवंत॥ रा० ॥ वडीदार आगल वहे ए ॥ सोनागी शिरदार॥ रा० ॥ एकसो तेरमी ढाले गुणसागर कहे ए॥ २४ ॥

दुहा ॥ नोवत वाजे वागमें, सरणाइ बहु नात ॥ घडीयाले वाजे घडी, खलकखडी मन खांत ॥१॥ मुजरो करे दरवारथी, सहु कोइ नरराय ॥ शिख लेइ केशव तणी, निज निज थानक जाय ॥२॥ कृष्ण पधारया महीलमें, नवरंग जीहां चित ठाम ॥ सुख सेजा वेठा सुखे, पासे वेठा राम ॥ ३ ॥ वात करे दरवारनी, मारग कुच मुकाम ॥ वार कोस वांधी मजल, पग पग जल तृण ठाम ॥ ४ ॥ सूधो मारग अटकल्यो, वांकी टाली वाट ॥ कोमी सुनट इण कटकमें, घोटक कुंजर घाट ॥ ५ ॥ द्वारामति नगरी थकी, आया सघला लोक ॥ ऊंट वलद वेसरनरी, नार रस चिज थोक॥ ६ ॥ वासर पांचमुं कामबे, सुणोलोक धरी राग ॥ पान फूल मत तोमज्यो, ए मुज मोहन वाग ॥ ७ ॥

ढाल ११४ मी ॥ कुमखडानी देशी ॥ जांवु लिंवु आंबली, आंवा दामम द्राख ॥ रंगीला मोहना ॥ जंवीरा रायण नली, नवरंगी नवलाख ॥ रं० ॥ १ ॥ विजोरांनें करमदा, नारेली तरवुज ॥ रं० ॥ सुफ सखर

खारेकी खरी, खुरसाणी खरबुज ॥ रं० ॥ २ ॥ उंबर पिपर लिंबडां, लुबकूब बन्ह बोर ॥ रं० ॥ पान बिम्ही वारीं चली, बेठा मोर चकोर ॥ रं० ॥ ३ ॥ माली मालनी मनरली, पान फूल फल सार ॥ रं० ॥ वेचण आवे पोलमें, लेज्यो वचन विच्यार ॥ रं० ॥ ४ ॥ कुण आपणो कुण पारको, गुनही ने दे मार ॥ रं०॥ कुण आणठे आकरी, कोइ न लोपे कार ॥ रं० ॥५॥ धान मूल वेपारमें, मत को करो अन्याय ॥ रं० ॥ नितीरी पंथ चालतां, सहुको लागे पाय ॥ रं० ॥ ६ ॥ कौतुक जोवण कोतुकी, कुण कुण आव्या लोक ॥ रं०॥ शुरवीर के साहसी, हरखे आया लोक ॥ रं० ॥ ७ ॥ डेरां तिहांथी उपड्या, गुम्रीयां गुहीर निशाण ॥ रं०॥ कटक विकट चिहुं दिश वहे, धूल चढी असमान ॥ रं० ॥ ८ ॥ आगल किधां हाथीयां, मदमाता झूझार ॥ रं० ॥ घोडा जोव्या जोरमें, हिंसे सहस प्रकार ॥ रं० ॥ ९ ॥ नवरंग नेजा फरहरे, विचविच तुंब अवाज ॥ रं० ॥ धौंधौं धौं शह सुणी, चोर चरू जाय भांज ॥ रं० ॥ १० ॥ गाम नगर पुर पाटणे, श्रीपती करे मुकाम रं० ॥ मोटा छोटा राजवी, शेव करे शिरनाम ॥ रं० ॥११ ॥ दही दूध घृत भरी घमा, पान फूल फल भेद ॥ रं० ॥ धोरा धोला जोम्ले, आगल भेटे नेट ॥ रं० ॥ १२ ॥ जलथल वन गीरी लंघतां, आया देश पंचाल ॥ रं० ॥ जिणी दिशे गंगा वहे, जाणे वाल

गोपाल ॥ रं० १३ साल चणा गहुं घणां. उडद मसु
र अपार ॥ रं० ॥ गुंदरी घणी शेलडी, मणीका द्रा
ख अपार ॥ रं० ॥ १४ ॥ ठाम ठाम मेवा घणा, ध
रती जोवा लाग ॥ रं० ॥ पग पग पाणी मोकला, व
न वाडीना वाग ॥ रं० ॥ १५ ॥ देश शिम सरशी स
ही, देखी कृष्ण नरेश ॥ रं० ॥ ए मोटोछे राजवी, जे
हनो एहवो देश ॥ रं० ॥ १६ ॥ हरी भांखे भूती सुणो,
दिठा देश अनेक ॥ रं० ॥ पिण ए देश समो तुमे,
दीठो तुमे कोइ एक ॥ रं०॥१७॥ हिवे कंपिलपुरनो धणी,
द्रुपद नामे नृप ॥ रं० ॥ कृष्ण सामागम सांभली,
करे सजाइ अनूप ॥ रं० ॥ १८ ॥ तेव्हा मोटा वागी
या, ज्यारे मोटो भाग्य ॥ रं० ॥ वागा पहिरया नव
नवा, शिर सारंगी पाग ॥ रं० ॥ १९ ॥ सुंदर कुंजर
सज्ज किया, घोडा कचन साज ॥ रं०॥ घोडो वहिल रथ
जोतरया, मिलिया सुभट समाज ॥ रं० ॥२० ॥ एक
सो चउदमी ढालमे, गुणसागर सुखकार ॥ रं०॥ सुखिया
जिहां तिहां सुख लहे, आदरमान अपार ॥ रं०॥२१॥

दुहा ॥ घुरया ददामा ललक्कणे, वली वागी कर
ताल ॥ नवरंग नेजा फरहरे, चतुरंग सैन्य विसाल
॥ १ ॥ सोहव नारी कलस भरी, करे सोल शिणगार
॥ दरवाजे उभी रही, जान हुवे पेसार ॥ २ ॥ सबल
सजाइ सज्ज करी, चढीयो नगरी राय ॥ वंदिजन ज
य जयकरे, माधव सनमुख जाय ॥ ३ ॥ गजथी रा

जा उतरी, लागे श्रीपति पाय ॥ आदर देइ कृष्ण जी, मिलिया वेउ उछाय ॥ ४ ॥ हरी पूछे राजा सुणो, कुशल खेम आणंद॥राजपाट चडती कला, देश न केइ दंद॥५॥राय प्रसाद सदा कुशल, वली विशेषे आज ॥क्रिपा करी पधारीया, राज वधारी लाज ॥ ६ ॥

ढाल ११५ मी ॥ नणदलनी देशी ॥ नयन सयन सेति कहे, श्रीपति कटक मुकाम हो ॥ सुंदर ॥ राजा वे मिलिया तिहां, तरुवर सितल ठाम हो ॥ सु० ॥ १ ॥ नृपति भेट भली करे, द्रुपद नाम सुजाण हो ॥ सुं० ॥ साजन सगपण राखवा, कोनी करे कुरवाण हो ॥ सुं०॥ नृ०॥२॥ गजवाजी रथ पालखी, भेट करी मन कोड हो ॥ सु० ॥ पगे लागी विनती करे, लेता कोइ न खोड़ हो ॥ सुं० ॥ नृ० ॥ ३ ॥ श्रीपति राख्यो भेटणो, अवसर लागे मीठ हो ॥ सुं० ॥ द्रुपद कहे प्रभु ताहरो, दरशण दिठो निठ हो॥ सुं० ॥ नृ० ॥ ४ ॥ इण अवसर तिहां पुरी सरे, मिलिया नगरी ना लोक हो ॥ सुं० ॥ आवे कृष्ण नरेसरु, अचारिज जोवा जोग हो ॥ सुं० ॥ नृ० ५ ॥साथे कुणकुण वागीया, कुणकुण सिरदार हो ॥ सुं०॥जोवी भ्रमर कुमर तिहां, कुणकुण दसे दसार हो॥सुं०॥नृ०॥६॥सयमंता हाथीनी घटा, हयवर पार न कोइ हो ॥ सुं० ॥ रथ पायक वर पालखी, दिठा आणंद होय हो ॥सुं०॥नृ०॥ ॥७॥नगर महोछव नृप करे, आडंवर असमान हो ॥

सुं० ॥ जादव जोवे जग घटा, गणिका गावे गान हो ॥ सुं०॥नू०॥८॥ पूरण कलस शिर पदमनी, सनसुख आवे तेह हो ॥ सुं० ॥ पइसारो नृप मांभीउ, नक्की जुक्की धरी नहे हो ॥ सुं०॥नू०॥९ ॥ दरबार वार व णाइउ, सबल कियो छिटकाव हो ॥ सुं० ॥ पंच वर्ण फूल विखेरिया, बहु परिमल महकाव हो ॥सुं०॥ नू० ॥ १० ॥ विविध विनोद नीहालता, जोता अचरिज कोड हो ॥ सुं० ॥ ऊंचे नवलखा मालियां, आवी ए ह्यां मन कोड हो ॥ सुं०॥नू०॥११॥ हिवे कंपीलपुरनो धणी, नलीनली भेट अणाय हो॥ सुं० ॥कमलापति आगल धरे, जिण दिठे सुख थाय हो॥ सुं० ॥ नू० ॥ ॥ १२ ॥मेवा देश परदेशना, साकर काजू सार हो ॥ सुं० ॥ कला कुंद अति ऊजला, कोला पाक अपार हो ॥ सुं० ॥ नू० ॥ १३ ॥ साकर वाणी जतनसुं, पा णी भरी भरी कुंभ हो ॥ सुं० ॥ कुसमपुर फणस भ लि, सितल मधुर सुरभहो॥ सुं० ॥ नू० ॥ १४ ॥ एवा शितल जल पीए, मधुर मीठाइ खाय हो ॥ सुं० ॥ भोजन सरस कियां पछी, मारग श्रम मीट जाय हो ॥ सुं० ॥ नू० ॥ १५ ॥ पंडु राजा पिण आवियो, पांच पुत्र वली साथ हो ॥ सुं० ॥ विदुर करण गांगेयशुं, दुर्योधन नर नाथ हो ॥सु० ॥ नू० ॥ १६ ॥ राज ग्र ही नगरी धणी, श्री सहदेव नरिंद हो ॥ सुं० ॥ आडं करी आविया, मयमंत साथ गयंद हो ॥ सुं० ॥

॥ नृ० ॥ १७ ॥ चंपा नगरीनो धणी, कृष्ण महिपति सिंह हो ॥ सुं० ॥ सल्य नृप दलबल साहित, आयो अकल अबीह हो ॥ सुं० ॥ नृ० ॥ १८ ॥ गंधारादि नृपती, शकुनी नामे अति सुर हो ॥ सुं० ॥ कंपीलपुर आयो तुरत, गज घट घणे पंडुर हो ॥ सुं० ॥ नृ० ॥ १९ ॥ दमघोप सुत दलपती, जाणे बाल गोपाल हो ॥ सुं० ॥ नगरी चंदेरीनो धणी, आयो नृप शिशुपाल हो ॥ सुं० ॥ नृ० ॥ २० ॥ कुंमन नगरीनो राजीयो, रुकमी नृप कुल चंदहो ॥ सुं० ॥ वार न लाइ आवता, साथे शेवक ब्रंद हो ॥ सुं० ॥ नृ० ॥ २१ ॥ वयराट नगरिनो धणी, किचक नाम नरेश हो ॥ सुं० ॥ सो नाइशुं आवीयो, किधो नगर प्रवेश हो ॥ सुं० ॥ नृ०॥२२॥ मथुरा नगरी अधीपती, श्रीधर नाम नरिंद हो ॥ सुं० ॥ आयो मृगपती साहसी, मन धरतो आणंद हो ॥ सुं० ॥ नृ० ॥ २३ ॥ मालव देश तणो धणी, वयरीसाल नरेशहो ॥ सुं०॥ आयो धायो धसमशी, जिहांछे द्रुपद देश हो ॥ सु० ॥ २४ ॥ एम गामागर नगरथी, आया मोटा नृप हो ॥ सुं० ॥ कंपीलपुर डेरा दिया, दिपे तेज अनूप हो ॥ सुं० ॥ नृ० ॥ ॥ २५ ॥ द्रुपद महीपति आणीया, करी उछव पुरमांहीहो ॥ सुं० ॥ सहुने सरिखा राखीया, सज्ज थयो नगर अगाह हो ॥ सुं० ॥ नृ० ॥ २६ ॥ मोटा मंदिर मालीयां, धवल उंचा आवास हो ॥ सुं० ॥ नामांकित

हुता जिके, सहुने दिध विमास हो ॥ सुं० ॥ नृ० ॥ ॥ २७ ॥ जुडीया नृपती भलभला, हुता जे चउसाल हो ॥ सुं० ॥ द्रुपद ते संतोखीया, जिमाड्या सुविशाल हो ॥ सुं० ॥ नृ० ॥ २८ ॥ निज निज आवासे रह्या, सघला राजा जाण हो ॥ सुं० ॥ गित गान करे रंगशुं, पामे कोड कल्याण हो ॥ सुं० ॥ नृ० ॥२९॥ रामत राता राजवी, नाटक गित विनोद हो ॥ सु० ॥ सुख शेती बेठा सही, मन धरता प्रमोद ॥ सुं० ॥ नृ० ॥ ३० ॥ ढाल सो पन्नरमी भली, मिलिया राय सुजाण हो ॥ सुं० ॥ गुणसागर हिवे सांभलो, विवाह नो मंडाण हो ॥ सुं० ॥ नृ० ॥ ३१ ॥

दुहा ॥ द्रुपद राजा आपणा, तेरुया शेवक कोड ॥ सयंवरा मंडप मांडीयो, मनथी आलस छोड ॥ १ ॥ गगा जल निरमल वहे, ठाम मोकली जाण ॥ तास तिरघ रतिसमी, करी तिहां सखर मंभाण ॥ २ ॥ मंडप गायो मोकलो, कंचन मुक्ताफल रयण ॥ शोभा विवीध प्रकारनी, देखत आनंद नयन ॥ ३ ॥ फूल अगर सुहामणां, धुप घटी मेहकंत ॥ तोरणनी रचना रची, देखी जन हरखंत ॥ ४ ॥ लगन तणो दिन आवीयो, हेम सिंहासन राय ॥ बेठा सघला आयने, विविध शोभा लाय ॥ ५ ॥ सघला मांही शोभतो, राजा पंडु जोय ॥ पुत्र पांच महाबली, गंजी न सके कोय ॥ ६ ॥ हिवे मंजन करी द्रोपदी, देव जुहारण जा

य ॥ केसर चंदन कुसुमले, धुपदीप समुदाय ॥ ७ ॥ करी पूजा कामदेवनी, मांखे द्रोपदी नार ॥ देव दया करी मुझने, भलो देजो भरतार ॥ ८ ॥

ढाल ११६ मी ॥ अलबेलानी देशी ॥ नवयौवन रुपे रुयडीरे लाल, हरखीत वदन जमाय ॥ रायजादिरे ॥ करी तरुण पाछी वलीरे लाल, आवी जिहां नीज माय ॥ रा० ॥ १ ॥ सीलवंती भली द्रोपदीरे लाल ॥ ए आंकणी ॥ आभूषण अंग लुहणारे लाल, अरगजो अंग लगाय ॥ रा० ॥ कोरजमल पहिरावीयो रे लाल, केसर रंगी पाय ॥ रा० ॥ सी० ॥ २॥ वेणी दंड जमावनोरे ॥ ला० ॥ सोहे मूल अमूल ॥ रा० ॥ माथे सोहे राखडीरे ॥ ला० ॥ रतन जडीत शीश फूल ॥ रा० ॥ सी० ॥३॥ काने कुंडल झलकंतारे ॥ ला०॥ चंद सूरज अनुकार ॥ रा० ॥ कर कंकण वर विंछियारे ॥ ला०॥ नक वेसर शिणगार ॥ रा० ॥ सी० ॥४॥ नयन कमल दल सारिखारे ॥ ला० ॥ अंजन रेख बणाय ॥ रा० ॥ दस अंगुलिए मुद्रडीरे ॥ ला०॥ निलवट तिलक सोहाय ॥ रा० ॥ सी० ॥ ५ ॥ रंग रंगीला सोहतारे ॥ ला० ॥ उढण झीणा चिर ॥ रा० ॥ कर पग मांड्यां मांडणारे ॥ ला० ॥ कान राखी नखशिर ॥ रा०॥ सी० ॥ ६ ॥ जंघ कमल लता जीसारे ॥ ला० ॥ सोहे राजकुमार ॥ रा० ॥ गंगा गोरी सारखीरे ॥ ला० ॥ रति रंभा अवतार ॥ रा० ॥ सी० ॥ ७ ॥ घोट वाहिल आ

णो नाजिरे ॥ ला० ॥ घुघर माल वणाय ॥ रा० ॥ सखी साहेली झुलरीरे ॥ ला० ॥ लागी जननी पाय ॥ रा० ॥ सी० ॥ ८ ॥ मन मान्यो वर तुं लहिरे ॥ ला० ॥ जननी दिये आशिष ॥ रा० ॥ रथ बेठी आणंदसुंरे ॥ ला० ॥ तुठो मुझ जगदिश ॥ रा० ॥ सी० ॥ ९ ॥ नाइ साथे सारथीरे ॥ ला० ॥ शुभट लिया शिरदार ॥ रा० ॥ रथ रखवाली ते करेरे ॥ ला० ॥ रतन जतन अधीकार ॥ रा० ॥ सी० ॥ १० ॥ सावधान जोतां थकारे ॥ ला० ॥ कर झाली तरवार ॥ रा० ॥ कुशल खेमशुं आवीयारे ॥ ला० ॥ हरखी राजकुमार ॥ रा० ॥ सी० ॥ ११ ॥ मंडप मांहि पेसतारे ॥ ला० ॥ दिठा श्रीपति राम ॥ रा० ॥ बिजा पिण दिठा घणारे ॥ ला० ॥ सहुने करे प्ररणाम ॥ रा० ॥ सी० ॥ १२ ॥ चंपक पांडल मालतीरे ॥ ला० ॥ फूल दडो लेइ हाथ ॥ रा० ॥ परीमल बहुलो महमहेरे ॥ ला० ॥ सकल साहेली साथ ॥ रा० ॥ सी० ॥ १३ ॥ हाथे दरपण झालीयोरे ॥ ला० ॥ निर्मल दिसे रुप ॥ रा० ॥ मणी माणीक सुठे जड्योरे ॥ ला० ॥ तिण मांही देखे नुप ॥ रा० ॥ सी० ॥ १४ ॥ नाम ठाम कुल जातशुरे ॥ ला० ॥ सूरवीर उदार ॥ रा० ॥ मात तात बांधव सहीरे ॥ ला० ॥ राजऋद्धी भंडार ॥ रा० ॥ सी० ॥ १५ ॥ नापा जाणे जूजुइरे ॥ ला० ॥ दाशी चतुरसुजाण ॥ रा० ॥ कुमरी साथे संचरेरे ॥ ला० ॥ देखाडे राय राणो ॥

रा०॥ सी०॥ १६॥ चित्रधारणी शीखवेरे ॥ ला० ॥
ाती मती मंदाचार ॥ रा० ॥ गुणासागर सूरी ए कहीरे
ला०॥ ढाल सोळोत्तर सोमी सार ॥ रा०॥ सी०॥१७॥
दुहा ॥ सशी वयणी मृग लोयणी, रुदय कोमळ
ात ॥ कोकिल कंठी हंसगती, अमृत वचन सोहात
१ ॥ राजकुमरी राजी घणी, दिठा वहु राजान ॥
ंडप विच आणी हिवे, हाथणी जेम आलान ॥ २ ॥
ाणीयाणी मन उलखे, रुचंता बोले बोल ॥ एहवी
ाथे आछे, विनती करे नीटोल ॥ ३ ॥ एक नारी
पती घणां, सहुको देखणहार ॥ हिमकर देखी
रोवरे, विकस्ये कुमुद हजार ॥ ४ ॥
ढाल ११७ मी ॥ निंदरडी नाहो निवारीए ॥ ए दे
ी ॥ जिहां बेठाछे कृष्णजी, तिहां आवी हे सखी
ाजकुमारके ॥ आरीसो आगे धरी, देखके हे नला
ाज कुमारके ॥ १ ॥ सखीय कहे सुण स्वामिणी,
न थीर करीहे निज नयन निहालके ॥ जे मन माने
ाहरे, तेहने कंठेहे नाखे फूलानी मालके ॥ स० ॥
२॥ ए अवसर पाम्यो भलो, मत चूकेहे सखी हीए
ाच्यारके ॥ द्वारामती नगरी धणी, एलो सनमुख
ो वेठा कृष्ण मुरारके ॥ स० ॥ ३ ॥ सोलसहेस नृप
ाृन प्रते, जसु शेवाहे सारे करजोडके ॥ सोलासहस
ाणी घरे, मन मोहनहे सुदंर नही खोडके ॥ स०॥४॥
ान लंभनो राजीयो, नर सघलाहे माने जसुआण

के ॥ स० ॥ १४ ॥ हंस गमनी इम संचरे, हिवे ति
हांथीहे आणी उमंग संचके ॥ उलट घट मांही घणो,
हठ राणीहे देखी पांरुव पंचके ॥ स० ॥ १५ ॥ देश
वास दाशी कहे, रुप जोवन हे पांचे जोधारके ॥
वरमाला घाली गले, में वरीयाहे पच पांडव भरतार
के ॥ स० ॥ १६ ॥ जय जय शब्द हुवो तिहां, हरी
हरख्यो हे जादव राजानके ॥ डुपद नृप मन रंजीयो,
जस शोभा हे गुरु होशे जीहांनके ॥ स० ॥ १७ ॥
मगल नाद सुहामणा, शंख वाजे हो घणां ढोल नि
शानके ॥ सवरा मंडपथी चल्यां, कमलापति हे नृपती
राया राणके ॥ स० ॥१८॥ ढाल सतरे सोमी भली, गु
णसागर हे अधीक रसालके ॥ पुण्ये सहु वांछित फले,
जग मांहि हे होसे जस विसालके ॥ स० १९ ॥

दुहा ॥ पांचे पांडव द्रोपदी, रथ बेशी तिणवार
॥ भाइ साथे वागीया, आवी निज दरबार ॥ १ ॥
आरीम कारीम सहु किया, मंजन करी मन रंग ॥
चवंरि विच वेठा चतुर, पांचे पांरुव चग ॥ २ ॥ राज
कुमरी शिणगार करी, आणि सहियर साहि ॥ अमी
य सलुणे लोयणे, बेठि चोरी माहि ॥ ३ ॥

ढाल ११८ मी ॥ सोहलानी देशी ॥ सुहव सुहव
गावे सखरो सुहलोजी, सुणता श्रवण सुहाय ॥ सर
खी सरखी जोरुी एहनीजी, रोहिणी जिम द्विजराज ॥
सु०॥१॥ कुमर कुमर अमर रुपे रुयडाजी, पांचे पंडू

कुमार ॥ अपछर अपछर सरखी द्रोपदीजी, परणी प्रेम अपार ॥सु०॥२॥याचक याचक दिधी दक्षणाजी,सुजस थयो संसार ॥ अवसर अवसर दान सुहामणाजी, वुठो जिम जलधार ॥ सु०॥ ३ ॥ कींचित कीचित कामणी तिण समेजी, हरखाणी हरी हास ॥ सहियर सहियर दिठो न सांभल्योजी, पांच पुरुषनो वास ॥ सु०॥४॥ माननी माननी हिवे मन मोकलेजी, वरसे वर दस बार ॥ द्रुपदा द्रुपदा जो ए आदर्याजी, वर कुण नी वारण हार ॥ सु० ॥ ५ ॥ उत्तर उत्तर आपे महिला माननीजी, गरव मकरे हे गिमार ॥ मुनिवर मुनिवर चारण गुण कह्याजी, सतियामें शीरदार ॥ सु० ॥ ६ ॥ उत्तम उत्तम पात्र संतोखीयाजी, दिधां अढलक दान ॥ सुकृत सुकृत कीधा एणे कुमरीजी, तिण पामी जग मान ॥ सु० ॥७॥ द्रुपद द्रुपद नृपति कनकनाजी, कर मुकावण कोड ॥ माणीक माणीक मणि मोति घणांजी, हय गय रथ अठ जोड ॥ सु० ॥ ८॥ दासी दासी जूजूआ देशनीजी, सखरो वेश वणाय ॥ कोकिल कोकिल सरखी बोलणीजी, जाणे मनरो भाव ॥ सु० ॥ ॥ ९ ॥ आभ्रण आभ्रण मुगट जडावराजी, कुंडल मोती माल ॥ वाटकि वाटकि नव नव काटकीजी, हाटकना पण थाल ॥ सु० ॥ १० ॥ दिविय दिविय पाटण निपनीजी जारी सखरे घाट ॥ चामर चामर छत्र सुहामणाजी, भद्रासन जल माट ॥ सु० ॥११॥ पंच रंग

पंच रंग ढाल्या ढोलियाजी, पगे पुतली जाण ॥ कोमल कोमल माखण सारखी सेजमीजी, रेशम वणियो वाण ॥सु० ॥ १२॥ पटकुल पटकुल हय रथ हाथीजी, उशीसां अभीराम ॥ भलभला भलभला वागा आपीयाजी, दिधा वली आठ गाम ॥ सु०॥१३॥ आप्या आप्या हय रथ हाथीयाजी, संतोष्या सहु तेम ॥ एकसो एकसो अढारमी ढालेजी, गुणसागर कहे एम ॥ सु० ॥१४॥

दुहा ॥ हिवे द्रोपदी पंचालीपती, धरणीधरने भेट ॥ आपे गजवाजी प्रमुख, दिधे जस होय नेट ॥ १ ॥ जे पिण बिजा राजवी, आया हुता साथ ॥ तेने सहु संतोपिया, मोकल करी निज हाथ ॥ २ ॥ कमलापति सेना सजी, दिध ददामां चोट ॥ राजा सहुको चालिया, कोइ नहि मन खोट ॥ ३ ॥ तिण वेला आडो फिरी, आयो बहु परीवार ॥ पांडू महिपति विनवे, सुणजो कृष्ण मुरार ॥ ४ ॥ कृपा करो मुज उपरे, मानो वचन विमास ॥ हथीणापुर पावन करो, मुझ मन पूरो आश ॥ ५ ॥ संघालि मानी कृष्णजी, प्रिती भली ते वात ॥ बिजे पिण मिलि करी, कीधो हरी संघात ॥६॥

ढाल ११९ मी ॥ रसियानी देशी ॥ कटक ते कंपीलपुरथी चालियो, डेरा बाहिर दीध सलुणी ॥ धजस ददामा हो वाजे अति भला, द्रुपद नृप जस लीध ॥ स० ॥ १ ॥ चुलणी राणी हो कुमरी भणी कहे, वेटी सुण एक शीख ॥ स० ॥ सासु सुसरानो माने क

ह्यो, विण कहे मतभरे शिख ॥ स० ॥ चु० ॥ २ ॥ प्रि
य पहिली माचाथी ऊठजे. आलस नाणे अंग ॥ स०
॥ धणीय जिमाडी हो तुं जिमजे पछी, मतकरे निच प्र
संग ॥ स० ॥ चु० ॥ ३ ॥ आख्या विहुमां जिम अत
र किस्यो, तिम पांचे भरतार ॥ स० ॥ सरीखा गि
णजे मत अंतर करे, तुझ सरज्या किरतार ॥ स०
॥ चु० ॥ ४ ॥ अरीहंत देव सुगुरु शेवा करे, जि
न धर्म धरजे चित ॥ सु० ॥ मुखथी मत भांखे वच
न अजाणतो, जाप जपे धरी प्रित ॥ स० ॥ चु० ॥
॥ ५ ॥ निंदा मत करे हो वेटी पारकी, मतकरे मन अ
भीमान ॥ स० ॥ अवगुण ढांकी गुण प्रगट करे,
तप करी मतकरे निदान ॥ स० ॥ चु० ॥ ६ ॥ समकी
त सुधो मनमांही धरे, जिम पामीश शिववास ॥
॥ स० ॥ निज परजन सेती मिलती रहे, बोले व
चन विमास ॥ स० ॥ चु० ॥ ७ ॥ सुधा साध भ
णी आदर करे, देजे अढलक दान ॥ स० ॥ असन
पान खादम सादिम भला, सुख पामी असमान ॥
॥ स० ॥ चु० ॥८॥ कोह्यो कांचो कडुओ आकरो, नि
रस लुखो अन्न ॥ स०॥ पड्यो रड्यो पसुपंखी चाखीयो,
मत देजे कोइ वन्न ॥ स०॥ चु०॥९॥ रात उघाडो र
ह्यो जे सुखडो, विणठो नावे काम ॥ स० ॥ स्वादहिन
मत देजो साधुने, जोजे ठाम कुठाम ॥ स०॥ चु०॥१०॥
पाती भेद मतकरजे जिमण समे, मरम मत बोले मूळ

॥स०॥ अंतराय मत करजे धर्मनी, राजमत देखे नूर
॥ स०॥ चु०॥११॥ मात तात निज भ्रात सभारजे, म
करे चित्त अदोह ॥ स०॥ कुशल खेमरो कागल मोक
ले, धरजो प्रियसु मोह ॥ स० ॥ चु० ॥ १२ ॥ रुदन
करे नृप कुमरी चालता, आंसु ल्हे मात ॥ स० ॥
बेटी गुण पेटी तुं माहरी, संभारीस दीन रात ॥ स०
चु० ॥ १३ ॥ मिलणो सुख विछडणो दोहिलो, मात
पिता करे विलाप ॥ स० ॥ फिर मिलणो जो पुण्य घ
णो हुवे, तो दुणो सुख थाय ॥ स० ॥ चु० ॥ १४ ॥
जिम तिम शिख करी माता कहे, बेटी थाय असूर
स० ॥ भाइ साथे आवे ताहरे, हथीणापुरछे दूर ॥
स० ॥ चु० ॥ १५ ॥ माताने पगे लागी द्रोपदी, रथे
बेठी तिणवार ॥ स० ॥ तिहांथी राणी आमण दुमणी,
आवे महील मझार ॥ स० ॥ चु० ॥ १६ ॥ नयन
झरे जिम जल धर उमीयो, पामे रती न लिगार
॥ स०॥ खिण खिण माही बेटी सांभरे, विरह बुरो सं
सार ॥ स० ॥ चु० ॥ १७ ॥ दाशी दास मिलीने विन
वे, राणी सोग नीवार ॥ स० ॥ कुमरी वेगे तुम घर
आवशे, दिन दस जिम तिम सार ॥ स० ॥ चु० ॥
॥१८॥ राणी ठाम करी मन आपणो, बइठी पिण दि
लगीर ॥ स० ॥ सा माजी माजी कहती मुझ द्रोपदी,
मात कहे कुण वीर ॥ स० चु० ॥ १९ ॥ हथीणापुर
भणी सहु राजवी, चाल्या सेन्या लेय ॥ स० ॥ पाय

लागी द्रोपदा हिवे कृष्णने, कुमरीने शिख देय ॥ स० ॥ चु० ॥ २० ॥ पंडु महीपती सेती हली मिली, सगप ए राखण सच ॥ स० ॥ द्रुपद राजा निज पुर आवीयो, मिलीने पांडव पंच ॥ स० ॥ चु० ॥ २१ ॥ गजपुर नगर सिणगारयो चिहु दिशे, मिलीया लोक अपार ॥ स० ॥ उभी टोले टोले गोरडी, गावे मंगल च्यार ॥ स० ॥ चु० ॥ २२ ॥ उछव मोहछव विविध प्रकारशुं, जोतां अचरिज कोड ॥ स० ॥ अनुक्रमे आया निज महीलमां, पंडू सूतनी जोड ॥ स० ॥ चु० ॥ २३ ॥ पंडू नृपती सहु राजा तणी, संतोखी सुखदाय ॥ स० ॥ करी विविध प्रकारे पेरामणी, निज कुल शोभ चडाय ॥ स० ॥ चु० ॥ २४ ॥ विनय करी पगे लागी द्रोपदी, सहुने दिधी शीख ॥ स० ॥ नृपति पोहोता निज निज स्थानके, मारग खाता इख ॥ स० ॥ चु० ॥ ॥ २५ ॥ कुंति मन हरखीत हुइ घणी, लागी वहुअर पाय ॥ स० ॥ पुत्रवंति होजे तुं वहु, ए आशीष सोहाय ॥ स० ॥ चु०॥२६॥ नीत नीत नवला रंग वधामणां, नव नव मंगल माल॥ स०॥ गुणसागर सूरि पुण्ये लह्यो, एनुणविस सोमी ढाल ॥ स० ॥ चु० ॥ २७ ॥

चोपइ ॥ खंड खंड रस छे नव नवो, सुणतां मीठां साकर जेवो ॥ श्री हरी वंश चारित्र जय जयो, छठो खंड ए पूरण थयो ॥ १ ॥ इति श्री साळसागरे श्री हुरीवंश चरित्र वर्णनो नाम शष्ठमो खंड समाप्तः ॥

अथ ढाळसागर श्री हरिवंस चरित्र सातमो खंड प्रारंभः

दुहा ॥ साधु नमु सुरतरु समा, वंछित फल दातार ॥ अव सप्तम अधीकारनो, भविक सुणो विस्तार ॥ १ ॥ नभो श्री मणिचूडानि, खेचर कियो अपहार ॥ अर्जुन हुवो वाहरु, वेहुडावि तिणवार ॥ २ ॥ शुरवीर गुण आगलो, पारथ सबल प्रताप ॥ देखी पांडु प्रथविपती, विस्मय पाम्यो आप ॥ ३ ॥ धर्म नंद धरमातमा, नृप पदवि थापंत ॥ सकल धरानि साहिवी, आपण पे पामत ॥ ४ ॥ अंबर जिम दिनकर करी, ध्वज करी देवल जेम ॥ युद्धिष्ठिर राजा करी, प्रथवी शोभी तेम ॥ ५ ॥

ढाल १२० मी ॥ हमीरानी देशी ॥ प्रथवी रसवंती खरी, तरुवर अधीक फलतारे ॥ दूध घणो सुरभी तणो, मांग्या घन वरसंतारे ॥ १ ॥ धरम राजा जग जाण ए ॥ ए आंकणी ॥ लाभ घणो व्यापारमें, चाकर वहुला आसोरे ॥ भीक्षुकने भीक्षा घणी, न रहे कोइ निरासोरे ॥ ध० ॥ २ ॥ पुत्रवंती तो कामनी, सुहागण सोभागोरे ॥ भोर भलाइ आदरे, घर घर दिजे तागोरे ॥ ध० ॥ ३ ॥ वेटा माने वापने, पूजे मायना पायोरे ॥ गुरुने माने चेलका, वरते निरतो न्यायोरे ॥ ध० ॥ ४ ॥ इति अनिति नको तिहां, अवर न को विपरितोरे ॥ वहु भगती सासु तणी, सोक्या मांहि प्रीतोरे ॥ ध० ॥ ५ ॥ पाप हणवे हिंसका, झुठ शिलने

भंगेरे ॥ चित्तह हरवे चोरटा, परीग्रह पुण्य प्रसगेरे ॥ ध० ॥ ६ ॥ क्रोधी कापण कर्मने, मानी मोडण मोहोरे ॥ माया शीवने साधवे, लोभी गुण संदोहोरे ॥ ॥ ध० ॥ ७ ॥ वृद्धी करवा देवले, के मुनीवर के हाथेरे ॥ दंड देखाइ ठे सहि, दंड न लोगा साथोरे ॥ ध० ॥ ८ ॥ गात्र पात्र तारुणो, अवर न ताडन नीडोरे ॥ बंधन वेणी कंचुकी, अवर न बंधन पिडोरे ॥ ध० ॥ ॥ ९ ॥ थाक चडे करतां क्रिया, अवर न थाक प्रकाशेरे ॥ कलह तो करणी तणो, अवर नहि कलिकाशेरे ॥ ध० ॥ १० ॥ सुक्रतनो लंपट पणो, अवर न लंपट कोइरे ॥ अशुभ तणो अणजाणवो, अवर अजाण मत जोइरे ॥ ध० ॥ ११ ॥ पासो तो दिसे घरे, अवर न कोइ पासेरे ॥ सुखम आरो आवियो, सर्व विधी सुखवासेरे ॥ ध० ॥ १२ ॥ भीम आदे चारे चढ्या, हयवर गयवर गाजोरे ॥ पायक परिग्रह सामटो, दुर्जन पाया लाजोरे ॥ ध० ॥१३॥ आण मनावी आपणी, असमान मावण नामोरे ॥ प्रथवी पांडव रायनी, दिन दिन प्रते अभिरामोरे ॥ ध० ॥१४॥ धन कण कंचन कोसजी, हिरा लाल प्रवालोरे ॥ मणी माणीक मोती घणा, मेल्यो माल रसालोरे ॥ ध० ॥१५॥ एहिहेते विचारवे, वहिन सुभद्रा नामोरे ॥ परणावी अतीनेहथी, अर्जुनने अभीरामोरे ॥ ध० ॥१६॥ बंधु समा समा, पायक समा सकाजोरे ॥ मित्र समा भाइ

सभा, सुखमे पाले राजोरे ॥ ध० ॥ १७ ॥ विद्याधर
मणीचूडजी, पाले मित्राचारोरे ॥ सभा सुधर्मी सार
खी, सभा समरावे सारोरे ॥ ध० १८ ॥ मणी थंभ
सुहामणा, सोवन भांतिसु चंगोरे ॥ चंद्रोदय चतुरा
इए, दिसे सोह सुचंगोरे ॥ ध० ॥ १९ ॥ विविध प्र
कारे पूतली, विविध भातीको कामोरे ॥ विविध प्रका
रे कोरणी, विविध भाति चित्रामोरे ॥ ध० ॥ २० ॥
सिंघासण मांड्यो भलो, बेसाडी तिहां रायोरे ॥ पूजी
प्रणमी भावशुं, खेचर उरण थायोरे ॥ ध० ॥ २१ ॥
हरी हलधर बोलाविया, मोठा दसहि दसारोरे ॥ द्रु
पद प्रमुख बहु राजीया, आया भूप उदारोरे ॥ ध०
॥ २२ ॥ बेठा उचे आसणे, राजा राजकुमारोरे ॥ रूप
अने प्रतीरूपशुं, पामे शोभा अपारोरे ॥ ध०॥ २३ ॥
एतले तेडो आवीयो, दुर्योधन भूपालोरे ॥ जादव पां
डव पेखीया, बेठा झाक झमालोरे ॥ ध० ॥ २४ ॥
आवे वसन संबाहतो, मणी आंगणे जल जाणोरे ॥
कुद्यो स्फाटिक उपरे, अंबरनि मति आणोरे ॥ ध०
॥ २५ ॥ भडक मारयो भीतसुं, प्रतिरुपामें जायोरे ॥
करे जुहार युक्तिशु हांशी हिये न समायोरे ॥ ध०
॥ २६ ॥ दुर्योधन खिज्यो घणुं, पांडव कटक विचारिरे ॥
रिस वीसारी सहु भणि, मिलिया बांह पसारीरे ॥ ध०
॥ २७ ॥ उछव कीधो अति घणो, विलस्यां बहुलां वि
तोरे ॥ रंग वध्यो राजा भणी, धन दिन एह पवितोरे

॥ ध० ॥२८ ॥ हरि हलधर आदे करी, साजन मांहि सनेहोरे ॥ दुर्योधन सनमानीयो, पोहता निज निज गेहोरे ॥ ध० ॥२९ ॥ बीसोत्तर सोमी ढालमें, भ्रिती त णो अधीकारोरे ॥ श्री गुणसागर सूरिजी, धर्म सदा जयकारोरे ॥ ध० ॥ ३० ॥

दुहा ॥ दुर्योधन कहे तातसुं, मुख मिठा चित्त कूड ॥ पांडव कपटी परगडा, रण कायर घर सूर ॥ ॥ १ ॥ यादव जोर विचारवे, मनमे आणी गुमान ॥ मुजसु हशिया हांसते, साले साल समान ॥ २ ॥ जिणशुं तेण प्रकारशुं, को करी दाय उपाव ॥ जोमी ठगावुं पांडवा, तो हुं राया राव ॥ ३ ॥ इम विचार करतां थका, जाइ सघला ताम ॥ एहवे तिहां कण आवीयो, मामो शकुनी नाम ॥ ४ ॥

ढाल १२१ मी ॥ हुं तुम साथे न बोलुं ऋषभजी ॥ ए देशी ॥ ताम दुर्योधन राय बोलावे, मामाने हेत आणीजी ॥ मुख नीसासो मूकी नांखे, वैरी तणो व ल जाणीजी ॥ १ ॥ मननो मेलो अधिक कुशेलो, कौ रव कपटी पूरोजी ॥ धन जन वाह तणे बले बलीयो, ठलबल करवा सूरोजी ॥ म० ॥ २ ॥ पाडव सन्नानी शोन्ना देखी, मुज हुवे दुःख अपारोजी ॥ वली पांडव ने पंचाली हंशीया, कियो अंध तणो कुमारोजी ॥ म० ॥ ३ ॥ शकुनी कहे पहेलुं नवी किधु, वधती वैरी वेलजी ॥ मूल थकी जो छेदत एहने, तो पामत जस

केलजी ॥ म० ॥ ४ ॥ हिवे पांडव साथे नवी चाले, एहनो सबलो साथजी ॥ भाइ पंच मांहोमांही संचे, हेत घणो हरी नाथजी ॥ म०॥५॥ एक उपाव अछे मुज आगल, देव पासा सुख दायजी ॥ देश ठंभावुं जीसि कपटे, जुवा खेलावी रायजी ॥ म० ॥ ६ ॥ इम विच्यार करी पिताने, हरख्यो मन राजानोजी ॥ शकुनी भेद पासा नो जाणे, माने माहरुं मानोजी ॥ म० ॥ ७ ॥ पांडव ने तुमे आंही तेडावो, विदुर मोकली तातजी ॥ सभा रचीने द्यूत रमाडुं, चाले वन विख्यातजी ॥ म० ॥८॥ सभा करावी द्रव्य लगावी, शोभानो नही पारजी ॥ पधरावी सिंघासण मांड्यो, उछव विविध प्रकारजी ॥ ॥ म० ॥ ९ ॥ तेभी हरी हलधरने पांडव, तेड्या दशे दसारजी ॥ बहु सनमानी पांडव साथे, पोखे प्रेम अपारजी ॥ म० ॥ १० ॥ हुवो प्रात सभासां आयो, दुर्योधन भूपालजी ॥ शत भ्रात सुभट संघाते, सेन्या सवि संभालजी ॥ म०॥११॥ पायक पोताना सघला मेल्या, योध तणे त्यां द्वारजी ॥ आयुध कवच टोप तनु सजीया, आया सभामझारजी ॥ म० ॥ १२ ॥ गाम गामथी तुरंगम आवे, मदगल ताजा तंगजी ॥ जरीत पाखर झलके अंग मांही, नाभे शिश मन रंगजी ॥ म० ॥ १३ ॥ भिषम द्रोण कर्ण दुःशासन, शकुनी सबल सुत एहजी ॥ कृपाचार्यने अश्वथामा, वाहीक अति बल देहजी ॥ म० ॥ १४ ॥ सभा मध्य भड र

ह्यां तरवारी, युद्ध जाणी तिहां प्रौढजी ॥ गडे निशाण गंभीर स्वर वाजे, जोइ विदुर थयो दंग मूढजी ॥ ॥ म० ॥ १५ ॥ धृतराष्ट्र सभा मध्यें बेठा, पाळल सहु राय राणजी ॥ तिणे समे पांडव पधारया, जिम निशा प्रगटीत भाणजी ॥ म० ॥ १६ ॥ पांडवने सर्व सभा देखाडी, जोइ थया रलीयातजी ॥ प्रिती करी दुर्योधने काढी, द्युत क्रिडानी वातजी ॥ म०॥१७॥ आपणे रमीए इहां बेहु भाइ, रमत सभामांहि बेठाजी ॥ भिम अर्जुनने सहदेव तिहां, नकुल चिंता मांही पेठाजी ॥ म० ॥ १८ ॥ युधीष्टीर कहे सुणो दुर्योधुन, ए द्युत राजवी कर्मजी ॥ परनारी संग पशु वध करवो, ए महंत तणो नही धर्मजी ॥ म० ॥ १९ ॥ हशी बोल्यो राय दुर्योधन, सत्य कहु धर्मरायजी ॥ क्षत्री तणो धर्म द्युत आखेठक, करतां सुखे दिन जायजी ॥ म० ॥ २० ॥ वलतु वचन कह्युं भलुं रमशुं, कुणे न राख्या वारीजी ॥ अर्जुननुं अभिमान न राख्युं, थइ बेठा जुहारीजी ॥ म० ॥२१॥ दुर्योधन दुःशाशन शकुनी, मिली कर्ण कुमती एहजी ॥ पांडव प्रते वायक भांखे, सभा सुणतां तेहजी ॥ म० ॥२२॥ कांयक होड वदीने रमीए, तो ते उलट थायजी ॥ जे कांइ होड करो ते आपुं, इम भांखे युधीष्टिर रायजी ॥म०॥२३॥

डावमें शुं आपवुं, कहो युधीष्टिर रायजी ॥ स्व पलाण सहित ए घोडा, आपुं मुख केहेवायजी

। म० ॥ २४ ॥ प्रथम स्राव नाख्यो राजाए, बोल्यो श
कुनीआराजी ॥ जित्यो ए दुर्योधन राणो, पांडु तणा सु
त हारयाजी ॥ म०॥२५॥ अरिने डावे जुवो खेलावे, वि
दुर तणे नही सारेजी ॥ हयवर गयवर रहवर पुरवर,
राज अने त्रिय हारेजी ॥ म०॥२६॥ राज सघलो करी
आपेवस्य, पंचाली तेडावेजी ॥ निरजय थइ नृप चा
ल्या वेगे, पंचाली मंदिर आवेजी ॥ म० ॥ २७ ॥ पर
पुरुष दिठा आवतां, घरमां पेठी नारीजी ॥ दाशीए
तेहां राख्या वारी, नवी लोपीजे कारजी ॥ म०॥२८॥
फिरी पाछा आया सुभट, स्वामी अबला नावेजी ॥
भांखे दुर्योधन मच्छर धरतो, ए परोहितथी शुं थावे
जी ॥ म०॥२९॥ उठ दुःशासन जातुं वेगे, लाव्य नारी
मुझ पासेजी ॥ ते दिन सुतुं विसरयो भाइ, सहु देखतां
किधी हांशीजी ॥म०॥३०॥रोस भरयो दुःशासन राणो,
आवे करत आवाजजी॥देखी द्रोपदी आंसु ढाले, शि
रहेशे मुझ लाजजी ॥ म०॥३१॥ भणे दाशी मोटा तु
म राणा, अबलाशुं सो प्राणजी ॥ मेरुकि मत तजे मर
[illegible] [illegible]नो वचन राजानजी ॥ म० ॥ ३२ ॥ चरण प्र-

ऋारजी ॥ राजा सहु मुने देखशे अंगे, किम रहेशे मुज आचारजी ॥ म० ॥ ३५ ॥ नारी चिंते हवे किम होस्ये, हारछे मुऊ कंतजी ॥ कुण जिवता मुऊने ताणे, सही थयो कलपंतजी ॥ म० ॥ ३६ ॥ गागेयने गुरु द्रोणाचारज, बेठा सहु राजानजी ॥ सभा विच दुर्योधन आगे, ऊभी राखी आणजी ॥ म० ॥ ३७ ॥ कहे दुःशासन वेसो खोले, निठकरी मे लाभीजी, थारी ते गम फिरीयो पाणी, खीजवशे कहे भाभीजी ॥ म० ॥ ३८ ॥ रिसाणो दुःशासन राणो, खेंचे चिर अजाणजी ॥ गुणसागर सो एकवीसमी ढाले, होशे सत परमानजी ॥ म० ॥ ३९ ॥

दुहा ॥ मेलो पालव कहे प्रेमदा, तव बोले इम गाज ॥ ढांडो पटराणी पणो, पछी करजो लाज ॥ १ ॥ तुं हंशीथी मुऊने, आज थइ आधीन ॥ लाज न राखुं ताहरी, इम भांखे मती हीन ॥ २ ॥ कुबुधी वचन इम सांभली, कंत सामु जोवे नार ॥ भीम थयो तव रातडो, वारे धर्म कुमार ॥ ३ ॥ आज जो होइ पुण्य आपणां, तो किम हरीए चिर, ते माटे नवी बोलवो, राखो समता धरी धीर ॥ ४ ॥ अबला हुइ अनाथणी, ऊलट्यो दुःख अगाह ॥ ढांकी अंग तनु कंपती, नयणे नीर प्रवाह ॥ ५ ॥

ढाल १२२ मी ॥ शियल सरु तरुवर शोभीए ॥ एदेशी ॥ कुण पत राखे माहरी, कोप्यो दुरीजन काल

हो ॥ आवो धावो उतावलां, सियल तणा रखवाळ हो ॥ कु० ॥ १ ॥ परमेष्टी मन ध्यावती, जिनशासन शीर ताज हो ॥ दुष्ट तणे हाथेपडी, छोडावो मुझ आज हो ॥ कु० ॥ २ ॥ गांगेयने गुरु देवतां, आणी ग्रहि जिम चेरि हो ॥ दुरमती आइ ए सहुने, किण हिन पाछि फेरी हो ॥ कु० ॥ ३ ॥ पांच पति शीर माहरे, पिण नविछळ्या कोइ हो ॥ मानी मान महाबलि, बेठा निचुं जोइ हो ॥ कु० ॥ ४ ॥ हाक वागी पुर शेहेरमां, करे किसुं किरतार हो ॥ पांडव केरी प्रेमदा, लुंटे सभा मझार हो ॥ कु० ॥ ५ ॥ दुष्ट दुःशासन खेंचियो, द्रोपदी चिर चतुर हो ॥ आवी ताम उभा रह्या, सानिध्यकारी सुर हो ॥ कु० ॥ ६ ॥ चीर अमुलख दुसरो, ढांक्यो सती शरीर हो ॥ ते पिण खेंच्यो तिसरो, पूर्यो नवरंग चीर हो ॥ कु० ॥ ७ ॥ देखो रांड कपटणी, पहिर्यां झाझां चीर हो ॥ ल्यो उतारी वेगसुं, कहे दुःशासन वीर हो ॥ कु० ॥ ८ ॥ इम अनुक्रमे पूरीयां, आठोत्तर सो पर्म हो ॥ शील प्रभावे राखीयो, सभा मांहि शर्म हो ॥ कु० ॥ ९ ॥ श्वेत निलां रातडां, नारी कुंजरवान हो ॥ एक एकपे रंग आगला, पूर्यां श्री भगवान हो ॥ कु० ॥१०॥ जैजैकार देवे किया, सातिय तणो सत जाण हो ॥ दुष्ट दुःशासन झांखो पड्यो, हुवो अधीक खिसाण हो ॥ कु० ॥ ११ ॥ भीषम भाखे भूपति, भीम अर्जु

न बलवंत हो ॥ आण न लोपे राजा तणी, नहि तो आणे तुम अंत हो ॥ कु० ॥ १२ ॥ सती घणुं नवि छेडीए, एहने सीयल समर्थ हो ॥ नारी पांडव कने मोकलो, नहिंतर थाशे अनर्थ हो ॥ कु० ॥ १३ ॥ विदुर कहे में पेलुं कह्युं, आचरतां परपंच हो ॥ आगले अनर्थ नीपजे, जो जो एहना संच हो ॥ कु० ॥ १४ ॥ कौरव कामनी एकठे, रोति वनमझार हो ॥ तो साहलं कह्युं मानजो, जो सत होय संसार हो ॥ कु० ॥ ॥ १५ ॥ धृतराष्ट्र सुत आंधला, हियडुं फुट्युं आज हो ॥ सती वींटंवी शुं कियो, खोइ सभामें लाज हो ॥ कु० ॥ १६ ॥ होइ झांखो राजीयो, छोडी द्रोपदी नार हो ॥ पंचाली जग परगटी, सतिय सिरोमणी सार हो ॥ कु० ॥ १७ ॥

दुहा ॥ वरस बार वनमां वसे, नष्ट चर्या ए एक ॥ दुर्योधन कहे पांडु सुत, वली कहुं वात विवेक ॥ ॥ १ ॥ छतां पडे जो वरसमां, तो फिरीने वनवास, ॥ बार वरस लगे भोगवे, एछे माहरी भाष ॥ २ ॥ आज्ञा ते अंगी करी, द्रोपदी बांधव लेह ॥ युद्धीष्टीर गजपुरे आवीयां, गुरु प्रणमि ससनेह ॥ ३ ॥ प्रेमे नमी मा बापने, विरम्या ते तेणीवार ॥ युद्धीष्टीरे मांडी कियों, वात तणो विस्तार ॥ ४ ॥

ढाल सूलगी तेहीज ॥ मारी मान महाबलि, चालियां वन भ्रात हो ॥ शिख करवा आविया, जिहां छे

कंता मात हो ॥ कु० ॥ १८ ॥ आगल आवी नामी
यो, माताजीने शीस हो ॥ आज पुत्र में सांभल्युं, हु
हवाणा तुम दिश हो ॥ कु० ॥ १९ ॥ हुं आवीश तु
म केडले, मेंतो घडी न रहेवाय हो ॥ पुत्र पाखे माय
नी, तोले हिणि थाय हो ॥ कु० ॥ २० ॥ एतले विदु
र आवीया, माजी कहे एम वाण हो ॥ राजा तुमने
ए शुं थयो, हूता अधीक सयाण हो ॥ कु० ॥ २१ ॥
विदुर कहे हुं शुं करुं, माहरुं कांइ न थाय हो ॥ गांगे
य द्रोण ए दुःख धरे, पिण दुष्टने न केहवाय हो ॥ कु०
॥ २२ ॥ माजी मेलो इहां किणे, रेहशे अमारे पास
हो ॥ राजा नीपम जणावीने, तम्हे चालो वनवास
हो ॥ कु० ॥ २३ ॥ शिख आपी निज नारीने, रेहेज्यो
माजी पास हो ॥ सेवी तृष्या अरु भूखसी, दुःख घ
णो वनवास हो ॥ कु० ॥ २४ ॥ केम रहेवाये मुझथी,
वैरी वहुलो साथ हो ॥ लाज न राखी माहरी, इणे
ग्रह्यो मुझ हाथ हो ॥ कु० ॥ २५ ॥ वेश खोले कहे मु
झने, सांभलतां तुम कंत हो ॥ जो मुझने नवि तेडशो,
तो आणीश मुझ अंत हो ॥ कु० ॥ २६ ॥ चाले सा
थे प्रेमदा, सासुने पगे लाग हो ॥ माता पिण साथे
हुइ, नहि रेहवा मुझ लाग हो ॥ कु० ॥ २७ ॥ वडा
तणे पगे लागीने, तात तणी लेइ शिख हो ॥ पां
डव वनमें चालिया, धरी मन समता इख हो ॥ कु०
॥ २८ ॥ बाविस सोमी ढालमें, कौरव कीधो कोप हो॥

श्री गुण पांडव नवी करे,मरजादानो लोप हो॥कु०॥२९॥
दुहा ॥ विहावे अति द्रोपदी, कुर अने करसिर ॥ दिया भराइ पान ज्युं, पांभव भीम समीर ॥ १ ॥ विदुर विवुध गुरु सारिखो, देइ शिख विशेप ॥ पोहचावी पाछो वल्यो, आंसु ढाले अशेप॥ २ ॥ धृष्टदुमन आको फिरी, कंपिलपुर आणंत॥ खबर तदा वनवासनी, यादवपति जाणंत ॥ ३ ॥
ढाल १२३ मी ॥ हे जादु झगमग जोति सुहावे ॥ ए देशी ॥ ते वात सुणी माय बापनेरे हां, नयणा न माये नीर ॥ मे एक कुंताने पांडुएरे हां, धरुं न जाए धीर ॥ मेरे साजना सांभलजो सहु कोय॥ १ ॥ मौनपणो मुखे आदरिरे हां, पांडु न बोले बोल ॥ धर्म पुत्र धीरज धारिरे हां, तव करे थइ अमोल ॥ मे० ॥ ॥ २ ॥ खेदने खरखरो मत करोरे हां, तातनी अमे वन जाय ॥ सत्य प्रतिज्ञां पालसुरे हां, वधस्ये तव महिमांय ॥ मे०॥३ ॥ सुपुरुष न राचे राज्यनेरे हां, राज्य जाए तो जाउ ॥ सुख दुःख वनथले वेठिएरे हां, पिण एक वचन मत जाउ ॥ मे० ॥ ४ ॥ धैर्य धारिनें तातजीरे हां, आपो अम आदेश ॥ बोल न बोलाए दुखेरे हां, रोक्यो कंठ प्रदेश ॥ मे० ॥ ५ ॥ हा ना कांइ न करी शकेरे हा, वितक जाणिने तेह॥बांधव पांचेने द्रौपदिरे हां, वने चाल्या तजी गेह ॥ मे० ॥ ६ ॥ पंडु कुंतिने अंबिकारे हां, अंबाने बाला आद॥ आंसु जले

मूए सिंचतारे हां ॥ केडे थयां लहि विखवाद ॥ मे०
॥ ७ ॥ ते पांचे पुरथी निसरयारे हां, तव नगर थयुं
निस्तेज ॥ जीव जते पचेंद्रि विनारे हां, तनुनुं न र
हे जेम तेज ॥ मे० ॥ ८ ॥ युधीष्टेर मावित्रने नमिरे
हां, बोले एहवा बोल ॥ प्रतिज्ञा अम पालतारे हां,
वधशे तुमारो तोल ॥ मे० ॥ ९ ॥ सुपुरुपने मान धन
छेरे हां, रखे धरो मन खेद, धर्म सदा दिल धारयोरे
हां, ते साधे अनेक उमेद ॥ मे० ॥ १० ॥ माताजि मो
ह तणे वशेरे हां, परवश थाए प्राण ॥ विर पलि वि
र मातनुंरे हां, अरिहंतनि वाहियो आण ॥ मे० ॥११॥
अम तात तणि तक साधयोरे हां, सेवजो गुरुनां पा
य ॥ आशिप देवो अमनेरे हां, जेहथी विघन पलाय
॥ मे० ॥ १२ ॥ एम अश्वासी सर्व स्वजननेरे हां, पु
रिजन साहमुं जोय ॥ कांइ करी होय अमे किलामना
रे हां, ते खमजो सहु कोय ॥ मे० ॥ १३ ॥ नींतर ते
नयणे वल्यारे हां, तव सहु पुरना लोक ॥ पिण पग नवि
चाले पुर त्तणिरे हां, सहुने वाध्यो शोक ॥ मे०॥१४॥
गुणसागर कहे सांभलोरे हां, ढाल अति रसाल ॥ वि
सारया न विसरेरे हां, वाहलां कोइ काल ॥ मे०॥१५॥

ढाल तेहिज ॥ वधावानी देशी ॥ कृष्ण नरेसर
आवियो, कांइ आयो हो आयो वहु परीवारशुं ए ॥
पांडव साथे बोलियो, कांइ बोल्यो हो बोल्यो सकल
प्रकारशु ए ॥ १ ॥ कौरव कूटे काढिए, कांइ काढि

हो काढि दिजे देशथी ए ॥ राजाजीने थापिए, कांइ थापी हो थापी शुं विशेपथी ए ॥ २ ॥ पांडव बोले स्वामीजी, कांइ स्वामी हो स्वामी वनमें चालवो ए॥ बोल न चूक्यो आपणो, कांइ आपणु हो आपणु बो ल्यो पालवो ए ॥३॥ देव प्रसादे तुम्हारडे, काई तुम्हारे हो प्रसादे सहु पाधरु ए ॥ होशे कारज सुंदरुं, कांइ सुंदरु हो सघलुं कारज सादरु ए ॥ ४ ॥ बाइ सुभ द्रा पुत्रशुं, कांइ लेइ हो पोहोच्या प्रभु द्वारामती ए ॥ पंचाली पीहरीए, काई पीहरीए हो पीहरीए न रहि सति ए ॥५॥ साते माणस संचरे, कांइ संचरे हो भूख अने त्रप अवगणी ए ॥ माता पुत्र सनेहडे, कांइ नेहरे हो राची नारी अति घणी ए ॥६॥ दिवस केतलाने आंतरे, कांइ आंतरे हो पुरोहित पाव धारीयो ए ॥ मोकलियो कौरव तणो, कांइ कौरव हो कौरवनो हितकारियो ए ॥ ७ ॥ भांखे देव दया करो, कांइ दया हो वनवासे मति संचरो ए ॥ खमो अपराध अमारडो, अमारो हो मानेवो कह्यो खरो ए ॥८॥ इंद्रप्रस्था नामे भलो, पुर आव्यो हो कीधी गाढी विनति ए ॥ बइठा तुम सुख भोगवो, भो गवो हो मानो हमारी वीनति ए ॥ ९ ॥ धोलो दूध विचारी ए, विचारी हो आया वारिणा वति ए ॥ ला ख घरे उतारीया, काई उतारीया हो जाइ माति घटीया रति ए॥ १० ॥ विदुर कियो उपगार हे, उपगार हो सुरग बणावी पडवडी ए ॥ कागल मांही जणावीयो,

जणाव्यो हो अरीम पती जोयुं धन्नी ए ॥ ११ ॥ प
पशो पेट, दुखदायकु, दुखदायक हो कंस तणो परे जो
इस्यो ए ॥ गाफील खिजे वडवन्ना, कांइ तेहथी हो हु
शीयारीमें होइज्यो ए ॥ १२ ॥ फागुण कालीचउदश,
मध्य राते हो करशे तुम्ह सुकुहडो ए ॥ देशी आग
उतावलो, ए ब्राह्मण हो ब्राह्मण नहीं चुहडो ए ॥१३॥
पच पुत्रसु डोकरी, कांइ वहशुं हो रातवसा सुख नि
रमली ए ॥ आग जगी फीरी पांडव पुल्या, सा बुढी हो
बेटा वहुशुं परजली ए ॥ १४ ॥ भीमे भुजाबल साही
यो, साहीयो पुरोहित हजुरमां जालीयो ए ॥ पांडवजी
उगारीया, कांइ काकेहो एह उपद्रव्य टालीयो ए ॥
॥ १५ ॥ लोक मिली हाहा करे, कांइ हुवो हो एह अ
कारज अति घणो ए ॥ कौरव तो अति कुरलीयो,
कांइ लोगामे हो दोश उतारण आपणो ए ॥ १६ ॥
संक कोरवनी खरी, कांइ पांडव हो नाठा जाइवे सही
ए ॥ गिरे पन्हे ने आखडे, कांइ जाणे हो दिन रात
जावे वही ए ॥ १७ ॥ द्रुम गिरीने वन नदी, विसामो
हो नवी लीए शंका परहरीए ॥ दर्भांकुर पग विंधी
ए, कांइ विंधे हो कांटा खुंचे कांकरीए ॥ १८ ॥ थाकी
माता अति घणी, कांइ थाकी हो पंचाली पग नवी
भरे ए ॥ नकुल अने सहदेवजी, कांइ थाक्या हो चा
लवाने आलस करे ए ॥ १९ ॥ एक खधोले मायन्नी,
कांइ चोहडीहो बिजे खंधोले वहु ए ॥ बंधव होइ वां

घोया, कांइ पुठे हो समरथथी होवे सहु ए ॥ २० ॥ राजा अर्जुन कर धरी, कांइ चाल्यो हो चाल्यो मारग वंकमो ए ॥ माणस पट नीर वाहीया, काइ जाइ हो जाइ सुखमें भीमडो ए ॥ २१ ॥ तेवीसा सोमी ढालमें, कांइ टलीयो हो टलीयो उपद्रव्य धर्मथी ए ॥ श्री गुणसागर सुरिजी, कांइ होशे हो होशे सुख सुभ कर्मथी ए ॥ २२ ॥

दुहा ॥ विपम पंथ वोली करी, पहुता निश्चल ठाम ॥ साथ सुइ सुखमें सहु, भीम चल्यो जल काम ॥ १ ॥ सरोवर जल लेइ वल्यो, पठे लागी ताम ॥ तिष्ट तिष्ट मुख भांखती, जास हेडंबा नाम ॥ २ ॥ आवीथी मारण भणी, पिण पती करवा काज ॥ विनय करी करजोमीने, आगे उभी लाज ॥ ३ ॥ भीम भणे सुण भामनी, तुमे प्रकाशो आप ॥ राखसनाम हेमंबनी, वहीन अछुं सकलाप ॥ ४ ॥ तुम हणवा हुं मोकली, हुं मोही तुम देख ॥ प्रभु हुशीयारी किजीए, राक्षस जोर विशेष ॥ ५ ॥ व्याहो मुझ प्राणेश तुम, हुं तुम दाशी समान ॥ वनवाशे खिजमत करुं, जिम वाधे मुझ वान ॥ ६ ॥ वनवासे शुं व्याहवुं, भाखे भीम कुमार ॥ आडंवर आणे अवसरे, करत न शोभ लिगार ॥ ७ ॥

ढाल १२४ मी ॥ योगननी देशी ॥ वात करंता भ'ली चाली, राक्षस तो आइ गयो ॥ लाते मारी वे

नने वारे, भीम तणे मन रोस थयो ॥ १ ॥ मांसाहा री निज आचारी, अवलाने शुं चोट करे ॥ जो बलवं तो गो मयमंतो, मुझ साहमा पग क्युं न भरे ॥ २ ॥ घीय शीचाणी आग तणीपरे. तरु उपाडी आइयो ॥ वृक्ष उखाभी भीम नरेसर, राक्षस उपर धाइयो ॥ ॥ ३ ॥ होत लथा बथ होत बथाबथ, उपर तले आ वी दोइ ॥ जाय हेरुंबा कुंती शेती, कहे हणीयो तुम्ह सुत कोइ ॥ ४ ॥ खरुग संबाही आयाँ धाइ, राजा जमरुपी होइ ॥ गदा उपाडी हेठो पाडी, मारी लीयो भीमे सोइ ॥ ५ ॥ ताम हेडंबा एह कुटबा, साथे रही साता पावे ॥ भूली पडी पंचाली बाला, देवि त व शोधी लावे ॥ ६ ॥ तव ते थाक्या देवि हेडंबा, सा सु वहुने खांधे धरे ॥ कुंतीने राजाजी हठे, भीम हे डंबा व्याह करे ॥ ७॥ मंदिर विविध प्रकारे बणावी, सेज तणी रचना किजे ॥ पान फूलने तेल सुगंधा, अनोपम पहीरीजे ॥ ८ ॥ भीम संघाते सुख वी

लगावी गाढो, ब्राह्मण गहेवरीयो होवे ॥ १२ ॥ न
पे बक नामे एक राक्षस, शिला वीकुरोवी आवे ।
नगर लोक भयभीत घणेरा, वचने पिण अति
बिहावे ॥ १३ ॥ काउसगादिक करणी करतां, परमे
ष्टी मनमें ध्यावे ॥ राजा प्रजा एक मनावी, उपद्रव्य
करवा पावे ॥ १४ ॥ राक्षस रोस तजीने सुधी, बात
राजासुं इम भासे ॥ एक एक नर भक्षण कारण
नीत पहोचावे मुझ पासे ॥ १५ ॥ राजा मानी पत्री
ठाणी, आज हमारो छे वारो ॥ माता बहीन टाब
बेटी, रोवेछे ए अवधारो ॥ १६ ॥ केवल ज्ञानी वात
कैहीथी, पांडवथी टलशे कारो ॥ सोतो नाया अम दी
न आयो, बोले परदेशी प्यारो ॥ १७ ॥ ए सहुने रो
वंता राखो, थारे वारे हुं जाशुं ॥ राक्षस हणीने लोक
सकलनो, हुंतो रखवालो थाशुं ॥१८॥ आप गयो रा
क्षस आवासे, हरख्यो देखी उंचपणो ॥ सयल कुटंबो
धापी खाशु, एहने तनुनो मांस घणो ॥ १९ ॥ मांहो
माही माच्यो झगडो, धगडे कारीज सारीयो ॥ गदा
प्रहारे ठलबल केलवी, भीमे राक्षस मारीयो ॥ २०॥
पुष्फ वृष्टी अंबरनी वाणी, जय जयकार ते उछली,
मोटो एह उपद्रव्य टलीयो, लोगानी पूगी रली ॥२१॥
जिनवयणे करतुती देखी, लोका पांडव जाणीया ॥
धन धन माता पिता धन करणी, पांडव सुजस व
खाणीया ॥ २२ ॥ चंदन चंप जिहां जिहां जाए, ति

हा तिहां शितलताइहो ॥ताप हरे परकी तनु केरो, ए ह तणी अधीकाइ हो ॥ २३ ॥ ढाल ए चोवीस सो मी, बक नामा राक्षस हणीयो॥श्री गुणसागर न रहे छानो, भीम बल जगमांही भणीयो ॥ २४ ॥

दुहा॥पांडव प्रभु मन चिंतवे, प्रगट हुवा हम आज ॥कौरव केडे लागशे, मतको विणसे काज ॥ १ ॥ आ धी राते निकल्या, सूतो मूकी गाम ॥ द्वैतवने आया वही, राखवा निज माम ॥ २ ॥ लोक वचनथी सांभ ली, ए सघलो विरतंत ॥ दुर्योधन राजा घणो, माने हर्ष अत्यंत ॥ ३ ॥ प्रियवंद नामे भलो, दूत महा वा चाल॥काकोजी करुणा करी, मोकलीयो सुविशाल॥४॥ खबर हुइछे तुम तणी, दुर्योधन नरनाथ ॥ आवे छे तु म्ह उपरे, करणादिक बहु साथ ॥ ५ ॥

ढाल १२५ मी ॥ पंथीडो वात करे धुर छेहथीरे ॥ ए देशी ॥ द्रोपदिरे द्रोपदि रीसे परजलीरे, बोले रोस अपाररे ॥ कौरवरे कौरव केरू छांडे नहीरे, आवे पभीयो लाररे ॥ द्रो० ॥ १ ॥ राजरे राज लीयो धन सघलोरे, लीयो महातम बीनरे ॥ तो पिणरे पूठन छं भे पापीयोरे, पुण्याइ हम हीनरे ॥ द्रो०॥ २ ॥ धीग मुझरे नारीपणुं घर तुम्ह तणेरे, धीग तुम्ह क्षत्री ना मेरे ॥ बांदीरे उपर बिबीनी परेरे, मांडेछे पलाणरे ॥ द्रो० ॥ ३॥ सासुरे सासु प्रत्ये वहुअर कहेरे, वीर जननी ए नामरे ॥ कांइरे कांइ धरावे हेजथीरे, जाया

पुण्य नीकासरे ॥ द्रो० ॥ ४ ॥ पुरुपरे पुरुप सहे किम एवडोरे, पीसुन पराभव काजरे ॥ मइंगलरे मद मारण न विसरे, अष्टापद घन गाजरे ॥ द्रो०॥५॥ एक जरे एकजणी नीरभय थइरे, नारी सिंहणी सोयरे ॥ सासुरे पंचजणी निज जोबनोरे, वादी गमायो जोयरे ॥ द्रो०॥ ॥ ६ ॥ रांकरे रांक तणी परे मुजनेरे, विगोवी अखदा मांहिरे ॥ पांचरे पांचे भला जोइयोरे, तरणुं न त्रुटुं आंहीरे ॥ द्रो० ॥ ७ ॥ माररे अने मरे त्रिय कारणेरे, जेहने शिर एक होयरे ॥ पुरुपरे पुरुप पंचनी पदमणीरे, विटंबी न उठो कोयरे ॥ द्रो० ॥ ८ ॥ एहरे एह वचन नीसुणी तदारे, अर्जुन भीम सहदेवरे ॥ फूकेरे फूक दिया सिलगे घणीरे, उठीया ततखेवरे ॥ द्रो० ॥ ॥ ९ ॥ युगतीरे युगती वचन समझावीयारे, धर्मनंद राखेवा धर्मरे ॥ जेठरे मासतणी नदीनी परेरे, आया ठाम विचारी मर्मरे ॥ द्रो० ॥ १० ॥ प्रियवंदरे प्रिय वंद चरितव विसरज्यो, मारी मान चल्या मतिवंतरे ॥ श्रीगीरिरे श्रीगंधमादन आइयारे, गुपतपणो गुणवंत रे ॥ द्रो० ॥ ११ ॥ इंदररे इंदर किल नगर अछे भलोरे, तिहां राखी निश्चल ध्यानरे ॥ राजारे राजा इंदर तणो सुतरे, साधे विद्या सुजाणरे ॥ द्रो० ॥ १२ ॥ विद्यारे विद्या विधी अराधतारे, आवी भली तामरे ॥ भगतीरे भावे श्री अर्जुनजीरे, किधो विद्या प्रणामरे ॥ ॥ द्रो० ॥ १३ ॥ विद्यारे भांखे कारज शुं करुंरे, वसो

मुझ देह मझाररे॥ कारजरे कारज सकल सिद्धि करुं रे, कोइ आगल न लहुं हाररे ॥ द्रो० ॥ १४ ॥ विद्यारे सिद्ध हुवो हरी नंदजीरे, गिरी शिखरे बेठो आपरे ॥ व्याधकरे व्याधक खेलत आहिडोरे, करतो दिठो पापरे ॥ द्रो० ॥ १५ ॥ वरज्योरे पिण नटले ए पापथीरे, जिम करतो गिमाररे॥आवेरे धनुष्य संवाही साहमोरे, नाणे संक लीगाररे ॥ द्रो० ॥ १६ ॥ अर्जुनरे अर्जुन सामो होवंतारे, धनुष्य छिनाइ लीधरे॥ खडगेरे लरतां खडग खसोटीयारे, प्रभुसे अधकी किधरे ॥ द्रो० ॥ १७ ॥ बाथेरे बाथे पर्मीया रोसंशुरे, अडीया दोइ झुझाररे ॥ हारयोरे हारयो अर्जुन आगलेरे, हुवो जस विस्ताररे ॥ द्रो०॥१८॥ कुसमरे वृष्टी थइ प्रभु उपरेरे, प्रगट्यो सुरवर एकरे॥ माग्यरे माग्य वर मुख भांखतोरे, पुछे आणी विवेकरे ॥ द्रो०॥ १९॥ वरनीरे पाछे आपण कुणछेरे, कियो किसो जंजालरे ॥ वैताढ्यरे वैताढ्य रथनुपुर भलोरे, पुरवर अधीक रसालरे ॥द्रो०॥२०॥इंदररे इंदर नामे राजीयोरे, विद्युत माली लघु भ्रातरे ॥ काढ्योरे काढ्यो देश बाहिरेरे, करतो अति उतपातरे ॥ द्रो० ॥ २१ ॥ राक्षसरे राक्षस ते तल ताल तणे बलेरे, देश उजाडे सोररे ॥ भांख्योरे भांख्यो उपद्रव्य टालणोरे, ज्ञानी थारो जोररे ॥ द्रो० ॥ २२॥ मुक्योरे मुक्यो तुम लेवा भणीरे, में दिठा गिरीवर श्रंगरे ॥ बलरे बल जोवा माया करीरे, तुमे हुं जि

लो जंगरे ॥ द्रो० ॥ २३ ॥ रथरे रथ बेशी प्रनु आवी यारे, राक्षस उपर सूररे ॥ जीत्योरे जीत्यो राक्षस वा जीयारे, सुजस तणा वरतूररे ॥ द्रो० ॥ २४ ॥ इंदररे इंदर सनमान लही घणोरे, प्रणम्यां माजी पायरे ॥ चित्रांगदरे चित्रांगद सुखचरीत्र सुणतारे, सहु मन ह रखीत थायरे ॥ द्रो० ॥ २५ ॥ ढालजरे ढाल पंचवि ससोमी नलीरे, हणीयो ते तल तालरे ॥ श्रीगुणरे श्री गुणसागर सूरजीरे, पांडव जश विशालरे ॥ द्रो०॥२६॥

दुहा ॥ माता पुत्र अने वहु, बेठा सुख पावंत ॥ क मल एक कंचन तणो, अंबरथी आवंत ॥ १ ॥ पंचा ली करमे लीयो, कमल वास निज सास ॥ लेतां मन वाध्यो घणो, पामी अति उल्हास ॥ २ ॥ नामनी ना खे निमगुं, एहवा कमल उदार ॥ आणी आपो मुऊ नणी, नाह मतलावो वार ॥ ३ ॥

ढाल १२६ मी ॥ शियलसुं रंगी चुंदडी ए देशी ॥ लावोने कमल सुहामणा, कहे नीम नणी एम वाणरे ॥ हुंश करुं तुम उपरे, मारा पीउजी जीवन प्राणरे ॥ ला० ॥ १ ॥ ए कमल मुऊने गमे, लावो नाथ मतला वो वाररे॥तुम सरिखे प्रितम उतेरे, मुऊ लाखेणो अवताररे ॥ ला० ॥ २ ॥ नामनीनो मन राखवा, उठ्यो नीम कुंवर मतिवंतोरे ॥ पतिव्रताशुं प्रितनी, तिण बोल न फिरी वालंतोरे॥ ला०॥३॥चाल्यो मारग वंकडो, काइ उलंघी विखम वाटरे ॥ देखी कमल वन शोनतो, अवे

हुंश धरी वन घाटरे ॥ ला० ॥ ४ ॥ लेइ कमल पाछो वल्यो, पुंठे हुवो रक्षक देवरे ॥ बांधी राख्यो भोमने, कांइ हाली न सके हेवरे ॥ ला० ॥ ५ ॥ फरके नेत्र दाहीणो, माताजी मनमें उचाटरे ॥ भीम संकट मांही पड्यो, जोता नवी आयो सुत्त वाटरे ॥ ला० ॥ ६ ॥ उठा ताम उतावला, बंधव च्यारे आणी सनेहरे ॥ पो होंची न सक्या तेहथी ॥ तव बांधीया पिण तेहरे ॥ ला० ॥ ७ ॥ कुंता माता द्रोपदी, कांइ एकलडी निर धाररे ॥ काउसग्ग ध्यान करी रह्या, सारी रात दिवस मझाररे ॥ ला० ॥ ८ ॥ केवल उछव कारणे, सुरपति आपे तव जायरे ॥ सति उपर सुर आवतां, तव जान रह्यो खलायरे ॥ ला० ॥ ९ ॥ ज्ञानवले तव देखीयो, कांइ सति तो रही छिदायरे ॥ पांच पांडवने शंखचुर, कांइ बांधीया अति दुख थायरे ॥ ला० ॥ १० ॥ सुरप तिए सुर मोकल्यो, सो आयो छोडावण काजरे ॥ ते कहे लेतां कमलने ॥ में बांधीयाछे आजरे ॥ ला० ॥ ११ ॥ छोड्या इंद्र आदेशथी, करी प्रिती घणी शंखरायरे ॥ कमल लेइने आवीया, कांइ प्रणम्या माजी पायरे॥ला० ॥ १२ ॥ माता भिडी हेजथी, कांइ चापे हियडा सा थरे ॥ उपद्रव्य टलियो धर्मथी, हेजे मिलिया सघलो साथरे ॥ ला० ॥ १३ ॥ छविसा सोमी ढालमें, श्री जैन तणो धर्म कीजेरे ॥ श्री गुणसागर सूरिजी, तो ततक्षण कारज सिजेरे ॥ ला० ॥ १४ ॥

दुहा ॥ वोलि गया पट मास जब, पुनरपी आया सोइ ॥ द्वैत वने आनंदमें, वासर जाता जोइ ॥ १ ॥ खवर लेइ दुर्योधन, कीधी दोड तेवार ॥ साहण वा हण सामटे, आयो विपन मझार ॥ २ ॥ हरी सुत चि त्रांगद तणो, सरोवरछे सुविशाल ॥ रखवाला जल रोकवे, जोर करे नृपाल ॥ ३ ॥ चित्रांगद आयो च ढी, कौरव साथ विकराल ॥ सिंचाणो जीम चरक लि, लेइ गयो ततकाल ॥ ४ ॥ वूरो वांछत पर तणो, वूरो लहे नर आप ॥ केडे पर्फंता पांडवा, कौरव पति संताप ॥ ५ ॥

ढाल १२७ मी॥जीवरे तुं शियल तणो कर संग॥ए देशी ॥ किधो लाजे आपणोजी, कौरवपति जेम जोय ॥ चित्रांगद लेइ गयोजी, परवश दुखियो होयरे ॥आ सुण जोजी कौरवपति जेम होय॥१ ॥ए आंकणी ॥ हाहाकार सहुको करेजी, जोर न चाले कोइ ॥ जेहने शीर आवी पर्फीजी, नीर वहे शिर सोइरे ॥ आ० ॥ २ ॥ सापे ताक्यो मींडकोजी, मोरे ताक्यो साप ॥ निज स्वार्थनो आंधलोजी, मारण न जाणे आपरे ॥ आ० ॥ ३ ॥ वगलो निंदे हंसनेजी, मणिने निंदे काच ॥ काम पड्या थी पारखोजी, सहुने प्यारो साचरे ॥ आ०॥४॥ नीड प ड्या नाइ नलाजी, लोक बिराणा जाण ॥ कौरवपतिनी कामनीजी, वेगे करी विलखाणरे ॥ आ० ॥ ५ ॥ यु धीष्ठिर नृप आगलेजी, करती अधीक विखास ॥ गो

त्र तणा गोवालियाजी, सांभल अम अरदासरे ॥ आ० ॥ ६ ॥ कुल मंडण कुल केसरीजी, जेठ जुगतसुं जोय ॥ पीभाइ भाइ घणुंजी, कवण निंद तुम्ह सोयरे ॥ ॥ आ० ॥ ७ ॥ मथीयो मिली घनदेवताजी, रतन किया अपहार ॥ ऋषि अगस्ति पिवताजी, नाम लियो जल खाररे ॥ आ० ॥ ८ ॥ वडवानल जल बालवेजी, पाज तणो जसवाद ॥ राम करवे सायरुजी, न तजे निज मरजादरे ॥ आ० ॥ ९ ॥ गुणग्राहि तो गुण ग्रहेजी, अवगुण नाखे दूर ॥ दांत वखाण्यां स्वआननाजी, श्री हरी होय हजूररे ॥ आ० ॥१०॥ राजा हरि सुत शुं कहेजी, वेगे मत लावो वार ॥ दुर्योधन बेडाववाजी, थाउ शूर अपाररे ॥ आ० ॥ ११ ॥ विनय करीने विनवेजी, अर्जुन भीम कुमार ॥ व्याधी टली वीण औषधेजी, मौन तणो अधिकाररे ॥ आ० ॥ १२ ॥ राजा भांखे भाइयोजी, क्षत्री केरो धर्म ॥ वहिला थाउ वाहरुजी, संचवाइ कुल कर्मरे ॥ आ०॥ ॥१३॥ आइशान जो इश नहिजी, चाल्यो श्रीहरी नंद ॥ चित्रांगद साथे अड्योजी, पायो सुजस आणंदरे ॥ आ० ॥ १४ ॥ बेडावी कौरवपतिजी, बेशी विमाने आय ॥ चित्रांगद चतुराइ पणेजी, अर्जुनने पोचायरे ॥ आ० ॥ १५ ॥ जब आया राजा कनेजी, दुर्योधन दुःख पाय ॥ शिक्षक चढियो मस्तकेजी, ताम घणुं अकुलायरे ॥ आ० ॥ १६ ॥ न नमे किलकनी

परेजी, खेचर गरदन साहि ॥ पगे लगायो जोरसुंजी, परवश हठ न कांइरे ॥ आ० ॥ १७ ॥ कुशल पूछतां बोलियोजी, निज चित्त सरखो ताम ॥ रिपु पिडा साले नहिजी, साले तुझ प्रणामरे ॥ आ० ॥ १८ ॥ रोस न आयो पांडवाजी, शीतलसुं रयो गेह ॥ संतोषी घर मोकल्याजी, द्रोहि न तजे द्रोहरे ॥ आ०॥ १९॥ दुष्ट न छंडे दुष्टताजी, केसे हुं शीख देत ॥ धोइयो सो वारकेजी, काजल होय न श्वेतरे ॥ आ० ॥ २० ॥सत्तावीससो ढालमेंजी, भला भलपण साची ॥ श्री गुण सागरसूरि कहेजी,समय समय घनमाचीरे॥आ०॥२१॥

दुहा ॥ विदुरने भीपम कहे, दुर्योधन स्यु ताम ॥ दिठा अर्जुन एकणां, सुभट पणानां काम ॥ १ ॥ पांडव उपगारी सहि, प्राण दान दातार ॥ रे कृतघ्न कृतघ्नपणो, क्युं न तजे अविच्यार ॥ २ ॥ शिख न एकहि मन वसी, सामो थयो सरोप ॥ औषध विविध प्रकारनां, माने नहि त्रिदोप ॥ ३ ॥ जयद्रथ राजा आवियो, भगनिपति सुविच्यार ॥ भक्ती करी भल भोजने, लेइ चाल्यो नार ॥ ४ ॥

ढाल १२८ मी ॥ सुमति सदा दिलमां धरो ॥ ए देशी ॥ सांभलजो वात विनोदनि, जयद्रथ राजा विख्यात ॥ शयाने ॥ मारगे जाता ऊतर्यो, दुर्योधननो जामात ॥ श०॥ सांभलो वात विनोदनी ॥ १ ॥ कौशल्या पति दुष्टने, कुंताए धरि हेत ॥ शयाने ॥ जमाइ

तुं उतरयों, सघला साथ समेत ॥ श० ॥ सां०॥२॥ अर्जुने विद्याने वले, रसोइ निपाइ रंग ॥ श० ॥ भो जन पिरस्यां भावता, कुंताए उज्वल रंग ॥ श० ॥ सां० ॥ ३ ॥ मंजन भोजन युक्तिसु, उपर आपी तं बोल ॥ श० ॥ प्राहुणा जाणी प्रेमसुं, सहु करे रंग रो ल ॥ श० ॥ सां०॥ ४ ॥ अरहां परहां सहु गयां, ते लंपटे लेइ लाग ॥ श० ॥ रथमां घाली द्रौपदी, रुद यमां आणी राग ॥ श० ॥ सां० ॥ ५ ॥ जयद्रथ ते महा चोरटो, रथ खेडी नाठो जाय ॥ श० ॥ वाहरे ते पुठे वेगशुं, भीम अर्जुन जव धाय ॥ श० ॥ सां० ॥ ॥ ६ ॥ कुंता कहे तव हे वत्सो, गुनहि पर्णे ए रगे मा र ॥ श० ॥ जामात छे ए माहरो, रखे मारो तुमे ठा र ॥ श० ॥ सां० ॥ ७ ॥ भीम अर्जुन वे भयकरा, वहु वहु नाखता वाण ॥ श० ॥ जयद्रथने जइ मि ल्या, तव तिहां पड्यो भगाण ॥ श० ॥ सां० ॥ ८ ॥ भीमे गदाने घाते करी, तेहनो रथ करयो चकचूर ॥ श० ॥ काचा कुंभ तणी परे, देखी दल सहु नाठो दू र ॥ श० ॥ सा० ॥ ९ ॥ अर्धचंद्र बाणे अर्जुने, ध्व जा छत्र दाढि मुछ ॥ श० ॥ जयद्रथना तव छेदिया, तव मुंडो पडयो ते भूच ॥ श० ॥ सां० ॥ १० ॥ मा त वचन संभारिने, जीवतो मेल्यो जयद्रथ ॥ श० ॥ लुंण हरामी जे हुए, ते स्यो साधे अर्थ ॥ श० ॥सां० ॥ ११ ॥ गुणसागर कहे सांभलो, ए कही ढाल रसा

रु ॥ श० ॥ टाल्यो केहनो नवि टले, जेहने जेहवो हु
ए ढाल ॥ श० ॥ सां० ॥ १२ ॥

दुहा ॥ सुजानी परे कुटियो. मुछ अने शिर केस ॥
बाण संघाते कापिया, भांड कियो सुविशेस ॥ १ ॥

ढाल तेहिज ॥ जगकमल वंशी जायोरे बाला, शा
म मेरो जागशे ॥ ए देशी ॥ देवऋषि एक दिवस आ
यो, करण अति उपकाररे ॥ पांडवाशुं प्रगट भांखे,
कौरवां अविचाररे ॥ दे० ॥ १ ॥ भोर भोर पणुं नव
छांडे, प्रत्यक्ष देख्यो एहरे ॥ कष्ट थकी छोडाइ आ
णे, ग्रह्यो अवगुण तेहरे ॥ दे० ॥ २ ॥ आगथी उगा
रीया अहि, साह पाम्यो त्रासरे ॥ सिंह आखी समा
धी किधा, वैद्य पुत्र विपनाशरे ॥ दे० ॥ ३ ॥ दूध दि
धो साप मुखे, गरल हुवे जेमरे ॥ आधमे उपगार करी
यो, होइ जाइ तेमरे ॥ दे० ॥ ४ ॥ उत्तमा उपकारनी
मति, कियां अपर करंतरे ॥ कियांहिथी निच न करे,
अछतो द्वेप धरंतरे ॥ दे० ॥ ५ ॥ विंदुनो तो सिंधु
जाणे, साधु जे ससनेहरे ॥ सिंधुनो तो विंदु माने,
निच माणस जेहरे ॥ दे० ॥ ६ ॥ शेप नागछे सहस फ
णपति, जीह्या दोइ हजाररे ॥ वर्णवेजो निचनी गति,
तोहि न लहे पाररे ॥ दे० ॥ ७ ॥ गज अंकुश दिपत
माही, नावा नीर मझाररे ॥ करी तोपिण निच आगे,
हारीयो किरताररे ॥ दे० ॥ ८ ॥ चद्रने जे करी कालि
मा, भूलीयो भगवानरे ॥ निचनो मुख करत कालो,

वाधतो थो वानरे ॥ दे० ॥ ९ ॥ दशादिसा थेइ अठे
दाधी, कहे दुर्वासा शापरे ॥ लाखने रस सरिखो करे,
देइ राखी गपरे ॥ दे० ॥ १०॥ व्याप विसनो वांधी
मूकी, करे रही विधायरे ॥ निचनी तो जीन परगुण,
कही न सके न्यायरे ॥ दे० ॥ ११ ॥ हेतु तो कह्या
में नव, कौरवा समझायरे ॥ घडेतो चोपडे गंटो, ला
गतो न देखायरे ॥ दे० ॥ १२॥ सभामाही अति उ
छाही, बे प्रवाहे वयणरे ॥ भांखे भोले स्वजन टोले,
कियो अधिक कुवयनरे ॥ दे० ॥ १३ ॥ पांडवने ह
णे जे नर, लहे आधो राजरे ॥ पुरोहित सुत ग्रह्यो
बिडो, करे विप्र अकाजरे ॥ दे० ॥ १४ ॥ प्रौढ वि
द्या नामे कृत्या, करे साधन साररे ॥ सवल दल बल
साजी सुंदर, अठे आवणहाररे ॥ दे० ॥ १५ ॥ क
री मसुरती सभा विसर्जी, चिंतवे चित चावरे ॥ अ
ति उपद्रव्य हरण जाणो, तप तणो सुप्रभावरे ॥ दे०
॥ १६ ॥ काउसग्ग करंत सघला, धरे श्री जिन ध्यान
रे ॥ सूरने सनमुख निश्चल, रह्या मेरु समानरे ॥ दे०
॥ १७ ॥ वोलीया इम दिवश साते, ध्यानसु धीरे
गातरे ॥ आठमे दिन दिशाने मुखे, उठीयो अति वातरे
॥ दे०॥१८॥ घणा हाथी घणा घोडा, घणा रथ घणा लो
करे ॥ उदधीना कल्लोलनी परे, सवल दल वल योग
रे ॥ दे० ॥ १९ ॥ आइया तव ध्यानमांथी, वहु सासु
दोयरे ॥ घाली रथमें लेइ चाल्या, नारी जोर न कांइरे

॥ दे० ॥ २० ॥ तिहां वृकोदर इंद्र नंदन, समर सुर स काजरे ॥ मात वछल पिसुन पिफा, उपजेछे आजरे ॥ दे० ॥ २१ ॥ कसाघाते घणुं हणता, पिपफी पाडतरे ॥ ताम ते तो असुररुपी, तरशसु तार्म्मतरे ॥ दे०॥२२॥ दिन वचन विचारी वीरा, पुहवी धावतरे ॥ आप आ पणे आयुधासु, उल्लहसंता आवंतरे ॥ दे० ॥ २३ ॥ पिसुन नाठा जाइ त्राठा, कोन सामो होइरे ॥ विघन ट लीयो देव वलीयो, धर्मथी जय जोइरे ॥ दे० ॥२४॥ आठावीस सोमी ढालमांही, पुरोहित सुत शेसरे ॥ श्रीगुणसागर सूरि साखी, हुवो हिया सोसरे ॥दे०॥२५॥

दुहा ॥ तृपा व्यापी अति आकरी, खेद करंता नूर ॥ आया ते सरोवर चली, पिधो जल नरपूर ॥ १ ॥ जल पियो तृपता हुया, तरु तले ले विश्राम ॥ मुर छाए धरणी पड्या, नाकी न लाने ताम ॥ २ ॥

ढाल १२९ मी ॥ रतनशी गुरु गुण मिठडारे ॥ ए देशी ॥ पुठे आवी द्रोपदीरे, मृत्त रुपी पड्यो कंत ॥ देखी अकुलाणी घणीरे, आरती अति व्यापंत ॥ १ ॥ रे रे देव कुलक्षणारे, किस्युं कुसहज्यो अंग ॥ पडी यामें पाडे घणुरे, करतो रंग विरंग ॥ रे० ॥ २ ॥ एतले आवी नीलडीरे, पंचालीनी पास ॥ पूबणाहारी ए जेतलेरे, सोर मच्यो आकाश ॥ रे० ॥ ३ ॥ करती आडंबर घणोरे, धरति रुप कराल ॥ कृत्या नामे ए राक्षसीरे, आइ गइ ततकाल ॥ रे० ॥४॥ नीलणी

भांखे मुण भामनीरे, एहनो क्रत्या नाम ॥ केडे ला गी ए जेहनेरे, तेहनो फोडे ठाम ॥ रे० ॥ ५ ॥ काति काढी तव कापवारे, लागी काया जाम ॥ कामनि तो अति कपतिरे, वाणी वदे अभीराम ॥ रे० ॥ ६ ॥ स हणहारोतो को नाहेरे, देवी तुमारो कोप ॥ तो स्या माटे इम कीजीएरे, मर्यादानो लोप ॥ रे० ॥ ७ ॥ मु वाने शुं ए मारिएरे, कांइ देवि देखोरे विमास ॥ एम सुणी अंबरे गइरे, करती हड हस हांशरे ॥ रे० ॥ ॥ ८ ॥ राणी नवि रहे रोवतिरे, जाणी मूवा भरतार ॥ विण भरतारा भामनीरे, पामे दुख अपार ॥ रे० ॥ ॥ ९॥ आंसु लुहिए आंखनारे, भीलीणी भांखे सार॥ सुख दुख आपद संपदारे, लागी डोले लार॥ रे० ॥ ॥ १० ॥ उगे आडंबर घणेरे, आथमता नहि वार॥ दोय अवस्था भोगवेरे, दिन मांहि दिनकार ॥ रे० ॥ ॥ ११॥सरखो न रहे सरवदारे, ग्रहगण नायक चंद ॥ एक पखवाडे वाधतोरे, वीजे थाए मंद ॥रे०॥१२॥ लेहरी वाधे जिम सायरारे, तिमही घटती जाय ॥ जे हवो माणस-बज वजेरे, तेहवो सिलो थाय ॥ रे० ॥ ॥ १३ ॥ सब दिन न हुवे सारिखारे, झूठो जग व्यव हार ॥ रोया राज न पामिएरे, उद्यमनो अधीकार ॥ ॥ रे० ॥ १४ ॥ मणी कालि सरीता जलेरे, सिचि सि चि पिउ देह ॥ मुर्छा मीटजासे सहिरे, बेठा थाशे एह ॥ रे० ॥ १५ ॥ पात्र भरी पाणी तणोरे, पदमनी पो

खे प्यार ॥ आलस मोडी उठियारे, नारी कह्यो सुवि च्यार ॥ रे० ॥ १६॥विसमय पाम्यो पांडवांरे, एतो अ चरिज कोय ॥ एतले प्रगट्यो देवतारे, परम महा सु ख होय ॥ रे० ॥ १७ ॥ सुर भांखे स्वामी सुणोरे, हुं हुं पामर देव ॥ तूठो तप बलि तुम्ह तणेरे, आयो कर वा सेव ॥ रे० ॥ १८ ॥ कृत्या कृत्य निवारवारे, माहा रां कीधा काज ॥ ए सघलाहि जाणजोरे, जग मोटो जिनराज ॥ रे० ॥ १९ ॥ समय समरवो हुं सहिरे, ब हुली करी अरदास ॥ आभूपण आपी घणारे, देव ग यो आकाश ॥ रे० ॥ २० ॥ एगुणतिस सोमी ढालमे रे, पाप नाठा जाणय ॥ श्री गुणसागर सूरिजीरे, पांम्व पुण्य प्रमाण ॥ रे० ॥ २१ ॥

दुहा ॥ विविध प्रकारे रसवाति, अति रसवाति अ पार ॥ आपण काजे निपानि, आइ गयो अणगार ॥ ॥ १ ॥ भाव घणो आदरपणो, प्रति लाभ्यो ऋपी रा य ॥ पांच दिवस सुहामणा, जय जय शब्द सुणाय ॥ ॥ २ ॥ बोले शासन देवतां, संवछर ए बार ॥ पोहतो वरस ए तेरमो, गुप्त पणानो सार ॥ ३ ॥

ढाल १३० मी ॥ वली नकुल कहे सुणो वात॥रा जाजी, गोधीक नामे तिहांजी ॥ थइ अश्व पालक अ भीराम राजाजी, रहेसुं अश्वशाल होशे जिहांजी ॥ ॥ १ ॥ वली बोल्यो तिहां सहदेव ॥ रा०॥ गोविंद नामे गोवालीउजी,करशुं गोपालानुं काम॥रा०॥निश्चय लाभ

ए वाते निहालियोजी ॥ २ ॥ वली दौपदी कहे सुणो वात ॥ रा० ॥ हुं तिहां सैरंध्री नामे सहिजी, रहेसुं सुदर्शना राणिने पास॥रा०॥ तेहने रिझवसुं सेवामां रही जी ॥ ३ ॥ अंगिकारे निज निज काम ॥ रा०॥ निज निज वेष धारीनेजी, पोहोता विराट नगर नजिक, श्रोताजी, परखी नहि नर नारिनेजी ॥४ ॥ तेतो आव्या नगर समीप, श्रोताजी, शस्त्र शशिकोट कोटमा ध रयाजी॥ तेहनो भेद न जाणे कोय श्रोताजी, कल्पांत जोए तेहवां करयांजी ॥५॥ ते सहुणे पुरमां किध प्रवे श ॥ रा० ॥ राज धारे जूदा जूदाजी. विराटे आपी बहु मान ॥रा०॥ निज निज कामे थाप्या सूधाजी ॥ ६ ॥ सर्वे सुखे समाधे तेह, श्रोताजी, रहेवे विराटना राज मांजी ॥ कोइ दुहवे नहिं तिलमात्र, श्रोताजी, साव धान निज निज काममांजी ॥ ७ ॥

दुहा ॥ चोरि नाम ए आपणां, मत्र देशमें जाय॥ वयराटा राजा घरे, रहीयां पांडव राय ॥ १ ॥

ढाल तेहिज ॥ इणपुर कंबल कोइ न लेशी ॥ ए देशी ॥ कंक विप्रनो नाम धरावे, राजाजी अहंकार रखावे ॥ भीम रसोइदार सुहायो, वृहनटा हरिनंद कहायो ॥ १ ॥ नकुल निरोपम नाम धरायो, ग्वाल तणी मति तो लहु आरयो ॥ पंचाली सैरंध्री दासी, मा जी राख्या आला रासी ॥ २ ॥ नगर तणे परीसर जब आवे, पितृवने हथीयार छिपावे ॥ समीत त

णा तरु उपर ठावि, ग्वाल सकल भय वात बतावि ॥ ३ ॥ समो पिछाणे सोइ भाटी, मुढ विचाले मारे आंटी ॥ चतुर शिरोमणी पांचे भ्राता, एकांते मूकी निज माता ॥ ४ ॥ वयराटा घर चाली आया, निज निज कामे सयल लगाया ॥ पुछंता ए उत्तर पाया, पांडव घर हम आप सवाया ॥ ५ ॥ पांडवजी तो अछे वनवाशी, तेह थकी हम फिरा उदाशी ॥ राजा भांखे भाग्य हमारो, दरशण लाधो आज तुमारो ॥६॥ सुखमे रहिए ए घर संपे, अछे तुमारो राजा जपे ॥ प्रात समे भाजीने वंदे, शीख लहि सहुए आनदे ॥ ॥ ७ ॥ सुदर्शना नामे पटराणी, वीर घणानी बहिन कहाणी ॥ छिडोत्तर सो किचक भाइ, नृपने सालानी अधीकाइ ॥ ८ ॥ जेमल नामे दूत विकराल, दुर्योधन मेल्यो सुविशाल ॥ पांडवानी जे खबरज लावे, लाख पसाय अनोपम पावे ॥ ९ ॥ चाल्यो दूत करीने जुहार, लावुं खबर वेगे तुमलार ॥ गाम नगर पुर जोतो रंगे, मांगे जंग ए नूपति संगे ॥ १० ॥ लावो मुज पासे लक्षा दूतो, शक्ति न होय तो बांधीयो पुतो ॥ वडा बडा इम नूपती जीती, लेतो दान सहा बल शेती ॥ ११ ॥ मछ देश वैराटो राजा, पुरी सभा अधीक दिवाजा ॥ बेठो नूपती परखद्या पूरी, कंकविप्रसुं सभा सनूरी ॥ १२ ॥ आयो जेठी तिहां क ... सभा जाकझमाली ॥ उभो रायने करीय

जुहार, राजा पूछे कवण विचार ॥१३॥ सुण स्वामी हथी णापूर नूप, दुर्योधननो दूत अनूप ॥ देश देशना जीती राणां, आव्यो आप मनावी आणा ॥१४॥ होय बलीयो कोइ मुजने साधो, नहीतर पुतलुं पाए बाधो ॥ किचक तव सुणीए वल घाल, उठ्यो कोप करी विकराल ॥१५॥ आयो नूपती हाली चाली, दूते फंगोल्यो पाए जा ली ॥ कंकनणे बालीयो बलवंत, खाय घणुने छे मय मत ॥१६॥ स्वामी जो इहांकण आवे, देश सहूनां पुतलां छोडावे ॥ राजाए तव पुरुपज मेल्यो, सुतो भीम उठावे हेजो ॥१७॥ चालो स्वामी राय बोलावे, कंक विप्र तुम वात वणावे ॥ खाई अन्न खुटाडा कोस, एम वात कहे- तिहां जोस ॥ १८ ॥ लेइ चाटवो उठ्यो जाम, धरती धणवा लागी ताम ॥ चाली आयो सन्ना मजार, देखी दूतने हरख्यो अपार ॥ १९ ॥ आवी कंक पाए शिर नाम्युं, पछी जोयुं जेमल जेम सामुं ॥ इहां ए जो ध किहांथी आव्यो, स्या पुतलां पगे बांधी लाव्यो ॥ ॥ २० ॥ इहां आइने बाकरी वाइ, नही जीवतो जा ए नाइ ॥ एम कही मांहो मांही वलग्या, लोग सहु जुवे जइ अलगा ॥ २१ ॥ वागे हाथ उठे पडछंदा, खमेडे मोल नासे नर टंदा ॥ लात प्रहारे प्रथवी पि ण धुजे, उडे खेह सूरज नवी सुजे ॥ २२ ॥ उठी क चेरी राजा पिण नाग्यो, पडीयो मल्ल नुजाबल ला ग्यो ॥ एतो पांडव नीमजी दिसे, एम विच्यारयो वि

श्वा बिसे ॥ २३ ॥ जाएयो भीम तणो भडवाय, क
ह्यो मुख थकी एम वाय ॥ भीम करंतो जाणी गाढो
भीमे पछाडी पाड्यो ठांढो ॥ २४ ॥ भीसे सोमी
ले भणीयो, भीमे मल्ल महा बल हणीयो ॥ श्रीगु
सागर सूरि वदीतो,पुण्ये पांरुव जगजस जीत्यो ॥२५

दुहा ॥ एक दिवश परीवारशुं, किचक नासे भूप
वेन तणे घर आवीयो, दिठो सैरंद्री रूप ॥ १ ॥ व
न भणी एम पूछीयो, ए कुण नारी होय ॥ किहां
की आवी अछे, रूपे रंभा सोय ॥ २ ॥ जे आपण
र वालीयो, तेह तणी ए नार ॥ रहेछे मुझ आगले
दाशीपणे सुविच्चार ॥ ३ ॥ लाज तजी निरलजपणे
बहीन भणी कहे एम ॥ एकवार मुझ मंदिरे, मोक
ज्यो धरी प्रेम ॥ ४ ॥ वात मतकर ए भाइजी, करत
होय अकाज ॥ शिल न लोपे सुंदरी, एहनो पती
रताज ॥ ५ ॥ राय वैराटे इम कह्यो, ए कोइ कार
रूप ॥ रूडी रिते राखज्यो, भलावी मुझ भूप ॥ ६

ढाल १३१ मी ॥ रामचंद्रके बागमे ॥ आंबो म
री रह्योरी ॥ ए देशी ॥ उठी चल्यो तब राय, मनम
रिस घणेरी ॥ तेडाव्योरे खवास ॥ करे वात बुरे
॥ १ ॥ एकली देखी जो नार, कहेज्यो हेत धरीरी
शुं करशे मुझ राय, पाडुं लाज खरीरी ॥ २ ॥ ए
दिवस नृपनार, रती खेल भणीरी ॥ आवे वन उद
[illegible]

आव्यो अश्व चडीरी ॥ फिरता वन आराम, सैरंध्री द्रष्टे पडीरी ॥ ४ ॥ सतीशुं आय नखंत, चालो मुझ घरेरी ॥ हुं जग मोठो राय, सहु मुझ आण धरेरी ॥ ५ ॥ आपु नवलख हार, चोकी रत्न जडीरी ॥ करी थापु पटनार, तुझशुं प्रित खरीरी ॥ ६ ॥ बोली चटक लगाय, फिट कुबद्धी शुं लवेरी ॥ बालुं तारो राज, आगे शियल हवेरी ॥ ७ ॥ आव्यो चाबख लेइ, किचक कोप करीरी ॥ बेन सुदर्शणां ताम, आवी आडी फिरीरी ॥ ८ ॥ बाइ ए वारो वीर, इम किम काम करेरी ॥ एतो निरलज दास, एहने कुण वरेरी ॥ ॥ ९ ॥ मोटी राजकुमार, परणावुं वरनारी ॥ रहवा द्यो एहथी हठ, एहनी जात न सारी ॥ १० ॥ एक वार मुझ हार, आपे नेह धरीरी ॥ पूरु मन तणी खांत, न करुं आश फिरीरी ॥ ११ ॥ बहीन भणे सुण वीर, तुं मति चिंता करेरी, होशे धीरे काज, जाउ आप घरेरी ॥ १२ ॥ हरखाणो तव राय, होशे काम भलेरी ॥ हुवो विकल नरेश, लाग्यो तास पलोरी ॥ ॥ १३ ॥ एकत्रीसा सोमी ढाल, गुणसागर एम भाषी ॥ लेशे दुःख अघोर, पापी पाप प्रकाशी ॥१४॥

दुहा ॥ एक दिवस राणी राउली, निपजावी पकवान ॥ गोत्रज तणी पूजा करी, आपी सहुने मान ॥ ॥ १ ॥ पात्र कर धरी प्रेमदा, किधो सैरंध्री साद ॥ मंदिर आपो मारा वीरने, गोत्रज तणो प्रसाद ॥२॥

माजी किम मने मोकलो, शुं नथी जाणता वात ॥ काल एणे तुम देखतां, करयो घणो उतपात ॥ ३ ॥ दूध देखी मंजारने, हुवे लालच जेम ॥ न गिणे लाज पर नारनी, लंपट माणस तेम ॥ ४ ॥ बाइ न केशे तुजने. में वारयो छे एह ॥ नाम लीए जो ताहरुं, तो टलि आवजे गेय ॥५॥ परवश प्रेमदा शुं करे, लेइ चाली ते पात्र ॥ आव्यो घर जव ढुंकडो, थरहर कंपे गात्र ॥६॥

ढाल १३२ मी ॥ श्री रामजीए नारी गमाइ, सीता शुध न पाइजी ॥ ए देशी ॥ द्रोपदी मनमां जोयु विमाशी, किचक कुबुद्धी पूरोजी ॥ एकलडा जाता इणे मंदीर, रहे किम शियल सनूरोजी ॥ द्रो० ॥ १ ॥ एम ऊपाती आवी बाला, किचक तणे आवासजी ॥ दिधुं पात्र दूरथी उभी, लीधुं हाथ खवासजी ॥ द्रो० ॥ २ ॥ मेली थाल वली जव पाछी, किचक आयो पूंठजी ॥ रे उभी रंडा किहां जाइस, वाणी वदे इम जूठजी ॥ द्रो० ॥ ३ ॥ पामी त्रास ते सभा सनमुख, नारी नाठी जायजी ॥ आवी उभी राजा शरणे, कामी केडे धायजी ॥ द्रो० ॥ ४ ॥ कंक वीप्र देखंता मारी, नारी लाते तामजी ॥ वैराटने सर्व सुभट जोतां, कीधी सभा गत मामजी ॥ द्रो० ॥ ५ ॥ नाथ प्रते इम वदे वाणी, छोडावो माहाराजजी ॥ ए पापीडो मुझने पीडे, मूकावे मुझ लाजजी ॥ द्रो० ॥ ६ ॥ कंक भणे वैराट सभानी, लाज लेइ मछरालजी ॥ इम नीसु

णी राय झंखाणो. हाकलियो नृपालजी ॥ द्रो० ॥७॥ आज मुकुं तुझने जाणी, काले तारी वातजी ॥ आ ए वह माहरी राय राणा, आज घणी आख्यनजी ॥ द्रो० ॥ ८ ॥ एम कहीने वल्यो पाछो, गयो निज आ वासजी ॥ पंचाली तिहांथी आवी, भल्लरालीनी पा सजी ॥ द्रो० ॥ ९ ॥ राणी आगल किधुं सघलुं, हि युं फाटतां रोयजी॥ अम देश तो सहु उजड थइ, सार न लीए कोइजी ॥ द्रो० ॥ १० ॥ अनेकपरे आशासनां दिधी, राणीए रोती राखीजी ॥ कहेतां माहरा दांतज घाटा, छे मुझ अंतर साखीजी ॥ द्रो० ॥ ११ ॥ ते दिन दोहीलो गयो रामाने, रात पडी जे वारजी ॥ अवसर लेइ आवी एकाकी, विनवीयो भ रतारजी ॥ द्रो०॥१२॥ किचके मुझने एणीपरे भाख्यो, आणीश तारो अंतजी ॥ आतम घात करु ते पेहेली, तिण कारण मुझ कंतजी ॥ द्रो० ॥ १३ ॥ में विन वाया गोद बिछाइ, तुम तणा वड वीरजी ॥ ते पि ण सांभली हेवुं घाल्युं, करी नही मुझ भिरजी ॥ द्रो० ॥ १४ ॥ भीम भ्रकुटी भाले चडावी, वचन वदे सुण नारजी ॥ एतला दिन आपण दुःख लिधा, ते धर्म तणो उपगारजी ॥ द्रो० ॥ १५ ॥ मुझ आणाए एत लो कीजे, किचक भणी तुम जायजी ॥ आपणे दोय एकांते मिलशुं, करी मतो एकठायजी ॥ द्रो०॥१६॥ कंत तणे आदेशे आवी, वात न जाणे कोइजी ॥ सो

लश्रृंगार सज्या तनुं सुंदर, पेख्या दरपण जोइजी ॥ ॥ द्रो० ॥ १७ ॥ मारग जातां किचके दिठी, बाली झाकझमालीजी ॥ कामातुर अकुलाणो राजा, फेरी कोट निहालीजी ॥ द्रो० ॥ १८ ॥ दिवश रात हिंडु तुम्ह जोतां, लागी लेह तुमारीजी ॥ आज मनोरथ थया पूरण, किधी सार अम्हारीजी ॥ द्रो० ॥ १९ ॥ मुख पंचाली वायक बोली, सुणो सुभट एक वातजी ॥ कोइ मंदिर देखाडो एकांते, तो रमीए तुम संघातजी ॥ द्रो० ॥ २० ॥ हिंमोला खाट झबुके उंची, मणीमय मारा आवासजी ॥ आवज्यो रात समे तुम राणी, जिम पूगे मुज आसजी ॥ द्रो० ॥ २१॥ इम संकेत करीने चाल्यो, किचक नीज आवासजी ॥ भामनीए सहु वात प्रकाशी, भीम भणी उल्हासजी ॥ द्रो० ॥ २२ ॥ ए बत्तिस सोमी ढाले, वात जणावी तासजी ॥ श्री गुणसागर सूरि प्रकाशे, जो जो कुविसन विनाशजी ॥ द्रो० ॥ २३ ॥

दुहा ॥ भीम भणे सुण भामनी, आप सुरंगो वेश ॥ थाशुं किचकनि कामनी, हुंश धरी सुविशेश ॥ ॥ १ ॥ देइ आलिंगन एहने, पोचाडुं जम लोक ॥ तो तुं मुजने जाणजो, भीम तणो बल रोक ॥ २ ॥ आज पछी कोइ नारीनो, नाम लिए नही तेह ॥ खोडा मंजार तणीपरे, भमतो राखुं एह ॥ ३ ॥

ढाल १३३ मी ॥ समुद्र विजय सुत चंदलो, सांभ

लीयाजी ॥ ए देशी ॥ रात समे नड नीमजी ॥ मन मोहन॥। स्नान करी सुची देह ॥ लाल मन मोहना ॥ केस समारया कामनी ॥ म० ॥ घाली फूलेल सनेह ॥ ला० ॥ १ ॥ सेंथो लाल सुहावीयो ॥ म० ॥ नक वेसर रुडी नथ ॥ ला० ॥ निलवट मोती पूरियो ॥ म० ॥ सोवन चुडी हथ ॥ ला० ॥ २ ॥ बाह मनोहर कंचुकी ॥ म० ॥ मस्तक ओढ्यो चीर ॥ ला० ॥ पग पीतांबर ढलकतो ॥ म० ॥ झणके नेऊर गुहिर ॥ ला० ॥ ३ ॥ नाख्यो कंठे लहकतो ॥ म० ॥ पंचाली उर नो हार ॥ ला० ॥ हसी बोली एम नामनी ॥ म० ॥ तुम जीती जग नार ॥ ला० ॥ ४ ॥ नारी वेश नीमे कर्यो ॥ म० ॥ करवा किचक संग ॥ ला० ॥ चाल्यो मध्य बजारथी ॥ म० ॥ लटके जोतो अंग ॥ ला० ॥ ॥ ५ ॥ आव्यो किचक मंदिरे ॥ म० ॥ दिठो अनो पम घाट ॥ ला० ॥ मोती झुंबख बांधीया ॥ म० ॥ लटके हिंडोला खाट ॥ ला० ॥ ६ ॥ असुर थाशे आवतां ॥ म० ॥ सुवुं वार लिगार॥ ला०॥देइ गीर नीते पोढियो ॥ म०॥चरणे चांपी किमाड ॥ला०॥७ ॥ एट ले किचक आवियो ॥ म० ॥ पेरी तनुं शिणगार ॥ ॥ ला० ॥ पेठो मंदिर एकलो ॥ म० ॥ सेवक रहियो वार ॥ ला० ॥ ८॥ लालच धरतो आवियो ॥ म० ॥ मोहनी मोटो बंध ॥ ला० ॥ दिपक देखी पतंगीयो ॥ ॥ म० ॥ पडीयो तिम मती अंध ॥ ला० ॥ ९ ॥ आ

ज सफल दिन माहरो ॥ म० ॥ करतो मन सुविचार ॥ ला० ॥ आवी अवाशे ऊनो रह्यो ॥ म० ॥ कर सुं कूट्यो द्वार ॥ ला० ॥ १० ॥ बोलावी बोले नहि ॥ म० ॥ एहनुं पूछी ते शीश ॥ ला० ॥ ऊठो ऊठो न ऊे तुमे ॥ म० ॥ साद किया दश विस ॥ ला० ॥ ॥ ११ ॥ किमाड कठीन खडखडावीयुं ॥म० ॥ तव सां ऊल्युं शुं यार ॥ ला० ॥ चरण संकोचा आपणा ॥ ॥ म० ॥ राय उघाड्यो द्वार॥ला०॥१२॥पोल देइने प रवरयो ॥ म० ॥ खोलतो खुणा चार ॥ ला० ॥ खिड की मंडप ऊसरी ॥ म० ॥ नवि दिठी त्यां नार ॥ ला० ॥ १३ ॥ एम सघले जोतां थकां ॥ म० ॥ किचके दि ठो सोय ॥ ला० ॥ कुण कुबुद्धी इहां आवीयो ॥ म० ॥ ए तनु नारी न होय ॥ ला० ॥ १४ ॥ ऊीम मधुर ए म बोलियो ॥ म० ॥ आवो कंत सुजाण ॥ ला० ॥ वार घणी मुऊने थइ ॥ म० ॥ नाथजी जीवन प्राण ॥ ला० ॥ १५ ॥ एम कही ऊठ्यो ऊीमडो ॥ म० ॥ कि चक पाडी चीस ॥ ला० ॥ हा हा हिवे हुं नहीं करुं ॥ ॥ म० ॥ मूको मुऊने इश ॥ ला० ॥ १६ ॥ कर झाली ने पटकियो ॥ म० ॥ करतो आक्रंद साद ॥ ला० ॥ ऊीम ऊणे परनारसुं ॥ म० ॥ वली करजो उन्माद ॥ ॥ ला० ॥ १७ ॥ मारी कीधो कोथलो ॥ म० ॥ शिर चांप्युं धड मांहि ॥ ला० ॥ किचक परतक्ष पामीयो ॥ म० ॥ पाप तणां फल प्रांहि ॥ ला० ॥ १८ ॥ ऊीमे

ाम वीच्यारियो॥ म० ॥ ए नृत्य केली साल ॥ ला० ॥
ानुर विद्या इहांकण नपे ॥ म० ॥ देखी निये वाल
। ला० ॥ १९ ॥ भारवट भार ऊंचो करी ॥ म० ॥ चां
ियों ते साय ॥ ला०॥ पुनरपी भीम वीचारीयो ॥ म०
रखे जाणे कोइ आय ॥ ला० ॥ २० ॥ रक्त तणी स
ीका भरी ॥ म० ॥ भारोट लीखीयो नाम ॥ ला० ॥
ाजा वात जणाववा ॥ म० ॥ त्रण अक्षर तिणी ठाम
ला० ॥ २१ ॥ काम करी किचक तणो ॥ म० ॥ भी
गयो निज थान ॥ ला० ॥ सकल संबंध आवी
ह्यो ॥ म० ॥ नारी भणी बहु मान ॥ ला० ॥ २२ ॥
तीसासोमी ढालमें ॥ म० ॥ श्री गुणसागर जोय ॥
ला० ॥ किचक प्रत्यक्ष पापीयो ॥ म० ॥ कीधाना
ळ सोय ॥ ला० ॥ २३ ॥

दुहा ॥ राय कचेरी आवियो, पूरी सभा अभी
ाम ॥ किचक भाइ सहु मिली, बेठा करी प्रणाम ॥
१ ॥ राजा पूछे सादरो, तुम बंधव गुण खाण ॥ ह
ाणा अमे दिठा नथी, कुण कारण राजान ॥ २ ॥
ाम भाइ काले चभी, गया हता कांइ बार ॥ राते
ाण आव्या नथी, अम मंदिर निरधार ॥ ३ ॥ राये
ावक मूकीयां, किचक तणे दरबार॥पूछे जइ सा ना
ाने, किहां छे तुम भरतार ॥ ४ ॥ सांझ समे शोभा
ारी, तेडी शेवक साथ ॥ गया पूछ्या विण मुझने,
जी नवि आव्या नाथ ॥ ५ ॥

ढाल १३४ मी ॥ सोइ सयाणो जे अवसर साधे ॥ ए देशी ॥ किचक भाइ मिली सब आवे, राजासुं एम वात सुणावे ॥ हजीय न आव्या किचक राय, राजाजी मन चिंता थाय ॥ कि० ॥ १ ॥ शेवक तेडी पूछयो अभीराम, ठाकुर तुमारा गया कुण काम ॥ नृत्य तणी साला नरनाथ ॥ तिहां सुधी हता अमे सहुसाथ ॥ कि० ॥ २ ॥ पछी अमने शिखज आपी, आप एकीला गया थिर थापी ॥ द्वारपाले पिण एम ज भाख्यो, निकलतां वार अमे नवी भांख्यो ॥ कि० ॥ ३ ॥ राजा शोध करेवा रंगे, उठ्यो सुभट लेइ बहु संगे ॥ घर घर शेरी चोक मझार, जोतां न लाधो शोध लिगार ॥ कि० ॥४ ॥ बेहेन सुदर्शणा वात ए जाणी, भाइ न लाधो होइ विराणी ॥ नृत्यशालाए आवे सहु साथ, पग न लाभे जोतां नरनाथ ॥ कि० ॥ ॥ ५ ॥ धरति विवर दिठो तिणे ठाम, दिसेछे इहां थयो संग्राम ॥ भारोटे अंक दिठा अति राता, बेन भणे इहां सही मुझ भ्राता ॥ कि० ॥ ६ ॥ मुहता प्रधान तेडावी राजा, वंचवे सहि अक्षर ताजा ॥ वाचंता एम विचारे सुजाण, में मारयो एम कहे कुण वाण ॥ ॥ कि० ॥ ७ ॥ एतले राय आवी एम वाच्युं, में मार्यो मुख कहे तव साचुं॥राणी आंखे नाखे बहु नीर, तुमे मारयो दिसे मुझ वीर ॥ कि० ॥ ८ ॥ कोएक पाप उदय थयो आज, किचक तणो एम थयो अकाज ॥

एणे सैरंद्री सन्ना मांही मारी, मृत्यु हुवो एम रा
य विच्यारी ॥ कि० ॥ ९ ॥ वालीयो आद मिल्या सहु
लोग, जारोट अलगो कियो वल योग ॥ काढ्यो कि
चक मिली बहु साथ ॥ देखी राणी जीब्यो लेइ बा
थ ॥ कि० ॥ १० ॥ वेन जाइनो अंग निहाले, तिम
तिम आंखे आंसुडा ढाले ॥ वात विविध प्रकारे दा
खी, सहु मिली एम रोती राखी ॥ कि० ॥ ११ ॥ जा
इ मिली सुविचारण किजे, सैरंद्रीने साथे दहीजे ॥
एह थकी किचकनो नासो, सती किहां पामे घर वा
सो ॥ कि० ॥ १२ ॥ शवका किचक काज ए किजे,
केस ग्रही सैरंद्री लीजे॥थरहर थरहर ध्रुजे सोइ, जीम
कहे चिंता नही कोइ ॥ कि० ॥ १३ ॥ कुरु कुरु करी
किचक कागा, सैरंद्रीने नाखण लागा ॥ जीम जूजा
बले वृक्ष उखाली, किचक बंधव मारया वाली ॥
॥ कि० ॥ १४ ॥ बांधव शोक करंत सरोखी, राजा ए
राणी संतोखी ॥ एका किना ए जे काजो, गेव्यो तो
ए विनाशे राजो ॥ कि० ॥ १५ ॥ डोकरडी घर वाघ
ज पइठो, एह उखाणो परतक्ष दिठो ॥ एतो आग
न तरे देखाया, हाथशुंरे उल्हाशी जाय ॥ कि०॥१६॥
एतो कोएक उठी उपाधी, साध नही ए रोग असा
धी ॥ मुकने तो आयो जोगवणो, काठावे नृप पद जो
गवणो ॥ कि० ॥ १७॥ जूर जालमे हुंहुं पडीयो, सिंह
तणी शिकारे चडीयो ॥ मसली पेट उपाए पिडा, सा

प संघाते मांडी क्रिश्रा ॥ कि० ॥ १८ ॥ काम पखे ए वीर वोलाया, अमृत काजे महा विष पाया ॥ जइ तु राज्यो चाहे चूको, तो मतकर एह कदाग्रह कूडो ॥ कि०॥१९॥ आप भलो जगनु भलुं भावे, आप मुवा जेम बुड कहावे ॥ सो हणीया तस हणता एको, करे किशी ए आणी विवेको ॥ कि० ॥ २० ॥ जे दिन सो दिन आघो लहुंवुं, दिनपणे दिलासा दउबुं ॥ वांभीमानी रही जे राणी, शामाटे त्रोभीजे ताणी ॥ कि० ॥ २१ ॥ चोतीस सोमी ढाले भणीया, भीम किचक सघला हणीया ॥ श्री गुणसागर सूरि वदीतो, शिल पसाए जगजस जित्यो ॥ कि० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ चतुर महाचर चोकशी, फिरी आया प्रभु पास ॥ खबर न पामी पांभवा, सोच घणो चित्त तास ॥ १ ॥ विदुरने भिषम तणो, वदन विलोके राय ॥ प्रथवी सघली शोधतां, पांडव खबर न थाय ॥ २ ॥

ढाल १३५ मी ॥ मेतारज मुनिवर धन धन तुम अवतार ॥ ए देशी ॥ बलवंता पांडव प्रथवी मांही प्रसिद्ध, गुणवंता पाडव प्रगट होसे सो सिद्ध ॥ ए आंकणी ॥ विदुर अने भिषम भणेजी, वाणी अधिक अनूप ॥ पांभवानी सहनाणकाजी, सांभल कौरव भूप ॥ब०॥१॥नीति अनिती न भीतीकाजी, रोग न अधीको सोग ॥ पांभव छे जे देशडेजी, होशे सुखीयां लोग ॥ ॥ ब० ॥ २ ॥ अरिहंता अतिशय जीसाजी, दिशे ग्रं

थ मझार ॥ केतलाएक अतिशय तीसाजी, पांख्वना
सुविचार ॥ व० ॥ ३॥ दूत चलो तो खरोजी, साचो
ए उपमान ॥ मच्छ देश महिमा घणोजी, दिन दिन
चडते वान ॥ व० ॥ ४ ॥ सुशर्मा राजा कहेजी,
एतो सुधी वात ॥ नगर तणी गौ वालवेजी, पांडव प
रगट थात ॥ व० ॥ ५ ॥ खुणश हमारी छे खरीजी,
वैराटा नृपसाथ ॥ स्वामी काज समारताजी, सुजस
दियो जग नाथ ॥ व० ॥ ६ ॥ कौरवपति सेना सजी
जी, साथे सहु परिवार ॥ हय गय रथ पायक घणा
जी, चीपमजी पिण लार ॥ व० ॥७॥ घम घम वाजे
घुंघराजी, पाखर जडीया पलाण ॥ उमी रज घमसा
णसुजी, गयण छायो चर चाण ॥ व० ॥ ८ ॥ देखी
दल बल आपणोजी, मुलकाणो मन राय ॥ कुण क्ष
त्री मुझ आगलेजी, युद्धे जीवता जाय ॥ व० ॥ ९ ॥
सुशर्मा दक्षण दिशेजी, जाइ लाग्यो जाम ॥ गौ हर
ता ते ग्वालीयाजी, आइ पूकारयां ताम ॥ व० ॥
॥ १० ॥ क्षत्री सहु चडी चालियाजी, सजी चाथा
कर बाण ॥ पांडव चार साथे हुवाजी, वाग्या ढोल
निशाण ॥ व० ॥ ११ ॥ चला चला चट पाखरचा
जी. संवाह्या अति सूर ॥ नृप हुवो गोवा हरुजी, वा
जीया रण तूर ॥ ब० ॥ १२ ॥ नृप लफ्वे चड लथ
डाजी, चाग्या जाइ चूर ॥ उगंता रवी आगलेजी,
तम जिम नासे दूर ॥ व० ॥१३॥ खीसती जाणी आ

पणीजी, सुशर्मा कोपंत ॥ मोटा जडने मोडवेजी, वै राटो रोपंत ॥ व० ॥ १४ ॥ सुशर्माए बांधीयोजी, वै राटो भूपाल ॥ जोर न चाले कोइनोजी, सोचे बाल गोपाल ॥ ब०॥१५॥ पांडव चारे धाइयाजी, घसमसता धूताल ॥ सुशर्मा खाथो कियोजी, नाठा भड ततकाल ॥ ॥ व० ॥ १६ ॥ मच्छ राय छोडावियोजी, भीम भूजा बल जोय ॥ साथे तो बलीया भलाजी, नबलाथी शुं होय ॥ व० ॥ १७ ॥ हरख धरी तेही स्थानकेजी, रात रह्यो राजान ॥ कंक तणे मुख सांभलीजी, पांडवनो आख्यान ॥ व० ॥ १८ ॥ अधीकामें अधीको घणोजी, सुजस सुणी निज कान ॥ सत्य क रीने सरदहेजी, लीधी सवही मान ॥ व० ॥ १९ ॥ चाकर जेहना एहवाजी, शूर महा सनूर ॥ ठाकुरनो केहवो किस्योजी, दिसे एह हजूर ॥ व० ॥२० ॥ पें त्रिसा सोमी ढालमेंजी, भीमे जणाव्यो आप ॥ श्री गुणसागर सूरि कहेजी, न छपे तेज प्रताप ॥ व०॥२१॥

दुहा ॥ प्रात हुवा कौरवपति, उत्तर दिशानी गा य ॥ वाली वलीया वेगशुं, ग्वाल पूकारया आय ॥ ॥ १ ॥ राजानो सहु रावणो, राजा साथे जोय ॥ उ त्तरा कुंवर एकलो, घर रखवालो होय ॥ २ ॥ बुंबार व श्रवणे सुणी, बोले राज कुमार ॥ म्हारे नहीं कोइ सारथी, करे जणावण सार ॥ ३ ॥ महीलाने माय आ गले, गाल मारतो जाण ॥ सैरंध्री बोली हसी, कुंव

र अरती मत आण ॥ ४ ॥
ढाल १३६ मी ॥ आछेलालनी देशी ॥ तव सै
रंध्री बाल, बोले वचन रसाल ॥ आछे लाल ॥ कुंवर
पे चटक लगायनेजी ॥ १ ॥ अहो कुंवर कहुं तुज,
जुद्ध करणनि बूझ ॥ आ० ॥ तो सारथीछे सोहामणो
जी ॥ २ ॥ ए नरविंदल वेश, छे सारथी सुविशेश ॥
॥ आ० ॥ अद्भुत रुप सोहामणोजी ॥ ३ ॥ हरीनं
दनो रथ आप, खेमतो परम प्रताप ॥ आ० ॥ ते र
थ खेमशे ताहरोजी ॥ ४ ॥ ल्यो तुम एहने संग, हो
से जीत अनंग ॥ आ० ॥ हुंश मतराखीश को हिवे
जी ॥ ५ ॥ हस्तां रोतां एह, आव्यो परुणो गेह ॥
॥ आ० ॥ कुंवरे पुछ्यो सारथीजी ॥ ६ ॥ कहे विंदल
महाराज, एतो आछे काज ॥ आ० ॥ आपणने गौ
वालताजी ॥ ७ ॥ मायने महेलणी पास, पेरी बगत
र तनु खास ॥ आ० ॥ रणरंग रमवा सज्ज थयोजी ॥
॥ ८ ॥ बहीन भणे सुण भाय, जीती कौरव राय ॥
आ० ॥ लावज्यो ध्वज रलीयामणीजी ॥ ९ ॥ एह म
नोरथ आज, सुझ पुतलाने काज ॥ आ० ॥ होशे व
स्त्र सादरोजी ॥ १० ॥ रणमें आयो चाल, देखी द
ल विकाल ॥ आ० ॥ जाणे घटा कादंबनीजी ॥ ११ ॥
अहो बृहनडा बाल, चडीयो मेह असराल ॥ आ०
॥ वाल रथ पाछो घरेजी ॥ १२ ॥ कहे अर्जुन अनू
प, एह दुर्योधन भूप ॥ आ० ॥ एह दल उभा एह

नाजी ॥ १३ ॥ लाख सवा गजराज, देखी पामे घन
लाज ॥ आ० ॥ कालीघटा तेहनी बनीजी ॥ १४ ॥
धरयो दुर्योधन नृप, मेघाडंबर अनूप ॥ आ० ॥ मे
घ समो वड गाजतोजी ॥ १५ ॥ खड्ग न्हाला प्रका
श, विजली सम आकाश ॥ आ० ॥ निलांबर नेजा
न्हलाजी ॥ १६ ॥ ए दल अधिक अलोल, थाइ द्रढता
मनडोल ॥ आ० ॥ तजी कायर सूरीमां नजोजी ॥
॥ १७ ॥ दल कौरवनो जोय, नयाभित हुवो सोय ॥
आ० ॥ हा हा मुझ मारे खरोजी ॥ १८ ॥ अहो ब्रह
नडा बाल, चाल्य घरे रथ वाल ॥ आ० ॥ ए दल
अधिक डरामणोजी ॥ १९ ॥ कहे हरी नद तेवार, रे
कायर शिरदार ॥ आ० ॥ घर आगल शुं फूलतोजी
॥ २० ॥ इहां नही छे सेल, एछे खांडानो खेल ॥आ०
॥ खेल खरो असुहामणोजी ॥ २१ ॥ झूझण लाग्या
सूर, वागीया रणतूर ॥ आ० ॥ सुभट समरमे सज्ज
थयाजी ॥ २२ ॥ पसरियो दल पूर, देखी कुमर घर
नूर ॥ आ० ॥ अंगे छूटी ध्रुजणीजी ॥ २३ ॥ रथथी
पडीयो ताम, नासण लाग्यो जाम ॥ आ० ॥ पारथ
पग पाछो धरयोजी ॥ २४ ॥ हरीनंद साह्यो हाथ,
घाली गला मांही बाथ ॥ आ० ॥ आपणो मरम प्र
काशियोजी ॥ २५ ॥ हुं अर्जुन अभीराम, शिखवुं तु
झ संग्राम ॥ आ० ॥ आज शोभा तुझने देउजी ॥
॥ २६ ॥ छत्रिसा सोमी ढाल, जगमे सुजस विशाल

आ० ॥ गुणसागर पांडव तणोजी ॥ २७ ॥
दुहा ॥ उत्तरा कुमर मन लाजीयो, पाछो फिरयो सं
ग्राम ॥ हाथ जोडी उभो रह्यो, अर्जुनपे अभीराम ॥
॥ १ ॥ खीजडे छे हथीयार वर, धनुष्य बाण उदार ॥
कवच प्रमुख आयुध सहु, तुं जइ लाव्य कुमार ॥२ ॥
आदेश लेइ अर्जुननो, आव्यो ते नृप वन्न ॥ अहि रुपे
आयुध सवे, दिठा तिहां नृप तन्न ॥ ३ ॥ डर आणी
पाछो फीरयो, देखी काला नाग ॥ अर्जुनपें आवी क
ह्यो, कोइ न फावे लाग ॥ ४ ॥

ढाल १३७ मी ॥ साहिबारे मारा मेरु तणी परे
धीर ॥ ए देशी ॥ हरीनंद आपे आयनेरे लाला, ली
धा कर हथीयार ॥ वज्र कवच तनुथी जड्योरे ॥ ला०
॥ उपर साफ्री उदार ॥ १ ॥ चडी आयो लाला, पार
थ प्रबल प्रताप ॥ ए आंकणी ॥ आवी रणने सनमु
खेरे ॥ ला० ॥ पूरयो शंख जेवार ॥ कर्ण आदे सहु
राजीयारे ॥ ला० ॥ चमक्या चित्तमझार॥ च० ॥२ ॥
नाद शंखनो सांभलिरे ॥ ला० ॥ पभणे श्री गांगेय,
ए वाला रुप सुहामणोरे ॥ ला० ॥ पिण अर्जुन अह
मेव ॥ च० ॥ ३ ॥ कौरवपति तव कलकल्यारे ॥ ला०
॥ अहो अहो जगदिश, छे शत्रु मुझ उपरेरे ॥ ला०॥
एतो विश्वारे वीस ॥ च० ॥ ४ ॥ द्रोण वदे भट सां
भलोरे ॥ ला० ॥ हमणा होशे उतपात, इण अवसर
टलवो भलोरे ॥ ला० ॥ शुकन अपशुकन थात ॥ च०

॥५॥सुभट दल जांखो थयारे॥ ला०॥चउ दिश हुवो अं धार, धरणी पेड ध्रुजे घणोरे ॥ ला० ॥ आयो अर्जु न इणीवार ॥ च० ॥ ६ ॥ मूकी धण पाग वल्यारे ॥ ॥ ला० ॥ तव भाखे हरी सुत, कायर किम पाग व लोरे ॥ ला० ॥ रे राणी जाया रजपुत ॥ च० ॥ ७ ॥ लज्जा पाम्भी राजीयोरे ॥ ला० ॥ आवी भनारे शूर, वायो गयण घमसाणसुंरे ॥ ला० ॥ वाजीया रणतुर ॥ च० ॥ ८॥ कर्ण कहे सहु सांभलोरे ॥ ला० ॥ दुःख म आणशो कोय, आ रण अर्जुन में वर्योरे॥ला०॥ ए म कही आयोरे सोय ॥ च० ॥ ९ ॥ दल देखी कौरव तणोरे ॥ ला० ॥ वैराटा सुत कहे एम, तिलक सुभट कुण एहमेरे ॥ ला० ॥ कहो अर्जुन मुझ तेम ॥ च० ॥ १० ॥ कृपाचार्य रथ तणीरे ॥ ला० ॥ लिलि ध्व ज अही नाण, कनकदंड ध्वज रथ भलोरे ॥ ला० ॥ ए द्रोण गुरु गुण खाण ॥ च० ॥ ११ ॥ ए दोइ मुझ उपगारीयारे॥ला०॥दिधी कला असमान, ए गुरु चरण पसायथीरे॥ला०॥हुं धरु धनुष्य बाण॥च०॥१२॥धनुष्य ध्वजे द्रोण सुतजीरे ॥ला०॥करे अमरसुंरे वाद, नाग केतुवर रथ भलोरे ॥ ला० ॥ दिसे दुर्योधन आद॥ च० ॥ १३ ॥ पीली पताका रथ तणीरे ॥ ला० ॥ ए कर्ण अभीराम, एम सघला अर्जुन कहेरे ॥ ला० ॥ सुभट महारथी नाम ॥ च० ॥ १४ ॥ बाणे अंबर ग इयोरे ॥ ॥ दल पसरया चिहु दीस उर, आया

कर्ण रथ सनमुखेरे ॥ ला० ॥ करी आडंबर जोर ॥
च० ॥ १५ ॥ अर्जुन रथना नादथीरे ॥ ला० ॥ सु
भट न धरेरे धीर, सींह तणी परे गाजतोरे ॥ ला०॥
आवी उभो वड वीर ॥ च० ॥ १६ ॥ शस्त्र भेदि क
र्णनारे ॥ ला० ॥ कहे अर्जुन तजी रीस, इण अवस
र अंग रायजीरे ॥ ला० ॥ पूगी सघली जगीस ॥
च० ॥ १७ ॥ विंद्याचल गजनि परेरे ॥ ला० ॥ अ
डीया दोइ ततखेव, अचरिज पामी अवरेरे ॥ ला० ॥
मिलिया कौतकि देव ॥ च०॥१८॥ मोटा भरूने मोडतोरे
॥ ला० ॥ एकलडो हरी नंद, मुर्छाइ धरणि विषेरे ॥
ला० ॥ पडीया कर्ण नरिंद ॥ च० ॥ १९ ॥ द्रोण गु
रु तव आवियारे ॥ ला० ॥ हरखाणो मन भूप, आ
ज गुरु भले आवियारे ॥ ला० ॥ देवा शोभ अनूप
॥ च०॥२०॥ प्रथम बाणे हरीनदजीरे ॥ ला० ॥ किधो
गुरु प्रणाम,मूकी बाण वर दुसरोरे ॥ ला०॥ भेदे ध्वज अ
भीराम ॥ च० ॥२१॥ अनर्थ जाणी आकरोरे ॥ ला०॥
प्रभु दया दिल आण, कौरवना दल उपरे ॥ ला० ॥
मूके मोहन बाण ॥ च० ॥ २२ ॥ सैन्य सकल धर्णी
पड्योरे ॥ ला० ॥ न रही शुद्ध लिगार, वार भणना
जो घडेरे ॥ ला० ॥ तोपिण न लहेरे सार ॥ च० ॥
॥ २३ ॥ निल ध्वज कौरव तणीरे ॥ ला० ॥ पिले क
र्ण बिराज, लेजे ध्वज रलीयामणीरे ॥ ला० ॥ तुझ
भगनीनेरे काज ॥ च० ॥ २४ ॥ भिषम भय सनम

घरीरे॥ ला० ॥ कुंवर जिम शंक, लेइ ध्वज पाछो वल्योरे ॥ ला० ॥ कंपे अटारीरे लंक ॥ च० ॥२५॥ कौरव राय पाछो वल्योरे ॥ ला० ॥ धरतो मन संताप, गोधन वाली उत्तरारे ॥ आ०॥ आयो प्रभुनें प्रताप ॥ च० ॥ २६ ॥ सरुत्रीसा सोमी ढालमेंरे ॥ ला० ॥ अर्जुन देखायोरे आप, गुणसागर पांडव तणोरे ॥ ला० ॥ चढतो तेज प्रताप ॥ च० ॥ २७ ॥

दुहा ॥ मछराय घर आवीयो, पामी खबर तेवार ॥ उत्तरा कुमर एकलो, हुवो कौरव लार ॥ १ ॥ नृप चढाइ कारणे, उद्यम करे अशेश ॥ आवी ताम वधामणी, जित्यो कुमर नरेश ॥ २ ॥ कंक विप्रने रायजी, बेठा सभा मझार ॥ सारी पासा खेलतां, उलटनो अधिकार ॥ ३ ॥ करत प्रशंसा पुत्रनी, कंक कहे सुविचार ॥ बृहनडा जस सारथी, जीते क्युं न कुमार ॥४॥

ढाल १३८ मी ॥ बेदनी देशी ॥ एतले चली आव्या जगत सुहाया, हरी सुत जितर जाया ॥ कुमर पगे लागी उभो आगी, आलिंगे तव राया ॥ १ ॥ मुह माथो चुंबी अंबर आंबि, वारंवार प्रशंशो ॥ आपणपें करतो मुख उच्चरतो, कुंवर कुल अवतंशो ॥ २ ॥ तव कुमर जापे मर्म प्रकाशे, जीतो जास प्रसंसो ॥ ते तीजेवासर आप उदोधर, प्रगट कुलअवतंसो ॥३॥ ॥ दिन त्रीजो पामी पांडव स्वामी, प्रगट थया सुखकारो ॥ तव नाही धोइ पावन होइ, पहेरी धोती उ

दारो ॥ ४ ॥ जिनवर आराधी, सुर विधी साधी, सिंघासण बेसंतो ॥ ते सघला वीरा साहस धीरा, प्रभुना पग प्रणमंतो ॥ ५ ॥ वादलने टळवे पूजा मिलवे, सहस किरण दिनकारो ॥ देखावे आपो प्रबल प्रतापो, जगमांही जयकारो ॥ ६ ॥ तिम कुंती जाया तेज सवाया, आप आपणी सोह ॥ पेखता पेखी वात विशेखी, लोगाइहा पोह ॥ ७ ॥ पांडव जाणी जण जण आणी, नामता निज शिसो ॥ चिरंजीवजो सो कोम्ह वरीसो, भाट भणे आशिसो ॥ ॥ ८ ॥ तव वेगे वधावा आवे गावा, गाम तणी वर गोरी ॥ नाचंती पात्रो सुललीत गात्रो, चतुर महा चित चोरी ॥ ९ ॥ निशाण धडुके ठद न चूके, नादे अंबर गाजे ॥ दिजे बहु दानो अति सनमानो, उछव अधीक विराजे ॥ १० ॥ वयराटो राजा अधीक दिवाजा, करतो आवे ताम ॥ चरणे शिर नामी निज हित कामी, करत घणो गुण ग्राम ॥ ११ ॥ ते निज कर जोडे देवो लोडे, संपत सरीसो राजो ॥ अभीमान न राखे फिर फिर भांखे, तुम्हे सारया हम काजो ॥ ॥ १२ ॥ सगपण करवे अति विस्तरवे, नेह तणो अधिकारो ॥ आतासुं उलझी जाइ न सुलजी, लट जगनो व्यवहारो ॥ १३ ॥ कुंवरनी भगनी छे शुभ लगनी, शुभ लक्षण शुभकारी ॥ अति रुप रसाली झाक झमाली, बाली छे सुविचारी ॥ १४ ॥ अहेवनने

दिजे कारज सीझे, मानो एह अरदासो ॥ ए सरखो मेलो थाय जो भेलो, तो पहोंचे मन आशो ॥ १५ ॥ वाहालानुं वंछित आपण इछित, काम महा अभिरामो ॥ राजाजी मानी प्रीत प्रमाणी, पिण पूछी जे सामो ॥ १६ ॥ नृप शामे सलुणो दिन दिन दुणो, तेज प्रताप प्रकासो ॥ तव हरीसुं जाइ वात सुणाइ, हरी मानी उल्हासो ॥ १७ ॥ नाणेजा साथे श्री जगनाथे, आणी व्याह करायो ॥ हाथीने घोडा पाट सजोडा, मणी कंचक मन भायो ॥ १८ ॥ दिधां वर हेते तेपरणेते, वाध्या रंग सवाया ॥नूयासुं बंधु हरी गुण सींधु ॥ द्वारामती चली आया ॥ १९ ॥ भोजननी भगति जण जण जुगति, साचवता अति सेवो, आदर अति दिजे खिजमत कीजे, हलधरने हरि देवो ॥ २० ॥ यादवनि कुमरी, जेहवि अमरी, ते च्यारे परणाया ॥ नव नव सुखवासी लील विलासी, परम माहा सुख पाया ॥ २१ ॥ ए ढाल सोहावी अति मन भावी, आरुतिसा सोमी वारु ॥ श्री गुणसागर सूरी उजागर, पांडव चरीत न पारु ॥ २२ ॥

चोपइ ॥ खंड खंड रस छे नव नवा, सुणतां मिठा साकरलवा, श्री हरीवंश चरित्र जय जयो, सप्तमो खंड ए पूरण थयो ॥ १ ॥ इति ढाल सागर हरीवंस प्रबंध सप्तमोऽधिकार समाप्तः ॥

॥अथ ढाल सागर हरीवंस प्रबंध आठमो खंड प्रारंभः॥

दुहा ॥ श्रुत ज्ञानी जगमें वडो, प्रणमुं भाव उदार ॥ अब अष्टम अधीकारनो, उद्यम करुं अपार ॥ ॥ १ ॥ कुंवर यादव पांडव तणां, मिली मिली मननो मेल ॥ द्वारामती मांहे करे, नित नित नवली केल ॥ ॥ २ ॥ यादव बहु हित दाखवे, पांडव शुं धरी प्रित॥ घणा नेहे घरनी परे, रहे तिहां सुभ रित ॥ ३ ॥ समुद्रविजय आदी सहु, तव मिली जादव नाथ ॥ पांचे पांमवने कहे, वारु सुणो एक वात ॥ ४ ॥ प्रतीज्ञा पूरण थई, पिण अधुरी रहि वात॥शत्रु पराभव बहु कर्या, बल न रह्यो तिल मात॥५॥हिवे तो अवसर पामीने, सघलो मेली साज ॥ ए कटक कटकी तरुपरे, ए छेदो तुमे आज ॥ ६ ॥ पांडव प्रथवी वालवा, यादव करे विवेक ॥ दुर्योधन राजा कन्हे, दूत मोकली सुविशेष ॥ ७ ॥ तव कौरव पति कलकले, हारी धरती फेर ॥ किम देवाए देवजी, न्याय नजरसु हेर ॥ ८ ॥

ढाल १३९ मी ॥ त्रिपदीनी देशी ॥ तव धर्मपुत्र कहे धरतिने काजे, युद्ध हुं न करुं सही कुल लाजे ॥ भार भाहरो वली भाजे ॥ १ ॥ भुलेश काजे भाइने भेदुं, पांख पोतानी कहो किम छेदुं ॥ हुं नही कुल द ॥ २ ॥ द्रोपदीए तव किधी सांन, तिहारे भीम भांखे बलवान, तुमे सांभलो राजान ॥ ३ ॥ आज लगे तो तुम कह्यो किधुं, हिवे तो ते सर्व थयुं शिधुं ॥ पिण

पाणी निर वही लिधुं ॥ ४ ॥ हिवे तो अमे आप्या वा
जी, दिलनी भलीपरे भांगीशुं दाजी ॥ वडाशुं रुडीप
रे बाजी ॥ ५ ॥ अब ए अवरे रह्यो न जाए, लोक
मांहि पिण हांशि थाए ॥ वलतुं बल न खमाए ॥ ६ ॥
तुमे तो गे ठांढा हिम, अग्निना भडका सरिखुं हुं भीम
॥ हिवे नहि पालुं निम ॥ ७ ॥ युधिष्टीर कहे तुमे सूरा,
सकल पराक्रममां सदा पूरा ॥ नहि मेहलो अधूरा ॥
॥ ८ ॥ तोपण गुले जो समझी गुंडा, तो आपण न
हि थइए भुंडा ॥ बांधव थाए डंभ ॥ ९ ॥ सहुनी
आण लहि अद्भुत, जय नामा तव मोकल्यो दूत ॥
गजपुरे तेह पोहचंत॥१०॥कृष्णनो दूत हुं राजान,
सांभली सर्वे थइ सावधान॥कथन सुणो धरी कान॥११॥
तेरे वरस महा दुःखे गाली, पांडवे पुरी प्रतिज्ञा पाली,
हिवे तुमे जूउ संभाली ॥ १२ ॥ एहनो तुमे हिवे आ
पो राज, जेम तुमारि वाधे लाज ॥ करो विचारी काज
॥१३॥राज्य नापोतो आपो पंच गाम, इंद्रप्रस्थ तिलप्र
स्थ अभिराम काशी ॥ गजपुर वारणावति नाम ॥१४॥
दूत वचन दुर्योधन काने सुणी, अहो मुने युद्ध आरो
खो, बोलीउ ज्युं डखो ॥ १५ ॥ मुछ मरडीने दंतज
घरसी, आलस मोडीने अधर ते करडी ॥ आंख्ये
आंखो तरडी ॥ १६ ॥ हारयुं राज आवे किम हेव ॥
एतो मारा शत्रु स्वयमेव ॥ सांभलो वात सत्येव ॥
॥ १७ ॥ आज लगे ए जिहां रह्यां जेह, प्रथवी मां

हरी जाणी तेह ॥ लाग आप्यो मे एह ॥ १८॥ कटक वले थाए ते करजो, युद्ध करता मत उसरजो ॥ वराए तो जइने वरजो ॥ १९ ॥ सुए आणिए चंपाए जेती, अवाने नवि आपुं एहुने तेती ॥ फोगट थाशे ए फजिती ॥ २० ॥ एतो रुडी ढाल पुराणी, गुणसागर ए म बोले वाणी ॥ जिनवाणी नजो प्राणी ॥ २१ ॥

दुहा ॥ एम सुणी कहे दूत तव, राजन मानो वयण ॥ गोत्र विरोध नहि नलुं, जुउ विचारी सयण ॥ ॥ १ ॥ किचक वक किम वीर जीसां, हेडंबादिक हण्यां जेण ॥ ते नीम आगले सही नागशो, केहेशो न कह्यो केण ॥ २ ॥

ढाल तेहीज ॥ रुकमणी राणी मेहेलमां ॥ ए देशी ॥ दूत कहे सुणो रायजी, नीम तणी नडवाय हो राज ॥ उड्या जाए आकाशमां, तुम सरिखा केइ राय हो राज ॥ दूत कहे सुणो रायजी ॥ १ ॥ अर्जुन आगल नहि आशरो, तुमारो तिलमात्र हो राज ॥ राधा वेध साध्यो जिणे, वोलो विचारी गात्र हो राज ॥ दूत० ॥ २ ॥ विद्याधर दल जीतीने, तुमने जिवितदान हो राज ॥ ते माटे ते पूज्य ठे, कां थाउ अज्ञान हो राज ॥ दूत० ॥ ३ ॥ तुं अपकार करे सदा, ते करे उपकार हो राज ॥ धर्म पुत्र वरमातमां, तुमारो हितकार हो राज ॥ दूत० ॥ ४ ॥ अवनी मेघ वरसावतां, युधीष्टीर जलधार हो राज ॥ वालि राखेठे वीरने,

आज लगे निरधार हो राज ॥ दूत० ॥ ५॥ देव दा एव जेणे दम्यां, जेणे मार्यो कंस हो राज ॥ आश्र वाए तेहने, तेनो जग अवतंस हो राज ॥ दूत० ॥६॥ पावक सरिखा पांडवा, तुतो घास समान हो राज ॥ वनमाली वायु परे, प्रेरेछे वली तास हो राज ॥ दूत० ॥ ७ ॥ तव भीष्म द्रोण विदुर कहे, साची मानो ए वात हो राज ॥ मनना आमला मेलीने, मिलि बेसो स हु भ्रात हो राज ॥ दूत० ॥ ८ ॥ शिखामण ते सांभ ली, वली कोप्यो विशेष हो राज ॥ अग्निज्वाला परे उपन्यो, धरतो दिलमां द्वेश हो राज ॥ दूत० ॥९ ॥ तव कृष्ण दूत कहे कोपिने, आव्यो तेहने मोत हो रा ज ॥ युद्धे ते सहु जाणजो, जाशे गोफण गोला सुत हो राज ॥ दूत० ॥ १० ॥ एम कही दूत आव्यो व ही, कृष्ण पासे संदेश हो राज ॥ मांडाने सर्वे कह्यो, एके एक आशेश हो राज ॥ दूत० ॥ ११ ॥ सज्जन सहु ढाले जुत, दुर्योधन दिल मांहि हो राज ॥ कप ट राख्यो गुणसागर कहे, हिवे आगले शुं था य हो राज ॥ दूत० ॥ १२ ॥

अथ भारथना ध्रुपद लिख्यते ॥राग विहाग ॥ मानो वात हमारी हो राजा ॥ मा० ॥ पांच गाम पांडवने दिजे, उर सब भोमी तुम्हारी॥हो राजा ॥ मा०॥ १ ॥ कुरुदेश हस्तनापूर नगरी, अंग देश पंचालो ॥ उत्तर देश अयोध्या नगरी, दखण देश बंगालो ॥हो राजा

मा०॥२॥पांच भाइ पांडव केवराइ, अर्जुन जोर अपारो॥ भीमशेन ज्यारे भारथ रचशे, तारेनही उगरानो आरो ॥हो राजा ॥ मा०॥३॥ केवुं होय तो हमणा किजे, तुम्हे कृष्णजी कारो ॥ प्रथवी एक कणी को न आपुं क्या करे धर्म विचारो ॥ हो राजा ॥ मा०॥ ४ ॥ क्षत्री होय ते खांभानी गत जाणे,एतो गाय चरावनहारो ॥ राज निती मांही ए शुंरे जाणे,मही लुटावन हारो हो राजा॥मा०॥५॥

अथ द्वितीय पद लिख्यते ॥ गइ भोम तुमारी हो पांडवो ॥ ग०॥ जिणे वात न मानी हमारी हो पांडवो ॥ ग० ॥ ए टेक ॥ क्षत्री होय ते वेरज खेडे, शुं करे भक्ती संसारी ॥ बापकी जातां बल जे न करे, भूप नही पिण भिखारी हो पाडवो ॥ग०॥ १ ॥ ए अवनी मांही अमर न रेणा, कहे धरम विचारी ॥ गोतर गर दन अमे जो करीए, तो शी गत थाए अमारी हो पांडवो ॥ ग० ॥ २ ॥ द्युत विद्या दलमांही रमीयां, हारया गरथ भंडारी ॥ ए लाखाग्रह मांही तुमनेरे बाल्या, शी रे सगाइ सगारी हो पांडवो ॥ ग०॥३॥ पाप तणोरे एणे पायोरे मांड्यो, पंचालीरे पूकारी॥ अंधनो सुत जो अवनी लेशे, तारे पोरससे गंधारी हो पांडवो ॥ ग० ॥ ४ ॥ आ अवनी उंधे पड नाखुं, उठ्यो भीम पूकारी ॥ सूरनो स्वामी शिखज आपे, ल्यो कौरवने मारी हो पांडवो ॥ ग० ॥ ५ ॥

अथ तृतीय पद लिख्यते ॥ किधा अमने दपारी द

द्युम्न सेनापति, पांडवे कर्यो धरी प्रेम ॥ पांडवने कौ
रव मिल्या, रामने रावण जेम ॥ १४॥ साम दाम ने
द भुकीने, केवल नीग्रह एक ॥ ठरावी रणक्षेत्रमां, व
ढवुं एह विशेष ॥ १५ ॥

ढाल तेहीस ॥ तुम हे पीतांबर पेहेरोजी मुखने म
रकलडे ॥ ए देशी ॥ रणनुं मुहुरत निरधारीजी, राज
वी रण रशीया ॥ आयुद्ध अरची अधिकारीजी ॥राज०॥
धूप दीप अक्षत फूलेजी ॥ राज०॥ उपे आयुद्ध बहु मू
लेजी॥राज०॥१॥नीशाण तणे नीर्घोपजी॥राज०॥जाणे
ते वीर रस पोपेजी॥राज० ॥ अरुणोदय वेला रणे धाता
जी॥रा० ॥ रवी सरीखा थया वीर राताजी ॥रा०॥२ ॥
कोलाहल रणे उछलियोजी ॥ रा०॥ सिंहनाद मांहि जही
भलीउजो ॥ रा० ॥ रणतूरना थाय रणकाराजी ॥ रा०
॥ भेरीना वाजे भणकाराजी ॥ रा० ॥ ३ ॥ ढक्काक्का
हल डणकाराजी ॥ रा० ॥ हुंडक पड्रो पूकाराजी ॥
रा० ॥ घण घरणी लाज राखेजी ॥ रा० ॥ धीर
पणुं शीर धारेजी ॥ रा० ॥ ४ ॥ गयवर गाजे घन ला
जेजी ॥ रा० ॥ वाजां रणना बहु वाजेजी ॥ रा० ॥
हयवरना जो रहे स्वाराजी ॥ रा० ॥ चिहुदिशे रथना
चित्काराजी ॥ रा० ॥ ५ ॥ वली सुभट शब्द भयंका
राजी ॥ रा० ॥ कोदंड तणा टणकक्काराजी ॥ रा० ॥ ग
यवरनी घटा तिहां चालेजी ॥ रा० ॥ पोढा परवत
॥ रा० ॥ ६ ॥ मदझर मयंगल रोशाला

जी ॥ रा० ॥ मुंडना करे उलालाजी ॥ रा० ॥ ध्वज
घुघरी घंट वाजेजी ॥ रा० ॥ रथ देखी रवीरथ लाजे
जी ॥ रा० ॥ ७ ॥ इम जाणे आयुध शालाजी ॥रा०
धरणी चातुर्घंटवालाजी ॥ रा० ॥ धव धव धाता च
क्रधाराजी ॥ रा० ॥ प्रथवीना थाय पचकाराजी॥रा०
॥ ८ ॥ न्हाना तीक्ष्ण तोखाराजी ॥ रा० ॥ खेडता
रथ थाए होंकाराजी ॥ रा० ॥ हयवरना थाए हिलो
लाजी ॥ रा० ॥ जाणे समुद्र तणा कलोलाजी ॥
रा० ॥ ९ ॥ नूये तो पगनवी मंडेजी ॥ रा० ॥ रवि
रथ हयवर मान खंडेजी ॥ रा० ॥ तूर निर्घोषे गइ
तंद्राजी ॥ रा० ॥ तिहां अश्व थया उनीद्राजी ॥ रा०
॥ १० ॥ खणाए धरा खुर घातिजी ॥ रा० ॥ उडे डुं
गरा उजातीजी ॥ रा० ॥ पवन वेगी जलपंताजी ॥
॥ रा० ॥ एहवा ते अश्व असंख्याताजी ॥रा०११॥ च
र्म कवच सनाहाजी ॥रा०॥ अंगे पहिरया उछाहाजी
॥ रा० ॥ क्रपाण फल तुणीरजी ॥ रा० ॥ धनुरधर
महा धीरजी ॥ रा० ॥ १२ ॥ सिंहनाद मुखे बोलेजी
॥ रा० ॥ विश्वने जाणे तृण तोलेजी ॥ रा० ॥ संग्रा
म तणा महा रसीयाजी ॥ रा० ॥ पायक जाए बहु
धशीयाजी ॥ रा० ॥ १३ ॥ रथ रेणुभरे रवी छायो
जी ॥ रा० ॥ जाणे वरशालो आयोजी ॥ रा० ॥ सर्व
शब्द उठ्यो समकालेजी ॥ रा० ॥ त्रिभुवन कंप्यो
तिण तालेजी ॥ रा० ॥ १४ ॥हाथीसुं मिलीया हाथी

जी ॥ रा० ॥ रथवाला रथ साथीजी ॥ रा० ॥ साथी सुं मिलीया साथीजी ॥ रा० ॥ घोडाचड घोडाचरू घातीजी ॥ रा० ॥१५॥ रण थयुं शायर रुपजी ॥ रा० ॥ कलोला तुरंग अनूपजी ॥ रा०॥ गज रुपे जाणो वेहजी ॥ रा० ॥ मिन रुपी थया खेहजी ॥ रा० ॥ १६ ॥ तिहां मगर थया रथ राशीजी ॥ रा० ॥ पाला जल माणसा नाशीजी ॥ रा० ॥ प्रवहण थया विमानजी ॥ रा० ॥ शस्त्र ते वडवाग्नी मानजी ॥ रा० ॥ १७ ॥ रणतुर मीशे निर्घोषेजी ॥ रा० ॥ सेना वेलाने पोखेजी ॥ रा० ॥ एहवुं रण रणायर राजेजी ॥ रा० ॥ कायर देखीने नाजेजी ॥ रा० ॥ १८ ॥ ढाल रसीली, गुणसागर बोलेजी ॥ रा० ॥ संग्राम सागरने तोलेजी ॥ रा० ॥ सांनलतां सूरा जागेजी ॥ रा० ॥ कायर तो दूरे नागेजी ॥ रा० ॥ १९ ॥

दुहा ॥ वीर रस वाजे विस्तरयो, आवीने रण मांहे ॥ एहवुं ते तिहां देखीने, पार्थ पुत्र तिणे ठाए ॥ ॥ १ ॥ अनीमन्यु तव ऊछली, पड्यो कौरव दल मांहे ॥ बाण धारा जल वरसतां, शत्रु जवाशा सुकाए ॥ ॥ २॥ तेहवो तिहां देखीने, दल पाम्यु सहु क्षोन ॥ देखी पडता आजने, कहो कुण मांडे थोन ॥ ३ ॥

ढाल तेहिज ॥मेवाडा राणारे ॥ ए देशी ॥ अरजुन सुत आयोरे, अनीमन्यु सोहायोरे, न जाए साह्यो एतो आकरोरे ॥ कृपाचार्य कहेछेरे ॥ बहदवलल

हेठेरे, बेठो किम रहेछे, खारो लागे ए खरोरे ॥ १ ॥ रथे बे वेशीरे, वाण नाखे वीहींशीरे, अभीमन्यु त व हशी, वळमां बोलियोरे ॥ भले तुमे आव्यारे, मु जने घणुं भाव्यारे, संग्रामे सोहाव्या रखे धुजो हियोरे ॥ २ ॥ ब्रहद्बल रुंध्योरे, अभीमन्युए गुंधोरे, कैक वे तव खुंधो, कृपाचार्यनेरे ॥ ते चारे युद्धे जडीयारे, हथीयारे वढीयारे, अंगो अगे अडीया, लागे भय लोकनेरे ॥ ३ ॥ कैकव कृपा झूझेरे, रथ रहित तनु धुजेरे, खड्गे खगाशलुझे, अलुझे न एकलारे ॥ ख ड्गाडोप धरंतारे ॥ फणटोप हरंतारे, महा कोप करं ता, महा योद्धे भिल्यारे ॥ ४ ॥ ब्रहद्बल बले वाध्यो रे, अभीमन्यु शुं वाध्योरे, रथ ध्वज सारथी तेहना छेदीयारे ॥ एहवे रथ खेडीरे ॥ प्रथवी डलेफीरे ॥ भि ष्मे न करी जोडी, पांडव दल भेदीयोरे ॥ ५ ॥ भिष मने जोरेरे, पांडव दले ठोरीरे, नाशी चिहुएरे, अ थीर थयुं आलिरे ॥ तव अभिमन्यु तप्योरे, भिषमशुं कोप्योरे, अहो मुने लोप्यो, ध्वज छेद्यो ते वतीरे ॥६॥ दुरमुख नृप केरोरे, सारथी सवेरोरे ॥ भेद्यो भलेरो वार लागी नहीरे ॥ तव भिष्म क्रोधीरे, अभीम न्युसुं योधीरे, एह महा विरोधी, आज मारु सहीरे ॥ ७ ॥ तव पांडव सेनाथीरे, दश नृप थया साथीरे, अभिमन्यु लही हाथी, उपराले आवीयारे ॥ तव भि षम तिहां धायोरे, रथे बेशी आयोरे, दल दुरे नसा

यो, शत्रु न फावीयोरे ॥ ८ ॥ तव भिषम निज बाणेरे, तसु ध्वजने ठाणेरे, छेदी मने जांणे, रखे अरि जीततारे ॥ तव उत्तर कुमारेरे, शल्य गजने संहारेरे ॥ तव शल्यने ठारे, देखी अरि दिपतारे ॥९॥ अमोघा स्वर्ण शक्तिरे, मेली निज भक्तिरे, सहु जोतां सशक्ति, उत्तर मारीउरे ॥ तव पार्थ बाणने पूरेरे, दल नाठु दूरेरे ॥ आयो अर्जुन सुरे, नरहे वारीउरे ॥ १० ॥ तव भिषम भुजालोरे ॥ धरी धनुष क्रोधालोरे, आवी उजमालो, सेनाशुं अड्योरे ॥ धृष्टद्युमन थयो साहमोरे ॥ महा मच्यो संग्रा मोरे, लेवा विश्रामो, रवी शायरे पड्योरे ॥११॥ दिनकर गयो दूरेरे, न रह्यो हजुरेरे, महा संग्रामे दिनपणे, आथ म्योरे ॥ प्रितीवंती ढालेरे, कही गुण वीचालीरे ॥ नमीए प्रहकाले, युद्धथी जे सम्योरे ॥ १२ ॥

दुहा ॥ रणले मेली राजवी, पोहोता निज निज था न ॥ पेहले दिवशे युद्ध एम, थयुं ते धरजो कान॥१॥ रात्री समये सहु राजवी, पांडव कृष्ण समाज ॥ मि लीने करे मत्रणु, किम सिधाशे काज ॥ २ ॥ भिष्म सर्वथा अजित ए, जित्यो किणे न जाय ॥ तो दुर्यो धन ए जीवतां, कहोने केम जिताय ॥ ३ ॥ तव कृ ष्ण कहे उपाय एकछे, भिष्मने नियम छे एह ॥ विण हथीयारा स्त्री क्लिवने, न मारे गुण गेह ॥ ४ ॥ ताढां उपरांढा प्रत्ये, भिष्मनना वे बाण ॥ भेदे भिष्मने भेदीए, सांभलो वात निवांण ॥ ५ ॥ ते माटे पार्थ

वी वो तुम्हे, द्रुपद पुत्रक्लीव ॥ शिखंमीए रथे थापीने, तस पूठे रही अतिव ॥ ६ ॥ जिष्मने नेदे बाणशुं, गांगेय नही नाखे बाण ॥ क्लीव शिखंमीया उपरे, एह उपाय एक जाण ॥ ७ ॥ कथन सुणी एह कृष्णनां, पांडव करी प्रमाण ॥ बलथी ठल बहुअठे, जो होए बुद्धि विनाण ॥ ८ ॥

ढाल तेहिज ॥ आख्याननी देशी ॥ प्रजात थाते परवस्या, रण मध्ये सघला रायरे ॥ पांडव कौरव मिल्या साहमा, धव धव क्रोधे थायरे ॥ १ ॥ राजंद रणरंग रसे जरया, आदरया शस्त्र अनेकरे ॥ वीर रसे विराजतां, गाजतां सिंह जेम नेकरे ॥ रा० ॥ ॥ २ ॥ शिखंडीयो रथे थापीने, तिहां पार्थ रही पूठेरे ॥ जिष्मपे ज्युं जालीने, संजाली निज मुठेरे ॥ रा० ॥ ३ ॥ जिषम क्लिवने नेदवा, समर्थ नही तक जोयरे ॥ आकर्णांत ताणी बाणे मारयो, जिषम नाखे सोयरे ॥ रा० ॥ ४ ॥ चर्म नर्म नेदीने हणे, नेद्या माहरा प्राणरे ॥ ए शीखंडीयानुं नही गजुं, सही अर्जुन बाणरे ॥ रा० ॥ ५ ॥ एम सारथीने कही ततखिण, पड्यो रथ मझाररे ॥ तव शोकातुर थइ कौरव, आवी रथ विंट्यो तेणीवाररे ॥ रा० ॥ ६ ॥ अंत समयना वचन सुणवा, सहु थयां सावधानरे ॥ तवारे जीषमे तिहां सान किधी, कोइ करावो जलपानरे ॥ रा० ॥ ७ ॥ बाण वले प्रथवी नेदीने, निर्मल काढयुं नीर

री नाखी, शस्त्र अस्त्रने घावे ॥ २ ॥ अनुपदे तव आवीया, शत्यकी वायु पुत्र ॥ दुर्योधनने भीम फुंजे, भुरीस्त्रवा शत्यकी तत्र ॥ ३ ॥ अर्जुने उशारी सर्व सैन्यजी, जयदरथ दिठो महा मलीनजी ॥ ते पट योद्धा जोर तिहां फुंफजी, तनमन थया क्रोधे धुजेजी ॥ ॥ ४ ॥ क्रोधे करीने भुरीस्त्रवाना, भुज उपाडी नाखीयां ॥ तव सत्यकीए नेठोरे मारयो, शत्रु बिजा शंकीया ॥ ५ ॥ पार्थ पिण जयदरथना, तुरंग रथ सारथी हणी, दिनांते जयदरथ मारयो, अरि ग ए सघलो अवगणी ॥ ६ ॥ चौदे दिहाडे अक्षोही णी सातजी, पांडवे चूरी देखाडी हाथजी, तव कौरव चिंते ए पांडव पूराजी, न्याय निति न थाए अधुरा जी ॥ ७ ॥ न्याय निते जीत्या न जाए, करुं इहां अन्याय ॥ धाडी मे लीधा ए पहुतो, राते मारु ठा य ॥ ८ ॥ घुयडनी परे लेउ घेरी, पांडव वायश नी परे ॥ एम चिंतीने धाड लेइ, पोहतो कोइक अ वसरे ॥ ९ ॥ तव भीम पुत्र हेडंबा जायोजी, अस्त्र ले इने साहमो आयोजी ॥ घटोत्कचने करी फूंज फाफो जी, जग मांहे जेहनो सघलो आफोजी ॥ १० ॥ आ फावंत ते अस्त्रजोरे, कौरव सेन्या ते मथे ॥ माया यु द्धे बहु मारीया, तव कर्ण कोप्यो बल ऊते ॥ ११ ॥ बाण बहुलां नाखीया, पिण तेह पाछो न उसरे ॥ त व वहनीकणा दत शक्ती मेहली, प्राण तेहना अपह

री ॥ १२ ॥ घटोत्कचनो करी संहारजी, पांडव सेना मां थयो हाहाकारजी ॥ कौरव सेना मन हरखाणीजी, कर्ण समो को नही बाणीजी ॥ १३ ॥ बाणी नही को इ कर्ण सरीखो, प्रनाते धरी प्रेम ॥ रणांगणमां आवीया, साहमे साहमा सागर जेम ॥ १४ ॥ विराट द्रुपद द्रोणे मारया. महा युद्धने जोरे करी ॥ पांडवनुं दल थयुं झांखुं. अति आनंद पाम्या अरी ॥ १५ ॥ आ सुंदर ढाले तक जोइ, गुणसागर इणीपरे कही ॥ हरखनी केडे शोक हरी. हरख शोक ते कर्मे लही ॥१६॥

दुहा ॥ पांडव दल थीर करी, धृष्टद्युमन साहमो थाय ॥ द्रोणने कहे रहे ऊनो, जीवतो आज ना जाय ॥ ॥ १ ॥ गजश्व नट क्षय पमाड्या, युद्ध तव जाम्यो जोर ॥ एहवे मालव रायनो, अश्वस्थामा गर्ज ते घोर ॥ २ ॥ अश्वस्थामा नामे तेह गज, पड्यो रणमां जाम ॥ अश्वस्थामा मारीउं, जनसहु नांखे ताम ॥ ३ ॥ द्रोणे ते वात सांनली, विशंस्थुल थयो जाम ॥ शोकाकुल लहीने वले, ते धृष्टद्युमनने हण्यो ताम ॥ ४ ॥ द्रोण तव धरणी ढल्यो, अणसण करीने सोय ॥ मरण समाधी ते मरी, ब्रम्हदेव लोके सुर होय ॥ ५॥

ढाल तेहिज ॥ गर्व न करशो गात्रनो ॥ ए देशी ॥ अश्वस्थामा तिहांरे ऊचल्यो, आव्यो पांडव दल मांय ॥ जलधरनी परे वरसतो, बाण धारा ते ठाय ॥ जोरो जोयोरे युद्धनो ॥१॥ पांडवना दल उपरे, अस्त्र

नारायणी नामे ॥ मुक्युं महा क्रोधे करी, विश्व कंप्युं ते ठामे ॥ जोरो० ॥ २ ॥ जाणे कोलियो करशे विश्व नो, सैन्य लीधुं सर्व घेर ॥ तेहने समर्थ नाहि कोइ वारवा, जोरावर पिण थया जेर ॥ जोरो० ॥ ३ ॥ तव कृष्णने वचने पांडवे, आयुध मेहली दूर, विनय करिते स्वपरि करे, हेजे रही हजुर ॥ जोरो० ॥ ४ ॥ भक्तिनी युक्ति तुठि तदा, शक्ति ते थइ शांत ॥ बार पोहोर युद्ध ते थयुं, अनेकनो आव्यो तिहां अंत ॥ जो० ॥ ५ ॥ कर्ण सेनापति थापियो, कौरव मिलि ते ठाम ॥ रणांगण मांहि आवियां, वर्त्यो माहा संग्राम ॥ जो० ॥ ६ ॥ तव कर्णांत ताणी कोदंडने, कर्णने पार्थ दोय ॥ कल्पांत काल रवीनि परे, क्रोधे कोप्या कुल होय॥ ॥ जो० ॥ ७ ॥ बले पूरा ते बिहु सहि, बाणावलि पिण तुल्य ॥ सरिखे समाने बे भंडे, भूजबे जेहना अतुल्य ॥ जो० ॥ ८ ॥ भीम भुजा बलि भालीने, भांज्यो दुःशासन ॥ भूजा काढी भुज बले, वीर हरख्या धरि मन ॥ जो० ॥ ९ ॥ रविए रेहेवाणुं नहि, नाशी गयो निज गेह ॥ रात्रि पडी तव तजी, थानक पोहोतां तेह ॥ जो० ॥ १० ॥ कर्णे प्रतिज्ञा तव करि, अर्जुनने मारुं आज ॥ शल्यने सारथी थापिने, शंखनो करी अवाज ॥ जो० ॥ ११ ॥ रणांगण मांहि आवियो, गर्जना करतो घोर ॥ दशो दिशी बहिरी करी, भय लागो चिहुं ओर ॥ जो० ॥ १२ ॥ सजल जलद घटानि

परे, अवनि आकाश प्रळयांत ॥ तिर ते त्रिभुवने विस्त रयां, जाणे कोप्यो कृतांत॥जो०॥१३॥ पन्नग अस्त्र क र्णे मुक्यु, पार्थे गरुड अस्त्र तांम ॥ एम अस्त्र अनेक अ फल्या करयां, अर्जुने तेणे ठाम ॥ जो० ॥ १४ ॥ शं खचूड निशा निधे, कर्ण मास्यो दिनांत॥ करण पड्यो कौरव तणी, भांगी सघली भ्रांत ॥ जो० ॥ १५ ॥ आशा बलवंती जगमां कही, तव शल्य कस्यो शेना नि॥ रणांगणमां आविया, हजु हुंश अछे जीत्यांनि ॥ जो०॥१६॥ शल्य ते शल्य सारिखो, बाणनो वरसतो मे ह ॥ तिहां युधीष्टीर एक थीर रह्यां, थयुं युद्ध अछेह ॥ १७ ॥ दीशी दावानल सारिखो, शकुनी आव्यो तक जोय॥ उत्तर वयर संभारिने, शल्य युद्धीरे सोय ॥ १८ ॥ शक्ति मेलिने संहारीयो, दिनांते दल माहे॥ एतो ढाल रसाल ए, वदे गुणसागर उछाहे ॥जो०॥१९॥

दुहा ॥ शल्य पडते महा शल्य थयो, कौरवने ते काल ॥ लोक मांही लाजतो, मुख ढंके भवराल ॥ १ ॥ दुर्योधन तव नाशीने, अलोप थयो ते आप ॥ कोइ सरोवर मांहि जइ पस्यो, अताग देखी आप ॥ २ ॥

ढाल तेहिज ॥चडि आव्यो लाल पार्थ प्रबल प्रता प॥ ए देशी ॥ धों धों नगारां वाजता, वाहलां, चस्यो दुर्योधननो सेन॥वन मांहि बोली विधुरा॥वा०॥मुख मे हलंता फेन ॥ १ ॥ माहरा नाथ गुमानी, कुण लेशेरे म्हारो मुजरो आजुनो॥आवी मीळोरे, म्हारा भूप अ

ज्ञीमानी ॥कुण०॥२॥ए आंकणी॥खांते वगडो खोलतां, ॥वा०॥किहां एक लाधी नाल॥जल मध्ये तिहां जाणी ने ॥ वा० ॥ सहु बोले समकाल ॥ मा० ॥ ३ ॥ पांडव पिण पोहोतां तिहां॥माहरा बंधु छबिला॥ कुण करशेरे जोरे युद्ध आजुनो, रणमां आवोरे माहारा रणनां रंगिला ॥ ए आंकणी ॥ तुं अज्ञीमानी राजवी ॥ वा० ॥ तुं सूरा मांहि सूर ॥ माहारा०॥ तुझने न घटे नासवुं ॥ वा० ॥ नहि रहे नासतां नूर ॥ मा० ॥ ४ ॥ कां तुं कुलने लाजवे ॥ वा० ॥ पुरप तनु करी मलीन ॥ ॥ मा० ॥ पाणीमां पोढयो थको ॥ वा० ॥ दिसेछे महादीन ॥ मा० ॥ ५ ॥ अर्जुन रुपे आथले ॥ वा० ॥ कहेने किम रहेवाय ॥ मा० ॥ ए सरोवरनो स्यो आसरो ॥ वा० ॥ सोपास्ये जो समुद्र सोषाय ॥ मा० ॥ ॥ ६ ॥ अथवा तुं जो डसरे ॥ वा० ॥ सेनासुं युद्ध न थाय ॥ मा० ॥ तो मन माने जेहशुं ॥ वा० ॥ ते एकसुं वढोरण ठाय ॥ मा० ॥ ७ ॥ जेणे तेणे वाते जाणीये ॥ वा० ॥ माथे आव्युं छे मोत ॥ मा० ॥ ते माटे दिन तातजी ॥ वा०॥ मरे तुं सूरा तन सहित॥ ॥ मा० ॥ ८ ॥ तव तिहां दुर्योधन बोलीयो ॥ वा० ॥ गदा युद्ध ज्ञीमने साथ ॥ मा० ॥ मानी सरथी मगरस्यो ॥ वा० ॥ नीसरयो कौरव नाथ ॥ मा० ॥ ९ ॥ पांडव कौरव सहु मीली ॥ वा० ॥ बेठा सज्ञा बनाय ॥ मा० ॥ ज्ञीम दुर्योधन बे ज्ञंडे ॥ वा० ॥ मारे ग

दाना घाय ॥ मा०॥१० ॥ मल्लपरे ते बे मिल्या ॥ वा० ॥ पोढा पर्वत मांहीं ॥ मा० ॥ ऊंचा निचा उछले ॥ ॥ वा० ॥ घडो घडी धरती घेराए ॥ मा० ॥ ११ ॥ रोपारुण थया रातमा ॥ वा० ॥ जोया केणे न जाय ॥ मा० ॥ दुर्योधन नाठो घणुं ॥ वा० ॥ प्रथवीए न मेली पाय ॥ मा० ॥ १२ ॥ लघु लाघवी कला ल ही ॥ वा० ॥ छलवीण नवी छेतराय ॥ मा० ॥ जंघमां गदा जोरे शुं ॥ वा० ॥ भीम मारे महाकाय ॥ मा० ॥ १३ ॥ भूंए पाडीने भीमजे ॥ वा० ॥ मारी पाटुना प्रहार ॥ मा० ॥ मुकुट भांगी भुगो करयो ॥ वा० ॥ पूरव कोप संभार ॥ मा० ॥ १४ ॥ गुणसागर कहे सां भलो ॥ वा० ॥ एतो ढाल रसाल ॥ मा० ॥ विघन घ णां वांका भमां॥वा०॥आवी पोहोते काल॥मा० ॥१५॥

दुहा ॥ संवधी जाणी ते समय, बलभद्र बहु रि साय॥ पांभव सहुने अवगुणी, निसरी दूरे जाय ॥ १ ॥ पाडव लव पुठे गया, आगे कृष्ण करेह ॥ बलभद्रने मनाववा, निज मने आणी नेह ॥ २ ॥ धृष्टद्युमन खेडीयो, रक्षाने रणमांही ॥ थिर करीने थापीयां, र ह्यां रण अवगाही ॥ ३ ॥

ढाल तेहिज ॥ शियल सुरंगी चूनडी ॥ ए देशी ॥ होजी दुर्योधनने ते आवी कहे, होजी कृतवर्म कृपा अश्वस्थाम ॥ होजी अंत समये आव्या अमे, होजी तम स्वरुप जोवाने काम ॥ १ ॥ साहेबीया बोल वो

लरे जे कहो ते करुं अमें ॥ ए आंकणी ॥ होजी तुमे तो सहुने तजी, होजी सुता मरण शयाए ॥ होजी तो पिण आपो आगन्या, होजी ते काज करुं उछाहे ॥ सा० ॥ २ ॥ होजी आपोजो तुमे आगन्या, होजी तो पांमवना शिस, होजी मुख आगे आणी मेलीए, होजी एह अमारी आशीस ॥ सा० ॥ ३ ॥ होजी वयण सुणी वेधालुया, होजी आपे थइ उजमाल ॥ होजी वांसो थापीने मोकल्यां, होजी दुर्योधने ततकाल ॥ सा० ॥ ४ ॥ होजी ते तिने रणमां जई, होजी युद्द करीने जोर ॥ होजी धृष्टद्युमन श्रीखंडीया हणी, होजी शुन्य लही रणठोर ॥ सा० ॥ ५ ॥ होजी पांडवनां पाच पुत्रनां, होजी माथा लेइ पंच ॥ होजी मुह आगले आणी मेलीयां, होजी दुर्योधन लहि प्रपंच ॥ सा० ॥ ६ ॥ होजी शीसु शीर उलखी बोलियो, होजी तुमने पडो धिकार ॥ होजी बालहत्या मुझ आपीने, होजी नारयो अति पापने नार ॥ सा० ॥ ॥ ७ ॥ होजी मुखे एम कहितो थको, होजी पोहोतो ते परलोक ॥ होजी ते पिण त्रीणे किहांइ गयां, होजी पामी लाजने शोक ॥ सा० ॥ ८ ॥ होजी गुणसागर एम उच्चरे, होजी ढाल नली रसाल ॥ होजी मरण अकाले ते मरे, होजी जेहने पापनो ढाळ ॥ सा० ॥ ९ ॥

दुहा ॥ नक्तिनाव विनये करी, वलनद्रने पहु मान ॥ देइ मनावी पांमवा, आव्या करी रण स्थान ॥

॥ १ ॥ पुत्र हण्यांथी शोके अति, कौरवने पांडव नंद ॥ स्वजनादिक सहु साथनां. कारिअ मृत कार्य नरिंद ॥ २ ॥ सरस्वति सरितां तटे, पाडवे मृत काज ॥ भजमणीत पालिया, सर्वेने शुभ साज ॥ ३ ॥

इति पांडव कौरव संग्राम चरित्र संपूर्ण

ढाळ मूलगी तेहिज ॥ भजो नरराम राम ॥ ए देशी ॥ दुर्योधन सेनापति भीषम, किधो बलियो जाणी॥ धृष्टद्युमन पांडव थीर थाप्यो ॥ कटक तणो आगे वाणी होराजा किधो आज भारथ ॥१॥ अभिमन्यु कुमर अधीक बलवंतो, सर्व सुभटने आगे ॥ रण रंगे रमवा रलियायत, ब्रहतवलसुं भांगे हो राजा ॥ कि०॥२॥ भीष्म केतुं अभिमन्यु कापे, भीष्म भीष्म होवे ॥ छेदे केतु भीसमी भूपति, देव तमासो जोवे हो राजा ॥ कि०॥३॥ उत्तर कुंवरने दुःखदाइ, सल्य नरेसर देखी ॥ अर्जुन कौरवना दल मोडे, भीष्म रीस विशेषी हो राजा ॥ कि०॥ ॥ ४ ॥ शंड शीखंडी आगे राखी, इंद्र तणो सुत कोपे ॥ भीष्म तनु तव बाणे विंध्यो, प्रभु मरजादा नलोपे हो राजा ॥ कि० ॥ ५ ॥ तृष्यावंत नंदी सुत जाणो, अर्जुन पावे पाणी ॥ संथारो करी स्वर्ग बारमे, हुवो अमर विमानी हो राजा ॥ कि० ॥ ६ ॥ द्रोणाचार्य सेन्या नायक, होइ रणमे आवे ॥ आरंभी आरंभ घणेरो, करतो शंक न पावे हो राजा ॥ कि० ॥ ७ ॥ श्री भगदत्त हरायो अर्जुन, जयद्रथ अर्जुन नंद ॥

जयद्रथ अर्जुन करी प्रतिज्ञा, पाड्यो ततखीण मंद हो राजा ॥ कि० ॥ ८ ॥ सात अक्षोहणी चउदसने दिने, खिली कौरव केरी ॥ हेडंबा सुत हार मनावी, करणे करीय घणेरी हो राजा ॥ कि० ॥ ९ ॥ धृष्टद्यु मन आगे परपंचे, द्रोणाचार्य हारयो ॥ अणसण व ले पंचम सुर लोके, आगो कारज सारयो हो राजा ॥ कि० ॥ १० ॥ सेन्या नायक करण कियो तव, आ स्या अमर कहावे ॥ अर्जुन करण सरीखे लडवे, हुं श कांइ न रहावे हो राजा ॥ कि० ॥ ११ ॥ भीम प्र चंम बलिने आगे, दुर्योधन बल भांग्यो ॥ दियो पर हार गदानो गाढो, आइ धरतिपर लाग्यो हो राजा ॥ कि० ॥ १२ ॥ हारयां कौरव पांडव जीत्या, धर्में जय जग जाण्यो ॥ यादवराय घणुं गह गाहिया, पां डव सुदिन पीछाण्यो हो राजा ॥ कि० ॥ १३ ॥ रा य मिलि उछव कियोरे, आया गजपूर मांहि ॥ राज लियो पुगी रलिरे, पुण्य तणे बल प्राहि हो राजा ॥ कि० ॥ १४ ॥ धरता लीधी आपणीरे, आपदा का ढि दूर ॥ सत्य प्रभावे पांडवारे, भोगवे सुख भरपूर हो राजा ॥ कि० ॥ १५ ॥ ए गुणचालिस सोमी ढा लमेरे, कौरव पांडव वाद ॥ श्री गुणसागर सूरिजीरे, उपज्यो अति अहलाद हो राजा ॥ कि० ॥ १६ ॥

दुहा ॥ एक दिवस हरीनी सभा, इंद्र सभा सम जोय ॥ वड वडा राणा राजीया, पावे सोभा सोय ॥ १॥

एटले आया नेम जिन, राय सहु किया जुहार ॥ सिंघा सण हरी पाखति, बेठा नेम कुमार ॥ २ ॥

ढाल १४० मी ॥ ते मन मोह्यो महावीरजी ॥ ए देशी ॥ निपजी वात विनोदमां, बल केरो अधीकार ॥ नीज नीज मनशुरे राजीया, वर्णवे विविध प्रकार ॥ १ ॥ प्राण पीयारारे नेमजी ॥ ए आंकणी ॥ कोइ कहे वसुदेवनो, बल मोटोरे संसार ॥ अक्षोभ बल अधीको कह्यो, महासेन जोर अपार ॥ प्रा० ॥ २॥ कोइ सराहे परजुनने, संब विशेषेरे जोय ॥ पक्ष ली या आप आपणी, करे परसंसारे सोय ॥ प्रा० ॥ ॥ ३ ॥ हलधर हांकीरे बोलीयो, झुठी सघलीरे वात ॥ जिन बलने नवि पुगहि, कुण नर कुण सुर मात ॥ ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ चरम उदधीने सोसवे, मेरु दले तत काल ॥ छत्र करे रणधी तणो, दंड गिरंदसु विसाल ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ चक्रि कोडनो बल अछे, सो एक सु रनी पास ॥ कोरू सुरानो बल जेतलो, एक सुरपति ने वीसास ॥ प्रा० ॥६॥ कालत्रयी नरिंद्रनो, बल जि न बलनेरे प्राहि ॥ लघु अंगुलिया नवि पुगाहि, ब ल अनंत जिन मांहि ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ हरिने अमरख ऊपनो, लढवा ऊठेरे जाम ॥ जिन निज भूज ऊंचो कियो, हरी हिचाणोरे ताम ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ हरी चि त चिंतारे ऊपनी, ए बलवतोरे वीर ॥ लेशे पदविरे महारी, साहस वंत सधीर ॥ प्रा० ॥ ९ खंडो खडी

यारे खेलतां, भाभीयांसुरे भाय ॥ रंगे राणीरे रुख मणी, बोली बोल लगाय ॥ प्रा० ॥ १०॥ भाइ भला सुख भोगवे, रमणी सोल हजार॥ स्या तुम कुमर रा जला, नारी एकहि लार ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ तिर्थंकररे आगे हुवा, भोगवी भोग विलास ॥ मुक्ति पहुतारे ते सही, तुम्ह को उपर आश ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ जांबुवति पभणे सखी, वादि करो तुम्ह खेद ॥ पुरुष नाहि ए हेजछे, में लीधोछेरे भेद ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ नारी विना नर कीउ रहे, पेखी पारेवा प्रेम ॥ अंबरथीरे आवे धरयो, कामनी उपर केम ॥ प्रा० ॥ १४ ॥ भामा भां खेरे भोलभी, तुं नवी समझिरे वात ॥ नारी भरेविरे दोहिली, सांसामें दिन जात ॥ प्रा० ॥ १५ ॥ देवरी योरे डाह्यो खरो, फिरे निपुणस्यारे न्याय ॥ व्याह म नावोरे जोरशुं, हरस्यो यादवराय ॥ प्रा० ॥ १६ ॥ राजेमतीरे व्याहवा, आव्या तोरण बार ॥ हिंसा दे खीरे वाहुड्यो, चढीयो गढ गिरनार ॥ प्रा० ॥ १७ ॥ राजुल राणीरे विनवे, नव भवना भरतार ॥ तुझ वि णँ व्यापीरे वेदना, सो जाणे कीरतार ॥ प्रा० ॥१८॥ संजम लीधोरे सादरो, सहस नरां परीवार ॥ घाती कर्म ने खय करी, पाम्या केवल सार ॥ प्रा० ॥ १९ ॥ स मोसरण देवे रच्यो, मिलीया चोसठ इंद्र ॥ वन रखवा लोरे आवीयो, प्रणम्यो कृष्ण नरिंद ॥ प्रा० ॥ २० ॥ दान देइरे संतोखीया, भेली सुंदर साज ॥ दसही द

सारारे परीवरघो, चाल्यो श्रीहरी राज ॥ प्रा० ॥२१॥ माता बंधव अंगना, पुत्रा केरोरे साथ ॥ विधीसु देइ प्रदक्षीणा, वांद्या श्री जगनाथ ॥ प्रा० ॥ २२ ॥ देश ना सुणीरे स्वामीनी, भवी पाम्या प्रतीबोध ॥ सम ता रुपेरे प्राणीयां, छोडे वयर विरोध ॥ प्रा० ॥२३॥ राजेमतिरे संजम लीयो, नवही दसारा तेम ॥ महा नेमी रहनेमीशुं, अवर ग्रहे व्रतनेम ॥ प्रा० ॥२४॥ सुर पोहता निज स्थानके, हरी पोहता पुरमांही ॥ प्र भु विचरेरे महीतले, साथे घणां सुर प्राही ॥ प्रा० ॥२५॥ चालीसा सोमी ढालमें, राजेमती जिन प्यार ॥ श्री गुण सागर सूरिजी, निवह्यो अधीक अपार ॥ प्रा० ॥ २६ ॥

दुहा ॥ गजपुर पती गर्जे महा, पांडव प्रवल प्र ताप ॥ आज्ञा इश्वरता पणे, पाले प्रथवी आप ॥१॥ नारद नाम महामुनी, चाली आयो ऋपी जाम ॥ बाप मायशुं पांडवा, किधो तास प्रणाम ॥ २ ॥ असंजती ने अवरती, जाणी द्रोपदी देव ॥ मान्यो नहीं मुनी वरु, फिर चाल्यो ततखेव ॥ ३ ॥

ढाल १४१ मी ॥ चंद्रावलानी देशी ॥ रीस वसे चित्त चितवेरे, एक पुरुपनी नार, गरव करे मनमें घ णुंरे, हुं मोटी संसारे जाणी ॥ पांच पुरुपनी नार वखा णी ॥ मद आठेहीसु राती अती, न्याय रहे रसरं गे रती ॥ १ ॥ जी नारदजीरे, कदली तरुनी उप

मारे, जाणी काल विणास ॥ फल मुके तिम द्रोपदिरे पमीयो चाहे पास ॥ पडीयो चाहे पास ते एतां, मुझने तो अण आदर देतां ॥ तो हुं जोरे विणसुं काम, एम कही ऋषी चाल्यो ताम॥ जी०॥ २ ॥ सोल हजार ए देशमांरे, वरते हरीनी आण ॥ पहोचावुं तेही स्थानकेरे, जिहां न चाले हरी प्राण ॥ जिहां न चाले हरीनो प्राण, सोधु सो जइ निश्चल ठाण ॥ द्वीप समुद्र उलंघी जाय, नारद करवा काज उपाय ॥ ॥ जी० ॥ ३ ॥ धातकी खंड भरतमेंरे, सुरकंकाह उगाह ॥ पद्मनाभ राजा भलोरे, सात सया त्रय नाह ॥ सातसया त्रीय केरो नाह, आपुणपे जाणे गुण गाह ॥ नारी निरोपम शुं सुख वाशी, भोग पुरंदर लिल वीलाशी ॥ जी० ॥ ४ ॥ नारद चाली आइयोरे, महील माही मनरंग ॥ राजा राणी साचवेरे, शेवा धर्म सुचंग ॥ शेवा धर्म सुचंगपणेरे, अति आदरशुं नृप भणेरे ॥ मुझ अंतेउर सरीखो रुडो, किहां ए दिठो मती भांखो कूडो ॥ जी० ॥ ५ ॥ नारद भांखे रायजीरे, स्यो जूठो अहंकार ॥ कुंवा मींडक सारीखोरे, तुं दिसंत अपार ॥ तुं दिसत अपार नरेशर, अवर न दीठी नार अलवेशर ॥ जीणेहि जेतो देख्यो पेख्यो, ते तोही मन वात विशेख्यो ॥ जी०॥६॥ जंबुद्वीपे जाणीएरे, खेत्र भरत सुस्थान ॥ हथीणा [illegible]रे, पांडव नारी प्रधान ॥ पांडव नारी प्र

धान कहावे, पंचाली जगमें जस पावे ॥ तेहने पग अंगुठ आणी, लाखमें नागे नावे तुझ राणी ॥ जी० ॥ ७ ॥ एम कही ऋपीजी गयोरे, नृपने तो रढ लागी ॥ विषया वसें आतुर थयोरे, देखणनी मती जागी ॥ देखणनी मती जागी जाम, सुर आराधन किधो ताम ॥ सुर भांखे सा अवर न चाहे, शु कर सो इण साथ उमाहे ॥ जी० ॥ ८ ॥ नृपनो हठ जाणी करीरे, सुर आयो त्रिय हेत ॥ आपी निंद्रा आकरीरे, किधी अधीक अचेत ॥ किधी अधीक अचेत जेवारे, पूरव संगीत काम समारे ॥ राजाना मंदीरथी लीधी, पद्मनाभने जइने दिधी ॥ जी० ॥ ९ ॥ महील मांही अति भलोरे, व्रक्ष अशोक उदार ॥ आणी राणी द्रोपदीरे, कियो अति अवीचार ॥ कियो अति अविचार विमासे, राजाने इम वात प्रकाशे ॥ ए कामथी तुं जाणजे राजा, जग वाज्या अपकीरती वाजा ॥ जी० ॥ १० ॥ हिवे मुझने मत तेडावजेरे, ए कहुंछु तुझ आज ॥ सती शिरोमणी ए खरीरे, धीरे करजे काज ॥ धीरे करजे काज निवेरो, एथी मतकरजे हठ घणेरो, सुर गयो एम कहीने वाणी, एकतालीस सोमी ढाल कहाणी, श्री गुणसागर सूरि वखाणी ॥ जी० ॥११॥

दुहा ॥ जागी राणी द्रोपदी, जाण्यो ए अपहार ॥ आरतीवंती अति खरी, मनशुं करे विचार ॥ १ ॥ हथीणापुर किहां रह्यो, सासु सुसरो जेठ ॥ मुझ प्रित

शिल तणो सुविचार ॥ पिण तो परवश दोहिलोजी, राखेवो आचार ॥ घ० ॥ ४ ॥ लेखण खटीका काम नीजी, हाथ पराइ जाय ॥ सावत पाछी नावहिजी, लागे वचन ए प्रांह्य ॥ घ० ॥ ५ ॥ रागी तो रावण घणोजी, दुति राणी तास ॥ तो पिण शियल नव ख डीयोजी, त्रिभुवनमे शाबास ॥ घ० ॥ ६ ॥ गुफा मां हि एकलीजी, राजुल राणी आप ॥ पडतो देवर उध र्योजी, शीयल गुणे थिर थाप ॥ घ० ॥ ७ ॥ चेडा नृपतीनी सुताजी, संतानिक निज नार ॥ एवंती प ति बेतर्योजी, सुजस घणो संसार ॥ घ० ॥ ८ ॥ कष्ट पडीया कामनीजी, न तजे नेम लिगार ॥ मोटा माणस तेहनेजी, प्रणमे प्रात अपार ॥ घ० ॥ ९ ॥ दो उपवासे पारणोजी, आंबील तपसुं प्रेम ॥ करति वरते द्रोपदिजी, सानिध होवे केम ॥ घ० ॥ १० ॥ युधीष्टीर नृप जागीयोजी, देवी न दिसे ताम ॥ अरहुं परहुं सोधी घणुंजी, सुद्ध न लाधी जाम ॥ घ० ॥११॥ आज अम्हारा राजमांजी, कोन करे अन्याय ॥ लोह जड्यो शिर केहनोजी, कुलहिणीत ते थाय ॥ घ० ॥ ॥ १२ ॥ बाप कन्हे आया चालिजी, भांखी सघली वात ॥ पाखरीया भड मोकल्याजी, वसुधा मांही वि ख्यात ॥ घ० ॥ १३ ॥ सुभट सहु फिरी आवीयाजी, खबर न हुइ कोय ॥ राजा पंडुजी खरोजी, आरती वंतो होय ॥ घ० ॥ १४ ॥ कुंतीशुं पांडु कहेजी, दारा

मती तु जाय ॥ वात जणावो मुरारनेजी, जिम ए का म सराय ॥ ध० ॥ १५ ॥ बेंतालीस सोमी ढालमेंजी, कुंती करवा काम ॥ श्री गुणसागरजी कहेजी ॥ किम भेटे नृप शाम ॥ ध० ॥ १६ ॥

दुहा॥कुंती आडंबर घणे, बेशी वड गजराज ॥ आवी नगरी द्वारीकां, कारीज करवा काज ॥ १ ॥ आप हरीसा बागमें, दूत मोकल्यो एक ॥ खबर कर ए भत्रीजने, प्रभु तव करे विवेक ॥ २ ॥

ढाल १४३ मो ॥ शियल सलुणी मयणरया स तीरे ॥ ए देशी ॥ शोभा विविध प्रकारशुरे, किधी न गरीमें प्राहीरे ॥ जण जण जय जय उचरेरे, वाजा वा जता उगाहीरे ॥ १ ॥ भतीज भुवा शुं सादरोरे ॥ ए आंकणी ॥ पेसारा विधी साचविरे, हय गय रथ पा यक साररे ॥ बेसी वडे गजराजीएरे, साथे सहु परी वाररे ॥ भ० ॥ २ ॥ देतो दान महाबलिरे, हरजी हरखे आवंतरे ॥ दरशण देखी दुरथीरे, प्रभुजी सुख पावंतरे ॥ भ० ॥ ३ ॥ हाथीथी तव उतरीरे, प्रणमी भुवाना पायरे ॥ भगति करी भल भावसुंरे, चितनो चोखो चावरे ॥ भ० ॥ ४ ॥ जन्म कृतारथ तव मा हरोरे, माहरो जीव सो उल्हासरे ॥ दिठो दरशण ता हरोरे, सुफल हुइ सब आशरे ॥ भ० ॥ ५ ॥ कंठे ल गायो प्रेमसुंरे, आणी अधीक जगीसरे ॥ फूली अं ग नमावहिरे, तव भुवाजी दिए आशीषरे ॥ भ० ॥

॥ ६ ॥ चिरंजीवे चिरनंदजेरे, चिर लगी पालजे रा
जरे ॥ चिरं आश्रीत सहु लोकनारे, प्रभु पूरे वंछित
काजरे ॥ ज० ॥ ७ ॥ जुवा जातिजो एकठारे, बेठा
वड गजराजरे ॥ नगरिमें पाउधारीयारे, घर घर हु
वो उछायरे ॥ ज० ॥ ८ ॥ भोजाइ भगाति महारे, न
णादिसुं नेह उदाररे ॥ बहुत्तर सहस सुहामाणिरे, प्र
णमे हेत अपाररे ॥ ज० ॥ ९ ॥ हलधरने हरजी त
णिरे, नारी अधीक उमेदरे ॥ विसामण विधी साचवी
रे, टलियो सघलो खेदरे ॥ ज० ॥ १० ॥ भोजन भ
कती करी खरीरे, हरी पुछयो आगमनी वातरे ॥ वात
सुणंता विशेपथीरे, हरी हांसो हिए न समातरे ॥ ज०
॥ ११ ॥ एकेलो हुं एतलिरे, केरो थाउं रखवालरे ॥
ए पांडव पांचे महा बलिरे, न रखाणी एकहि बालरे ॥
॥ ज० ॥ १२ ॥ कृष्ण कहे फूइ सांभलोरे, मतकरो चिं
ता लिगाररे॥पातालाथी पेदा करुंरे, सोपुं तुज सुखका
ररे ॥ ज० ॥ १३ ॥ आशासना दिधी घणीरे, आपी
वहुला मालरे॥ पोहोचावी हथीणापुररे, सा आवी तत
कालरे ॥ ज० ॥ १४॥ कृष्णे साद फिरावियोरे, त्रिहु खं
ड खबर कढायरे ॥ लाधी नाहि इहां द्रोपदिरे, हरी मन
झांखो थायरे ॥ ज० ॥ १५ ॥ त्रेतालिसा सोमी ढाल
मेंरे, हरजी करयो ए कामरे ॥ श्री गुणसागर सूरिजी
रे, कहे मोटानो मोटो नामरे ॥ ज० ॥ १६ ॥

दुहा॥ एतले नारद आवियो, दिधो बहु सनमान ॥

आरति अति उतावली, पूछे श्री जगवान ॥ १ ॥ गा
म नगरपुर पाटणां, फिरता नव नव देश ॥ किहा
दिठी तुमे द्रोपदि, वात कहो सुविशेष ॥ २ ॥
सुरकक्का नगरी जली, पद्मनाज नृप गेह ॥ मे पंचा
ली राखी, दीठी पिण सदेह ॥ ३ ॥ हरी जांखे ना
रद प्रत्ये, थारा काम मुनिंद ॥ एम कहि उठी गयो,
निश्चे लह्यो नरिंद ॥ ४ ॥

ढाल १४४ मी ॥ बावा कीशनपुरी ॥ ए देशी ॥ मा
धव कागल लिखीयो जलो, गजपुर नगर अछे गुण
निलो ॥ पांडू जूपति पांडव जू धणी, कागल मांहि लि
खी हेत जणी ॥ १ ॥ मेरो जाग्य जलो मेरो जाग्य
जलो ॥ ए आंकणी॥ दूत तेडी हरी कागल नृप दियो,
करी जुहार तेणे उचो लियो ॥ द्रोपदि खबर कहेजे सु
खदाय, हथीणापुर तुं वेगे जाय ॥ मे० ॥ २ ॥ धात
की खंड इहांथी दूर, अमरकंका नगरी धनपूर ॥ पद्म
नाज नृप महील मझार, तिहां छे द्रोपदि राज कुमार
॥ मे० ॥ ३ ॥ कहेजे कृष्ण हुवा असवार, साथे ल
शकर अपरंपार ॥ पूरव सागर तट वैताल, तिहां चा
ल्या वागी करनाल ॥ मे० ॥ ४ ॥ झाझो कटक साथे
लावज्यो, अमपासे वेगा आवज्यो ॥ दूत शिख लेइ चा
ल्यो गजपुरे, अनुक्रमे गयो नगरी परसरे ॥ मे० ॥
॥ ५ ॥ पांडुरायने कियो जुहार, कागद दियो हरख
अपार ॥ वांची कागद हुवो संतोष, पांडव लस्कर क

री वहु जोप ॥ मे० ॥ ६ ॥ हिवे नारायण जोर मंडा
ण, गाम नगर करता मेलाण ॥ अनुक्रमे दरीया कां
ठे गया, भली ठाम जइ डेरा दिया ॥ मे० ॥ ७ ॥ पां
डव आव्या मननीरली, हरी दिठा मन वांग फली ॥
मांहो मांही मिल्या ससनेह, जिम हरखे जन वुठा मे
ह ॥ मे० ॥ ८ ॥ श्रीपति पांडव करे विचार, जादव
जोर जुड्यो दरबार ॥ कृष्ण कहे सुणजो सहु नृप,
आगे सागर पदम सरुप ॥ मे० ॥ ९ ॥ लाख दो जोज
णनो मान, किम उलंघ्यो जाइ असमान ॥ आप आ
पणी मती केलवो, पाछे अरिपुर आछे भेलवो ॥ मे०॥
॥ १० ॥ बोल्या बलभद्र दसे दसार, जलनीधी तरवो
तुम्ह आधार ॥ निसुणी सहु राजानी वात, हिवे हरी
करे कवण अवदात ॥ मे० ॥ ११ ॥ त्रण उपवास कि
या रोकडा, जिणथी हुवे वंछीत थोकडा ॥ त्रिजे दिन
सुर प्रगट थयो, माधव मनमां आनंद भयो ॥ मे०॥
॥ १२ ॥ सुर भांखे सुण केशवराय, किण कारण स
मरयो चित लाय ॥ कृष्ण कहे सुणो सुरराय, पदम
नाभ नृप कियो अन्याय ॥ मे० ॥ १३ ॥ ढाही को
ट पाडु कांगरा, मांगे भिख चुणे सागरा ॥ सुर बोले
मतकरो हरी रिस, इहां बेठा तम फले जगीश ॥ मे०॥
॥ १४ ॥ पद्मनाभ तुम्ह लागे पाय, द्रोपदी पिण
आणुं इण ठाय ॥ सघली नगरी आणु इहां, सायर त
री थे जावो किहां ॥ मे० ॥ १५ ॥ को तो नगरी साय

र धरुं, तरली माटी उपर करुं ॥ तिणे मूरख जो कियो अकाज, तुमे हठ मतकरो महाराज ॥ मे०॥१५॥ कृष्ण कहे ए सघलुं भलुं, पिण एकवार जइ एहने मिलुं ॥ सायर मारग मांगु उछाह, एह तणी मुझने ज स चाह ॥ मे० ॥ १७ ॥ चंमालिसा सोमी ढाल, कहे गुणसागर अधीक रसाल ॥ द्रोपदी सीयल तणे सुप्रकार, उपनो हियडे हरख अपार ॥ मे० ॥ १८ ॥

दुहा ॥ दिधो मारग मोकलो, पांडवने नृप शाम ॥ पट रथ सायर उतरी, आया कंकापुरी ताम ॥१॥ दारुक नामा सारथी, नृप कन्हे गयो तेह ॥ सिंघासण लाते हण्यो, काढि भाला रेह ॥ २ ॥ दुरवचने नीभ्रंछियो, रे रे लंपट नूप ॥ कृष्ण घारे आविया, था साहमो धरी चूप ॥ ३ ॥ राजा कोप्यो ततक्षणे, दूतने देइ अपमान ॥ चमीयो आडंबर घणे, दलबल ने मंडाण ॥ ४ ॥ करी शिणगार शोभा धरी, हाथ ग्रहि शर चांप ॥ गज अइरावत पर चडी, आयो सनमुख आप ॥ ५ ॥ कृष्ण कहे पांडव प्रते, अरी साथे संग्राम ॥ तुम करशो के हुं करुं. भांखे पाडव ताम ॥६॥

ढाल १४५ मी ॥ वीराजी गज थकी उतरो ॥ ए देशी ॥ हमें हरसा संग्रामने, तुमे देखो एक वारोरे ॥ हरी पगे लागी रथ चड्या, वचन कह्यो अविचारोरे ॥ १ ॥ पांडव कहे हरजी सुणो ॥ ए आंकणी ॥ पद मनाभ के अम्हे नहि, एम कही सनमुख चाल्यारे ॥

माधव तिहा विचारीयो, पहेले वचने पाल्यारे ॥ पां०॥
॥ २॥ बेहु दल एकठा मिल्या, वाग्या बाणना शोकोरे॥
पायकसुं पायक भिमे, नाठा काठा लोकोरे ॥ पां० ॥३॥
सहदेव जोशी योगणी, डावी भैरव घेरेरे ॥ लोह को
ट भड कटकमें, कृष्ण दुहाइ फेरेरे ॥ पां० ॥ ४ ॥ दु
समन भूप भुजंग मन, कुल नकुल परे धावेरे ॥ धर्म
पुत्र पुकारीया, वडा वडा विरुद बोलावेरे ॥ पां०॥ ५॥
पदमनाभ चडी आइयो, पडी ददामां ठोरोरे ॥ हल
कारा वड वागीया, पडी लडाइ जोरोरे ॥ पां० ॥ ६ ॥
अर्जुने बाण संभारीया, जिम धोरीधर धीरोरे ॥ स
नमुख को आवे नही, पासे वहे हथीयारोरे ॥ पां० ॥
॥ ७ ॥ अर्जुने भीरु करण भणी, भीम गदा लेइ धा
योरे ॥ पदनाभ मन चिंतवे, ए दाणव किहांथी आयोरे
॥ पां० ॥ ८ ॥ आप भूप रोसे चड्यो, पांच लाखपें
जायोरे ॥ पांच सहस कर एकठां, अरजुनने ठहरा
योरे ॥ पां० ॥ ९ ॥ पदमनाभ परपंचथी, अर्जुन म
न अकुलावेरे ॥ शस्त्र सघलाहि चालवे, हाथ कोइ
नवी फावेरे ॥ पां० ॥ १० ॥ दिश मुंझाणी पांडवा, उ
भा तव पिछतायोरे ॥ सूरवीर पिण शुं करे, वचन ग
ले छेतरायोरे ॥ पां० ११ ॥ नाठा भाग्या आवीया,
पांचे पांडव सूरोरे ॥ विलखाणा मन आपथी, कायर
देह न भूरोरे ॥ पां० ॥ १२ ॥ कृष्ण कहे पांडव सु
णो, रहो उभा मती भूरोरे ॥ हिवे नाशी किहां जाइसो,

द्वारकां तो रही दूरेरे ॥ पां० ॥ १३ ॥ एही वचन मु
ऊ मानजो, दुसमन दूर नसावुरे ॥ पदमनाभने जी
वतो, अपुठो तारा बंधावुरे ॥ पां० ॥ १४ ॥ पैंता
लीसा सोमी ढालमें, सनमुख उठ्यो सोइरे ॥ श्री गु
णसागर देखजो, हिवे कुण तमाशो होइरे ॥पां० ॥१५॥

दुहा॥झूझ करण माधव चड्यो, करी आडंबर जोर
॥ पदमनाभ सेना सजी, उभो एकणकोर ॥ १ ॥
आज अमारो जय हुशे, पदमनाभनो नाश ॥ एम
कही रथ उपर चड्या, दारुक सारथी पास ॥ २ ॥

ढाल १४६ मी ॥ कडखानी देशी ॥ धजा रथ फ
रहरे देखी वैरी डरे, एक रथ सहस रथ आंखी दिसे ॥
जाणे गढ भेलशे कोडी सुभट मेलस्ये, कृष्ण लोचन
अरुण हुउ रीसे ॥ १ ॥ हिवे गढ भेलवा चड्यो वसुदे
व सुत, सूर जीम तेज दिपे सवायो ॥ अमर कंकापु
री रतन माणक भरी, भय करी थिर हरी कोण आ
यो ॥ हि० ॥२॥ पांच पांडव तणी वात श्रवणे सुणी,
रोस धरी रथ चडी कृष्ण आवे ॥ दूरथी अटकल्यो, गाभ
भूप खलभल्यो,ए कुण सामत तुम सबल दावे ॥हि०॥३॥
देव दिठे पड्या रथेरथ आथडया, कृष्ण सुख हाथशुं
शंख वायो ॥ तिसरो भाग लशकर तणो घाटे गयो,
मिट गयो भूप वलतो न आयो ॥ हि० ॥ ४॥ धनुष्य
सारंग मनरंग हरी कर धरी, पिण चढण काज तिण
वार नाठो ॥ भाग त्रिजो कटक सुभट पग चालरया,

पदम पग गेडीया हुतो नाठो ॥ हि० ॥ ५ ॥ अमर कंका जडी नगर भागज पडी, खलभल्या लोक सहु एम भांखे ॥ भुप ए लंपटी न्याइ प्रभूता घटी, नासतां भागतां कवण राखे ॥ हि० ॥ ६ ॥ अमरकंका जिहां कृष्ण आवे तिहां, रथथी उतरी कोट देखे ॥ ढाहि ढ म ढेर करी सुसाहि ततखिणे, रुप नरसिंहनो करी सु विशेषे ॥ हि० ॥ ७ ॥ हिवे कृष्ण नरसिंहनो रुप सबलो कियो, अमरकंकापुरी कोट पाड्यो ॥ वड व डा मेहेल तो रण पड्या धडहडी, पोलनो बार हरी आप उघाडयो ॥ हि० ॥ ८ ॥ अमरकंका धणी, चि त चिंता घणी, एकले कवण ए काम कियो ॥ कटक नाशी गयो, कोट पिण इण लियो, कोटि दे राखीए आ प जियो ॥ हि० ॥९॥ आप आलोच करि हियो नि ज ठाम करी, द्रोपदि पासे नृपाल आवे ॥ माहरी ध मैरी बेहेन मुझ राबले, सुमती दे ताहरी दाय आवे ॥ हि० ॥ १० ॥ द्रोपदी कहे सुण वाणी कल्याण मुझ, पदम तुं रदन करे देश सारो ॥ सार संसारथी लाल वहु मालले, लाग्य हरी पाय जो भाग्य थारो ॥ हि० ॥ ११ ॥ दिन दिवो धरी लेइ अंतेउरी, त्रणो दांत ध री साथ मोरे ॥ मन हठ परहरी हाथ जोडी करी, रा खले माधवा शरण तोरे ॥ हि० ॥ १२ ॥ हुं कहुं तिम करो कृष्णथी मत डरो, चरण लागी करी एम भांखो ॥ । ॅ ो शरण संसार तारण तरण, मुझ गुनह माफ

कर माग राखो ॥ हि० ॥ १३ ॥ कृष्ण बोल्या तव रुट स्यो किम हिवे, वहिन तें माहरी केम आणी॥मारी शत खंड भुजदंड शीर मुंड करी, करुं तेम वेल वहे जेम घाणी ॥ हि० ॥ १४ ॥ हिवे मुझने मिल्यो कोप सघलो टल्यो, जा घर ताहरे पदम पापी ॥ द्रोपदि लेइ करी तिहां थकी संचरी, द्वारकां गमनरी वात थापी ॥ हि० ॥ १५ ॥ कृष्ण पांडव मिल्या, द्रोपदी लेइ वल्या, बहु रथ पाछली राते चाल्या ॥ भाग्य मोटे कीसन नाहि कोइ वसन, घणा पकवान लेइ साथ घाल्या ॥ हि० ॥ १६ ॥ द्रोपदी सिल वले किसन शोभाग्य वले, पांडु सुत भाग्य वले विजय पायो ॥ पारको वध धावली पारकी, पारकी जइ जलनीधीमें सवायो ॥ हि० ॥ १७ ॥ ढाल सेतालीसा सोमी सुहामणी, द्रोपदी सिल थकी काज सरीयां॥ श्रीगुणसूरि गुरु भवीकने शिखवे, सियल केडे व्रत सघलाही धरीया॥हि०॥१८॥

दुहा ॥ तिणे कालेने तिण समे, धातकी खंड मझार ॥ पूरव धातकी भरतमें, चंपा नगरी सार ॥ १ ॥ नगरी बाहीर उद्यानमें, विराजे श्रीजिनराज ॥ कंपील्लपूर मुख परखदा, बैठी अधिक सकाज ॥ २ ॥

ढाल १४७ मी ॥ इडर आंबा आंबलीरे ए देशी॥ जिन दरशन मन उलसेरे, आणंद अंग न माय ॥ जिन देशना सहुको सुणेरे, सुणता आवे दाय ॥ १ ॥ जिनेसर इम भाखे उपदेश ॥ ए आंकणी ॥ तिण वे

ला सुणी तिहांरे, शंख शब्द घननाद ॥ चित्त चम
क्यो नृप चिंतवेरे, मन उपनो विखवाद ॥ जि० ॥२॥
कोइ नवो इहां उपनोरे, वासुदेव बलवंत ॥ मुझ सरी
खो जाणीएरे ॥ जीण बले अचल चलंत ॥ जि० ॥
॥ ३ ॥ हरी पूछे जिनने नमीरे, शंख शब्द सबंध ॥
जिन बोले थें मत डरोरे, पदमनाभ प्रबंध ॥ जि० ॥
॥४॥एक खेत्र एकणसमेरे, चक्री जिन बलदेव॥वासुदेव
पिण जोमलेरे, नवी उपजे नितमेव ॥ जि० ॥ ५॥ पद
मनाभसु झूझतारे, कृष्ण बजायो शंख ॥ ते सांभ
ली तुझ उपनीरे, वासुदेव निशंक ॥ जि० ॥ ६ ॥ कं
पील वात सुणी हरखीयोरे, टाल्यो मन संदेह ॥ जि
न वांदी एम विनवेरे, कृष्ण मिलण मुझ नेह ॥ जि० ॥
॥ ७ ॥ बलतुं मुनीसुव्रत भणेरे, वासुदेव सुण वाण ॥
हुउ न होशे हुइ नहीरे, ए तुं निश्चे जाण ॥ जि० ॥
॥ ८ ॥ हरी हरीने नवी मिलेरे, जो करे कोड उपाय॥
देखिश ध्वज हरी रथ तणीरे, सागर तट तिहां जाय
॥ जि० ॥ ९ ॥ प्रभुने वांदी गज चडीरे, कंपील चा
ल्यो ततकाल ॥ सागर विच दिठी तिसेरे, धजा पि
त शितलाल ॥ जि० ॥ १० ॥ शंख बजायो मन रली
रे, कृष्ण सुणो अरदास ॥ एकवार देदार दियोरे ॥
मुझ मन पूरो आश ॥ जि० ॥ ११ ॥ हरी पिण शंख
बजाइउरे, शंखे शंख मिलंत ॥ घणी भोमी अमो आ
वीयारे ॥ रथ पाछा न वलंत ॥ जि० ॥ १२ ॥ हरख

धरी पाछो वल्योरे, सुरकंका नणी जाय॥ पद्मनाभ पिण साहमोरे, आवी लाग्यो पाय ॥ जि० ॥ १३ ॥ पद्म नणी तव पुछीयोरे, किस्यो नगरी प्रकार ॥ कुण वैरी ए तुऊनेरे, संताप्यो निरधार ॥ जि० ॥ १४ ॥ स्वामी ताहरी साहीबीरे, लेवा कारण आज ॥ हरी आपण आव्यो हतोरे, मैं आण्यो तस वाज ॥ जि० ॥ १५ ॥ कंपील क्रोधातुर थयोरे, सांनली एहवी वाण ॥ आणा थकी अलगो कियोरे, पाम्यो दुःख असमान ॥ जि० ॥ १६ ॥ तेऊावी तस नंदनेरे, थाप्यो नरपती पाट ॥ राजा निज स्थानक गयोरे, टाली दुःख उचाट ॥ जि० ॥ १७ ॥ सडतालीस सोमी कहीरे, ढाल अनोपम एह ॥ गुणसागर जिन वाणीएरे, उपजे अधीको नेह ॥ जि० ॥ १८ ॥

दुहा ॥ मारग जातां इम कहे, पांऊवने हरी राय ॥ सुस्थीक सुर नेटी करी, हुं आवीश सुखदाय ॥ १ ॥ थान पात्र तरी जानवी, लेजो जइ विश्राम ॥ प्रवहण पाछो मूकज्यो. मुऊ कारण अनीराम ॥ २ ॥ गंगाने तट आवीया, पाऊव पंच उदार ॥ ठठी राणी द्रोपदी, रथ वाहन अति सार ॥ ३ ॥ नावा मोठी मनोहरु, बेठो सघलो साथ ॥ खेम कुशल जल उतरया, चित चिंतवे नर नाथ ॥ ४ ॥

ढाल १४८ मी ॥ इण पुर कंबल कोइ न लेशी ॥ ए देशी ॥ चित चिंतवे तव नर नाथो, एक मतो ठे

सघलो साथो ॥ होणहार मेट्यो नवी जाय, सघला
नी मती सरखी थाय ॥ १ ॥ कुंरू कुंडनो जूदो पाणी,
तुंरू तुंडनी जूदी वाणी ॥ मस्तके मस्तके मती छे जुइ,
पिण सहुनि एकज हूइ ॥ २ ॥ सहु सयाणा सोचो कां
इ, न्नावीनो बल मोटो श्रांही ॥ पांडवजी सरीखा जो
चूके, सुमति सरोवर तो कुण ढुंके ॥ ३ ॥ हांसि मिसे
उपाय उठावे, सांतकमें वैताल जगावे ॥ एह श्रजा
णपणो जय मोटो, जाणी वुकी खाजे खोटो ॥ ४ ॥
नाव छिपावे एम विचारी, कितनो एक बलवंत मूरारी ॥
हांसो काम विणा सणहारो, हांसाथी चिड थाइ पीया
रो ॥ ५ ॥ शाम तदा सुरने संतोखी, प्रिती पनोती
परघल पोखी ॥ श्री गंगा तटी चाली श्राया, नाव न
देखे तव हरी राया ॥ ६ ॥ एक हाथे रथ खेडु घोडा,
विजे हाथ तिरे जल थोडा ॥ पाट नादिनो जोजन बा
सठ, ते पिण जोजन देव तणो पट ॥ ७ ॥ जल श्रध
विचे श्राया जामो, थाक्या श्रति न तिराइ तामो ॥
चित न्नितरे ए चिंता थापी, पांन्नव तो बलवंता श्रा
पी ॥ ८ ॥ नाव विना ए पयरी उपाणी, हय रथने नी
रवाहे राणी, एह अचंन्नो दिसे न्नारी, किम श्राया श्र
री श्रागें हारी ॥ ९ ॥ जाणी हरी चिंताए चंप्यो,
गंगा देवीनो श्रासण कंप्यो, गंगा देवीए दिधो थाह,
हरी मन उपज्यो श्रधीक उगाह ॥ १० ॥ पाणी पय
री कांठे लागे, पांडव श्रावी उन्ना श्रागे ॥ श्री हरी

पांडव प्रेम अपारो, अब उपजे मन मांहि विकारो ॥ ॥ ११ ॥ दुपण तो हरीनो नवि दिसे, पांडवनो तो विसवा विशे ॥ लुगडातो धोवंत कुहाडा, न रहे साजो होइ अति जाडा ॥ १२ ॥ अडतालिस सो ढालसुं भांखी, चंद सूरज दो दिधा साखी ॥ श्री गुणसागर सूरि प्रकाशे, मति चुक्या नर गाढा घासे ॥ १३ ॥

दुहा ॥ कृष्ण कहे पांडव सुणो, तुम बलवंत अपार ॥ गंगा जल भुजवले तिरया, नारी लिया वली लार ॥१॥ जल अधविचे आवियो, हुं अति थाक्यो ताम ॥ गंगादेवीए माहरी, सानिध्य करी सकाम ॥ २ ॥ तो हमथी बलवंत तुमो, भांखे हरी ससनेह ॥ पद्मनाभ नृप आगले, हारया एह संदेह ॥ ३ ॥ गाथा ॥ सरला भाखे सरली वाणी, नवि मेले कोइ दुजी आणी॥ आहिल्या भांख्यो हरी मम जार, गंगा दाख्यो हर भरतार॥४॥

दुहा ॥ कपट तजी पांडव भणे, आणी सरलो भाव ॥ जोवा तुम बल कारणे, हमे छिपावी नाव ॥ ५ ॥

ढाल १४९ मी ॥ मारा घणारे पीयारा प्रभुजी ॥ ए देशी ॥ निसुणी एह कहाणी, हरी हृदयामां रीस भराणी ॥ हो कुबुद्धी, युं क्युं अकल तुझ आइ ॥ बालपणेथी भेला, वस्तां थइ एवडी वेला हो ॥ कु० ॥ ॥ १ ॥ गोवरधन गिरीराज, में उपाड्यो बल काज हो ॥ कु० ॥ वली बालपणे महा भाग्य, में नाथ्यो काली नाग हो ॥ कु० ॥ २ ॥ वली जरासंध लभा

इ, हुवता पिण अधीक वधाइ हो ॥ कु० ॥ तप आठ
म करी में साध्यो, सुर आयो आप आराध्यो हो ॥
॥ कु० ॥ ३ ॥ द्दिल खलवण कहाय, उलंघी जीत्यो
वडराय हो ॥ कु० ॥ पदमोतर झगडो जेथ, तिहां हु
ता आपण सहु सेथ हो॥कु० ॥ ४ ॥ लडतां पदमोत
र जंग, तुम न्हागी आव्या मुज संग हो ॥ कु० ॥ दे
खी मुझ वल काठो, नृप पदमोतर गयो नाठो हो ॥
॥ कु० ॥ ५ ॥ देइ पुर तणा दरवाजा, जइ पेठो मेहे
ल मांही राजा हो ॥ कु० ॥ पदमोतर अस्त्री रुप, ति
हां आवी नम्यो ते नृप हो ॥ कु० ॥ ६ ॥ ते वल ना
व्यो तुम दाय, हजी केतो वल जोवाय हो ॥ कु० ॥
एतो आव्या पुण्य पसाय, कृष्ण जाता तुमारुं शुं जा
य हो ॥ कु० ॥ ७ ॥ तुम प्रत्ये मिली तुम नार, कृष्ण
वाट जुवे वत्रिस हजार हो ॥ कु० ॥ आपण सरियां
काम, तरे कुण बिचारो साम हो ॥ कु० ॥ ८ ॥ पि
ण एटली तो नवि जाणी,जे रोशे हरी पटराणी हो
॥ कु० ॥ कृष्णनी वाट विचाल, जोतां हुसे वालगोपा
ल हो ॥ कु० ॥ ९ ॥ जात जो गंगा मझार, तो कु
ण आपत समाचार हो ॥ कु० ॥ नीगुण नीठोर मुखे
मीठ, तुझ ऋदय कठण अति धीठ हो ॥ कु० ॥१०॥
तुम वात सकल में लाधी, तुम पांचे वडा अपरा
धी हो ॥ कु० ॥ हिवे तजवो तुम्ह साथ, एम न्हांखे
श्री जदुनाथ हो ॥ कु० ॥ ११ ॥ न कछु वातके का

ज, तुम्ह किधो अधीक अकाज हो ॥ कु० ॥ तुम्ह नीस्नेहि थया आज, मुझ लेखे न कियां काज हो ॥ कु० ॥ १२ ॥ लोह दंड उपाडीने आयो, केशवजी को पे भरायो हो ॥ कु० ॥ एगुणपचास सोमी ए ढाल, गुणसागर कहे सुविशाल हो ॥ कु० ॥ १३ ॥

दुहा ॥ नृप भुजगम सारिखा, जालविया सुख होय ॥ आसंगे असुहामणा, पांभवनी परे जोय ॥ १ ॥ केशव कोपे पूरीयो, देखी थरहरी वाल ॥ आडी फिरी उभी रही, भांखे वचन रसाल ॥ २ ॥

ढाल १५० मी ॥ रायजी अमने हिंदुआणा राय गराशीयारे लोल ॥ ए देशी ॥ कृष्णजी तुमने कहुं करजोभ के, सुणो प्रभु विनतीरे लोल ॥ प्रभुजी नहि कोइ तुमारो दोषके, निठोर थया मुझ पतीरे लोल ॥ प्रभुजी तुमसु एवभी हाशके, करवी केम घटेरे लोल ॥ प्रभुजी लिख्या छठीना लेखके, मिटाड्या नवि मिटेरे लोल ॥ १ ॥ प्रभुजी दोश नहि तुम कोइके, किरतार एहि गमेरे लोल ॥ प्रभुजी ठोरु कुठोरु थाइके, मावित्र तोहि खमेरे लोल ॥ बधव तुमारी मोटी लाजके, काज विचारीयेरे लोल ॥ प्रभुजी विनवुं गोद बिछायके, रोस निवारीएरे लोल ॥ २ ॥ प्रभुजी तुमे मोटा माहाराजके, मनमां जाणीयेरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी पोतानो परीवारके, दिलमें आणीएरे ॥ लो० । प्रभुजी मोटा होय दातारके, बोले मुख मीठडुरे

॥ लो० ॥ प्रभुजी मोटा न कथे आलके, करे अण दिठडुरे ॥ लो० ॥ ३ ॥ द्रोपदी ताहरा पतिना बोलके, खीण खीण सांभलेरे ॥ लो० ॥ द्रोपदी इणे कीधा जे कामके, वैरी पिण नवी करेरे ॥ लो० ॥ द्रोपदी मारी एकज वातके, गदा पाबी नवी फीरेरे ॥ लो० ॥ एहने बल देखाडुं आजके, हरी मन रीस धरेरे ॥ लो० ॥ ॥ ४ ॥ राणी विलखाणी तेणीवारके, आंखे आंसु ढलेरे ॥ लो० ॥ भाइजी एवडो मकरो रोसके, उभी एम टलवलेरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी फूइ कुंताजीनी लाजके, दिलमां आणवीरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी पंडुराय मयायके, मनमां जाणविरे ॥ लो० ॥ ५ ॥ प्रभुजी गोब्राह्मण प्रतिपालके, सहु तुमने कहेरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी तुम्ह शरणे जे आयके, सो नर नीरवहेरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी नीठोर थया तुम आजके, किम होशे सहिरे ॥ ॥ लो० ॥ प्रभुजी कठण मरमनी वातके, वांक केहनो नहिरे ॥ लो० ॥ ६ ॥ प्रभुजी माणस होशे एह तो, वात घणी थइरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी बांहे ग्रह्यानी लाजके, राखो हेत लेइरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी करणी तणा फल एहके, तुमारी बेनडिरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी पूरव भवनो पापके, तास वेला पडीरे ॥ लो० ॥७॥ प्रभुजी एवडी तुमारी धाकके, हिवे हुं कीम सहुरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी अखंड एवा तण राखके, काकुं शुं कहुंरे ॥लो० ॥ प्रभुजी राखो एटली लाजके, बेरु करी गोडवोरे ॥

॥ लो० ॥ प्रभुजी मेलो मननी रीसके, वेहेला रथ जो डवोरे ॥ लो० ॥ ८ ॥ एहवा वचन सुणी जदुरायके, मनसुं विचारीयोरे ॥ लो० ॥ हठे मिलियो अबला अंतके, एम मन वालियोरे ॥ लो० ॥ केशव उपाडी लोह दंडके, कोप करी तिहारे ॥ लो० ॥ पांचे रथ किया चकचूरके, पांडव ऊभा जिहां रे ॥ लो० ॥ ९ ॥ नाखे रोस धरी हरी रायके, आण माहरी वहेरे ॥ लो० ॥ पांडव तुमारो सहु परिवारके, रेहवा नवि लहेरे ॥ लो० रेहेज्यो द्रष्ट थकी तुमे दूरके, पासे मति आवज्योरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी मन फाटो न सधायके, सहि एम जाणजोरे ॥ लो० ॥ १० ॥ प्रभुजी रथ मर्दनने ठामके, कोठो वसावीयोरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी सैन सकल तेणी वारके, सनमुख आवियोरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी द्वारापुरी सहु साथके, पोहोला ते सहिरे ॥ लो० ॥ प्रभुजी एकसो पचासमी ढालके, गुणसागर कहिरे ॥ लो० ॥ ११ ॥

दुहा ॥ पांडव प्रभु सोचे घणुं, कीयो किसो कीरतार ॥ ॥ विगडी वात विशेपथी, खीज्यो देवमुरार ॥१॥ जेह त्रुठे ते जग त्रुठीये, जेह रुसे जग रोस ॥ सोतो प्रभुजी पामीए, त्रुंसाहि संतोप ॥ २ ॥ पांचे पांडव द्रोपदी, तिहांथी आया गेह ॥ पांडुराय कुंता मिलि, जाग्यो अधीक सनेह ॥ ३ ॥ विलख्यां अंगज देखने, पूछे पांडु विचार ॥ कुंति बेठी सांभले, पासे सहु परीवार ॥ ४ ॥

ढाल १५१ मी ॥ एकली नारी साथ मारगमे नवि

जावुं हो ॥ ए देशी ॥ पांडव बोल्या बोल, माता प
ताजी हो एक वचन सुणो ॥ श्रीपति सेंति प्रीत, ज
ठेरी हुती हो सुख पिण हुतो घणो ॥ १ ॥ संप्रती
ठो जाण, केहेने जइ कहीए हो देशवटो दियो ॥ वच
कह्यां दसवीस, ते तो हम साले हो एक जाणे हिय
॥ २ ॥ पूछे पांडु नरिंद, ए किम खटपट हो थें हरी
करी ॥ सायर कांठे जाय, हरी पाय लागी हो उन्न
हेत धरी ॥ ३ ॥ सुस्थीत सुर आराध, श्रीपती सा
हो पट रथ लेइ करी ॥ पहुता पेले पार, जिहां क
दिसे हो अमर कंका पुरी ॥ ४ ॥ माधव कियो सु
ल, झूझ करीने हो कटक भगाडीयो ॥ कियो नरसिं
रुप, गढमढ पाडी हो पदम नसाडीयो ॥ ५ ॥ द्रोपद
आणीने दिध, हरी पगे लागी हो पदम पाछो वल्यो
रथ चढी पूरण प्रित, जलधी उलंघी हो हरी सुरने
ल्यो ॥ ६ ॥ अम्ह दिधो आदेश, गंगा जइने हो प
र तुमे करो ॥ हुं पिण आइस वेग, भाइजी पांभ
हो मन धीरज धरो ॥ ७ ॥ हम पिण गंगा आय, न
व चढीने हो गंगातट लह्यो ॥ हरीनी जोतां वाट,
रु तले बेठां हो हियडो गह गह्यो ॥ ८ ॥ एतले
षण नरेश, शिख करीने हो सुर शेती वली, आय
गंगा तीर, नीर निहाले हो तरणी अटकली ॥ ९
नाव न लाधी कांइ, हरी भुज बले हो गंगा उतरी
अमे लाग्या हरी पाय, हिली मिलीने हो उन्ना हेत धरी

॥ १० ॥ पछी हरी बोल्या एम, गंगा तिरीने हो थें कि
म आइया ॥ नावा हती अम्ह पास, तिण हम तिरी
या हो पांचे भाइया ॥ ११ ॥ वली माधव बोलंत, किम
ते नाणी हो सनमुख नावडी ॥ निज भुज तरशे केम, ह
री बल जोस्यां हो अमे एम तेवडी ॥ १२ ॥ वचन सु
णी निज कान, कृष्ण रिसाणो हो बोले आकरो ॥ कृ
तघ्न मुंढ नीटोल, पांडव ते दिठा हो वचन कह्यो बू
रो ॥ १३ ॥ लाख जोयण दो मान, सागर उलंघी
हो आणी तुम वहु ॥ मुझ वल तोहि न दिठ, थें मन कु
डा हो जगत जाण सहु ॥ १४ ॥ मुख न देखाडजो
मुढ, एम उलंभो हो देइने हरी गया ॥ अमें पिण तिहां
थी एथ, दुमना आया हो तुम्ह दरसण थया ॥ १५ ॥
पांडुराय सुणी वात, वलता बोले हो पुत्र थें बूरी क
री ॥ कृष्ण किया कुण काम, माम वधारी हो तुम्हे
तो एवी करी ॥ १६ ॥ मोतीने मन लाख, लाखने मू
ले हो मोती तो मिले फिरी ॥ पिण मन भाग्यो जाण,
ते रंग नावे हो कोड जतन करी ॥ १७ ॥ पांडुराय
महीपती ताम, कुंती तेडीने हो वचन एसो कहे ॥ मत
करो अवर विचार, श्रीपति पासे हो जायवा मन चहे
॥ १८ ॥ कहेज्यो घरनो सुल्प, माधव लज्या हो रा
खो हिवे माहरी ॥ तें पूरया मन कोड, वली हुं श्रीप
ति हो भुवा ताहरी ॥ १९ ॥ एम दीधी नृप शिख,
कुंती चाली हो पोहती एम अनुक्रमे ॥ द्वारामतीनो

राय, माधव आवी हो नुवाने पाये नमे ॥ २० ॥ पुरुपोत्तम करजोड, कुंती पुछी हो केम पधारीया ॥ कुंती नांखे एम, तेंतो रिसे हो पांडव वारीया ॥ २१ ॥ त्रण खंड प्रथवी मांही, आण तुम्हारी हो सघली शिर वहे ॥ नाइ नलपण जाण, ठाम बतावो हो वीरा जिहां रहे ॥ २२ ॥ गेरु उपर रिस, मात पितानी हो पाणी वल रहे ॥ वली मनावे आप, खोले बेसाडी हो शिख वचन कहे ॥ २३ ॥ जो थें करसो रोस, तो नाइ पांडव हो जइने किहां वसे ॥ वली मोटो संताप, देखी दुरजन हो दुर्योधन सुत हसे ॥ २४ ॥ बाहुबल भरतने जिम, रोस धरीने हो बंधव निषेदीयो ॥ आणी नाइ सनेह, पडता अपुठो हो तास झीलीलियो ॥ २५ ॥ आप उछेरी रुख, कोइ न कापे हो जो फल नवीदिए ॥ ए सोहे तुम पास, दूर मतकाढो हो को गुण लेइ हिए ॥ २६ ॥ रहेता पिहरनी उल, आश विराती हो नुवाने हुती घणी ॥ थोडामां दियो छेद, वात विचारे हो एतो आवी बणी ॥ २७ ॥ दीन वचन सुणी एम, माधव नांखे हो नुवा दुःख मती धरो ॥ छुं मतआणशो एह, पांडवथी माहरे हो अधीक न को खरो ॥ २८ ॥ कहेजो सुतने जाय, दक्षीण सागर हो वेल वहे जिहां ॥ तिहां रहेज्यो चित लाय, पांडु मथुरां हो नगरी वाशी तिहां ॥ २९ ॥ कहे चिरं लगी पालजो राज, अदिठ शेवाथी हो कारीज सारज्यो ॥ व

नो शी लावे निर, स्वाद न आवे हो मूल एम धारज्यो ॥ ३० ॥ कुंती मानी वात, तिहां थकी आवी हो प ती सुतने कह्यो ॥ हिवे कुण करे विचार, गजपुर मा ही हो किम जाइ रह्यो ॥ ३१ ॥ जिहां लगे पुण्य प्र काश, तिहां लगे बंधव हो सुजन मेलावमो ॥ गुणसा गर कहे एम, जिहां लगे सूरज हो तिहां लगे तावडो ॥ ३२ ॥ पांडुराय मथुरां निवास, नगर वसावी हो र ह्या मननी रली ॥ सुखमें पाले राज, एकावनसोमी हो ढाल भांखी भली ॥ ३३ ॥

दुहा ॥ श्री जिन नेम दयालजी, अतिशयवंत अ शेस ॥ अरती असुख दुःख टालतां, विचरे देश विदे श ॥ १ ॥ भद्दिलपुर आया सही, हरख्या लोक अपा र ॥ राजा वंदन आवीयो, साथे सहु परीवार ॥ २ ॥ सुलसा सुधी श्रावीका, नारी निरोपम नाम ॥ पट नं दनसु आवीया, श्री जिन वंदन ताम ॥ ३ ॥

ढाल १५२ मी ॥ कुमखडानी देशी ॥ दे उपदेश सुहामणोरे, ए संसार असार ॥ सुंदर सुखकारी ॥ धन जोबन परीवार सहुरे, कोइ न आवे लार ॥ सुं० ॥ ॥ १ ॥ दसे द्रष्टांते दोहिलोरे, मांणसनो भव एह ॥ सुं० ॥ आलस तजी आतुर थइरे, किजे धर्म सने ह ॥ सुं० ॥ २ ॥ श्री जिन वाणी सांभलीरे, ते पट ही सुकुमार ॥ सुं० ॥ समझावे माता पिता रे, लेवा संजम भार ॥ सुं० ॥ ३ ॥ बत्रीसे वर कामनीरे,

अमरीने अवतार ॥ सुं० ॥ बत्रीशे कंचन तणीरे, को डी तजी तेहीवार ॥ सुं० ॥ ४ ॥ जिन मुख संजम उच्चरेरे, पाले सुधाचार ॥ सुं० ॥ दो उपवासे पारणो रे, सदा करे सुखकार ॥ सुं० ॥ ५ ॥ स्वामी पधारया द्वारीकांरे, वंदन श्रीहरी राय ॥ सुं० ॥ आयो आडंब र घणोरे, वाणी सुण्या सुख थाय ॥ सुं० ॥ ६ ॥ प ट वंधवनो पारणोरे ॥ एकण दिन सुविशेप ॥ सुं० ॥ संघाडा त्रण जुजुवारे, पामी प्रभु आदेश ॥ सुं० ॥ ॥ ७ ॥ नगरी मांही आवीयारे, जूदा पडीयां जाम ॥ सुं० ॥ एक जुगल हरी मंदीरेरे, आया तव अभि राम ॥ सुं० ॥ ८ ॥ दिठां राणी देवकीरे, विधी वंदन अधीकार ॥ सुं० ॥ अंतरजामी आत्मारे, हेज जणा वण हार ॥ सुं० ॥ ९ ॥ लाडु तो हरी केसरीरे, वोह राव्या भरी थाल ॥ सुं० ॥ निज हाथे उलटपणेरे, आ णी भाव रसाल ॥ सुं० ॥ १० ॥ जेहनो चित्त देवा तणोरे, तेहने चित्त मजोय ॥ सुं० ॥ वित्तवंतने चित्त नहीरे, चित्त वीत्त पुण्ये होय ॥ सुं० ॥ ११ ॥ चित्त वी त्त दोइ संपज्यारे, पात्र पोखे तो वादी ॥ सुं० ॥ पात्र वडो ससारमांरे, सुकृत सहुनि आदी ॥ सुं० ॥ १२ ॥ पोखी न जाणे पात्रनेरे, पोखे काया जेह ॥ सुं० ॥ विण शिंगाही जाणीएरे, ढोर सरीखो तेह ॥ सुं० ॥ ॥ १३ ॥ व्याजे दिया दूणो वधेरे, चतुर गुणो व्यव साय ॥ सुं० ॥ खेति सेहेसे गुणा हुवेरे, दान दिया अनं

तो थाय ॥ सुं० ॥ १४ ॥ कुप वागने गौतणोरे, परन ख देखी विचार ॥ सुं० ॥ देता दान न थाकीएरे, दान वडो संसार ॥ सुं० ॥ १५ ॥ दिधां राणी देवकीरे, मोदक खरा अमोल ॥ सुं० ॥ एतले बिजो आवीयो रे, संघाडो समतोल ॥ सुं० ॥ १६ ॥ बावनसोमी ढालसेंरे, दाता करता दोय ॥ सुं० ॥ श्री गुणसागर सूरिजीरे, एक सरीखा होय ॥ सुं० ॥ १७ ॥

दुहा ॥ सोइ लाडु थाल सोइ, विधी वंदन पिण सोइ ॥ सोइ भाव उदारसुं, प्रतीलाभ्या मुनी दोइ ॥ ॥ १ ॥ दैव योग एवो हुवो, त्रिजो जुगल जिवार ॥ श्री हरी जननीने घरे, आया सही तिणीवार ॥ २ ॥ उही लाडु उही विधी, वोहराव्या मुनी तेह ॥ पिणतो शंका उपनी, राणीने मन एह ॥ ३ ॥

ढाल १५३ मी ॥ पूछी हो पूछि कोइनार ए देशी ॥ पूछे हो पूछे राणी वात, फिरि फीरि हो आया तुम्ह घर माहरेजी ॥ वारी हो वारी हुं सोवार, वारी हो वारी दर्शण ताहरेजी ॥ १ ॥ मिलीया हो मिलीया साधु अपार, न मिल्यो हो न मिल्यो योग अहारनोजी ॥ करवी हो पिड गवेषणा सुध, करवो हो उद्यम सुधाचारनोजी ॥ २ ॥ मुनिवर हो मुनिवर भाखे वाण, वाणी हो वाणी अमृत सारखीजी ॥ हम पट हो हम पटवंधव जाण ॥ न सके हो कोइ जुदा पारखीजी ॥ ३ ॥ भदिल हो भदिलपुर अवतार, सुलसाहो सुलसा माता मा

हरीजी ॥ तिस हो तिस अने दोइ नार, एति हो को डी कनकानि परीहरीजी ॥ ४॥ भेट्या हो भेट्या नेम जिणंद, जाण्यो हो जाण्या जिन जग तारणोजी ॥ लीधो हो लीधो संजम भार, किजे हो दोइ उपवासे पारणोजी ५॥ जोडा हो जोडा तीने आज, आया हो वोहरण थारे आविकाजी ॥ लालच हो लाडुनी नही कोइ, लालचि हो शिवनी पुण्य प्रभाविकाजी ॥ ६ ॥ राणी हो चितसु चिंते ताम, मुझसु हो निमितीये एम भांखीयोजी ॥ थारे हो थारे उत्तम नंद, होशे हो होशे एम काहि दाखीयोजी॥७॥म्हारो हो म्हारो कान नरिंद, जेहवा हो तेहवा पट जाणीएजी॥मुझथी हो मुझथी सुल सा सोय,मोटी हो मोटी आज वखाणीएजी॥८॥वंदन हो वंदन नेम जिणंद,आवी सा उतावलीजी॥देखी हो देखी तेह मुनिंद, उपजे हो उपजे अति मननी रलीजी ॥९॥सु रहि हो सुरहिनी परे जोय, हिंसे हो हिंसे हेज हिए घणोजी॥नयणा हो नयणा झानी होय, उलखी हो उलखी ले जण आपणोजी ॥ १० ॥ ढालज हो ढालज मीठी भुर, त्रेपन हो त्रेपनने सोभी भलीजी॥श्री गुण हो श्री गु णसागर सूरि, माता हो माता सुत मनसा रलीजी॥११॥

दुहा ॥ पूछे राणी देवकी, नेम जिणंदा पास॥ए पट मुनिवर देखतां, माहरे मन उल्हास ॥ १ ॥ ए भव के पर भव तणो, सगपणको व्यवहार ॥ देव दया क री दाखवो, झान तणा भंडार ॥ २ ॥

ढाल १५४ मी ॥ मेतारज मुनिवर धन धन तु म्ह अवतार ॥ ए देशी॥ बलीजाउ प्रभुजी, भांजो ए ह संदेह ॥ साधु सलुणा देखताजी, उपनो अधीक सनेह ॥ ब० ॥ १ ॥ सांभल राणी देवकीजी, भांखे श्री जगनाथ ॥ ए षट नंदन ताहराजी, नीसुणे स घलो साथ ॥ ब० ॥ २ ॥ सारद नामे सारदाजी, सा रद देवी होय ॥ वडवखती तुझ सारखीजी, नारी न बीजी कोय ॥ ब० ॥ ३ ॥ कंस कर्म आदे करीजी, सं भलाव्यो विरतंत ॥ हरखी राणी देवकीजी, वांदी श्री भगवत ॥ ब० ॥ ४ ॥ घर आवी एम चिंतवेजी, जाया नदन सात ॥ बालपणे न रमाडीयोजी, एकहि धीग मुझ मात ॥ ब० ॥ ५ ॥ भाग्यवती सा भामनी जी, बालिक जेहने गोद ॥ हुलरावे हियडे धरीजी, वासर जाय विनोद ॥ ब० ॥ ६ ॥ में कुण कुण पूरव भवेजी, प्रोढा पातिक कीध, केसर वरणो नानडोजी, एहवो मुझ दैवे न दीध ॥ ब० ॥ ७ ॥ एम केहती ध रती खीलेजी, सजल सलुणां नेण ॥ थया अणगम ता काननेजी, वाली सखीय न वेण ॥ ब० ॥ ८ ॥ अर ती अलुर वाधी घणीजी, आहट दूहट ध्यान ॥ पगे लागवा आवीयोजी, एटले श्री नृप कान ॥ ब० ॥९॥ च्यार च्यारसें मायनेजी, हरी नमे नित्य आय ॥ ए म ठ मासे वांदताजी, नीज जननीना पाय ॥ ब० ॥ ॥ १० ॥ निज पखेरां आंतरोजी, मोटा नाणे कोइ ॥

मेह अने शशी देवताजी, सहुने सरीखां जोइ ॥ व० ॥ ११ ॥ उपजाणे अरती तणोजी, माता मनहि मझार ॥ श्री हरीजीनो आवणोजी, तिणही वार विचार ॥ व० ॥ १२ ॥ वीनय करीने वीनवेजी, जननी श्री हरी राय ॥ माय मया करी भांखीएजी, आरती एवडी कांइ ॥ व० ॥ १३ ॥ अति लांबो निसासडोजी, मेलहि बोली माय ॥ सात नंदन में जाइयाजी, तुझ सरीखा हरी राय ॥ व० ॥ १४ ॥ पट बाध्या सुलसा घरेजी, तुं पिण गोकुल मांहि ॥ हुंश न पुगी म्हारी जी, बाल रमाडण मांहि ॥ व० ॥१५ ॥ उ दिनथी परवश पणेजी, वैरी केरे वास॥ नंदन होवे आठमोजी, तो मुझ पूरे आस ॥ व० ॥ १६॥ माय मनोरथ पूरवाजी, कान्हे किया उपवास॥ देव चवीने आवीयोजी, राणी उदर निवास ॥ व० ॥ १७ ॥ जो जो संच्यो पुण्यनाजी, मांग्या नंदन होइ॥चेलणा चुथा कारणेजी, रोइ न लहिए सोइ ॥ व० ॥ १८ ॥ चोपन सोमी ढालमेंजी, माधव केरी मात॥ श्री गुणसागर सूरि कहेजी, सुख मांही दिन जात ॥ व० ॥ १९ ॥

दुहा ॥ भविक जीव प्रतिबोधवा, जिनवर करे विहार ॥ पाप तिमर निरघाटवा, सहस किरण दिनकार ॥ १ ॥ गर्भ दिवस पूरा करी, जायो सुंदर नंद ॥ घर घर रंग वधामणां, घर घर अति आनंद ॥ २ ॥

ढाल १५५ मी ॥ नमिराय धन धन तुम अवतार

र ॥ ए देशी ॥ राणीजी हो जायो पुत्र रतन, जिहो कोमल जिम गजतालु ॥ लाला ॥ नामे गजसुकमाल ॥ रा० ॥ १ ॥ जिहो हरख्यो श्रीहरी राजीयो ॥ ला० ॥ हरख्या दसेही दसार, जिहो हरखी माता देवकी ॥ ला० ॥ हरख्यो सहु परिवार ॥ रा० ॥ २ ॥ जिहो बंदिखाना छोडीया ॥ ला० ॥ किधा बहु मंडाण, जिहो नगरीनी शोभा घणी ॥ ला० ॥ वाजे गुहिर निसाण ॥ रा० ॥ ३ ॥ जिहो यादव नारी सामटि ॥ला०॥आवे गावे गीत, जिहो आरण कारण किजीए ॥ ला० ॥ साचवीए शुभ रित ॥ रा० ॥ ४ ॥ जिहो दिजे मयगल मोटका ॥ ला० ॥ दिजे हयवर हार, जिहो दिजे सोना सावटु ॥ ला० ॥ दिजे अरथ भभार ॥ रा० ॥ ५ ॥ जिहो बारसमो दिन आवीयो ॥ ला० ॥ नाम दियो अभिराम, जीहो चंदकला जिम वाधतो ॥ ला० ॥ रुप कला गुणधाम ॥ रा० ॥ ६ ॥ जीहो खेलावणी हुलरावणी ॥ ला० ॥ चुबावणी चित लाय, जीहो न्हवरावणी पहेरावणी॥ला०॥आंगी अंग लगाय ॥ रा० ॥ ७ ॥ जीहो आंखलडी अंजावणी ॥ ला० ॥ भाले करावण चंद, जीहो गाला टीकी सामली ॥ ला० ॥ आलिंगन आनद ॥ रा० ॥ ८ ॥ जीहो पगमंडण ग्रहि आंगुली ॥ ला० ॥ ठमुक ठमुकती चाल, जीहो बोलण भापा तोतली ॥ ला० ॥ रिंजावणी अति रुयाल ॥ रा० ॥ ९ ॥ जीहो रोटी दहिय जिमा

वणी ॥ ला० ॥ लिला बाल विनोद, जीहो सबहीपरे माय देवकी ॥ ला० ॥ पावे अधिक प्रमोद ॥ रा० ॥ ॥ १० ॥ जीहो पढ्यो गुण्यो गति आगलो ॥ ला० ॥ जदुपती जीवन जोय, जीहो प्यारो प्राण थकी खरो ॥ ला० ॥ माताजीने सोइ ॥ रा० ॥ ११ ॥ जीहो एटले नेम समोसरया ॥ ला० ॥ वंदन देवमुरार, जीहो लघु नाइ आगे करी ॥ ला० ॥ परीवरीयो परिवार ॥ रा० ॥ १२ ॥ जीहो सोमल ब्राह्मणनि सुता ॥ ॥ ला० ॥ परणावणने काज, जीहो मूकि मंदिर आपणे ॥ ला० ॥ जइ वांदे जिनराज ॥ रा० ॥ १३ ॥ जीहो पूजी प्रणमी सांनले ॥ ला० ॥ वेठि परखदा बार, जीहो श्री जिनवाणी विस्तरी ॥ ला० ॥ नविकजना सुखकार ॥ रा० ॥ १४ ॥ जीहो पंचावन सोमी ढालमें ॥ ला० ॥ कुंवर गजसुखमाल, जीहो श्री गुणसागर सूरिजी ॥ ला० ॥ धर्म सुणे सुविसाल ॥ रा० ॥ १५ ॥

दुहा ॥ उपदेसे श्री नेम जिन, जीवा जीव विचार ॥ दान शियल तप नावनां, श्री जिन धर्म उदार ॥ १ ॥ नव नय हरवा नावना, बार तणो विस्तार ॥ विवराशुं विवरी कहे, त्रिनुवन तारण हार ॥ २ ॥

ढाल १५६ मी ॥ ए जग थिर नहीं ॥ ए देशी ॥ जे क्षण जायछेरे, फिरी नावेछे तेह ॥ चेत चेत नर चेतिए हो, कर कर धर्म सनेह ॥ जे० ॥ १ ॥ (१ अथ अनित नावना) ॥ ए संसार असार विच्यारो, पंखी

तरुवर वासो ॥ हाट मिल्यो वाजीगर केरो, पसरे प्रग ट तमासो ॥ तिरथ मेलो जेहवो तेहवो, जग व्यवहा र विनासो ॥ जे० ॥ २ ॥ अभ्र मंटल जिम उपजे विणसे, तनु धन जोवन जाणो ॥ गगन नगर सरी खो साचो, पदमनी प्रेम प्रमाणो ॥ साजन साथ स रिस सुहावो, विद्युतवान वखाणो ॥ जे० ॥ ३ ॥ (२ अथ शरण भावना ॥) मृग शावक वन मांही फिर तो, करतो केली विचारो ॥ सिंहसूरि देखी सुविसेखी, ले चलियो निरधारो ॥ काल तणी असवारी होता, कोइ न राखण हारो ॥ जे० ॥ ४ ॥ (३ अथ सं सार भावना) ॥ चउगति फेरी करीय घणेरी, भ्रम र थयो ए प्राणी ॥ नरगतिरी अवतार अनंता, पाप तणी अहि नाणी ॥ नरभवे धन धन रामा रामा, बि जी वात न जाणी ॥ जे० ॥ ५ ॥ (४ अथ एकत्व भावना ॥) जिहां तिहां नर आप एकिलो, फिरे रमतो सोइ ॥ परभवे जातां जोइ पनोता, साथे नावे कोइ ॥ कां धन कां धनियाणी धराति, धर्म सखाइत होइ ॥ जे० ॥ ६ ॥ (५ अथ अन्यत्व भावना)॥ जीव सचेतन देहि अचेतन, एक कहो किम होवे ॥ उ शिव वंछे उ भव इछे, उजागे उ सोवे ॥ आतम देहि विचारे जूदि, सोइ अघ मल धोवे ॥ जे० ॥ ७ ॥ (६ अ थ अशुचि भावना ॥) काय अशुचि अनेक प्रकारे, धोया सुधि न पावे ॥ दसाहि द्वार श्रवे निसवासर,

ते किम सोच लहावे ॥ साते धाते पूरित ए तनुं, बाहिर सोह देखावे ॥ जे० ॥ ८ ॥ (७ अथ आश्रव भावना ॥) श्रवण नयणने घाण घणी परे, रसना फरस कहिजे ॥ हरिण पतंग भमरने मछी, मयंगल मरण लहिजे ॥ एक एक इंद्रिय कारणे एतो, पंचे क्यु न कहीजे ॥ जे० ॥९ ॥ (८ अथ संवर भावना)॥ आश्रव रोक्या होवे संवर, संवरथी फल मोटो ॥ व्यापारी व्यापार करंतां, जाणी न खाइ खोटो ॥ समज समजरे जीव सलुणा, दुःख घणो सुख थोडो ॥ जे० १० ॥ (९ अथ निर्जरा भावना ॥) उदय उदिरण दुनी प्रकारे, कर्म निर्जरा कहिए ॥ श्री जिनशासन छांडी अनेरां, एतो मर्म न लहीए ॥ तप जप दुःकर करणीने बले, निश्चल हुइने रहिए॥ जे० ॥ ११ ॥ (१० अथ लोक भावना ॥) चउद राज तिम उंचो निचो, लोक प्रमाण विचारो ॥ सात पांचने एक राजूवर, चउडपणे अवधारो ॥ कियो न किणहि कोइ न करेगो, जिम छे तिम निरधारो ॥ जे० ॥ १२ ॥ (११ अथ बोध भावना ॥) थावरथी ए त्रसपणो दुर्लभ, त्रसथी इंद्री पूरा ॥ पांचे इंद्रीमें माणसनी गती, आर्य खेत्र सनूरा ॥ साधु योग संजमनो धरवो, जोतो पुण्य अंकूरा ॥ जे० ॥ १३ ॥ (१२ अथ धर्म भावना ॥) धर्म विना सब धंदो दिसे, कांइ हाथ न लागे ॥ धर्म विना रुलीयो भव भवमें, रे मन मूरख आगे ॥ वित्यो

काल अनंतो सोवत, अवहि क्युं नवि जागे ॥जे०॥१४॥ आगे जीव अनंत विगुतो, पडीया घन प्रमादे ॥ विप या वाह्या न रह्या साह्या, माची रह्या उनमादे ॥ पिण परमार्थ एह न जाण्यो, तरवो गुरु प्रसादे ॥ जे०॥१५॥ एकसो बप्पनमी ढाले. श्रीमुख जिन उपदेशा ॥ नविक जना मन मान्या कानी, किधा क्रोध किलेसा ॥ श्री गु णसागर सूरि सुहावे, समताभाव विशेसा ॥ जे० ॥१६॥

दुहा ॥ जिन वाणी श्रवणे सुणी, गज सुखमाल कु मार ॥ विपयाथी विरच्यो खरो, मनसु करे विचार ॥ १ ॥ विपया विपहीथी बुरी, विपीया नाम कुनाम ॥ विप या वाह्या मानवी, दो नव गमे निकाम ॥ २ ॥ आग अने विषया कही, एक सरीखी जोय ॥ सिलगीने बा हिर पडी, हाथ न आवे सोय ॥ ३ ॥ धुरही दावी रा खीए, लहे अति विस्तार ॥ ए निश्चय मनमां धरयो, व्याह तणो परीहार ॥ ४ ॥

ढाल १५७ मी ॥ कानजी मेलोने कांबलीरे ॥ ए देशी ॥ प्रभु प्रणमी घरे आवीयोरे, माताजीनी पास ॥ अनुमतीने उतावलोरे, संजमसु उल्हास ॥ १ ॥ माता अनुमत दिजीएरे, लेसु संजम भार ॥ जइ जो उं उतावलोरे, मुक्ती मनोहर नार ॥ मा० ॥ २ ॥ मूर्छा णी मा देवकीरे, वात सुणंता ताम ॥ जाया तुं मुझ वा लहोरे, प्राण थकी अभिराम ॥ मा० ॥ ३ ॥ दुरलभ उंबर फूल जीउरे, सांभलवो जग माही ॥ तो देखवो

किहांरे, तिम तुम दरसण ग्राही ॥ मा० ॥ ४ ॥ पान फूलनो जीव तुरे, कोमल केली समान ॥ लहुडने अ ति लाडीलोरे, लाल न लिलां थान ॥ मा० ॥ ५ ॥ चारीत्र काठोडे खरोरे, जिन वचने विख्यात ॥ मिण तणे दांते करीरे, लोह चणा न चवात ॥ मा० ॥ ॥ ६ ॥ वाक भरेवो कोथलोरे, चालवो खांडा धार ॥ सायर तरवो भुज बलेरे, दुःकर संजम भार ॥ मा० ॥ ७ ॥ धुरी होइ उतावलोरे, गांमी घर व्यापार ॥ प डी परीसह उपज्योरे, ढिला पडेही अपार ॥ मा० ॥ ॥ ८ ॥ लुदल जावे जातीनोरे, दोमें एक न होय ॥ ना घर ना संजमपणोरे, वादी गमे भव दोइ ॥ मा०॥९॥ कुमर कहे माजी सुणोरे, रागीनो ए माग ॥ जाणेवो जुगतो सहिरे, पिण जुदो वैराग ॥ मा०॥ १० ॥ जे वंछक एह लोकनारे, नवि वंछक परलोक ॥ ते कायर ने दोहिलोरे, जालवणो जगी जोग ॥ मा० ॥ ११ ॥ सूरवीरने साहसीरे, त्रिकरण सुधा जास ॥ तेहने तो सहु पाधरोरे, कांइ न दोहिलो तास ॥ मा० ॥ १२ ॥ जोबनने धन कारीमोरे, अने कारमी देह ॥ साणपणा नो नाम एरे, संजम साथे सनेह ॥ मा० ॥ १३ ॥ ध नजीवो संजोगथीरे, त्रपती न पावे जीव ॥ संतोखी सुखीया महारे, समतावंत सादिव ॥ मा० ॥ १४ ॥ स मजावी संजम लिउरे, नेमी जिनेश्वर हाथ ॥ ध्यान ध र्यो समसानमेरे ॥ दुख दियो जगनाथ ॥ मा०॥१५॥

सोमल सुसरो आवियोरे, शिर माटीनी पाल ॥ अं
गारा लेइ खेरनारे, धगधगता ततकाल ॥ मा० ॥
॥ १६ ॥ मेलि मस्तके चालीयोरे, साधु न चूकयो
ध्यान ॥ चडते परीणामें लह्योरे, केवल पद निरवाण
॥ मा० ॥ १७ ॥ पटमासी रजनी थइरे, सुत विरहे
विकराल ॥ प्राति पधारी प्रभु कन्हेरे, देखण गजसु
खमाल ॥ मा० ॥ १८ ॥ वाग उपर हिसातिरे, सुरहि
आवे जेम ॥ सुत मुख निरखण सांभलिरे, माता आ
वी तेम ॥ मा० ॥ १९ ॥ अकुलाणी अणदेखवेरे, पु
छया त्रिभुवन स्वाम ॥ नंद हुउ आनंदमेरे, पोहोंचा
अविचल ठाम ॥ मा० ॥ २० ॥ फरसी वेदी डाली
जीउरे, ढली पडी सा माय ॥ रोवे गोरी गहबरीरे, ह
री हलधर दुःख थाय ॥ मा० ॥ २१ ॥ हरी पूछ्यो
जिनवर कह्योरे, धसकि छुटशे प्राण ॥ बंधव हता ते
जाणवोरे, स्वामी कह्या सहि नाण ॥ मा० ॥ २२ ॥
सेरी वाटे आवतांरे, सोग धरी हरीराय ॥ सोमल सां
साहीमें मुउरे, किधांना फल पाय ॥ मा० ॥ २३ ॥
उत्कृष्टा पातिक जे करेरे, उत्कृष्टी हि वार ॥ पापे
पचे घणुं आपणेरे, नहि संदेह लिगार ॥ मा० ॥
॥ २४ ॥ जे हुवा त्रिभुवनपतिरे, तेहनो सोग न को
य ॥ कीधी हरी समजावणिरे, नेम जिणंदा जोय ॥
॥ मा० ॥ २५ ॥ सत्तावन सोमी ए ढालमेंरे, मुगती
गया सुखमाल ॥ श्री गुणसागर सुरिजीरे, प्रणमु चर

ए त्रीकाल ॥ मा० ॥ २६ ॥

दुहा॥ हलधर श्री हरीसुं कहे, पुण्य घटंतो आप॥ दिसेछे तेहि कारणे, उपज्यो ए संताप ॥ १ ॥ मोटा ना तो कुंकरा, आसंगे नहि कोइ ॥ माइ हण्यो सुखु माल सों, वडो अचंभो जोइ ॥ २ ॥

ढाल १५८ मी ॥ कपुर होवे अति उजलोरे ॥ ए देशी ॥ श्री बलदेव विनो करीरे, पूछ्या नेमी जिनेश ॥ होतार्थ जे आगलोरे, सुख दुःख हरख किलेश॥१॥ मया करी स्वामी करो प्रसाद, जे उगे ते आथमेरे, कोइ नहि विखवाद ॥ ए आंकणी ॥ए नगरी ए सा हिबीरे, ए श्री कृष्ण नरेश ॥ कब लगी रेहसे एह वोरे, यादव जोर विशेष ॥ म० ॥ २ ॥ नेम कहे स हु सांभलोरे, झुठो जग व्यवहार ॥ मिलतां दिन ला गे घणारे, विछडता नही वार ॥ म० ॥ ३ ॥ रंग कु सुम पतंगनोरे, दिसे अधीक सुचंग ॥ दिवस दशाने आंतरेरे, सो फीर थाइ विरंग॥म० ॥४॥तन धन जो बन कारमोरे, परीअणने परीवार ॥ च्यार दिवसनो चह चहोरे, पाछे विरस अपार ॥ म० ॥ ५ ॥ द्वारा माति नगरी तणोरे, मदिरा हेते विणास ॥ बारसमें व रसें होसेरे, करसे ए श्री व्यास ॥ म० ॥ ६ ॥ निज खांडे श्री हरी तणोरे, जरत कुमरने हाथ ॥ वन कौ संबे निश्चेंसुरे, मरण कह्यो जगनाथ ॥ म० ॥ ७ ॥ एह सुणंता वातडीरे, खलभलीया सहु कोय ॥ आर.

ती उपजे अति घणीरे, हरी हलधरने जोय ॥ म० ॥ ॥ ८ ॥ माइ सुतने सुदरीरे, अवर अनेरा कोइ ॥ दिख्या लिए सादरीरे, श्रीहरी अनुमति होइ॥ म०॥ ॥ ९ ॥ केता एक दिख्या ग्रहिरे, केता नगरी मझार ॥ आया हरी निज मंदिरेरे, उपकर्मा अधिकार ॥ ॥ म० ॥ १० ॥ मदीरा नगरी बाहिरेरे, कीधी सघली जाम ॥ दिपायन तप आकरोरे, तपवा लाग्यो ताम ॥ म० ॥ ११ ॥ जरत कुमर उदाशीनरे, वनही मांही वसत ॥ खाडो पथ्थर उपरेरे, घाढो करी घसंत॥ म० ॥ १२ ॥ खिस्यो अणि तव आकलोरे, पाणी मांही पसत ॥ गिलीयो मोठे माछलेरे, पडीयो जाले तुरंत ॥ ॥ म० ॥ १३ ॥ उदरथी कियो टूकडोरे, तिर तणे आकार ॥ निकलीयो ते तिरशुरे, खायो हरीण गिमा र ॥ म० ॥ १४ ॥ हरीण गयो वनमें चलीरे, मा रयो जरत कुमार ॥ तरकस मांहि राखीयोरे, सोइ तिर ते वार ॥ म० ॥ १५ ॥ आठावन सोमी ढालमें रे, साचा श्री जिन बोल ॥ श्री गुणसागर सूरिजीरे, अमिय समो निर मोल ॥ म० ॥ १६ ॥

दुहा ॥ चंद चले सूर्ज चले, चले सोइ नरिंद॥शेष चले सायर चले, चले सुवडगिरिंद ॥ १ ॥ पिण न चले भवीतव्यता, एहनो जोर अपार ॥ सांब प्रमुख अ ति सामटा, खेलण चल्या कुमार ॥ २ ॥

ढाल १५९ मी ॥ हिवे राणि पदमावतिरे हां ॥ ए

कार ॥ अब नवमा अधिकारनो, भवीक सुणो सुवि चार ॥ १ ॥ कामदेव एम चिंतवे, सारीजे निज काज॥संसारीक सुख भोगव्यां, साधीजे शिव राज॥ २ ॥

ढाल १६० मी ॥ श्री रामजीए नार गमाइ हो ॥ ए देशी ॥ अनुमती मांगे हो, विनो करी पगे लागे ॥ मदन उभो हरी आगे, मोह निंदथी जागे ॥ अ० ॥ १ ॥ अनुमती नाम सुणंता मुरछ्या, हरी हलधर शुं देवा हो ॥ वज्रपात सम वात विचारी, धरणी प ड्या ततखेवा हो ॥ अ० ॥ २ ॥ संजम स्योने स्यो तुं कुंवर, किजे भोग विलासहो ॥ विणहि धाजे जे वि प खाइ, ते तो पावे हास हो ॥ अ० ॥ ३ ॥ कुंवर कहे जिन वचने शंका, मुजने कांइ नावे हो ॥ द्वार थ की निज मंदिर लाग्यो, काढण कोइ न पावे हो ॥ अ० ॥ ४ ॥ पंडीत मूरख वुढा बाला, कायर सूरा जो इ हो ॥ राजा राणी रविसुत आगे, रहेण न पावे को इ हो ॥ अ० ॥५ ॥ आदीनाथ आदी चोवीसे, जिन वर चक्री बारे हो ॥ केशव युग गण हरने हलधर, ए सहुए यम सारे हो ॥ अ०॥ ६ ॥ मात पीताने बंधव बेटा, वार अनंता पाया हो ॥ परभव जातां कोइ प भोता, मुजने आडा नायाहो ॥ अ० ॥ ७ ॥ भूल्यो हुं तो अतिही भूल्यो, अब भूल्यो नवी जाइ हो ॥अ णजाण्या विष खाधो केवल, जाण्या विप न खवाइ हो ॥ अ० ॥ ८ ॥ जगत तणी स्थिती क्षणीक देखी, थ

यो हुं नत्र वेरागीहो ॥ द्यो अनुमति तो लेउ दिक्षा, जिन वचने रढ लागी हो ॥ अ०॥९॥ समझाव्यो बाबा ने बुढो, समझाव्यो निज तातो हो ॥ चारित्रने उमा ह्यो न्रवीको, अवगमे नहि वातो हो ॥ अ०॥१०॥ साठ अने एकसोसी ढाले, हरीनो लहि आदेसो हो ॥ श्री गुण सागर सूरि पद्मपे, वाध्यो न्राव विशेसो हो ॥ अ०॥११॥

दुहा ॥ मातासुं विनती घणी, काम करे करजोड ॥ संजन लेवा मेलवे, केलवणीनी कोड ॥ १ ॥ जिम थी लिम धसकी पडी, न रही सुद्ध लिगार ॥ बाहे ध री बेठी करी, करी करी अति उपचार ॥ २ ॥

ढाल १६१ मी ॥ सौदागर लाल चलण न देश ॥ ए देशी ॥ प्यारे हमारे लाल ॥ एसी न कीजे, तुम विण आ छे लाल कहो किम किजे ॥ प्या० ॥ ब तिया मेरी लाल तिखी काति, कालज कापे लाल अ ति अकुलाती ॥ प्या० ॥१ ॥ तुम विरहेरे लाल वित क विते, फीर क्युं चाहुं लाल वेदि न विते ॥ प्या० दुःख बतिया मेरे लाल आगज उठि, तनु जालेरे लाल न समजे ऊठी ॥ प्या० ॥ बतियामें लाल दुःख न समावे, दाडिम ज्युरे लाल फाटी आवे ॥ प्या० ॥ ॥ २ ॥ तुम्ह वीरहेरे लाल वितक विते, फीर किउं चाहुं लाल उदिन विते ॥ प्या० ॥ दुःख हुं तेरे लाल जेते नारे, तुम्ह आइरे लाल नीठ विसारे ॥ प्या० ॥ ॥ ३ ॥ च्यारे दिनाकी लाल करीय उजवाली, पुनरपि

थाइ लाल रानी काली ॥ प्या० ॥ दइय मनाइ ला
ल ए दिन लोके, कहा करो हो लाल तोडा तोडे ॥प्या०॥
॥ ४ ॥ बेटा केरी लाल आस्या एति, काहिय न जा
इ लाल अबंर जेति ॥ प्या० ॥ देश प्रदेशा लाल सु
खनीरे साइ, माताने हुवे लाल सुतथी वडाइ ॥ प्या०
॥ ५ ॥ सुंदर जाइ लाल सुंदर जायो, नेह वसेरे लाल
ज्युं घर आयो ॥ प्या० ॥ सुंदर जाइ लाल खरीय स
पूति, सिंहणी ज्युं रे लाल सुखनर सूती ॥ प्या० ॥
॥ ६ ॥ ऊंची लेइरे लाल आने अडाइ, निचि किएरे
लाल जात वधाइ ॥ प्या० ॥ दुःख न सहाइ लाल क
हि जे कासुं, सोका वासो लाल होसे हांसु ॥ प्या० ॥
॥ ७ ॥ लाल नगीनो लाल तुं मुज किको, तुज विण
लागे लाल ए सहु फिको ॥ प्या० ॥ रोवंत अति हे
लाल रुखमणी राणी, नर नर आवे लाल नयणें पा
णी ॥ प्या० ॥ ८॥ मदन कहे लाल सायन रोजे, जेम
दिन आयो लाल कियुं सोखे सोजे ॥ प्या० ॥ मोहन
किजे लाल मोहन माच्यो, संग अनेके लाल प्राणी
नाच्यो ॥ प्या० ॥९॥ अथीर मेलोरे लाल कहो किम
गाजे, सर्द घन ज्युंरे लाल फोगट गाजे ॥ प्या० ॥
जन्म जरारे लाल पूठे लागी, कियुं छुटिजे लाल तेह
थी नागी ॥ प्या० ॥ १० ॥ उत्कष्टीरे लाल किजे
करणी, तो तो मीटेरे लाल यमाकि करणी ॥ प्या० ॥
अजर अमररे लाल अब हम होसुं, सिद्ध थइने लाल

त्रिभुवन जोसुं ॥ प्या० ॥ ११ ॥ देव युगति लाल काहि समजावी, काम कुमरे लाल साय मनावी ॥ प्या० ॥ एकसठ सोमी लाल ढाल सुहावी, कहे गुणसूरि लाल भविक मन भावी ॥ प्या० ॥ १२ ॥

दुहा ॥ मातानी अनुमति लइ, अंतःपुरमां जाय ॥ समजावे अंतेउरी, वाणी वदे सुखदाय ॥ १ ॥ प्रीतीवत नीसुणो प्रिया, हमे ग्रहांगं दिख ॥ पाछे रुभा चालजो, एह हमारी शिख ॥ २ ॥

ढाल १६२ मी ॥ वीसजणांसुं वाद न कीजे ॥ ॥ ए देशी ॥ बोले राणी अति वीलखाणी, नाखे नयणे पाणीजी ॥ आरतिवंत आतुर सघली, भांखे गद गद वाणीजी ॥ बो० ॥ १ ॥ प्रीतम प्रेम विहुणी वाणी, किम भांखोगे आजजी, चारीत्रनी चतुराइ गांडो, तुम्हने करवो राजजी ॥ बो० ॥ २ ॥ तुम्ह प्रभु इंद्र तणे अवतारे, हम इंद्राणी रुपजी ॥ लिजे लाहो नरभव केरो, सांभल जादव भूपजी ॥ बो० ॥ ३ ॥ नारीने कारण नर जगमें, कष्ट करतां कोडजी ॥ एक सना भना नृप आगे, सेव करे करजोडजी ॥ बो० ॥ ॥ ४ ॥ अथीक भयंकर सागर लंघे, आटविमें पयसंतजी ॥ रोल महा संग्रामे सूरा, आतुर थइ धसंतजी ॥ बो० ॥ ५ ॥ अहिल्या रुपे इंद्र विगुतो, ए प्रगटो अवदातजी, एक लाख हजारा केइ, न सख्युं खाधी लांचजी ॥ बो० ॥ ६ ॥ पाराशर सरीखा पातरी

यो, पातरीयो श्री व्यासजी ॥ सत्यकी वेला शुं पातरी यो, पाम्यो प्राण विणासजी ॥ बो० ॥ ७ ॥ ब्रह्मा पुत्रिसुं पातरीयो, तापस तरुणी देखजी ॥ वरशी तप तरु गली चाटंतो, राच्यो रुप विशेपजी ॥ बो० ॥ ८ ॥ भरत सुंदरी साथे मोह्यो, दिख्या लेण न दिधजी ॥ साठ सहस वरसां तप तपवे, काया खिणी किधजी ॥ बो० ॥ ९ ॥ प्रजापति नृप कियो किरावर, ते तो न करे कोइजी ॥ दसकंधर दस माथा शेति, लंका सरीखी खोइजी ॥ बो० ॥ १० ॥ रामचंद्र सीताने काजे, किधो किम विलापजी ॥ पवन जय पदमनीने लीधे, देह तजेतो आपजी ॥ बो० ॥ ११ ॥ शांतनु नंदन आरतीवंतो, भिषम पूरी आशजी ॥ करमंतां कुंतिने कारण, पांडव हुवो उदाशजी ॥ बो० ॥ १२ ॥ देव हमारे सुसरे सुंदरी, सासु काजे किलेसजी ॥ अष्टदश अक्षोहणीसुं, मारयो वडो नरेशजी ॥ बो० ॥ ॥ १३ ॥ पांडव हरी पर खंड शिधाव्या, पंचालीने कामजी ॥ नाम कहुं केतां जग जोतां, पार न पावे स्वामजी ॥ बो० ॥ १४ ॥ भैरव कंपा कमलनी पूजा, करवत कासि मांहिजी ॥ पंचाग्नी साधे सीर उधे, धुउ घुटे प्रांहिजी ॥ बो० ॥ १५ ॥ एहावि कलपना करीने कामी, वंछे नारी भोगजी ॥ नाह पामीनें परहरीए, किण दीठो परलोकजी ॥ बो० ॥ १६ ॥ काम कहे कामनी तुमे नीसुणो, भोग भोगवी भल भूरजी ॥ योगी यो

ग युगती जालवतां, हुवा मोक्ष हजुरजी ॥ बो० ॥
॥ १७ ॥ तुम वाट पाडी मुक्ति पंथनी, जाणी श्री जि
नरायजी ॥ सहस व्याणुं तजे समकाले, तो वैरागी था
यजी ॥ बो० ॥ १८ ॥ चारीत्र कठण होवे कंता, कर
वो केसां लोचजी ॥ परघर आसा धरवि नीतकि, नी
क्षाकेरो सोचजी ॥ बो० ॥ १९ ॥ उन्हो पाणी आव
ण वाणी, पिधो कहो किम जायजी ॥ अणवाणा पा
ए चालेवुं, फीरी पछतावो थायजी ॥ बो० ॥ २० ॥
नाह विना नारी नीरधारी, निपट नीकामी होयजी ॥
अंगुठाविण आंगुलीया जिम, नारीनिहाली जोयजी
॥ बो० ॥ २१ ॥ सासरके सुखसाता न लहे, नलहे पिय
र मानजी ॥ धणी गया धणियापो छुटे, घर आंगण म
साणजी ॥ बो० ॥ २२ ॥ बेटा पोता जनक जमाइ,
गांठे झाझा दामजी ॥ अलवेसर अलगाथी कहिए, तो
पिण नाम कु नामजी ॥ बो० ॥ २३ ॥ धन धन दवदं
ति सतवंति, धन धन पांडव नारजी ॥ आपदमांहि
साग आहारी, हुइ खिजमतदारजी ॥ बो० ॥ २४ ॥
नारीने पियु साथे भलो, कां घर कां वनवासजी ॥ प
तिव्रता व्रत साचो ते, सुख दुःख सरीखो जासजी ॥
॥ बो० ॥ २५॥ पिउनी लारे संजमलेसा, साधसा निज
काजजी ॥ महेल मुगतमें सामी सरसी, करसां अवि
चल राजजी ॥ बो० ॥ २६ ॥ वासठने एकसोमी ढा
ले, हरख्या काम कुमारजी ॥ श्री गुणसागर निजपद

थाप्यो, श्री अनीरुद्द कुमारजी ॥ बो० ॥ २७ ॥

दुहा ॥ उच्छव मांड्यो अतिघणो, संजमनो मंडाण ॥ धन विलसे मन मोकले, साजन मिल्यां सुजाण ॥१॥ नृपतने नृपतिनी सुता, मीत्रोने परीवार ॥ संजम लेवा चालियो, श्री परजून कुमार ॥ २ ॥

ढाल १६३ मी ॥ दर्धासुत विनतडी सुणजो ॥ ए देशी ॥ संजम लेवा संचरीयो, समतारससुं चित भरीयो ॥ प्रभु परीवारे परवरीयो हो ॥ सं० ॥ १ ॥ हाथी उपर आरोहे, सीर छत्र महा मन मोहे ॥ चामरकी सोभा सोहे हो ॥ सं० ॥ २ ॥ तव बाजा वाजे वारु, तव नाचे पात्र उदारु ॥ तव दीजे दान अपारु हो ॥ सं० ॥ ३ ॥ हरी हलधर साथे आवे, लोकानो पार नवि पावे ॥ पुरमांहि होइ सिधावे हो ॥ सं० ॥ ४ ॥ माधवजी सरीखो तातो, रुखमणीजी सरीखि मातो॥ एह अचंभानि वातो हो ॥ सं० ॥ ५ ॥ आपणपे तो प्रभुताइ, ए सवि वाते वडाइ ॥ छंडी जे ए ठकुराइ हो ॥ सं० ॥ ६ ॥ चिवी बिबी अति वूढी, साचि पति तणी तो कूढी ॥ न तजाइ मनकि गूढी हो ॥ सं० ॥ ७ ॥ खेचरनी धरती सांधी, भूचरनी प्रभुता लाधी प्रभु चाहे सीव आराधी हो ॥ ॥ सं० ॥ ८ ॥ एम सुणंता आया, जिनराज समीपे सोहाया ॥ तव श्री मुखे संजम पाया हो ॥ सं० ॥ ९ ॥ सांव कुमर वर वैरागी, व्रत साधे महा लय

लागी ॥ ए मदनतणी परे त्यागी हो ॥ सं० ॥ १०॥ अंतेउर ए विधि किजे, पिउ साथे संजम लिजे, राजे मती पासे रहीजे हो ॥ सं० ॥ ११ ॥ भानु कुमरे पिए लिधो, चारीत्र साथे चित्त दिधो ॥ तिनो पिए कारज सिधो हो ॥ सं० ॥ १२ ॥ रुखमणी आदे पट नारी, ए आठे सुविचारी ॥ चारीत्र लिधो सुखकारी हो ॥ सं० ॥ १३ ॥ मदन महा मुनिराया, परमारथसुं चित लाया ॥ ए साध सकलहि सुखदाया हो ॥ सं० ॥ १४॥ त्रेसठ अने सोमी ढाले, मुनी चोखुं चारीत्र पाले, गुणसागर कुल उजयाले हो॥सं०॥१५॥

दुहा ॥ हरी हलधर जिनने नमी, आंसु ढाले अपार ॥ मन मेली कुंवर कन्हे, घर आया तेहिवार ॥ ॥ १ ॥ मेहेल मांहि नावि सुंदरी, सभा मांहि सुकुमार॥अणदेख्या हरी जाणीयो, सुनो सहु संसार ॥ २ ॥

ढाल १६४ ॥ मी राम रसे राची घणुं ॥ ए देशी ॥ श्री हरीजी आलंगे नाहि, ते वात न जाइ कहि हो ॥ श्री० ॥ १ ॥ रोम रोमसम राचियो, रुखमणी केरो राग हो ॥ खांचि काढ्यो दुःखहि, नहि उपधनो लाग हो ॥ श्री० ॥ २ ॥ सूना मंदीर मालिया, सूनी घर पटसाल हो ॥ सूनी सेज उरामणी, विण रुखमणी सुकुमाल हो ॥ श्री० ॥ ३ ॥ खाट हिंचोले हिंचता, हरीनो हियो भराय हो॥ उंचो नीचो देखहि, पतिव्रता नहि पाय हो ॥ श्री० ॥ ४॥ भोजन तो भावे नहि,

नहीं पाणी प्यास हो ॥ आख्या न लागे सोवतां ॥ लांबा लिए निसास हो ॥ श्री० ॥ ५ ॥ जो कदाचित दैवथी, पलक मिलंति जोय हो ॥ सुपने रुखमणी सुं खरी, वात करे हरि सोय हो ॥ श्री० ॥ ६ ॥ जाग्याथी कांइ नहीं, अरतिवंत मुरार हो ॥ आव्य निरासी निंद्रडी, फीरी ज्युं देखुं नार हो ॥ श्री० ॥७ ॥ उठत बेसत चालता, सहस रुखमणी होय हो ॥ आख्या आंगे रुखमणी, सुख पामे अवलोय हो ॥ श्री० ॥ ८ ॥ आसन शयन विलोकतां, वेदन तो असमान हो ॥ साजनिया साले नहि, साले ए अहि ठाण हो ॥ श्री० ॥ ९ ॥ अवरां पासेबे नहीं, रुखमणीको सुविलास हो ॥ आंवलिया नवि पुगहिं, आंबा केरी आस हो ॥ श्री० ॥ १० ॥ सिता विगोहो रामजी, नयए श्रावण मेह हो ॥ ऊडमंडी वरसे सही, नारी नीरोपम नेह हो ॥ श्री० ॥ ११ ॥ हुं कुण तुं कुण इम कही, लखमणजीसुं राम हो ॥ ऊरी ऊरी पंजर हुवा, मुद्रा कंकण नाम हो ॥ श्री० ॥ १२ ॥ अवरां साथें न एहवो, जेहवो त्रीयसु चाव हो ॥ मेलावा निकोपरी, वेद कियो उपाव हो ॥ श्री० ॥ १३ ॥ रुप नहि कांइ एहवो, कला एहवि नांहि हो ॥ मटका मोटा मोहवा, नारी न अवरां मांहि हो ॥ श्री० ॥ १४ ॥ आख्यार चारु रुखमणी, हीए वसी हरी राय हो ॥ वासर सो निठे नहि, रयणी छमासी थाय हो ॥ श्री०॥१५॥

मदन कुमरनि मूरति, जोवतां जग मांहि हो ॥ सारी खी अणदेखवे, पुरुषोत्तम दुःख श्राहि हो ॥ श्री० ॥ ॥ १६ ॥ हेलविया हीरा तणां, फरके फरके हाथ हो ॥ रुखमणी रुखमणी मदनने, संभारे जगनाथ हो ॥ श्री० ॥ १७ ॥ चोसठने सोमी ढालमे, डलंनो अधी कार हो ॥ श्री गुणसागर वखाणीयो, प्रेम परम रस सार हो ॥ श्री० ॥ १८ ॥

दुहा ॥ साब अने परजुनने, अधीको धर्म सनेह ॥ तप जप किजे एकठा, सोखीजे निज देह ॥ १ ॥ चारित्र पाले नीरमलो, ते मोटो मुनिराय ॥ सुमति गु पति खप करे, जीती विषय कषाय ॥ २ ॥ एषणा सु ध आहारनि, करे गवेखणा शुद्ध ॥ सुद्धाचारी साधु नो, मारग ए अविरुध ॥ ३ ॥ सतावासे, गुण धरे, साधुतणा सुखकार ॥ मुनिवर महियल संचरे, ने मिनाथनि लार ॥ ४ ॥

ढाल१६५मी ॥ प्रणमी सहगुरु पाय, गुणरे गासुं रा जेमति सतीजी॥ए देशी॥सांब परजुन मुणिंद,चारीत्र पा ले निरमलोजी॥प्रणमे पाय नरिंद, आराधे मार्ग भलोजी ॥ १ ॥जंगम थावर जीव, आप समानां राखिएजी॥ जाणी दोष अपार, मृषा भाख न भांखीएजी ॥ २ ॥ स्वामी जीव जिनदेव, गुरु अदत्ता न आदरेजी ॥ वाडी विसुध विशेष, सुधो सीयल समाचरेजी ॥ ३ ॥ अंतर बाहिर भेद, परीग्रह सहु परीहरेजी ॥ रात्री

भोजन त्याग, पट काया रक्षा करेजी ॥ ४ ॥ जित्या विषय विकार, पाच इंद्रीना पांडूवाजी ॥ निरलोभी अणगार, आतमराम रमाडवाजी ॥ ५ ॥ आणी क्षमा गुण सार, पडीलेहण नल भावशुंजी ॥ करण विसुध विहार, चतुर महा चित चावशुंजी ॥ ६ ॥ संजम सुध विसुध, मन वचन काय करी जिएजी ॥ शिता दिक्नी पिड, विविध प्रकारे सही जीएजी ॥ ॥ ७ ॥ मरणांतिक उपसर्ग, आया अहिया सिजीए जी ॥ आदि थकी ए टेक, पाग पावन दिजीएजी ॥ ॥ ८ ॥ साधु गुणे शिरदार, दुःकर तप करणी करेजी ॥ पामी लवधी अपार, सुर थइने संचरेजी ॥ ९ ॥ एकांतरथी मांडी, मासा आया उल्हशीजी ॥ उत्कृष्टा तप किध, कंचन जिम काया कशीजी ॥ १० ॥ पंच विगयनो त्याग, अरस विरस अन लिजीएजी ॥ समता साथे सनेह, कदही क्रोध न किजीएजी ॥११॥ वर्षा काल विशेष, तरु मूले वासो रहेजी ॥ डांस मसा शुं द्वेप, नाणे निश्चलता रहेजी ॥ १२ ॥ शियाले अति थांडे काया थर हरेजी ॥ शितल वाजे वाय, वाए शिलक विस्तरेजी ॥ १३ ॥ ग्रीपमकाले जोय, लूंतावड वाने आकरीजी ॥ गिरी शिर धरीयो ध्यान, तदा शीलावे अनुसरीजी ॥ १४ ॥ सुता कुसमरी सेज, इहां कांकरामें संथरीएजी ॥ चालंता चढी गजराज, इहां अणवाणे पाउ धारीएजी ॥ १५ ॥ करतां सोल शिण

गार, इहा उडण जिर्ण पछेवडीजी ॥ चुवा चंदन वास, इहां मलसु मेली देहडीजी ॥ १६ ॥ पाडे था जग त्रास, इहां सांती होइ चाले खराजी ॥ आलस नही लिगार, साधु किरियासुं सादराजी ॥ १७ ॥ परीसा सहे बावीस, सूरपणाथी जितीयाजी॥हिंसादिक अढार, पाप सहु अलगा कियाजी ॥ १८ ॥ तेज तपत दिनकार ॥ चंद जिम चढती कलाजी ॥ सायर जेम गंभीर, गुण आचारे आगलाजी ॥ १९ ॥ पढीया द्वादश अंग, भवीक नरां प्रति बुझवेजी ॥ भावे भावना वार, आपे आपो सुझवेजी ॥ २० ॥ आया गढ गिरनार, कर्म सबल दल नाशीयोजी ॥ पाम्या केवल ज्ञानँ, लोकालोक प्रकाशीयोजी ॥ २१ ॥ च्यार प्रकारां देव, खेचर भूचर आवीयाजी ॥ जादव जादवराय, मुनी दरशण सुख पावीयाजी ॥ २२ ॥ करि केवल उछाह, ऋषीमुख देशनां सांभलेजी ॥ जीवा जीव विचार, संशय भव भवनां टलेजी ॥ २३ ॥ मालव देशे स्वामि, साथे सहुसुं चालीयाजी ॥ निस्तारया बहु लोक, पाप परा भवना टालीयाजी ॥ २४ ॥ पांसठ सोमी ए ढाल, बैरागी सुखीया सहुजी ॥ पभणे श्री गुणसूरि, रागी दुःख पावे बहुजी ॥ २५ ॥

दुहा ॥ द्वारामतीनो द्वेपीयो, ते द्वीपायण देव ॥ तप बले पोहची नवीशके, पिण न तजे अहमेव ॥ ॥ १ ॥ भावीनो बल आवीयो, काल विनाश जेवार॥

॥ लोक पञ्चा परमादमें, स्वइच्छाहार विहार ॥ २ ॥
ढाल १६६ मी ॥ साहीब बाहु जिणेसर विनवुं ॥ ॥ ए देशी ॥ तापस मल पाम्यो ते देवता, जलका पात अपार हो ॥ हो तापस ॥ किधी वाय विकुर्वणा, आणी पुरी मजार हो ॥ १ ॥ तापस बाले नगरी द्वारीकां, द्विपायन अति क्रोध हो ॥ ॥ ता० ॥ रिस वसे नर आंधलो, नवी पामे प्रतिबोध हो ॥ ता० ॥ बा० ॥ २ ॥ काष्ट घणाने तृण घणा, जुहरनो सम दाव हो ॥ ता० ॥ आणी मेल्यो एकठो, पामीने प्रस्ताव हो ॥ ता० ॥बा० ॥ ३ ॥ हाहाकार हुवो घणो, आरड नेरड नूरहो ॥ ता० ॥ दूर गयां जे मानवी, आणी कियां हजुर हो ॥ ता० ॥ बा० ॥ ४ ॥ गढ मढ पोल प्रकारशुं, मंदिर महील उदार हो ॥ ता० ॥ राज भुवन सुविशेपथी, बलता न लागे वार हो ॥ ता० ॥ बा० ॥ ५ ॥ बाल हत्या ने गौ हत्या, ब्रह्महत्या ने नार हो ॥ ता० ॥ चार हत्या चंडालनी, किधी कोडी प्रकार हो ॥ ता० ॥ बा० ॥ ६ ॥ पार नही पशु पंखीया, पदमनी करे पूकार हो ॥ ता० ॥ अरे अदेखा पापीया, करे किसु कीरतार हो ॥ ता० ॥ बा० ॥ ७ ॥ गोरु गोरु आपणां, गती आगे राख हो ॥ ता० ॥ बलती बाला वलवले, दीन महा अति नांख हो ॥ ता० ॥ बा० ॥ ८ ॥ मांहो मांहि आफले, सहि न जाइ झाल हो ॥ ता० ॥ निकलवा पावे नहिं, वि

लवे बाल गोपाल हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ ९ ॥ नारी आखे नाहसुं, सघला साथे तोड हो ॥ ता० ॥ जोसी थी मुझथी खरी, अबकां जाउ गेड हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ १० ॥ बालक बलतां विनवे, माताजीसुं एम हो ॥ ता० ॥ जठराग्नीथी राखिया, आज न राखे केम हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ ११ ॥ सेवकसुं स्वामी कहे, नित्यहि रेहेतां पास हो ॥ ता० ॥ ताप न देता लागवा, अबकां जाउ नास हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ ॥१२ ॥ आ रेणीथी आणीयो, आडो घोसो घाली हो ॥ ता० ॥ अब मुझ मूकि जाइजी, कां जाउ मुह ठालि हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ १३ ॥ मीत्र मनोहर माहरा, मतिसागर तुझ नाम हो ॥ ता० ॥ एह उपद्रव्य जो टले, तो तुझ नाम सकाम हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ ॥ १४ ॥ कंथने देखी कामनी, कामनिया पिण कंथहो ॥ ता० ॥ जे जिम था ते तिम बल्यां, अइ अइ न गवंत हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ १५ ॥ बहोत्तरकुल बहोत्तर कोडीनो, नगरी मांहि निवास हो ॥ ता० ॥ साठि कहि पुर बाहिरी, ए सहु लह्यो विनास हो॥ता०॥वा०॥ १६ ॥

ढाल उदय रतनजी कृत ॥ नगरी बलति देखिने रे, घणुं हुवा दिलगीर ॥ हियडुं लाग्युं फाटवा रे भाइ, नयणे वछुटा निररे ॥ माधव एम बोले ॥ १ ॥ बंधव बेहुं तिहा मिलारे, वात करे करुणा ए ॥ दुःख साले द्वारकां तणुंरे भाइ, कथ्युं कांइ न जायरे ॥ मा०॥२॥

किहा द्वारकांनि साहिबीरे, कीहा गजदलनो ठाठ ॥
साजन मिलावो किहां गयोरे भाइ, खिणमें हुवां घन
घाटरे ॥ मा० ॥ ३ ॥ माधव कहे सुणो वंधवारे, जा
ग्यां पूर्वलां पाप ॥ अग्नी चउदसें परजलीरे भाइ, का
ढो मायने बापरे ॥ मा० ॥ ४ ॥ मातपिता कहे सुणो
टाबरारे, न फिरे नेमनी वांण ॥ भूए संथारो आद
रोरे, तजी अन्नने पानरे ॥ मा० ॥ ५ ॥ रथ जोडी री
खन्न आंणीनेरे, लागी चौदिसे लाह ॥ आपण बहुज
ण ताणीएरे भाइ, वलद लेवा कुण जायरे ॥ मा० ॥
॥ ६ ॥ रथे जुता वे वंधवारे, अग्नी विचे पाडी वाट
॥ देवतातो कोप्यो सहिरे भाइ, तुटीने पडीयो माट
रे ॥ मा० ॥ ७ ॥ रथ घोभाने वेलु बलेरे, बले वे
तालीस लाख ॥ अडतालिस क्रोड पाला बलेरे भाइ,
खिणमांहि होइ गइ खाखरे ॥ मा० ॥ ८ ॥ हरी भांखे
बलदेवनेरे, धिग धिग जीवत मोय ॥ नगरी बले मु
ऊ देखतारे, मारो जोर न चाले कोयरे ॥ मा० ॥ ९ ॥
बलती नगरी देखीनेरे, हुं राखि न सकुं एम ॥ इंद्र
धनुष्य अमे धारीयोरे भाइ, ते बल भांगो केमरे॥मा०
॥ १० ॥ जेणी दिसे आपणे जोवतारे, सेवक सेहेस अ
नेक ॥ हाथ जोडी रहेतां खमांरे भाइ, आज न दी
से एकरे ॥ मा० ॥ ११ ॥ वादल विज तणी परेरे, ऋ
द्धि विखलाइ सोय ॥ एणी वेलामां आपणुंरे, सगो न दी
मा० ॥ १२ ॥ मोटा मोटा राजवीरे, सरणे

रहेतां आय ॥ उलटो सरणो ताकीयोरे नाइ, वेरण वेला पायरे ॥ मा० ॥ १३ ॥ हरी नांखे बलदेवनेरे, सांभलो बंधव वात ॥ धरति आपणसुं फिर गइरे ना इ, कोइ दुसमनने बतायरे ॥ मा० ॥ १४ ॥ माधव व चन सांभलीरे, हलधर बोले एम ॥ पांडव फिरी कुंता तणारे नाइ, चालो तेने गामरे ॥ मा० ॥ १५ ॥

ढाल तेहिज मूलगी ॥ हरी माताने रोहिणी, श्री वसुदेव तिवार हो ॥ ता० ॥ अणसणने वले पामीयो, देव तणो अवतार हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ १७ ॥ सो ल सहस हरीनी स्त्रीया, अणसण वले सुर लोक हो ॥ ता० ॥ पोहाति यादवनी त्रिया, अवर अनेरो जो य हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ १८॥नेमिनाथनो शीष्यवं, कर तो एन पूकार हो ॥ ता० ॥ नंदन श्री वासुदेवनो, देवालियो उबार हो ॥ ता० ॥ वा०॥१९॥श्री हरी हलधर निकल्या, उना वाहिर जाय हो ॥ ता० ॥ वलती दे खी द्वारिकां, दुख हिए न समाय हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ २०॥ हलधर श्री हरीसुं कहे, आपा अलगी वात हो ॥ ता० ॥ नगरी अवर वसावसां, सांभल सुंदर भ्रात हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ २१ ॥ सगो सगानी ज रु अछे, सगो सगा आधार हो ॥ ता० ॥ प्रभुजी पां डव संभारीया, आपदने अधीकार हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ २२ ॥ पांडु मथुरांने चल्यां, केवल बंधव दोय हो ॥ ता० ॥ पाणीहि पावा भणी, साथ न त्रिजो कोय

हो ॥ ता० ॥ बा० ॥ २३ ॥ न हय न गय वाहणी
पाला पुलाया सोइ हो ॥ ता० ॥ अंतर नयणे नी
खच्यो, दिन पलटे इम होइ हो ॥ ता० ॥ बा०
॥२४॥ गर्व मतकरज्यो लछिनो, कोइ एक लिगार हो
॥ता०॥ जो न हुइ नीज कंतनी, बिजा कवण विचा
हो ॥ ता० ॥ बा० ॥ २५ ॥ लछि आवती नालि, ज
तां जाय विगोय हो ॥ ता० ॥ एतो पडवो आशनो
हारामाति पाति जोय हो ॥ ता० ॥ बा० ॥ २६ ॥ पि
टरे लछी कुलछणी, छटकी देखायो छेह हो ॥ ता०
॥ दैव कराव्यो हरी कियो, निगुणी सरसो नेह हो ॥
ता० ॥ बा० ॥ २७ ॥ निजबल परबल पाधरो, दिन
पाधरो जेवार हो ॥ ता० ॥ दिन वांके वांकु स
हु, घणुं किस्युं वितार हो ॥ ता० ॥ बा० ॥ २८ ॥ हरी
ह लधर तनु वल घणो, सुर बलनो नवी पार हो ॥ ता०
॥ एकही आडो नावीयो, मेटण व्यास विकार हो
॥ ता० ॥ बा० ॥ २९ ॥ पट मासा लगी हारीकां, व
ली बुझाणी जाण हो ॥ ता० ॥ सायर जल विंटी
वल्यो, पूरवले परीमाण हो ॥ ता० ॥ बा० ॥ ३० ॥
छासठ सोमी ढालमें लछि न चाले लार हो॥ता०॥श्री गु
णसागर सूरिजी,पुण्य वधो संसार हो॥ता०॥बा०॥३१॥

दुहा ॥ कर्मे इन्द्र विगोइयो, कर्मे चंद्र कलंक ॥ क
र्मे मोटा राजवी, वनमें भम्या निशंक ॥ १ ॥ सतवं
ति आदे साति, कर्मे करी सदोश ॥ कर्मागल नवि छु

टिया, हरी हर ब्रह्मा सरोस ॥ २ ॥

ढाल१६७मी॥माहाविदेह खेत्र सुहामणो ॥ ए देशी ॥ की धाकर्मन छुटिए, राय रंक सम जाय लालरे ॥ हरी हलधर दोइ चालिया, पांडव मथुरां जाय लालरे ॥ कि० ॥ ॥ १ ॥ हस्ती कल्पनामे सहि, आयो पुर अभीराम ॥ ला० ॥ दोइ बंधव तिहां वागमें, तरु तले ले विस राम ॥ ला० ॥ कि० ॥ २ ॥ साजन जन लोगां तणो, हरीने वहुलो दुःख ॥ ला० ॥ एताहिमे आकरि, आ वी लागी भूख ॥ ला०॥कि० ॥ ३ ॥ भुंडी भूख अ भागणी, वाल्हा खाए तारुं नाम ॥ ला० ॥ आप ज णावण आकति, न गणे ठाम कुठांम ॥ ला०॥ कि० ॥ ४ ॥ हलधरसु हरजी कहे, ए वैरीनो वास॥ ला० ॥ नृपछे दंत डरामणो, मति आणो विसवास ॥ ला० ॥ कि० ॥ ५ ॥ ल्यो मुझ करनी मुंद्रडी, वेची सारो काम ॥ ला० ॥ लावो खावा सुखडी, वाकी लावो दा स ॥ ला० ॥ कि० ॥ ६ ॥ हलधर पुरी माहे चल्यो, कंदोइनी पास ॥ ला० ॥ नामांकित सा मुंद्रडी, जोइ वांचे उल्हास ॥ ला० ॥ कि० ॥ ७ ॥ वात जणावी रायने, राजा दलबल साज ॥ ला० ॥ घेरी लीधो सां कडे, नाद कियो वलराज ॥ ला०॥कि० ॥ ८ ॥ नाद सुणी हरी धाइयो, मारे लात किमाड ॥ ला० ॥ उडीने अलगां पड्या, आणी जिती राड॥ला०॥कि०॥ ॥ ९ ॥ मांग भली पिण खोखरी, तो पिण हांडी योग

॥ला०॥राजा धशी पगे लागीयो, पगे लाग्या सहु लोग ॥ ला०॥ कि०॥ १० ॥ पुनरपी आया बागमें, हलधर शुं न्रप स्वामी ॥ ला०॥ आरोगी ते सुखडी, चाल्या आगे ताम ॥ ला० ॥ कि०॥११ ॥ वन कौसंबे पोहोंचीया, त्रष्या व्यापी अपार ॥ ला० ॥ सुतो हरी तरु छांय डी, पुगी वेला वार ॥ ला० ॥ कि० ॥ १२ ॥ हलध र जल लेवा गयो, आयो जरत कुमार ॥ ला० ॥ सो बाण तिहां सांधीयो, जांणी हरण तेवार ॥ ला० ॥ कि० ॥ १३ ॥ विंधाणो पग बाणशुं, धिग धिग करतो सो य ॥ ला० ॥ जरत कुमर हरी आगले, आवी ऊभो होय ॥ ला० ॥ कि० ॥ १४ ॥ हरी भांखे सुण भाइला, तुझने कोइ न दोश ॥ ला० ॥ जारे जा उतावलो, ह लधर करशे रोस ॥ ला० ॥ कि० ॥ १५ ॥ सहनाणी ने आपीयो, कौस्तुभ रत्न प्रधान ॥ ला० ॥ लेइ चा ल्यो एतले, छुट्या हरीनां प्राण ॥ ला० ॥ कि० ॥१६॥ गशठ सोमी ढालमें, कृष्ण तणो निरवाण ॥ ला० ॥ श्री गुणसागर सूरिजी, प्रवचन वचन प्रमाण ॥ लालरे ॥ कि० ॥ १७ ॥

ढाल उदय रत्नजी कृत ॥ गर्व न करजोरे गात्रनो, आखर एह असाररे ॥ राखु केहनुरे नही रहे, कर्म न फिरे किरताररे॥गर्व०॥१॥सडण पडण विध्वंसण, जे हवो माटीनुं भंडरे॥ क्षिणमां वाजे ते खाखरुं, ते कि म रहे अखंमरे ॥ग०॥२॥मोहने पूगीने जे जिमे, पान

खाय चूटी चूटी वींटरे॥ ते मोह बंधाणा झाडुए, काग डा चरकता वीटरे ॥ ग० ॥ ३ ॥ मोह मरडीने मोजो करे, कामनीसु करे गजे केलरे ॥ ते जइ सुए सम सानमां, मोह ममताने मेलरे ॥ ग० ॥ ४ ॥ हस हस बोलता हेजमां, नरनारी लाख कोडिरे ॥ ते जइ सुए मसाणमां, धनकण कंचन छोडिरे ॥ ग० ॥ ५ ॥ को रु उपाय जो किजीए, तो पिण नवि रहे नेटीरे ॥ स जन मिली सहु तेहने, करे अगननी चेटिरे ॥ ग० ॥ ॥ ६ ॥ कृष्ण सरिखो जुउ राजीउ, बलभद्र सरिखो जो वीररे॥जंगल मांहे जुउ तेहने, ताकी मारशे तीररे॥ ग० ॥ ७ ॥ बत्रीस सहस अतेउरी, गोवालीणी सो ल हजाररे ॥ तिरसे तरुफे ते त्रीकमो, नही को पाणी पानाररे ॥ ग०॥ ८॥ कोरु सिला करे धरी, गिरधारी धरयु नामरे ॥वेठा न थाय ते वले, जुउ कर्मना कामरे ॥ ग० ॥ ९ ॥जन्मतां केणे नवि जाणीउ, मरतां नही को रोनाररे॥ महा अटवी माहे एकलो, पड्यो करे पू काररे ॥ ग० ॥ १० ॥ छविलो छत्र धरावतो, फेरवतो चारे दिश फोजरे ॥ वनमां वासुदेव जिहां वसा, वसे जिहां वनचर रोजरे ॥ ग० ॥ ११ ॥ गजे बेसी जेह गाजतां, थती जिहां नगारानी ठोररे ॥ घुअड होला तीहां घुघवे, सावज करेछे सोररे ॥ ग० ॥ १२ ॥ ज रा कुमर तीण जंगल वसे, ते खेलेछे सकाररे ॥ हरी पगे पद्म ते हेरीउ, मृगनी भ्रांते तेणे ठाररे ॥ ग०॥

॥ १३ ॥ तीर मारयो तेणे ताणीने, पग तले बल पूरे ॥पग भेदीने ते निसरयो, तीर पड्यो जइ दूररे ॥ ग० ॥ १४ ॥ आप बले तव उठी कहे, रे रे हुंतुं कृष्णरे ॥ बाणे केणे मुझने विंधीउ, एहवो कोण छे पापीष्टरे ॥ ग० ॥ १५ ॥ शब्द ते कृष्णनो सांभली, वृक्ष तले जरा कुमाररे, कहे वसुदेव पुत्रछु, रहुंछुं आरण्य मझाररे ॥ ग० ॥ १६ ॥ कृष्ण रखोपाने कारणे, वरस थया मुझने बाररे ॥ पिणमें न दीठुं कोइ मालवी, आज ल गे नीरधाररे ॥ ग० ॥ १७ ॥ दुष्ट कर्म तणे उदे, इ हां आव्या तुमे आजरे ॥ मुझने हत्यारे आपवा, व ली लगाडवा लाजरे ॥ ग० ॥ १८ ॥ कृष्ण कहे उरो आव बंधवा, जिण कारण तुं सेवेछे वंनरे ॥ ते हुं कृष्ण तें मारीउ, न मिटे श्री नेमनां वचनरे ॥ ग० ॥ १९ ॥ ए निसाणी पांडवाने आपजो, तुं इहांथी जारे वेगरे ॥ नही तो बलभद्र मारशे, उपजशे उदवेगरे ॥ ग० ॥ ॥ २० ॥ आ समे किम जाउ वेगलो, जोरे मोकलेछे मुराररे ॥ फिरी पाछो जोतो थको, वरसतो आंसु जलधा ररे ॥ ग ०॥ २१ ॥ दृष्टि अगोचर ते थयो, ए ढाल अ ति रसालरे ॥ उदयरत्न कहे एटली थइ, सहुको सुण जो उजमालरे ॥ ग० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ जरत कुमर वेगे करी, पांडव मथुरा जाय ॥ जल लेइ हरी पाखती, हलधर आयो धाय ॥१॥ उ ठो प्रभु पाणी पिवो, देव न बोले जाम ॥ रिसाणो प्र

भु जाणीयो, हलधर बोले ताम ॥ २ ॥

ढाल १६८ मी ॥ गुरांजी थें मुने गोडे न राख्यो ॥ ए देशी ॥ उठो प्रभुजी पिवो पाणी, अणमिलतां एती वार लगाणी ॥ तुं मुझ बंधव प्राण पियारो, भाइ जी मानो बोल हमारो ॥ उ० ॥ १ ॥ हुंतो शेवक आदि तुमारो, गोकुलमां तुं फिरत कुमारो ॥ ते दिनथी तुं प्रितम प्यारो, हुं न रहु तुमथी खिण न्यारो ॥ उ० ॥ २ ॥ पूर्व भवंतर नेह घणेरो, गंगदत्तने ललीतांग भलेरो ॥ चारीत्र पाली देव विमानी, पुनरपी आपण प्रित थपाणी ॥ उ० ॥३॥ एतितो प्रभु कदही न कीधी, हम तुम्ह एकला सप्रासिधी ॥ वासर जाणी आज अपूठो, कहेरे बंधव तुं पिण रूठो ॥ उ० ॥ ४ ॥ दुःख भरी आंख्या आंसु ढाले, ऊंचो निचो खरोही निहाले ॥ कोइ नही जे रोतो राखे, रान रोज मिली एही साखे ॥ उ० ॥ ५ ॥ खांधे धरी चाल्या बलदेवा, पटमास लगी करतां सेवा ॥ सुर द्रष्टांत अनेक बतावी, दाघ दियो हलधर समझावी ॥ उ० ॥ ६ ॥ चारण ऋषि समझावा आयो, जिनने शेरयो वली मन भायो॥ संजम लेइ पाले निरतो, विषय कषाय थकी मन विरतो ॥ उ० ॥ ७॥ रुखमणी आदि आठे देखि, इग्यारे अंग पढी सुविशेखी ॥ वरस विस व्रत पाली सारी, मास सलेखणां मोक्ष सिधारी ॥ उ० ॥ ८ ॥ संब अने परजुंन मुनिसां, चारीत्र पाली सोल वरीसा ॥ शा

त्रुंजे संथारो साधी, मोटा मोटी पदवी लाधी ॥ उ०॥ ॥ ९॥ साढे त्रिकोटी कुमर काहियां, मदन सामिनेसाथे लहिया ॥ ते सघलाए शिव गती पांमी, नाथ निरंजन अंतरजामी ॥ उ० ॥ १० ॥ अनीकयसादिक ते पट बंधु, क्रियावंत महा गुणसिंधु ॥ विमल पणे विमलाचल आवी, अमल विमल गति उत्तम पावि॥ उ० ॥ ११ ॥ जादवने जादवनी नारी, मोक्ष गया बहु कर्म निवारी ॥ नामसुं गोत सदा सुखदाइ, त्रिविधि त्रिकाल नमुं चितलाइ ॥ उ० ॥ १२ ॥ अडसठ अने सोमी ढाले, श्रीबलदेव महा व्रत पाले॥ श्रीगुणसागर सूरि सोहावे, हर्ष धरी ऋषीनां गुणगावे॥उ०॥१३॥

दुहा॥ श्रीबलदेव महा मुनी, द्विविध शिष्य संयूत ॥ पंडित राज शिरोमणी, समदम गुण संपूत ॥ १ ॥ तुंगीया गिरी शिखरे, ध्यांन तणो अधिकार॥भिक्षा लेवा पुरी भणी, आवे श्री अणगार ॥ २ ॥

ढाल १६९ मी ॥ झुमखरानी देशी ॥ भिक्षा लेवा पुर भणी हो, आवे श्रीअणगार ॥ रुडा साधु नमुं ॥इर्या मारग सोधतां हो, गयवरनी गति सार ॥ रुडा साधु नमुं ॥१॥ कुवा कांठे कामनी हो, सात पांचनी जोड ॥ रु० ॥ काढे पाणी हेजशुं हो, खांचे होडा होड ॥ रु० ॥ २ ॥ रुपे मोही भामनीहो, गाफील थइ ते वार ॥ रु० ॥ फांसो देइ सुतने गले हो, न लहे शुद्धि लिगार ॥ रु० ॥ ३॥ श्री ऋषीजी चित चिंत

वे हो, रुप नहि ए फंद ॥ रु० ॥ माननिया मत सो हनि हो, पाग फिरयारे मुणिंद ॥ रु० ॥ ४ ॥ एको गहिल गिमारडी हो, राचे रुप रसाल ॥ रु० ॥ सब धीधी सुंदर नारिना हो, होसे कवण हवाल ॥ रु० ॥ ॥ ५ ॥ चद समावे तापने हो, ए जग प्रगटी रीत ॥ रु० ॥ लहे ताप जग चंदथी हो, एतो अति विपरीत ॥ रु० ॥ ६ ॥ सूर कह्यो उद्योतमे हो, जोरे करे अं धार ॥ रु० ॥ सूर नहि ए साचलो हो, राहु तणो अ वतार ॥ रु० ॥ ७ ॥ नाव करीठे निरमे हो, जावण पेले पार ॥ रु० ॥ जो बोले जलधारमे हो, तो कुण राखणहार ॥ रु० ॥ ८ ॥ अजरामर कारी कह्यो हो, आवा अमृत पान ॥ रु० ॥ कुण वडतण वाथवो हो, करता जगनो जान ॥ रु० ॥ ९ ॥ दिठे दरिशण सा धुने हो, संजम गुणनो पोख ॥रु०॥ जो रे असंजम उ पजे हो, तो ए मोटो दोष ॥ रु० ॥ १० ॥ जाणी ला भ विशेषथी हो, साह करे व्यापार ॥ रु० ॥ तोटे जे विरचे नहि हो, पावे नाम गिमार ॥ रु० ॥ ११ ॥ आज पछी वस्ती विशे हो, मे नावेवो एह ॥ रु० ॥ किधो निश्चे आकरो हो, जंगल साथे नेह॥रु०॥१२ ॥ ॥ दुःकर तप करणी करे हो, समता रुपी होइ ॥ रु० ॥ वनमांहि आहारानि हो, करे गवेषणा सोइ ॥ रु०॥ ॥१३॥मास खमण करतां भला हो, साठि महा सुख कार ॥ रु० ॥ पांच खमण पण एटला हो, चार चोमा

सी सार ॥ रु० ॥ १४ ॥ पुठि अपुठि राखके हो, बे से ध्यान अनूप ॥ रु० ॥ मतिको देखे खेचरी हो, सो हे साहरे रुप ॥ रु० ॥ १५ ॥ अमृतवाणी वीशेपथी हो, विधीसुं दीए उपदेस ॥रु० ॥ वाघ सिंघ प्रतिबो धीया हो, हींसा तजेरे असेस ॥ रु० ॥ १६ ॥ हरिण एक हर्ख्यो खरो हो, सेवा करे सुजाण ॥ रु० ॥ साथे फिरे जिम चेलणा हो, पाम्यो पुण्य प्रमाण ॥ रु० ॥ ॥ १७॥ एक दिवस रथ कारने हो, जाणी भोजन यो ग॥ रु० ॥ साधु पधारया वोहोरवा हो, मिलीयो शुभ सजोग ॥ रु० ॥ १८ ॥ वोहोरावे रथकारजी हो, वो होरे श्री ऋपीराय॥ रु० ॥ भावना भावे हरिणलो हो, घणी पोहोति आय ॥ रु० ॥ १९ ॥ तुटि शाखा तरु तणि हो, चंपाणा ते तिन ॥ रु० ॥ स्वर्ग पंचमें देव ता हो, सुर सुखमें लयलिन ॥ रु० ॥ २० ॥ ए गुण त्तरसोमी ढालमे हो, राम ऋपी निरवाण ॥ रु० ॥ श्री गुणसागर सूरिजी हो, किजे संघ कल्याण ॥ रु०॥२१॥

दुहा ॥ राम ऋपी सुरगति लहि, तपतणे परकार ॥ दान गुणे रथकारजी, मृगलो वडो विचार ॥ १ ॥

ढाल १७० मी ॥ आजतो आणंद वधामणा, दि ठा ऋपभ जिणंद॥ए देशी॥ साधु कहे भवि सांभलो, एहनो एह विचार ॥ दान सीयल तपने विपे, भावन नो अधीकार ॥ १ ॥ जगमें मोटी [illegible] भावो हद य मझार ॥ भाव थकी

र ॥ ज० ॥ २ ॥ लुण विना जिम रसवती, भोजन वि
ण तंबोल॥ दान विना कमला जिसी, साच विना जि
म बोल ॥ ज० ॥ ३ ॥ कंथ विना जेम कामनी, सील
विना सिणगार, पुत्र विना घर आंगणो ॥ राय विना द
रबार ॥ ज० ॥ ४॥ करणी तिम वड भावनां, न लहै
सोन लिगार॥ भार थकी भारे घडो, भाव बसो संसा
र ॥ ज० ॥ ५ ॥ दांन नाम धनथी हुवे, सिल रोकेवो
चित्त ॥ तप करी काया सोखवि, भावे न लागे वित्त॥
ज० ॥ ६ ॥ श्री मरुदेवा स्वांमिनी, आदिनाथनी मा
त ॥ भाव वले भवजल तरी, ए प्रगट्यो अवदात ॥
ज०॥७॥श्री भरते सर भावनां, भावे ते केवल लाध ॥
तिमही आठ पटोधरां, भावन जोर अगाध ॥ ज०॥
॥ ८ ॥ पुत्र एलाची जोइ ज्यो, किण विध सारया का
ज ॥ एम द्रष्टांत अनेकजी, परतक्ष दिसे आज ॥
ज०॥९॥ दूध जीमण जिम भावना, कांजी क्षूद्र प्रणाम
॥भावनाठे भव नासनी, लाभ घणो विण दाम ॥ज०
॥१०॥ सत्तर सोमी ढालमें, भाव कियो शिरदार ॥ श्री
गुणसागर न्यायए, हरिण लह्यो पद सार ॥ ज० ॥११॥

दुहा ॥ जरत कुमर जाइ कह्यो, भुवा भाइयां
साथ ॥ विद्धंसण द्वारामति, काल कियो जगनाथ ॥
॥१॥ ए आभरण हरी कंठनो, आप्योछे धरी नेह ॥
भुवाजी हिवे आजथी, आस मत करसो एह ॥ २ ॥

ढाल १७१ मी ॥ भाग्य प्रबल नृप चंदनोरे ॥ ए

देशी ॥ कुंति कालिज कापीयोरे, धरणी पडी ततकाल रे माय ॥ दुःख भरती अति रोवतिरे, विलवे सा असरालरे माय ॥ कुं० ॥ १ ॥ हाहा ए स्यु निपनुरे, अणचिंतव्युं वली आमरे माय ॥ जाइ नामे घणु पामतारे, शितलता अभिरामरे माय ॥ कुं० ॥ २ ॥ हरी हलधरनी सुरतिरे, मुरती अवर न कोयरे माय ॥ मरदाना मरदां सिरेरे, एह अवस्था होयरे माय ॥ कुं० ॥३॥ इंद्रपुरी द्वारामतिरे, सघलाही जगनो साररे माय ॥ कनक मय सुर निरमइरे, जली वली हुइ ठाररे माय ॥ कुं० ॥ ४ ॥ गुण संभारो एहनारे, निरमल गंगा नीररे माय ॥ हरुकुंदण लागी हिएरे, नयणे चाल्यां निररे माय ॥ कुं० ॥५ ॥ परउपगार शिरोमणीरे, हा बंधव हा भ्रातरे माय ॥ वहीला आवो वालहारे, करवा मोसुं वातरे माय ॥ कुं० ॥ ६ ॥ हियडा हिवे तुं स्युं रह्योरें, गयो ते तुझ आधाररे माय ॥ जाइ माधव मिलस्ये क्यारे, भिडलो भंजण हाररे माय ॥ कुं० ॥७॥ द्राजा डाया पापीयारे, तापस थारी वाटरे माय ॥ परुज्यो मारे कोसणेरे, उपायो उचाटरे माय ॥ कुं० ॥ ॥ ८ ॥ उग्यो आडंबर घणेरे, आथमता नही वाररे माय ॥ सूर सरीखो जादवारे, होइ गयो जवहाररे माय ॥ कुं० ॥ ९ ॥ साजनीयां साले घणुंरे, संभारया सो वाररे माय ॥ जेविण घडी नवी चालतो...

मझावणीरे, माता साथ करंतरे माय ॥ उपज्यो ते विणसे सहीरे, एम कहे अरिहंतरे माय ॥ कुं० ॥ ११॥ इंद्र चंद्र नर देवतारे, जिण चक्री गणधाररे माय ॥ जम आगल नवी छुटीयारे, अवरां किस्यो विचाररे माय ॥ कुं० ॥ १२ ॥ चाल्या ते चाली गयांरे, नहीं ते चालण हाररे माय ॥ समझी न करे आपणीरे, साचो सोड गिमाररे माय ॥ कुं० ॥ १३ ॥ चावनचावी आपणोंरे, पथी पंथ पुलायरे माय ॥ तिम आगल किरतारनेंरे, रंच न रहेणो जायरे माय ॥ कुं० ॥ १४ ॥ ए उपदेश विशेपथीरे, माताजी सुसता थायरे माय॥ धरम करेवा कारणेरे, खिण लाखेणी जायरे माय॥कुं० ॥ १५ ॥ एकोत्तर सोमी ढालमेरे, धर्म नंदना बोलरे माय ॥ श्री गुणसागर सूरिजीरे, अमीय समा निरमोलरे माय ॥ कुं० ॥ १६ ॥

दुहा ॥ पांडव प्रभु मन चिंतवे, साधु योग जो थाय ॥ तो तो कारज सारीए, ज्ञान वले जिनराय ॥ १ ॥ धर्मघोप मुनिश्वरु, पांच सया परीवार ॥ पांडव मथुरां आवीया, सर्व जीवा हितकार ॥ २ ॥ पांडव ताम पधारीया, वंदन श्रीगुरु देव ॥ देशनां सुणे सुहामणी, साचवतां अति शेव ॥ ३ ॥

ढाल १७२ मी ॥ हनुमंतो वीर आयो ॥ ए देशी ॥ समझो हो तुम्हे भवी प्राणी, ए जगत विणाशि जाणी ॥ श्री जिन धर्म आराधो, समताए शिवही सा

धो ॥ स० ॥ १ ॥ त्रिवीध वातां वैरागो, ज्ञोग ज्ञयंक
र लागो ॥ ज्ञोगे ज्ञुल्या जे ज्ञोला, ज्ञटके जिम गिरी
टोला ॥ स० ॥ २ ॥ दिसे कारमी काया, वांधी रही
अति माया ॥ पहीरण खाण अणूरी, रोग व्यथा करी
पूरी ॥ स० ॥ ३ ॥ चिहुं गती माहे नर गाढो, रुल
ता नवि हुउ थांढो ॥ आज लगी अंत नवी आवे, द
रसणथी दोलत पावे ॥ स० ॥ ४ ॥ त्रिकर्ण सुध रा
खीजे, करणी फल चाखीजे ॥ आठ मदनो परीहारो,
करतां ज्ञवनो पारो ॥ स० ॥ ५ ॥ इंद्री जीतेवा काठा,
इंद्रीयानां फल घाठा ॥ नरक नीगोदमें पमीया, काल
घणो रडवडीया ॥ स० ॥ ६ ॥ विकथा चारु निवारी,
पाम्या प्रजुता ज्ञारी ॥ विकथा वाही डोकरडी, सघलाए
ज्ञाखे खरडी ॥ स० ॥ ७ ॥ विसन वीलुधा विगुता, हिंरु
ढे एहां हुता ॥ साता साते फरशीजे, तजीया शिव द
रशीजे ॥ स० ॥ ८ ॥ पाप अठारे परीहरीए, अपज
सथी अति डरीए ॥ दिन दुःखी उद्धरीए, पुण्ये करी
घर ज्ञरीए ॥ स० ॥ ९ ॥ श्री गुरुराया ए वाणी, अ
मृतपान समाणी ॥ समता केरी सहनाणी, पांडव पां
चा सोहाणी ॥ स० ॥ १० ॥ बहोत्तरने सोमी ढालें, पा
डव पाप पखाले ॥ सूरि गुणसागरजी साचो, श्री जि
नमत हिरो जाचो ॥ स० ॥ ११ ॥

दुहा ॥ सदगुरु केरी देशनां, दूध सरीखी जाण॥
घूंट पिधी पांडवा, पूछे जोडी पाण ॥ १ ॥ पूर्वज,

वतरनी वली, न्नाखो श्री गुरुराज ॥ न्नवसायरने ता
वा, तुम्ह वरू सफरी जिहाज ॥ २ ॥

ढाल १७३ मी ॥ वीर वखाणी राणि चेलण
ली ॥ ए देशी ॥साधु कहे नृप सांन्नलोजी, पूर्व न्नवत
वात ॥ पांचहि तुम परन्नव तणाजी. धुरथी सुणो
वदात ॥ सा० ॥ १ ॥ एक स्थानक वसता हुताजी,
पंच सहोदर सार ॥ करसणनी श्रजीविकाजी, श्राप
दनारे न्नंडार ॥ सा० ॥ २ ॥ सुरतिने सातनुं ज
णीएजी, देवने सुमति सुजाण ॥ नामे सुन्नद्रक
पांचगोजी, प्रितीतणो मंडाण ॥ सा० ॥ ३ ॥ श्री
जसोधर गुरु पाखतीजी, लीधो संजम न्नार ॥ सुमति
गुपति व्रत पालताजी, महियल करेरे विहार ॥ सा० ॥
॥ ४॥तप जप करणि श्रागलाजी, श्रागला गुणेरे श्र
चार ॥ शास्त्र कला करी श्रागलाजी, श्रागला धर्म
विचार ॥ सा० ॥ ५ ॥ सुरति कर्यो कनकावलिजी,
रतनावलिय विशेख ॥ सातनु सूरी मुगतावलिजी, सुम
ति तणो तप देख ॥ सा० ॥ ६ ॥ सिहानि केडी न
सावढ्योजी, श्रांबिल तप वृधमान॥साधु सन्नद्रनो जा
णावोजी, ए तप पंच प्रधान ॥ सा ० ॥ ७ ॥ मास स
लेहणा विधी करीजी, स्वर्ग श्रनुत्तर पाम॥ ए तुम श्र
विने उपनाजी, पंचही पांडव नाम ॥ सा० ॥ ८ ॥
एम सुणि व्रत श्रादर्याजी, परीक्षतने देइ राज ॥
पंच मुनिसर मोटकाजी, सारे सारे श्रापणां काज ॥

धो ॥ स० ॥ १ ॥ त्रिवीध वातां वैरागो, न्नोग न्नयंक
र नागो ॥ न्नोगे न्नुल्या जे न्नोला, न्नटके जिम गिरी
टोला ॥ स० ॥ २ ॥ दिसे कारमी काया, बांधी रही
अति माया ॥ पहीरण खाण अणुरी, रोग व्यथा करी
पूरी ॥ स० ॥ ३ ॥ चिहुं गती मांहे नर गाढो, रुल
ता नवि हुउ थांढो ॥ आज लगी अंत नवी आवे, द
रसणथी दोलत पावे ॥ स० ॥ ४ ॥ त्रिकर्ण सुध रा
खीजे, करणी फल चाखीजे ॥ आठ मदनो परीहारो,
करतां न्नवनो पारो ॥ स० ॥ ५ ॥ इंद्री जीतेवा काठा,
इंद्रीयानां फल घाठा ॥ नरक नीगोदमें पन्नीया, काल
घणो रडवडीया ॥ स० ॥ ६ ॥ विकथा चारु निवारी,
पाम्या प्रन्नुता न्नारी ॥ विकथा वाही डोकरडी, सघलाए
न्नाखे खरडी ॥ स० ॥ ७ ॥ विसन वीलुधा विगुता, हिंर
ठे एहां हुता ॥ साता साते फरशीजे, तजीया शिव द
रशीजे ॥ स० ॥ ८ ॥ पाप अठारे परीहरीए, अपज
सथी अति डरीए ॥ दिन दुःखी उद्धरीए, पुण्ये करी
घर न्नरीए ॥ स० ॥ ९ ॥ श्री गुरुराया ए वाणी, अ
मृतपान समाणी ॥ समता केरी सहनाणी, पांडव पां
चा सोहाणी ॥ स० ॥ १० ॥ बहोत्तरने सोमी ढाले, पां
डव पाप पखाले ॥ सूरि गुणसागरजी साचो, श्री जि
नमत हिरो जाचो ॥ स० ॥ ११ ॥

दुहा ॥ सदगुरु केरी देशनां, दूध सरीखी जाण॥
घूंट घूंट पिधी पांडवा, पूछे जोडी पाण ॥ १ ॥ पूर्वन्न

वंतरनी वली, भाखो श्री गुरुराज ॥ भवसायरने तार वा, तुम्ह वर सफरी जिहाज ॥ २ ॥

ढाल १७३ मी ॥ वीर वखाणी राणि चेलणा जी ॥ ए देशी ॥साधु कहे नृप सांभलोजी, पूर्व भवंतर वात ॥ पांचहि तुम परभव तणाजी. धुरथी सुणो अवदात ॥ सा० ॥ १ ॥ एक स्थानक वसता हुताजी, पंच सहोदर सार ॥ करसणनी आजीविकाजी, आप दनारे भंडार ॥ सा० ॥ २ ॥ सुरतिने सातनुं जाणीएजी, देवने सुमति सुजाण ॥ नामे सुभद्रक पांचमोजी, प्रितीतणो मंडाण ॥ सा० ॥ ३ ॥ श्री जसोधर गुरु पाखतीजी, लीधो संजम भार ॥ सुमति गुपति व्रत पालताजी, महियल करेरे विहार ॥ सा० ॥ ॥ ४॥तप जप करणि आगलाजी, आगला गुणेरे आचार ॥ शास्त्र कला करी आगलाजी, आगला धर्म विचार ॥ सा० ॥ ५ ॥ सुरति कर्यो कनकावलिजी, रतनावलिय विशेख ॥ सातनुं सूरी मुगतावलिजी, सुमति तणो तप देख ॥ सा० ॥ ६ ॥ सिहानि केडी न साचव्योजी, आंबिल तप वधमान॥साधु सभद्रनो जाणावोजी, ए तप पंच प्रधान ॥ सा ० ॥ ७ ॥ मास सलेहणा विधी करीजी, स्वर्ग अनुत्तर पाम॥ ए तुम आविने उपनाजी, पंचही पांडव नाम ॥ सा० ॥ ८ ॥ एम सुणि व्रत आदर्याजी, परीक्षतने देइ राज ॥ पंच मुनिसर मोटकाजी, सारे सारे आपणां काज ॥

सा० ॥ ९ ॥ मात कुंताने द्रोपदिजी, चारीत्र लियो ते हीवार ॥ कर्मपखे तिम धर्मनेजी, पक्ष तजी नहि ला र ॥ सा० ॥ १० ॥ तिहुत्तर सोमी ए ढालमेजी, पांड वनोरे वैराग ॥ श्री गुणसागर साधसेजी, मुनिवर मोक्षनो माग ॥ सा० ॥ ११ ॥

दुहा ॥जगजीवन जगवछलु, जगपति जग प्रतिपा ल ॥ विचरेबे महिमंडले, श्री जिन नेम दयाल ॥ १ ॥ नेम दयाले देवतां, सौरीपुरी उद्यान ॥ रेवतकाचल म स्तके, हार मनाइ जाण ॥ २ ॥ जरासंधना युद्धमें, ज रा व्यापना काल ॥ दल रोकी सहु राखियां, नूप अ पुठो वाल ॥ ३॥ दहनकाले द्वारामति, जो जिन हुतो माहि ॥ तो द्विपायन द्वारिकां, बालि न शक्तो प्राहि ॥ ४ ॥ गुण अनंत नगवंतना, कहिता न आवे अंत ॥ गगनवमे गुण आगला, गाढो विद्यावंत ॥ ५ ॥

ढाल १७४ मी ॥ धन धन सीयल सोरोमणी ॥ ए देशी ॥ धन धन नेम जिनेसरु, धन धन यादव वंस उदारतो ॥ पुरुप रतन जिहां उपना, तेतो त्रीनुवननां शीणगारतो ॥ ध० ॥ १ ॥ जीव घणा प्रनु तारीयां, तारीतारी राजेमति वर नारतो॥पहिले मुगते मोकली, जाणो जाणो राखे ठाम समारतो ॥ ध० ॥२ ॥ प्रिती पनोती पालवी, गाढि गाढि हे काठी जगमें जोयतो ॥ राजुल साथे नेमजी, बेहां बेहे हे निपाहि सोइतो ॥ ध०॥३॥किहां नर नव किहां सुरनवे, किहांरे मनोहर मु

गति मझारतो ॥ सरसी राखी स्वामीजी, अलगी न करी एक लीगारतो ॥ ध० ॥ ४ ॥ आरज देश अनारजे, विचरे हे स्वामी करत विहारतो ॥ प्रतिबोध्यां भविजन घणां,केइ समकित केइ व्रत धारतो॥ध०॥५॥ जाणी समय निरवाणनो, स्वामी आव्या हे गढ गीर नारतो ॥ दिधी छेली देशनां, जीव घणांना काम समारतो ॥ ध० ॥ ६ ॥ पंच सया षट तिससुं, सथारो हे किधो सुविसालतो ॥ शोग धरंता सामठा, आया इंद्र हे चलि ततकाल तो ॥ ध० ॥ ७ ॥ स्वामी पधारया शिवपुरी, जनम जरानो हे प्रभु आणयो अंततो ॥ ज्ञानादिक वर आठसुं, सिद्धगुणे हे सोहे भगवंततो ॥ ध० ॥ ८ ॥ संसकार काया भणि, चंदन काठे हे किधोछे तामतो ॥ हाढा लीधी सुरपतिए, सुर लोके हे पूजण अभीरामतो ॥ ध०॥९॥ द्वीप गया नंदिश्वरे, आठ दिवसहे उछव अधिकार तो॥हरी पोहता निज स्थानके, समरता हे श्री जिन गुण सारतो॥ध० ॥ १०॥ श्री गिरनारे जिन तणां, दिख्या नाण हे अने निरवाणतो ॥ कल्याणीक तिने भलां, ते माटे हे ए स्थानक प्रधानतो ॥ ध० ॥ ११ ॥ नेम जिणंद आणंदमें, जय जय हे जिनवर जगदिश तो ॥ रग विनोद वधामणां, पूरवज्योहे श्री सघ जगीसतो ॥ध०॥ ॥ १२ ॥ चंमोत्तर सोमी ढालमें, भाख्यो भाख्योहे निरवाण कल्याणतो ॥ मेरु परे जे मोटीको, गुणसागरहे

सूरि साधु सुजाणतो ॥ ध० ॥ १३ ॥

दुहा ॥ पांडव पांच महामुनी, बठी कुंता माय ॥ पंचाली ए सातहिं, तप करी सोखे काय ॥ १ ॥ गुण आचारे आगलां, दुःकर दुःकर कार ॥ चरम शरीरी प्राणीयां, पुनरपी नहीं अवतार ॥ २ ॥

ढाल १७५ मी ॥ ते मुनी वंदो ते मुनी वंदो ॥ ए देशी ॥ मुनिसर पांडव पंच सुहावंदा, सुहावंदारे सुहावंदा ॥ महामुनीसर कहावंदा, धन आंगणे जिहां आवंदा, तिहां मोती थाल वधावंदा ॥ मु० ॥ १ ॥ गांम नगर पुर पाटण विचरे, नवी नरां मन भावंदा ॥ ज्ञान ध्यानसुं तत्व पिछाली, एकांतम समझावंदा ॥ मु० ॥ ॥ २ ॥ राग द्वेष दो दूर निवारी, त्रिकर्ण सुध करावंदा ॥ च्यार कषाय तजण चतुराइ, इद्री पांच दमावंदा ॥ मु० ॥ ३ ॥ पिहरीया षट काया केरा, भय साते नवी आणंदा ॥ मद आठे परीहरी नव विध, सियल सदा सुख जाणंदा ॥ मु० ॥ ४ ॥ दसही प्रकारे धर्म धरंदा, इग्यारे अंग पठावंदा ॥ बारे व्रत प्रतीमा पाले, क्रिया तेर तजावंदा ॥ मु० ॥ ५ ॥ चउदे भेदे जीव विचारी, कोडा कारज सारंदा ॥ जंगम तिरथ जिवन जगनां, आप तरे पर तारंदा ॥ मु० ॥ ॥ ६ ॥ हत्ती कल्पपुर वनमें आया, वहीरण साधु खंदा वंदा ॥ मोक्ष कल्याणीक नेम तणो सुणी, शेत्रुंजे सिधावंदा ॥ मु० ॥ ७ ॥ अठारे हजार मुनी परीवारे,

सथारो अहावंदा ॥ माताजीसुं पांचे पांडव, केवल मोक्ष लहावंदा ॥ मु० ॥ ८ ॥ अवर मुनिश्वर केइ मुगति, केइ स्वर्ग वसावंदा ॥ शेष कर्म बाकी सोधन ने, सुर सुखनो चित लावंदा ॥ मु० ॥ ९ ॥ पचाली पचम सुर लोके, भवही मांही रहावंदा ॥ अणगम तो आहार दियाथी, अजुह पार न पावंदा ॥ मु० ॥ ॥ १० ॥ नारद ऋषी विधी वात करीने, निश्चल मन फरसावंदा ॥ पाप पखाली अणसण पाली, शिव गति नुं दरसावंदा ॥ मु० ॥ ११ ॥ पंचाहत्तर सोमी ढाले, पांडव शिव पद पावंदा ॥ श्री गुणसागर सुरि उजागर, नागर गुरु गुण गावंदा ॥ मु० ॥ १२ ॥

दुहा ॥ संघ चतुरविध तिर्थमें, शांतिनाथ दातार॥ थूलिभद्र आचारमें, मंत्रमें नवकार ॥१॥ मणीमां मणी चिंतामणी, ग्रह गणमें दिनकार ॥ श्री गौतम गुरु गणधरा, तरुमें सुरतरु सार ॥ २ ॥ सुर मांहि जिम सुरपती, नरमें नरपती जेम ॥ वसामें हरी वंसजी, विश्व वदीतो तेम ॥ ३ ॥

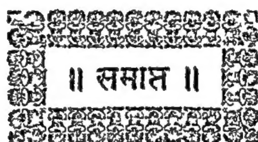
ढाल १७६ मी॥ श्रेणीक राय हुंरे अनाथी निग्रंथ ॥ ए देशी ॥ में गायो श्रीहरी वंश उदार, सरीयारे मन वंछित काज ॥ में० ॥ पामी परसंसा खरी, अधिकाइरे उपनी आज ॥ में० ॥ १ ॥ वारे दसमां जिन तणे, वंस ए उतपन ॥ में० ॥ विस्तरी शाखा घणी, काइ हुवारे बहु पुरुष रतन ॥ में० ॥ २ ॥ अपर ना

म सोहामणो, नृप यदुथी जोय ॥ मैं० ॥ राय यादव राजीया, कांइ पुहवीरे परसिद्धा सोय ॥ मैं० ॥ ३ ॥ विसमो वली बावीसमो, ए वंशे जिणंद॥मैं०॥उपजीया आणंद, कांइ आयारे तिहां चोसठ इंद्र॥ मैं० ॥४॥ कृष्णने बलदेवजी, वंसमें अवतंस ॥ मैं० ॥ वासी नगरी द्वारीकां, काइ किधोरे आंर कुल विध्वंस ॥ मैं०॥ ॥ ५ ॥ मात फूइयाए नाइ नला, धर्म नंदने निम ॥ ॥ मैं० ॥ शक्र सुत शोना धरी, कांइ प्रौढीरे पौरखनी शिम ॥ मैं० ॥ ६ ॥ संब अने परजुननां, बल तणो नही पार ॥ मैं० ॥ एक एकाथी वर्मा, कांइ अगणीत रे हरी वंश कुमार ॥ मैं० ॥ ७ ॥ इंद्रनगरी द्वारीकां, द्वारीकां पिण सोय ॥ मैं० ॥ उपमा सरखी सही, कांइ अंतररे न दिसे कोय ॥ मैं० ॥ ८ ॥ नित हरख विनोदमें, नित हरख विलास ॥ मैं० ॥ द्वारीकां नगरी तणो, कांइ नितकोरे वधतोरे वास ॥ मैं० ॥ ९ ॥ नित्य सुत जनमोछवुं, नित्य सुत निसाल ॥ मैं० ॥ नित्य सुत परणेतना, कांइ करीएरे घर घर कल्याण ॥ मैं० ॥ १० ॥ खेल खेलनांतो खरा, घुघराना घमकारन मैं० ॥ धोक धपमप मांदला, कांइ वाजेरे वाजींत्र अपार ॥ मैं० ॥ ११ ॥ किजीए जिन सेवनां, साधु नागती अपार ॥ मैं० ॥ नली नावे नावनां, कांइ नावियारे नल नाव उदार ॥ मैं० ॥ १२ ॥ प्रघल नाव प्रनावनां, परम पुण्य प्रकाश ॥ मैं० ॥ श्रीफलां श्री

काग्णी, कांइ पुगिरे पुगी मन आश ॥ मैं० ॥ १३ ॥ नारी निकी शोभती, पहेरीयां पटकूल ॥ मैं० ॥ तनु सोल शिणगार करी, काइ बोलेरे मुख मीठा बोल ॥ मैं० ॥ १४ ॥ रंगरोळ कचोलमा, थाले मोती सार ॥ मैं० ॥ करे सुगुरु वधामणा, कांइ वरतेरे जिनमतनी वार ॥ मैं० ॥ १५ ॥ आज आवे दिवालिका, नारी झा क झमाल ॥ मैं० ॥ आज परव पजूसणां, कांइ किजे रे उच्छव सुविसाल ॥ मैं० ॥ १६ ॥ मीले साहमी सा मटा, साहमीणी सुविचार ॥ मैं० ॥ धवल मंगल चा रसुं, काइ जन जनरे जय जयकार ॥ मैं० ॥ १७ ॥ गछ स्वगछ परिभाणसु, विजयवत्त विशेष ॥ मैं० ॥ श्री विजय गछ राजीया, कांइ दिपेरे गुरु धर्म नरेश ॥ मैं० ॥ १८ ॥ विजयऋषी विद्यावली, धर्मदास मु निश ॥ मैं० ॥ क्षमासागर खेमजी, काइ जेहनिरे ज गमांहि जगिश ॥ मैं० ॥ १९ ॥ श्री पद्मसागर सूरिजी, सुजस सुजस नरपूर ॥ मैं० ॥ पाय प्रणमी श्रीगुरु त णां. काइ पभणेरे गुणसागर सूरि ॥ मैं० ॥ २० ॥ स मंत सोळ वहोत्तरे, मास श्रावण शुद्ध ॥ तिज सोम सु मुहूरतां, कांइ वासररे वारु अविरुद्ध ॥ मैं० ॥ २१ ॥ कुर्कटेश्वर नगरमें, पार्श्व स्वामी पसाय ॥ संघने भ्ल कपणे, कांइ रचियोरे मे चरित सुभाय ॥ मैं ॥ २२ ॥ ढालसागर नाम ए, श्री हरिवंसनो विस्तार ॥ शुद्ध भावे सांभले, कांइ पामेरे सुख संपत्ति सार ॥ मैं० ॥

॥ २३ ॥ एकसो छहुत्तरे ए, ढालनो सोजाग ॥ आदे तो आशावरी, कांइ अंतेरे धन्याश्री राग ॥ में० ॥ ॥ २४ ॥ जब लगे गिरी मेरुजी, सकल गिरीवर इश ॥ तब लगे हरीवंस ए, कांइ थाज्योरे थीर विश्वा विस ॥ में० ॥ २५ ॥

कलश ॥ हरिवंस गायो सुजस पायो, ज्ञान बुद्धि प्रकाशनो ॥ पाप त्राठो गयो नाठो, पुण्य आयो आशनो ॥ १ ॥ कर्ण पुत्र कलत्र कमला, पढत सुणत सोहामणो, पुज्य श्री गुणसूरि जंपे, संघरंग वधामणो ॥ २ ॥ ॥इति हरिवंस ढालसागर खंड ९ ढाला १७६ समाप्तः॥



जैन धर्म संबंधी छपेला पुस्तकोनुं सूचीपत्र.